परम्परा

डिंगल - कोष

डिंगल भाषा के ६ पर्यायवाची, १ अनेकार्थी व
२ एकाक्षरी छन्दोबद्ध प्राचीन कोषों का संकलन

सम्पादक : नारायणसिंह भाटी

विषय - सूची

सम्पादकीय

भाषा समाज की पहली आवश्यकता है और मानव के विकास का सब से महत्वपूर्ण साधन है। मानव के भौतिक एवं सांस्कृतिक विकास के साथ-साथ भाषा का भी विकास होता है। समाज की उन्नति और उसकी नानारूपेण प्रवृत्तियों में सतत प्रयत्नशील मानव-समूह अपनी आवश्यकताओं के अनुसार जाने-अनजाने ही भाषा को नये-नये रूप प्रदान करता है। इसी से भाषा के कई रूप बनते और बिगड़ते रहते हैं। पर मिटने वाली भाषाओं का प्रभाव नवोदित भाषाओं पर किसी न किसी रूप में अवश्य विद्यमान रहता है, क्योंकि नवीन भाषाएँ प्राचीन भाषाओं की कोख से ही उत्पन्न होती हैं। यद्यपि अन्य भाषाओं के प्रभाव से भी वे पूर्णतया अछूती नहीं रह पातीं। भाषाओं का यह विकास-क्रम स्वयं मानव जाति के सामाजिक इतिहास से अविच्छिन्न जुड़ा हुआ सतत प्रवहमान होता रहता है। कौनसी भाषा कितनी समृद्ध और महान है, यह उस भाषा का साहित्य ही प्रमाणित कर सकता है। साहित्य की रचना शब्दों के माध्यम से सम्पन्न होती है। अतः किसी भाषा का शब्द-भंडार ही उसकी अभिव्यक्ति की क्षमता का द्योतक है।

राजस्थानी भाषा और साहित्य की समृद्धि पर विभिन्न दृष्टियों से विचार करते समय उसके शब्द-भंडार की ओर ध्यान जाना स्वाभाविक है। शब्द-भंडार पर शब्द-कोषों के माध्यम से विचार करने में सुविधा होती है, और उसमें हर प्रकार के कोषों का अपना महत्व होता है। आधुनिक प्रामाणिक कोषों के उपलब्ध होते हुए भी संस्कृत भाषा का कोई विद्यार्थी 'अमर-कोष' की उपेक्षा नहीं कर सकता। इसीलिए इन प्राचीन डिंगल कोषों का भी अपना महत्व है।

विभिन्न भाषाओं के प्राचीन कोषों की तरह ये कोष भी छन्दोबद्ध हैं। प्राचीन काल में जब छापाखाने की सुविधा उपलब्ध नहीं थी—ज्ञान अर्जित करना, उसे समय पर प्रयोग में लाना और आने वाली पीढ़ी को उससे लाभान्वित करना एक बहुत बड़ी समस्या थी। हस्तलिखित पोथियों का प्रयोग अवश्य होता था पर व्यवहार में स्मरण-शक्ति का भी बहुत सहारा लेना पड़ता था। लयात्मक और तुकान्त भाषा में कही गई बात स्मृति में सहज ही अपना स्थान बना लेती है, इसीलिए अति प्राचीन काल में समाज की धार्मिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक मान्यताएँ तक छन्दों का सहारा ढूंढती प्रतीत होती हैं। साहित्याचार्यों ने भी अपने मतों का प्रतिपादन छन्दों के सहारे ही करना उचित समझा, जिसके फलस्वरूप

छन्दोबद्ध रूप में कई लक्षण-ग्रन्थों तथा कोपों का निर्माण हुआ। ये कोप तत्कालीन समाज और साहित्य में जिस रूप में महत्वपूर्ण थे ठीक उसी रूप में आज नहीं हैं। पर आधुनिक साहित्यिक कोपों से जहाँ केवल शब्दों का अर्थ स्पष्ट होता है, ये कोप अन्य कई महत्वपूर्ण तथ्यों की जानकारी देते हैं। इन कोपों में तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक और साहित्यिक प्रवृत्तियों सम्बन्धी कई महत्वपूर्ण संकेत सुरक्षित हैं, जिनके माध्यम से कई महत्वपूर्ण निर्णयों तक पहुँचने में सहायता मिलती है। इसके अतिरिक्त सब से महत्वपूर्ण बात यह है कि आधुनिक कोपों में जहाँ लेखक या सम्पादक का व्यक्तित्व निहित नहीं रहता वहाँ इन प्राचीन कोपों में उनके रचयिताओं का व्यक्तित्व काफी मात्रा में सुरक्षित है।

इस प्रकार के कोपों के निर्माण की प्रवृत्ति उस समय की विशेष आवश्यकताओं की ओर भी संकेत करती है। तत्कालीन सामन्ती व्यवस्था में इन कोपों का उपयोग पाठक के बनिस्पत कवि के लिए अधिक था। राजस्थान में जहाँ कई मौलिक सूझ-बूझ वाले और प्रतिभा-सम्पन्न कवि हुए वहाँ कविता के साथ व्यावसायिक लगाव रखने वालों की जमात भी काफी बड़ी थी। उनके लिए कविता इतनी स्वतःस्फूर्त न होकर अभ्यास की चीज थी। कविता को अत्यधिक प्रयत्न-साध्य और अभ्यास की चीज बनाने के लिए काव्य-रचना सम्बन्धी आवश्यक उपकरणों को स्मरण-शक्ति में हर समय बनाए रखना और उन पर अधिकार करना आवश्यक होता है। यह उद्देश्य बहुत कुछ इन कोपों के माध्यम से भी पूरा होता था, क्योंकि शब्दों के ज्ञान के साथ-साथ छन्द-रचना सम्बन्धी नियम और उदाहरणों की व्यवस्था तक कई कोषों के साथ की गई है। रीतिकालीन हिन्दी साहित्य में तो इस प्रकार के ग्रन्थों की भी रचना हुई जो विभिन्न प्रकार के वर्णनों के लिए फार्मूले मात्र प्रेपित करते थे। वर्षा, वाटिका, तड़ाग, जलक्रीड़ा आदि वर्णनों के लिए वे निश्चित शब्दों की सूची तक बना कर इस प्रकार के कवियों की कवि-कर्म के निर्वाह में पूरी सहायता करते थे। सामाजिक परिवर्तनों के साथ जब कवि का दृष्टिकोण और उसकी साहित्यिक मान्यताएं बदलीं तो साहित्य के विभिन्न अंगों के साथ-साथ इन कोपों की उपयोगिता के प्रकार में भी अन्तर आया। आज वे जितने कवि के लिए उपादेय नहीं उतने पाठक के लिए सुविधाजनक हैं।

किसी भी भाषा का कोप उस भाषा की साहित्य-रचना के पश्चात निर्मित होता है। जब किसी भाषा का साहित्य काफी उन्नत और समृद्ध हो जाता है तभी कोप तथा लक्षण-ग्रन्थों के निर्माण की ओर आचार्यों का ध्यान आकर्पित होता है। अतः अच्छी संख्या में डिंगल के इतने समृद्ध कोपों की उपलब्धि इस भाषा की समृद्धि की परिचायक है। इतना ही नहीं इन कोपों में तत्कालीन डिंगल साहित्य की विभिन्न प्रवृत्तियों के संकेत भी मिलते हैं। प्राचीन डिंगल साहित्य में अपनी सामाजिक पृष्ठ-भूमि के अनुरूप वीर, शृंगार तथा शान्तरस की धाराओं का प्राधान्य रहा है और इन्हीं रसों को व्यजित करने वाली सशक्त शब्दावली को प्रायः इन सभी कोपों में विशेष स्थान मिला है। कविराजा मुरारिदानजी के डिंगल-कोप का विस्तार कुछ अधिक है पर उसमें भी ऐसे ही शब्दों की प्रधानता है।

भाषा-विज्ञान की दृष्टि से इन कोपों का महत्व असाधारण है। किसी भी भाषा के विकास-क्रम को समझने के लिए उस भाषा के बहुत बड़े शब्द-समूह पर कई दृष्टियों से विचार करना आवश्यक हो जाता है। कई बातों की जानकारी तो भाषा का व्याकरण ही दे देता है पर

शब्दों के रूप में कब और कैसे परिवर्तन हुए, इसका अध्ययन करने के लिए समय-समय में होने वाले शब्दों के रूप-भेद की पूरी जाँच करनी होती है, तभी शब्दों के रूप-परिवर्तन में बरते जाने वाले नियमों का भी स्पष्टीकरण हो पाता है। अतः वैज्ञानिक ढंग से राजस्थानी भाषा के विकास को समझने में ये कोष एक प्रामाणिक सामग्री का काम दे सकते हैं। इसके अतिरिक्त राजस्थानी में प्रयुक्त अन्य भाषाओं के शब्दों की स्थिति भी इनसे सहज ही स्पष्ट हो जाती है।

वर्णिक-क्रम के हिसाब से राजस्थानी का आधुनिक शब्द-कोष तैयार करने में इन कोषों से मिलने वाली सहायता का महत्व असंदिग्ध है। डिंगल-भाषा के मुख्य-मुख्य शब्द अपने मौलिक तथा परिवर्तित रूप में एक ही स्थान पर उपलब्ध हो जाते हैं। कई शब्दों के समय-समय पर होने वाले अर्थ-भेद तक का अनुमान इनके माध्यम से मिल जाता है। इतना ही नहीं, सूक्ष्म अर्थ-भेद को इंगित करने वाले समान शब्दों पर भी इन कोषों के आधार पर विचार किया जा सकता है। संग्रहीत डिंगल-कोषों के सभी रचयिता अपने समय के माने हुए विद्वान और कवि थे। ऐसी स्थिति में उनके शब्द-ज्ञान में भी संदेह की विशेष गुंजाइश नहीं बचती। प्राचीन पोथियों की प्रामाणिकता को कायम रखने में लिपिकारों की बहुत बड़ी जिम्मेदारी होती है। अतः कई स्थलों पर उनकी असावधानी के कारण अस्पष्टता तथा त्रुटियों की सम्भावना अवश्य बनी हुई है। इसके अतिरिक्त मौखिक परम्परा पर जीवित रहने के पश्चात लिपिबद्ध होने वाले कोषों के उपलब्ध रूप और मौलिक रूप में अवश्य कुछ अन्तर है, जिसका आभास समय-समय पर लिपिबद्ध होने वाली एक ही कोष की कई प्रतियों से हो सकता है। 'नागराज डिंगल-कोष' तथा 'डिंगल नांम-माळा' इसी प्रकार के कोष हैं जो अपूर्ण भी हैं और निर्माण-काल के काफी समय बाद की प्रतियाँ हमें उपलब्ध हो सकी हैं। अतः इन कोषों का समुचित प्रयोग उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रख कर होना चाहिए।

अब यहाँ सम्पादित प्रत्येक डिंगल-कोष और उसके रचयिता के सम्बन्ध में आवश्यक विचार कर लेना उचित होगा।

डिंगल नांम-माळा :

यह कोष सम्पादित कोषों में सब से प्राचीन है। मूल प्रति में इसके रचयिता का नाम हरराज मिलता है। हरराज सं० १६१८ में जैसलमेर की गद्दी पर बैठा था। इससे यह सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि इस कोष की रचना उसी समय के आसपास हुई है। श्री अगरचन्द नाहटा के मतानुसार हरराज स्वयं कवि नहीं था। कुशललाभ नामक जैन कवि ने उनके लिए इस ग्रन्थ की रचना की थी*। वैसे प्राप्य 'डिंगल नांम-माळा' की पुष्पिका में हरराज के साथ कुशललाभ का भी नाम जुड़ा हुआ है। इससे यह अनुमान होता है कि कुशललाभ ने स्वयं यदि इस ग्रन्थ का निर्माण नहीं किया तो ग्रन्थ-निर्माण में सहायता तो अवश्य की होगी, अन्यथा उसका नाम यहाँ मिलने का कारण नहीं। वास्तव में हरराज कवि था या नहीं यह विषय विचारणीय अवश्य है और अंतिम निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए समर्थ प्रमाणों की आवश्यकता है।

---

* राजस्थान भारती, भाग १, अंक ४, जनवरी १९४७.

इस कोप के शीर्षक से एक अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रश्न सामने आता है। मूल प्रति में कोप का शीर्षक है—'अथउ डिंगल नांम-माळा', पुष्पिका में पूरा नाम 'पिंगल सिरोमणे उडिंगल नांम-माळा' भी मिलता है। अतः यहाँ दिये गये डिंगल और उडिंगल शब्दों में कौनसा शुद्ध शब्द है, कहना कठिन है। वैसे शीर्षक में प्रयुक्त 'उ' अक्षर यदि 'अथ' के साथ से हटा कर 'डिंगल' के साथ रख लेते हैं तो यहाँ भी उडिंगल हो सकता है। डिंगल शब्द का प्रयोग १६वीं शताव्दी में मिलता है,* पर उससे भी पहले, वहुत संभव है, डिंगल के लिये उडिंगल ही प्रयुक्त होता हो। प्राचीन डिंगल शब्द को आधुनिक अंग्रेज विद्वान डॉ० ग्रियर्सन आदि ने उच्चारण की सुविधा के लिये पिंगल के आधार पर डिंगल बना दिया है।† उसके पहिले इस प्रकार की ध्वनि वाला शब्द नहीं था। 'उडिंगल' शब्द के मिलने से इस तथ्य पर पुर्नविचार करने की गुंजाइश बन जाती है। यह कोप प्राचीन होने के कारण कई तत्कालीन शब्दों की अच्छी जानकारी देता है, इसलिए राजस्थानी भाषा के विकास की दृष्टि से इसका विशेष महत्व है। कोष का आकार वहुत छोटा है तथा इसकी पुष्पिका से भी यही प्रतीत होता है कि यह पूरे ग्रन्थ 'पिंगल सिरोमणे' का एक अध्याय मात्र है। इस कोप की केवल एक ही प्रति श्री अगरचन्द नाहटा के संग्रह से हमें उपलब्ध हो सकी, इसलिए उसी को आधार मान कर चलना पड़ा है।

नागराज डिंगल-कोष :

इस कोष के रचयिता के सम्बन्ध में निश्चित जानकारी उपलब्ध नहीं होती। केवल कुछ किंवदंतियाँ सुनने को मिलती हैं, जिनमें एक किंवदंती तो वहुत प्रसिद्ध है $ जिसके अनुसार शेपनाग ही छन्द-शास्त्र का प्रणेता माना गया है। संस्कृत का 'पिंगल सूत्र' वहुत प्रसिद्ध है, जिसके रचयिता पिंगल मुनि वतलाये जाते हैं। उन्हें शेपनाग का अवतार भी माना गया है। वैसे शेपनाग का पर्याय भी पिंगल होता है। पिंगल शब्द छन्द-शास्त्र के अर्थ में भी प्रयुक्त हुआ है, पर डिंगल-भाषा का कोई नागराज या पिंगल नाम का विद्वान हुआ हो ऐसा उल्लेख प्राचीन ग्रन्थों में नहीं मिलता। यह भी संभव हो सकता है कि किसी विद्वान ने पिंगल की प्रसिद्धि देख कर, पिंगल के नाम से ही डिंगल में भी ऐसे ग्रन्थ की रचना कर दी हो जो कालान्तर में पिंगल की ही मानी जाने लग गई हो, और प्राप्य कोप उसी का अंश हो। संपादित कोप की मूल हस्तलिखित प्रति जुडिये (मारवाड़) के पनारामजी मोतीसर के पास सुरक्षित थी। उसका शीर्षक 'नागराज पिंगल कृत डिंगल कोप' है। लिपिकाल सं० १८२१ दिया हुआ है। अतः उसी को आधार मान कर इस कोप का प्रकाशन किया गया है। केवल २० छन्दों का ग्रन्थ होते हुए भी पर्यायवाची शब्दों की अच्छी संख्या इसमें मिलती है। सिंह तथा पानी नाम तो विशेष तौर से द्रष्टव्य हैं।

---

* डॉ० मोतीलाल मेनारिया—राजस्थानी भाषा और साहित्य, पृ० १५.

† " " " राजस्थानी भाषा और साहित्य, पृ० २०.

$ एक बार गरुड़ ने क्रोधित होकर शेपनाग का पीछा किया। शेपनाग ने अपनेआपको बचाने की बहुत कोशिश की पर अन्त में कोई उपाय न देख कर गरुड़ को समर्पण कर दिया,

हमीर नांम-माळा :

इसके रचयिता 'हमीरदान रतनू' मारवाड़ के घड़ोई गाँव के निवासी थे। पर उनके जीवन का अधिकांश भाग कच्छभुज में ही व्यतीत हुआ। ये अपने समय के अच्छे विद्वानों में गिने जाते थे। इन्होंने छन्द-शास्त्र सम्बन्धी कई ग्रन्थ लिखे हैं, जिनमें 'लखपत पिंगल' बहुत महत्वपूर्ण है। 'भागवत दरपण' के नाम से इन्होंने राजस्थानी में भागवत का अनुवाद किया है, जिससे इनके पांडित्य का प्रमाण मिलता है। 'हमीर नांम-माळा' डिंगल कोषों में सबसे अधिक प्रसिद्ध और प्रचलित है, इसलिए समय-समय पर लिपिबद्ध की हुई प्रतियाँ भी अच्छी स्थिति में उपलब्ध होती हैं। यहाँ इस ग्रन्थ का सम्पादन तीन प्रतियों के आधार पर किया गया है। इन तीनों प्रतियों के अंतिमद्वाळे में ग्रन्थ का रचना-काल १७७४ मिलता है--

संमत छहोतरै सतर मैं
मती ऊपनी हमीर मन,
कीधी पूरी नांम-माळिका
दीपमाळिका तेरण दिन।

—(मूल प्रति)

हमारे संग्रह की मूल प्रति (लिपिकाल सं. १८५६) के अतिरिक्त जिन दो प्रतियों के पाठान्तर दिये गये हैं उनमें (अ) प्रति की प्रतिलिपि भी अगरचन्द नाहटा से उपलब्ध हुई है। इसके पाठान्तर बड़े महत्वपूर्ण हैं। मूल प्रति का लिपिकाल संवत १८५० के लगभग है। (ब) प्रति श्री उदयराज उज्ज्वल के सौजन्य से प्राप्त हुई है। यह प्रति भी शुद्ध और पूर्ण है। इसका लिपिकाल संवत १८७४ है। 'हमीर नांम-माळा' डिंगल के प्रसिद्ध गीत 'वेलियो' में लिखी गई है। हर एक शब्द के पर्याय गिनाने के पश्चात अंतिम पंक्तियों में बड़ी खूबी के साथ हरि-महिमा सम्बन्धी सुन्दर उक्तियाँ कह कर ग्रन्थ में सर्वत्र अपने व्यक्तित्व की छाप छोड़ने का प्रयत्न भी किया गया है। इसलिए यह ग्रन्थ 'हरिजस नांम-माळा' के नाम से भी प्रसिद्ध है।

'हमीर नांम-माळा' की रचना में धनंजय नाम-माळा, मांनमंजरी, हेमी कोष तथा अमर कोष से भी यथोचित सहायता ली गई है, जिसका जिक्र कवि ने स्वयं अपने ग्रन्थ के अन्त में

पर एक बात उसने ऐसी कही जिससे गरुड़ को सोचने के लिए बाध्य होना पड़ा। नागराज ने कहा, मुझे मरने का दुख नहीं होगा पर मैं छन्द-शास्त्र की विद्या का जानकार हूँ और वह विद्या मेरे साथ ही समाप्त हो जाएगी। ऐसी स्थिति में एक ही उपाय है कि तुम मुझ से छन्द-शास्त्र सुन कर याद कर लो, फिर जो चाहो करना। गरुड़ ने बात मान ली, पर एक आशंका व्यक्त की कि कहीं तुम धोखा देकर भाग न जाओ। इस पर शेषनाग ने वचन दिया कि मैं जब जाऊँगा, तुम्हें कह कर चेतावनी दूंगा कि मैं जा रहा हूँ। शेषनाग ने पूरा छन्द-शास्त्र सुनाया और अंत में भुजंगम् प्रयातम् (भुजंग प्रयाता—संस्कृत में एक छन्द का नाम) कह कर समुद्र में प्रविष्ट हो गया। शेषनाग की चतुराई पर प्रसन्न होकर कहते हैं कि गरुड़ ने उसे क्षमा कर दिया और आदेश दिया कि छन्द-शास्त्र की पूर्णता के लिए कोष भी बनाओ। तब शेषनाग ने शब्द-कोष का भी निर्माण किया। तब से वे ही इसके प्रणेता माने गये।

किया है।* 'हमीर नांम-माळा' ३११ छन्दों का ग्रन्थ है। इन छन्दों में प्राचीन तथा तत्कालीन साहित्य में प्रचलित डिंगल-भाषा के बहुत से शब्द अपने विशुद्ध रूप में सुरक्षित हैं।

अवधान-माळा :

इस ग्रन्थ के रचयिता बारहठ उदयराम मारवाड़ के थबूकड़ा ग्राम के निवासी थे। इनकी जन्म-सम्बन्धी निश्चित तिथि उपलब्ध नहीं होती, पर अन्य साधनों के आधार पर यह सिद्ध होता है कि ये जोधपुर के महाराजा मानसिंहजी के समकालीन थे।† इन्होंने कच्छभुज के राजा भारमल तथा उसके पुत्र देसल (द्वितीय) की प्रशंसा अपने ग्रन्थों में स्थान-स्थान पर की है। इससे पता चलता है कि ये उनके कृपापात्र थे और जीवन का अधिकांश भाग वहीं व्यतीत किया था। वे अपने समय के विद्वानों में समादरित तो थे ही इसके अतिरिक्त विभिन्न विद्याओं में निपुण होने के कारण राज्य-दरबारों में भी सम्मान पा चुके थे।

इनके ग्रन्थों में 'कविकुलबोध' सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। इस ग्रन्थ की हस्तलिखित प्रति श्री सीताराम लाळस के माध्यम से उपलब्ध हुई थी। इसमें गीतों के लक्षण उदाहरण-सहित दिये गये हैं तथा गीतों में प्रयुक्त अन्य आवश्यक शैलीगत उपकरणों का भी सुन्दर विवेचन किया गया है। यहाँ सम्पादित अवधान-माळा, अनेकारथी कोष, तथा एकाक्षरी नांम-माळा भी इसी ग्रन्थ से उपलब्ध हुए हैं। इसके अतिरिक्त कई छन्दों के लक्षण तथा लक्ष्मी-कीर्ति-संवाद के दो महत्वपूर्ण अध्याय भी इसमे हैं।

'अवधान-माळा' ग्रन्थ की छन्द संख्या ५६१ है। डिंगल के प्रचलित शब्दों के अतिरिक्त भी कवि ने कुछ शब्द विद्वत्तापूर्ण ढंग से बना कर रखे हैं। इस कोष की एक बहुत बड़ी विशेषता यह है कि छन्दपूर्ति आदि के लिए पर्यायवाची शब्दों के अतिरिक्त बहुत कम निरर्थक शब्दों का प्रयोग मिलता है।

इस ग्रन्थ में इनका कहीं-कहीं उदयराम के अतिरिक्त उमेदरांम नाम भी मिलता है। संभव है इनके ये दोनों नाम उस समय में प्रचलित हों।

नांम-माळा :

इस ग्रन्थ की मूल प्रति हमारे शोध-संस्थान के संग्रहालय में है। इसमें न ग्रन्थकार का नाम मिलता है, न लिपिकार का। प्रति करीब १०० वर्ष पुरानी होनी चाहिए, ऐसा अनुमान इसके पत्रों की लिखावट से लगता है। मूल प्रति में इस कोष के साथ कुछ गीतों के उदाहरण भी दिये हुए हैं। कई शब्दों के प्राचीन शुद्ध डिंगल रूप इस कोष में देखने को मिलते हैं, जिससे यह अनुमान होता है कि इसका रचयिता कोई अच्छा विद्वान होना चाहिए। ईश्वर, अश्व, भमर, चपळा आदि के कई महत्वपूर्ण पर्याय इस कोष में द्रष्टव्य हैं। छन्द-पूर्ति आदि के लिए भी बहुत ही कम निरर्थक शब्दों का प्रयोग देखने को मिलता है जो कवि का शब्द तथा छन्द दोनों पर अधिकार साबित करता है।

---

* हमीर नांम-माळा—पृ० ८८.

† हमारे शोध-संस्थान में सुरक्षित महाराजा मानसिंहजी के समकालीन कवियों के चित्र में इनका चित्र भी नाम सहित मिलता है।

डिंगल-कोष :

पर्यायवाची कोषों में यह कोष सबसे बड़ा है। इस कोष के रचयिता बूंदी के कविराजा मुरारिदानजी, महाकवि सूर्यमल के दत्तक पुत्र तथा उनके शिष्यों में से थे। वंशभास्कर को सम्पूर्ण करने का श्रेय भी इन्हीं को है। इस कोष में करीब ७००० शब्द ग्रन्थकार ने समाहित किये हैं। यह कोष पुराने ढंग से बहुत पहले प्रकाशित हो चुका है जिसकी प्रतियाँ अब उपलब्ध नहीं होतीं। इसमें छपाई की अशुद्धियाँ भी बहुत हैं। मूल ग्रन्थ में छन्दों तथा अलंकारों पर भी प्रकाश डाला गया है, पर कोष ही उसका मुख्य अंग है, इसीलिए पूरे ग्रन्थ का नाम भी 'डिंगल-कोष' ही रखा गया है। डिंगल ग्रन्थों में प्रयुक्त शब्दों को ही इस ग्रन्थ में स्थान मिला है। अपनी ओर से गढ़े हुए अथवा अप्रचलित शब्दों का मोह कवि को विचलित नहीं कर पाया है। संस्कृत शब्दों को कवि ने कई स्थानों पर निःसंकोच अपनाया है। अमर-कोष की तरह यह कोष भी विभिन्न अध्यायों में विभक्त किया गया है, जिससे ऐसा आभास होता है कि कवि उक्त कोष की शैली अपनाने का प्रयत्न करना चाहता है। कोष के प्रारम्भिक अध्यायों में गीतों का लक्षण बताने के पश्चात गीत के उदाहरण में भी पर्यायवाची कोष का निर्वाह किया है। इस प्रकार की शैली अन्य किसी कोष में नहीं अपनाई गई है, यह इसकी अपनी विशेषता है। कोष का निर्माण आधुनिक काल के प्रारम्भ में हुआ है, इसलिए डिंगल से अनभिज्ञ पाठकों की सुविधा को ध्यान में रख कर नामों के शीर्षक प्रायः हिन्दी में ही दिये हैं और उनको उसी रूप में अनुक्रमणिका में भी रखा गया है।

डिंगल-कोषों में यह कोष अंतिम, महत्वपूर्ण एवं प्रामाणिक है।

अनेकारथी कोष :

जैसा कि पहले कहा जा चुका है, यह कोष भी बारहठ उदयराम द्वारा रचित 'कविकुल-बोध' का ही भाग है। डिंगल भाषा को इस प्रकार का यह एक ही ग्रन्थ उपलब्ध है। इसमें ठेट डिंगल के शब्दों के अतिरिक्त संस्कृत भाषा के भी शब्द हैं। कहीं-कहीं पर कवि ने अपनी ओर से भी शब्द गढ़ कर रखने का प्रयत्न किया है। जैसे—'मधु' के अनेक अर्थ सूचित करने वाले शब्दों में 'विष्णु' नाम न लेकर उसके स्थान पर माकंत शब्द रखा है।* मा = लक्ष्मी, कंत = पति अर्थात विष्णु। पर विष्णु के लिये माकंत शब्द का प्रयोग डिंगल ग्रन्थों में नहीं देखा गया।

पूरा ग्रन्थ दोहों में लिखा गया है जिससे कंठस्थ करने में बड़ी सुविधा रहती है। ग्रन्थारंभ में, प्रत्येक दोहे में एक शब्द के अनेक अर्थ दिये गये हैं। आगे जाकर प्रत्येक दोहे में दो शब्दों के अनेकार्थी क्रमशः पहली और दूसरी पंक्ति में रखे गये हैं।

'कविकुलबोध' की प्रति पर रचनाकाल और लिपिकाल न होने से इस ग्रन्थ के रचनाकाल के सम्बन्ध में भी निश्चित रूप से कुछ कहा नहीं जा सकता।

---

* अनेकारथी कोष—पृ० २६५, छंद ५.

एकाक्षरी नांम-माळा :

इसके रचयिता कवि वीरभांण रतनू भी हमीरदान के ही गाँव घड़ोई (मारवाड़) के रहने वाले थे। इनकी जन्म-तिथि के सम्बन्ध में विशेष जानकारी नहीं मिलती। पर इतना तो निश्चित है कि ये जोधपुर के महाराजा अभयसिंहजी के समकालीन थे। यह उनके प्रसिद्ध काव्य-ग्रन्थ 'राजरूपक' से प्रमाणित होता है, जो अभयसिंहजी द्वारा किये गये अहमदाबाद के युद्ध की घटना को लेकर लिखा गया है। यह भी कहा जाता है कि कवि स्वयं युद्ध में मौजूद था।

उनका यह एकाक्षरी कोष आकार में बहुत छोटा है। महाक्षपण कवि रचित संस्कृत के एकाक्षरी कोष की छाया इसमें स्थान-स्थान पर मौजूद है। कोष बहुत ही अव्यवस्थित ढंग से लिखा गया है। इसमें न तो कोई क्रम अपनाया गया है और न अलग-अलग शीर्षक देकर ही कोई विभाजन किया गया है। ऐसी स्थिति में कई स्थानों पर अस्पष्टता रह गई है। ऐसा प्रतीत होता है कि कवि स्वयं कोष रचना में दिलचस्पी नहीं ले रहा है।

इस कोष की प्रतिलिपि नाहटाजी ने भिजवाई थी। उनके मतानुसार इसका लिपिकाल १९वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध है।

एकाक्षरी नांम-माळा :

यह कोष भी बारहठ उदयरामजी के 'कविकुलबोध' से ही लिया गया है। ग्रन्थ की दसवीं लहर या तरंग के अन्त में यह सम्पूर्ण हुआ है। ऐसा क्रमानुसार लिखा हुआ पूर्ण कोष डिंगल में दूसरा नहीं मिलता। संस्कृत, प्राकृत, और अपभ्रंश के कई कोषों में भी इस प्रकार की क्रम-व्यवस्था कम देखने को मिलती है। अन्य कोषों की तरह इस कोष में भी कवि ने अपने विस्तृत ज्ञान का परिचय दिया है। ठेट डिंगल के अतिरिक्त संस्कृत के शब्दों का भी प्रयोग किया गया है, पर कहीं-कहीं तो जन-जीवन में प्रचलित अत्यन्त साधारण शब्दों तक को कवि ने अनोखे ढंग से अपनाया है। जैसे 'झ' का अर्थ उन्होंने करभ-झेकतांकाज* अर्थात ऊँट को बैठाते समय किया जाने वाला शब्दोच्चारण किया है, जो जन-जीवन में अत्यन्त प्रचलित है। ऐसे शब्दों का प्रयोग कवि के सूक्ष्म अध्ययन का परिचायक है।

संग्रहीत कोषों में ३ कोष बारहठ उदयरामजी के हैं। तीनों कोष अपने ढंग से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। अतः डिंगल-कोष रचना में उदयरामजी का विशेष स्थान है।

कोषों-सम्बन्धी इस आवश्यक जानकारी के पश्चात अब उनकी कुछ सामान्य प्रवृत्तियों का विवेचन किया जाता है जो इनके प्रयोग तथा मूल्यांकन में सहायक होगा।

(१) इन कोषों में कई स्थल ऐसे भी हैं जहाँ जातिवाचक शब्दों के अन्तर्गत व्यक्तिवाचक शब्दों को भी ले लिया है। जैसे 'अप्सरा' के पर्याय गिनाते समय विशिष्ट अप्सराओं के नाम भी उसी में समाहित कर लिये गये हैं।$ पर यहाँ एक ध्यान देने योग्य बात यह है कि डिंगल के प्राचीन काव्य-ग्रन्थों में व्यक्तिवाचक शब्दों का प्रयोग जातिवाचक शब्दों की तरह भी किया गया है। एरापत इन्द्र के हाथी का ही नाम है पर साधारण हाथी के लिए भी प्रयुक्त होता रहा है। अतः संभवतया ग्रन्थकारों ने इस प्रकार की प्रवृत्ति को ध्यान में रख कर ही यह प्रणाली अपनाई होगी।

---

* एकाक्षरी नांम-माळा—पृ० २९५, छंद ११६.

$ डिंगल नांम-माळा—पृ० २२, छंद १७. अवधान-माळा—पृ० ९७, छंद ७५.

(२) कई स्थानों में पर्यायवाची शब्दों का रूप एकवचनात्मक से बहुवचनात्मक कर दिया गया है। जैसे, तलवार के लिये–करवांणां, करवाळां आदि[1] घोड़े के लिये—हयां, रेवंतां, साकुरां, अस्सां, जंगमां, पमंगां, हैवरां आदि।[2] यह केवल मात्राओं की पूर्ति के लिये तथा तुक के आग्रह से किया गया प्रतीत होता है।

(३) कहीं-कहीं पर्यायवाची देने के साथ, बीच-बीच में, वस्तु की विशेपताओं और प्रयोग आदि का वर्णन करके भी अपनी विशेप जानकारी को प्रदर्शित करने का प्रयत्न किया है। 'नूपुर' के पर्याय गिनाते समय उससे शरीर में हर्प संचरित होने वाली विशेपता की सूचना भी दी है[3] और 'नागरवेल' के पर्यायवाची शब्दों के साथ उसके प्रयोग का जिक्र भी किया है।[4] इसी प्रकार के कितने ही उदाहरण कोष्ठकों में लिये हुए मिलेंगे।

(४) विद्वान कवियों ने कई शब्दों की परिभाषा तक देने का प्रयत्न किया है। जैसे, प्राकृत को नर-भापा, मागधी को नाग-भाषा, संस्कृत को सुर-भापा और पिसाची को राक्षसों की भापा कह कर समझाने का प्रयत्न किया है।[5]

(५) ऐसे शब्दों को भी किसी शब्द के पर्याय के रूप में स्थान दे दिया गया है जो कि सही अर्थ में ठीक पर्याय न होकर कुछ भिन्न अर्थ व्यंजित करने की भी क्षमता रखते हैं। जैसे 'स्नेह' के लिए 'संतोष' तथा 'सुख' आदि का प्रयोग।[6] इस प्रकार की उदारता थोड़ी-बहुत सभी कोपों में वरती गई है।

(६) जैसा कि पहले संकेत कर दिया गया है, कई कवियों ने अपनी चतुराई से भी शब्द गढे हैं जो बड़े ही उपयुक्त जँचते हैं। जैसे—ऊँट के लिए 'फीणनांखतो'[7] तथा अर्जुन के लिए 'मरदां-मरद'[8] शब्द का प्रयोग किया गया है, पर ये शब्द प्राचीन डिंगल कविता में उपरोक्त अर्थ में प्रयुक्त नहीं हुए। इस प्रकार शब्द-रचना की स्वतन्त्रता बहुत कम स्थानों पर ही देखने में आती है।

(७) कई स्थानों पर तो शब्दों के पर्यायवाची न रख कर केवल तत्सम्बन्धी वस्तुओं की नामावली मात्र दी गई है। उदाहरणार्थ—सताईस नक्षत्र नांम[9] शीर्षक के अंतर्गत २७ नक्षत्रों के नाम गिना दिये गये हैं, जोकि सत्ताईस नक्षत्र के पर्यायवाची नहीं कहे जा सकते। इसी प्रकार चौईस अवतार नांम[10], सातधातरा नांम[11], बारै रासांरा नांम[12] आदि के सम्बन्ध में भी यही युक्ति काम में ली गई है।

---

१ डिंगल नांम-माळा—पृ० २०, छंद ८.
२ डिंगल-कोप —पृ० १७५, छंद ८१.
३ अवधान-माळा—पृ० १३४, छंद ४८५.
४ अवधान-माळा—पृ० १४२, छंद ५५६.
५ अवधान-माळा—पृ० १३१, छंद ४६०.
६ हमीर नांम-माळा—पृ० ६९, छंद २०१.
७ नागराज डिंगल-कोप—पृ० २८, छंद ५.
८ हमीर नांम-माळा—पृ० ५५, छंद १२४.
९ अवधान-माळा—पृ० १३०, छंद ४४८, ४४९, ४५०, ४५१.
१० अवधान-माळा—पृ० १३०, छंद ४४२, ४४३, ४४४.
११ „ „ —पृ० १३१, छंद ४५६.
१२ „ „ —पृ० १३१, छंद ४५२.

(८) छन्द-पूर्ति के लिए कई निरर्थक शब्दों का प्रयोग करना भी आवश्यक हो गया है। प्रत्येक कवि ने अपनी इच्छानुसार छंद-पूर्ति करने की कोशिश की है। छंद-रचना में कुछ कवियों ने कम-से-कम भरती के शब्दों को स्थान दिया है पर कई कवियों ने पूरी पंक्ति तक, अपने नाम की छाप लगाने को, समाविष्ट कर ली है। आखो, आख, कहो, भुणो, भुणात, चवो, चवीजै, गिणो, गिणात आदि शब्द छन्द में गति उत्पन्न करने तथा मात्राओं की पूर्ति के लिए बहुत प्रयुक्त हुए हैं। इस तरह के शब्दों व पंक्तियों को कोष्ठकों—( )—के भीतर ले लिया गया है।

आज के प्रजातान्त्रिक युग में भाषा और समाज के सम्बन्धों को अत्यन्त गहराई से हृदयंगम करने के पश्चात जब हमारी राष्ट्रभाषा और प्रान्तीय भाषाओं की उन्नति के लिए विशेष सजगता के साथ प्रयत्न होने लगे हैं तो करीब डेढ़ करोड़ मानवों की भाषा राजस्थानी का प्रश्न भी अत्यंत महत्वपूर्ण और विचारणीय हो गया है। ऐसी स्थिति में आधुनिक साहित्य के निर्माण के साथ-साथ उसके व्याकरण, शब्दकोष तथा भाषा के क्रमबद्ध इतिहास को प्रकाश में लाना बहुत आवश्यक है। राजस्थानी भाषा का व्याकरण तो प्रकाशित हो चुका है और राजस्थानी शब्द-कोष तथा भाषा के इतिहास पर भी राजस्थान के विद्वान बहुत लगन के साथ कार्य कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में इन छन्दोबद्ध कोषों का प्रकाशन एक महत्वपूर्ण प्रामाणिक सामग्री का काम दे सकेगा। वर्तमान परिस्थितियों में इनकी विशेष उपादेयता को ध्यान में रख कर ही यह प्रकाशन किया जा रहा है, यद्यपि विभिन्न भारतीय भाषाओं में अन्तर्प्रान्तीय स्तर पर होने वाले शोध-कार्य में भी इनकी अपनी उपयोगिता है।

प्राचीन ग्रन्थों की बहुत छानबीन करने तथा राजस्थानी भाषा के जाने-माने विद्वानों की सहायता लेने के बावजूद भी हमें केवल ९ कोष उपलब्ध हो सके हैं। राजस्थानी भाषा इतनी प्राचीन और समृद्ध है कि इसके अगणित हस्तलिखित ग्रन्थ विभिन्न संग्रहालयों के अतिरिक्त कितने ही लोगों के पास आज भी मौजूद हैं। ऐसी स्थिति में कुछ नये कोष तथा इन कोषों की कुछ प्रतियाँ और उपलब्ध हो जायें तो कोई आश्चर्य की बात नहीं।

श्री उदयराजजी उज्ज्वल, श्री सीतारामजी लाळस तथा श्री अगरचन्दजी नाहटा से हमें कई कोषों की प्रतियाँ उपलब्ध हुई हैं (जिनका उल्लेख यथास्थान कर दिया गया)। श्री सीतारामजी लाळस ने तो इस काम में विशेष दिलचस्पी लेकर 'हमीर नांम-माळा' के पाठान्तर निकालने में, कई शब्दों पर विचार करने में, तथा कई महत्वपूर्ण बातों की जानकारी प्राप्त करने में अन्त तक हमारी पूरी सहायता की है, जिसके लिये मैं इन विद्वानों का हृदय से आभारी हूँ।

राजस्थान लॉ वीकली प्रेस के मैनेजर श्री हरिप्रसादजी पारीक ने पूरी दिलचस्पी और परिश्रम के साथ ग्रन्थ के प्रूफ देखे हैं, अनुक्रमणिका बनाने में सहायता की है, तथा छपाई-सफाई में भी, इस प्रकाशन के महत्व को समझ कर, विशेष ध्यान दिया है, जिसके लिए वे हार्दिक धन्यवाद के पात्र हैं।

अंत में जिन महानुभावों ने जिस-किसी रूप में हमें सहायता प्रदान की है, उन सब का आभार प्रदर्शन करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ।

—सम्पादक

डिंगल नांम-माला

कवि हरराज विरचित

अथउ डिंगल नांम-माला

राजा नांम

पार्थिव ख्योणीपति राज भूपाण रायहर,
नरवर ईस नरेंद भांणकुळजा महिराणवर।
प्रजापाळगर (नांम)[1] जगतमावीत्र अजादे,
धणीमाळ—चोधार[2] भारभुज सिंह (सुनादे)।
अणवीह (काज) गांजागिरै सूरपति नरसिंह (कहि),
(कर जोड़राव हरियंद लहि) राण राव (चे नांम सहि) ॥—१

मंत्रवी नांम

मंत्री गूढ़ा-वाच बुधिबळ लायक (दखे),
सचिवां (फिर) सचिवाळ राजअंग धारसु (तख्ये)।
प्राश्नोपुरस प्रधांन दांणपुरधांण पुरोहित,
विरतीचख वरियांम फोजआभरण (जांण) मित।
अंकहूंतलेखाळ (कहि) मरद वजीरां जोधगुर,
(कर जोड़ एम पिंगल कह्यो तिम रूपक हरियंद कर) ॥—२

जोधा नांम

सिंह सूर सामंत जोध भुजपाळ घड़ीभिड़,
(भिड़ै) फौजगाहणां वेढ़ भींचां जोधार गिड़।
अणीभमर वधिसमर अछरवर हंसा[3] (अखां),
सवळ-दळां-गाहणां सूरमंडळ-भिद (सखां)।
रूपफौज (भूप आगळ रहै कवि पिंगल अे नांम कहि),
जोधार (जिसा भीमेण ज्यों) महा अडिग कमधांण(महि) ॥—३

हाथी नांम

दंती (कहि) दंताळ अेकडसण लंबोवर,
द्विरद गैंवरो द्विप्प गंधमद (जांण) गल्लवर।

---

१ इन कोष्टकों वाले शब्द छन्द-पूर्ति आदि के लिए प्रयुक्त हुए हैं।

२ धणीमाल चोधार=धणी-माल, धणी-चोधार।

३ 'हंसा' शब्द अधिकतर अप्सरा के लिए प्रयुक्त होता है। पर शास्त्रों में योद्धा को विदेह कहा गया है। अतः 'हंसा' का अर्थ योद्धा भी हो सकता है।

सुंडाडंड सुंडाळ मत्त मातंग गजोवर,
नाग कुंजर भ्रंग करी वारणां करीवर।
दंतुर दंतुल (फेर दग्व त्रवि) चोडोळो चरणात्रतु,
(पिंगल प्रमाण कवि पेग्वियं) गात्रशैल नागांण (गति) ॥—४

घोड़ा नांम

वाजि वाह वाजाल पंख पंखाळ त्रिपखी,
अर्वा (कहि) अर्वत हयं गंधर्व वलक्खी।
त्रिपद सैंधव तेज ताज तेजी वानायुज,
कांबोजो हंसाळ जवण पुंछाळ जटायुज।
हैवर मनउपयंग (मुणि) रेवंत खैंग खुरताळरो,
सावकर्ण चलकर्ण (सहि) पवणवेग पंथाळरो ॥—५

रथ नांम

वाहण सकट वडाळ अणे गाडो गाडोलो,
सतअंगो (कहि) सस्म (फेर) स्यंदन सादाळो।
चक्रणधुर चक्राळ भारवह-गात्र (भणिज्जै),
वाहळ (कहि फिर) वहळ मांझवत रथ सु (मुणिज्जै)।
अश्वरूढ़ व्रखरूढ़ (कहि) अंकुसमुख गजरूढ़ (गिण),
(कहि हरियंद) वाणावळो दसचरण दुधार (भण) ॥—६

व्रखभ नांम

सौरभेय सींगाळ (कहि) व्रखभ अनडुहो (गाइ),
धरिधारण कंधाळधुर वाहण-संभु (कहाइ) ॥—७

तरवार नांम

असि करवांणां खग (झटां) करवाळां तरवार,
वीजळ सार दुधार (वदि) लोहसार झटसार ॥—८

कटारी नांम

सर्पजीह दुवजीह (दख) कोरट सार कटार,
महिखजीह कुंतळमुखी हथ्थहेक (अणहार) ॥—९

फरी नांम

फरी चर्मफालिक (कहो) रख्यातण (अणुभांण),
सहण सुखण गज सहम (कहिभणे) गोळ-जिम-भांण ॥—१०

वुरछी नांम

संकू कुंतळ वुरछ (कहि) डागाळां वुरछाळ,
नेजरूप धजरूप (कहि) घमीड़ां-मुख-काळ ॥—११

तीर नांम

पंखी (कहि) पंखाळ विसिख वांणाळ सुवद्द,
अजिह्मग (कहि) अलख खग्ग (कहि) खुहम निखद्द।
कलंबा करडंड (कहो) मारगण अगणाळ,
पत्री (कहि) विरणपख्य रोख-इखां इखधाळां।
खेड मेड खंगाळ (कहि) नाराचां निरबाण (रो),
नीरस्तां नाराट नख खुरसांणज खुरसांण (रो) ॥—१२

धरती नांम

धरा धरत्री धार धरणि ख्योणी धूतारी,
कु प्रथु प्रथ्वी कांम सर्व-सह वसुमति (सारी)।
वसुधा उरवी वांम खमा वसुधर ज्या: (दख),
गोत्रा अवनी: गाइ-रूप: मेदनी (सुलख्यं)।
विपुला सागर-अंबेरा[१] खुरखूं (दीखै गाळरां),
(राजाप्रथूची) परठि (रटि) वरियण (आग) वज्रागरा ॥—१३

पुनः धरती नांम

तुंगा वसुधा इळा भूम भरथरी भंडारी,
जमी खाक दरदरी धरा धरणी धूतारी।
मूळा महि रणमंडप मुक्तवेणी सुरवाळी,
अमर आदि गिरधरणि सुथिर सुंदर सहिलाळी।
भूला छिकमल गोरंभ गरद (घासिविया भूपति घणा),
(कर जोड़ कवित पिंगल कहै तीस नांम धरती तणा) ॥—१४

अकास नांम

दिवारूप दिव (दख्य) अभ्रमारग आकासं,
व्योम (कहि) व्योमाळ ग्रहांचोरहण आवासं।

---

१ 'सागर-मेखला' शब्द तो पृथ्वी के लिए प्रयुक्त होता है पर 'सागर-अंबेरा' शब्द का अर्थ स्पष्ट नहीं होता।

पुहकर अंबर परठ अंतरिख नभ (फिर अख्यं),
गगन (नांम) गण-अभ अनंत सुरमारग (सख्यं)।
अंतराळ अंबराळ (कहि) अच्छर-ऊपर-गायरा,
(कर जोड़ अेम हरियंद कहि नमो तेथ) घर-नायरा ॥—१५

पाताल् नांम

अधो-भुवन पाताळ (अहां कहीजै जिण वळि रो),
नागलोक निरवांण कुहर (कहि तिण) रसतळ (रो)।
सुखरां-मारग-सरस विवर (जिण थी वाखाणं),
गरता अवटां गरट (जेथ फिर) जळनीवाणं।
अंधकार आकार (कहि ता मिथ्रां चै तोलियं),
(कर जोड़ अेम हरियंद कहि अे पाताळां बोलियं) ॥—१६

अपसरा नांम

सुरवेस्या (कहि) अछरा उरव्वसी (अभिरांम),
मेनक रंभ घ्रतायची सुकेसी तिलतांम ॥—१७

किन्नर नांम

अस्वमुखा किन्नर (कहो जे घोहड़ हंदे नांम),
(ते मुख हूंती जोड़िजै मयु किन्नर अभिरांम)[1] ॥—१८

समुद्र नांम

समुद्रां कूपार अंबधि सरितांपति (अख्यं),
पारावारां परठि उदधि (फिर) जळनिधि (दख्यं)।
सिंधू सागर (नांम) जादपति जळपति (जप्पं),
रतनाकर (फिर रटहु) खीरदधि[2] लवण (सुथप्पं)।
(जिण धांम नांम जंजाळ जे सटमिट जाय संसार रा,
तिण पर पाजां वंधियां अे तिण नांमां तार रा) ॥—१९

परबत नांम

महीधरा कूधर (मुणो) सिखिर द्रखत (चय सोय),
(धर) पर्वत धारीधरा अग्रग्राव गिर (जोय) ॥—२०

---

१ घोड़े के सभी पर्यायवाची शब्दों के आगे मुख शब्द जोड़ देने से किन्नर के पर्यायवाची शब्द बनते हैं; जैसे—रेंवतमुखा, तुरंगमुखा आदि-आदि।

२ खीरदधि लवण=खीर-दधि, दधि-लवण।

ब्रह्मा नांम

धाता ब्रह्मा (धार) जेष्ठसुर अतम-भवनं,
परमाइस्ट परठ पितामह हिरण-उपवनं।
लोकईस ब्रह्मज (कज्ज) देवांण (सुकरियं),
(धराहेत किह धुनि) चतर चतारण (चवियं)।
विरंच (नांम वाखाणियं) वछचोर साहोगमन,
(कर जोड़ अेम हरियंद कहि जे सतां वासिट चवन) ॥—२१

विस्णु नांम

नारायण निरलेप निगुण नांमी नरयंद,
किसनं रुकमणिहार देवगण अहिगण वंदं[1]।
बैकुंठां-ग्रह-विमळ दैत-अरि (कहो) दमोदर,
केसव माधव चक्रपांणि गोविंद लाछवर।
पीतांवर प्रहलाद-गुर कछ-मछ-अवतार[2] (किय),
(कर जोड़ अेम हरियंद कहि नमो नमो जिण वेद गिय) ॥—२२

सिव नांम

पसुपति संभू परब्रह्म जोगांण गांणवर,
माहेसुर ईसांण सिवं संकरं त्रिसूलधर।
नागाणंद नरयंद जोग वासिद्द सारविद,
त्रिह्लोचन (रत तास अंग भभूत सुघसत)।
पारवतीपति जख्यंपति भूतांपति प्रमथांपति,
(कर जोड़ अेम हरियंद कहि नमो नमो) नागांपति ॥—२३

देव नांम

जरारहित (जिण अंग सोभा आकासं),
आदितपुत्र (अहिनांण अखिल सुरलोक अवासं)।
अमृत-पान-आधार विवुध (कहि) दानव गज्जं,
(अंगां आभा अमळ रोम तारागण सभझं)।
(तेतीस कोड़ संख्या तवी सेससिरोमण मांहि सहि,
कर जोड़ अेम हरियंद कहि कुसललाभ देवांण मयि) ॥—२४

---

१ देवगण अहिगण वंदं=देवगण-वंदं, अहिगण-वंदं।

२ कछ-मछ अवतार=कछ-अवतार, मछ-अवतार।

दूहा

सोई ग्रंथां थी सुण्यो, जोई वर्णिय जांण।
सोई जोई धर सुकवि, आदि अंत अहिनांण ॥—२६

धू अंबर जां लग धरा, रिवू रांम ज्यां राज।
तां पिंगल अखी तवां, सकल सिरोमणि साज ॥—२७

इति श्री महाराजाधिराज महारावल श्रीमान
पाटपति तस्यात्मज कुंवर सिरोमणि हरिराज
विरचितायां पिंगल सिरोमणे उडिंगल नांम-
माला चित्रक कथनं नाम सप्तमोध्याय।

●

सं० १८०० वर्षे श्रावण सुदि ६ चन्द्रवारे लि. प्रो. दुर्गादास
गुमानीराम। सेवग वसुदेवजी तत्पुत्र सदाराम पठनार्थ।

पर्यायवाची कोष—२

नागराज डिंगल-कोष

नागराज पिंगल विरचित

नागराज डिंगल-कोष

अगनी नांम

धिधक धोम वनि दहन जळण जाळण जाळानळ,
हुतासण पावक भोम सुरांमुख उळत अळियळ।
मंगळ अगनी जुनी क्रपीठ दावानळ (देखहु),
साथण[1] क्रोध समीर हाडजळ अनळ अदोखहु।
वेदजा कुण्ड हुतमुक वहन अधर असम (इण विध वही),
(कव कवत अेह पिंगल कहै तीस नांम) जाळानळ (सही) ॥—१

इन्द्र नांम

मघवा इन्द्र महीप दीप (सुरलोक) आखंडळ,
सचीराट सामन्त वैर वैत्रासुर-तंडल।
कौशक धारणवज्र पाकसासन जववेदी,
परुहूत कळअच्छकेळी काराग्रह-राक्षसकैदी।
(तस पुत्र जयंत सुतपाभगत) कळधारण बिरखाकरण,
(कव कवत अेह पिंगल कहै वीस नांम) इन्दरह (तण) ॥—२

सुनासीर सुरईस सहसचख (जिमा) सचीपति,
पराखाड़ दुरातसत्य पाकसासन पूरबपति।
रिपवळी रिखव स्वराट हरी वासव जळधारी,
व्रिखा हलमि विवह मेघवाहण वरनारी।
सत्यमृत्यु सूत्राम निरध्यक्षव अछरवर आखंडळी,
उग्रवन्त इन्द्र विडोजा हरि (इन्द्र नांम इण मंडळी) ॥—३

हाथी नांम

एरापत गज सहड सिंधुर मातंग गणेसर,
सारंग कुंकम करी अथग फौजां-अग्रेसर।
तंबेरव सूंडाळ डीलढ़ाळो ढळकंतो,
देवळ-थंभो (दुरस मेर) हसत महमंतो।

---

[1] साथण क्रोध समीर=साथण-समीर, साथण-क्रोध।

गज - सावज (कहिये) गहीर कौमक - वाहण अतुर - क्रम ,
(कव कवत अेह पिंगल कहै बीस नांम) गजराज (इम) ॥—४

ऊंट नांम

गिडंग ऊंट गघराव जमीकरवत जाखोड़ो ,
फीणनांखतो (फवत) प्रचंड पांगळ लोहतोड़ो ।
अणियाळा उमदा आंखरातंवर (आछी) ,
पींडाढ़ाळ प्रचंड करह जोड़रा काछी ।
(उमदा) ऊंट (अति) दरक (द्रव) हाथीमोला मोलघण ,
(कव कवत अेह पिंगल कहै बीस नांम) ऊंटां (तण) ॥—५

समुद्र नांम

उदध अंब अणथाग आच उधारण अळियळ ,
महण (मीन) महरांण कमळ हिलोहळ व्याकुळ ।
वेळावळ अहिलोल वार व्रहमंड निधूवर ,
अकूपार अणथाग समंद दध सागर सायर ।
अतरह अमोघ चड़तव अलील वोहत अतेरुडूवण ,
(कव कवत अेह पिंगल कहै बीस नांम) सामंद (तण) ॥—६

घोड़ा नांम

वाज तुरंग विहंग असव ऊडंड उतंगह ,
जंगम केकांण जड़ाग राग भिड़ग पमंगह ।
तुरी घोड़ो तोखार वाज वरहास (बखांणो) ,
चींगो रूहीचाळ वरवेरण (वखांणो) ।
(वावीस नांम वाणी वोहत कवि पिंगल कीरत कही) ,
(ग्रंथ आद देखे मतां) सबळ (नाम सारां सही) ॥—७

धरती नांम

तुंगी वसुधा इळा भोम भरथरी भण्डारी ,
खाक जमी दरदरी धरैती धूतारी ।
मही मूळा रिणमंडप मुगत बेहरी खिणबाळी ,
अचळा उदै गिरधरण सुथर सुन्दर सोहलाळी ।
अटळज भूला चिंगरज गिरद (घांसावण भूपत घणा) ,
(कव कवत अेह पिंगल कहै तीस नांम) प्रथ्वी (तणा) ॥—८

तरवार नांम

खांडो किरमर खग धड़च वांकल धाराळी,
सुधवट्टी समसेर मालवन्धण मूछाळी।
कड़बांधी केवाण विजढ़ वांणास चमक्की,
तोल धूप तरवार सगत आसुधर चक्की।
किरमाळ सूर-झटका-करण (घणू मरद वांधै घणा),
(कव कवत अेह पिंगल कहै तीस नांम खांडे तणा)॥—९

महादेव नांम

ईसर सिव हर अंब अखव-धुज अह्म कपाळी,
संभु रुद्र भूतेस त्रयण तोड़ण मझताळी।
अेकलिंग लोदंग गंगसिर भंग-अहारी,
नीलकंठ मुरनैण बाणपत्ती जटधारी।
सिसमत्थ बिहारी सूळहथ गिरजापत वासव (गिणा),
(कव कवत अेह पिंगल कहै तीस नांम) संकर (तणा)॥—१०

भाला नांम

भालो सेल अभाग झळळ ऊझेळ सावजळ,
कूंत अणी असि (काज) अलळ झाळांमुख साबळ।
खिवण डहण अतखंभ ग्रहण-वैरी उग्राहण,
सापिण·····छड़ाळ सांग गांजा चौधारण।
वळकती-केळ लसकर (वळे) करणपोत हसती-कणा,
(सांम रै सुकर सोहै सदा तीस नांम बरछी तणा)॥—११

सूरज नांम

तरण दिवायर तिमहर भांण ग्रहपती भासंकर,
हीर जुगण मिण महर रसण आराण रातंवर।
रानापति दिव विंव मित्र हर हंस महाग्रह,
पिंगळ विरळ पतंग धीर सांमळ जगचख्खह।
आदीत उदोत सपत हरमोद समंडळ चक्रधर,
(छतीस नांम) सूरज किरमाळ ज्योत विरोचन तिमरहर॥—१२

आंख नांम

चरस आंख चामणी नैत्र दिग नजर निरम्मळ,
लोचण कायालज जोय रतन कायाजळ।

कांमथीठ कटाक्ष सार मोहन मनरंजन,
(काम·····सिव्र काज भवन) विमल जगभाळण।
(बावीस नांम बांणी बोहत जाणग गुहियण लहै),
(कव कवत अेह पिंगल कहै अयनवीस) चक्षु (चहै) ॥—१३

सेर नांम

म्रगपत आननपंच सिंघ सादूळ मतंग-रिप,
किंदर-ग्रह कंठीर (लाइ) दीरघ-छल करछिप।
लोहलाठ लंकाळ भूप-वन रिण-नह-भागह,
सनमुख-भाला-सहण जोग एकवळा (जगह)।
केसरी खिणकर चोळचख ढुंढराव आवद्धनख,
सारंग (नांम पिंगल) सवज अयनवीस (सजा दिखत) ॥—१४

गरुड़ नांम

सुतपावाहन (सरस) दुरस खगराज (दरसिये),
नागान्तक निखळ मरुतभानह (गुण असिये)।
वेन-तनय लघुअसण चरणह्वै भुजा-वेद-चव,
वायु-विरोधी जतीवाह कसप-तनु हेकव।
तारक्ष भक्ततारणतरण (सीतहरण सीतासमर),
(वसु अयन नांम पिगल बचन) गरुड़ (नांम गाढ़ा गुयर) ॥—१५

पांणी नांम

भू अल हर अंब भख तरंग भ्रजण जोतंबळ,
रंग पांणी टातंब भोमीवळ है सेतंबळ।
नीर वार नीलंठा छापि सी थट्ट वंधाणी,
नर अंतर नीचंध पणंग पयोहवा आंणी।
भरनाळ अभुत उदंग गंगजळ उजळ सीतळ (अखही),
(तीस नांम पांणी तणा कवत अेह पिंगल कही) ॥—१६

पुनः हाथी नांम

एरापत गज सिहर सिंधुर गण खंभ गणेसुर,
मदकरण उदमद्द (वणै) अंगखंभ बणेसुर।
ढाह ढोह ढींचाळ ढाळो ढळकंतो,
अतीसील आवरत मैर हसती मयमंतो।

सूंडाळ सकज (ओपी) सथिर (घणू विसद आगळ घणा),
(कवि नागराज पिंगल कहै वीस नांम) हसती (तणा) ॥—१७

मेघ नांम

पावस प्रथवीपाळ वसु हब्र वैकुंठवासी,
महीरंजण अंब मेघ इलम गाजिते-आकासी।
नैणे-सघण नभराट ध्रवण पिंगळ धाराधर,
जगजीवण जीभूत जलढ़ जळमंडळ जळहर।
जळवहण अभ्र वरसण सुजळ महत-कळायण (सुहामणा),
परजन्य मुदिर पाळग भरण (तीस नांम) नीरद (तणा) ॥—१८

चन्द्र नांम

निसमंडण निसनैण सोम सकलंकी ससिहर,
राजा रतन निरोग इंदु दुज जटा-अमीझर।
मयंक म्रगाअंक अम्ब नरजपूरी तारापत,
रोहणीवर राकेस किरण-ऊजळ सकळीव्रत।
वादल[1] कमोदी निसचरण प्रमगुरु उडूपती सीमंग (सुय),
चकवी-वियोग चकोट विधु चन्द (नांम) सुभ्र (सम्रदुय) ॥—१९

पुनः सिंह नांम

गजरिपु साहल ग्रीठ वांग वनराज कंठीरव,
पंचायण गहपूर वाघ (जच) सिख भुभारव।
महाताव म्रगराव सीह कंठीर संहारण,
काळ कंकाळ नहाळ दुगम दाढ़ालह डारण।
अमल मयंद अणभंग हरी मंगहदी जख म्रगमारण,
पंचाण (सित पिंगल कहै तीस नांम) केहर (तणा) ॥—२०

• ● •

[1] 'बादल'

पर्यायवाची कोष—३

हमीर नांम-माला

हमीरदान रतनू विरचित

श्री गणेसाय नमः   श्री सारदाय नमः

अथ हमीर नांम-माला

गीत बेलियो

गणेस नांम

गणपति हेरंब लंबोदर गजमुख,
सिद्धि-रिद्धि-नायक[1] बुद्धि-सदन ।
एकदंत[2] सूंडाळ विनायक,
परमनंद[3] (हुयजै प्रसन्न) ॥—१

पारबती नांम

(तूझ) मात[4] गोरी पारबती, हरा संकरी[5] बीस-हत्थी[6] ।
उमा अपरणा अजा ईसरी, काळी गिरजा सिवा (कथी) ॥—२
देवी सिंघ-वाहणी दुरगा, जगजणणी[7] अंबिका (जिका) ।
भगवंती चंडका भवानी, त्रपुरासुर-स्यांमणी[8] (तिका) ॥—३
माहेस्वरी तोतळा[9] मंगळा, सरवांणो त्रसकत[10] सकत ।
तुलज्या[11] त्रिलोचना कात्यायनी, महमाया (हुयजे मदति) ॥—४

मूसा नांम

मूसक[12] ऊंदर[13] खणक सूचीमुख, वजरदंत आखू असवार ।
देवां-आगीवांण[14] (हुकम दे भणू सुजस राधा-भरतार) ॥—५

सरस्वती नांम

भाख गी सरस्वती भारती, वाक्य गिरा गो वच वचन ।
ब्रह्मांणी सारदा सुवांणी, धवळा-गिर-वासणी (धन) ॥—६

(घ) : ४ संकरा ६ बीस-हथि ७ जगजननी ।
(द) : १ सिध-बुधिनायक २ एकरदन ३ परमनंदन ४ तुहिज मात ८ सुरसांमिणी ९ तोतला १० त्रिसकति ११ तुलजा १२ मुस्यक १३ ऊंदिर १४ देवां-अगेवांण ।

हंस नांम

चक्रांग धीरट मुकताचर मानसूक[1] अविदात[2] मराळ,
हंस सुचलि लीळग-वाहणी (कणा राखि जिम कथां कपाळ[3]) ॥—७

बुधी नांम

धी प्रगना[4] मनीखा धिखणा,
मेधा आसय[5] समभ मति।
अकलि[6] चातुरी सुबुधी (आपजै,
प्रभणां गुण त्रिभवण-पति) ॥—८

परमेस्वर नांम

अभुवणनाथ[7] रणछोड़ त्रिविक्रम[8],
केसव माधव कृष्ण[9] किल्यांण[10]।
परमेस्वर करतार अपंपर,
प्रभु परम गुरू पुरिखि-पुरांण[11] ॥—९

हर[12] रुघवंस[13] विसंभर नरहर,
गोविंद जगतारण[14] गोपाळ।
मोहण बाळमुकंद मनोहर,
देव दमोदर दीनदयाळ ॥—१०

कांनड़ रासरमण करुणाकर,
अंतरजामी अमर अनंत।
वीठळ व्रजभूखण लिखमीवर[15],
भूधर भगतवछळ भगवंत ॥—११

सामळ कमळनयण मधूसूदन,
धरणीधर सेवग-साधार।
वामण[16] वळिबंधण जगवंदण,
कंसनिकंदण नंदकुमार ॥—१२

(अ): ४ प्रागिरा ५ आसई ६ अकल ८ त्रविक्रम ११ पुरख-पुरांण १२ हरि १३ रघुवंस १४ गजतारण १५ लिखमीस्वर १६ वावन।

(ब): १ मानसोक २ अवदात ३ क्रिपाळ ७ त्रिगुणनाथ ९ किसन १० कल्यांण।

असुर-दहण[1] धर-भार-उतारण,
भू-तारण नरसिंघ[2] सधीर।
वासुदेव केवल जदूवंसी,
[विसन किसन अविगत बळि-वीर]* ॥—१३

मुरळीधर सुंदर बनमाळी,
गोकळनाथ चरावण-गाय।
[निराकार निरगुण नारायण]†,
[रुकमणकंथ सिरोमण-राय]§ ॥—१४

रीखीकेस[3] राघव सारंगी,
सुरनायक असरणसरण।
पुरखोतम[4] धारण-पितांबर,
वारिजलोचण घणवरण ॥—१५

घणनांमी अवगति[5] आणंदघन,
आदपुरख[6] ईसर अखळीस।
चिदानंद पावन अघमोचन,
जनम-मरण-मेटण जगदीस ॥—१६

सारंगधर गिरधर जगसांई[7],
अलख अगोचर अजर अज।
भवतारण भैहरण अभंगी[8],
धणी महणमह गरुड़धज ॥—१७

व्रंदावनवासी ब्रजवासी,
अवणासी[9] अवतार-अनेक।
जोतस्वरूप[10] अरूप निरंजण,
अणहद-सबद[11] परमपद एक ॥—१८

पतराखण श्रीपत सीतापत,
निकळंक निगम निरोत्तम (नांम)।

(ग) : २ नसंघ ३ रखीकेस ४ पुरसोतम। * [विस्वक सेन विसन बलवीर]।
§ [रुक्मिणिकंत सिरोमणि-राय]।

(ट) : १ असुर-दहण ५ अविगत ६ आदिपुरखि ७ अकलीस ८ जलसांई ९ त्रिभंगी
१० जोतिसरूप ११ अनहद। [† निकलंक निराकार नाराइण]।

लंकलियण सहोदर-लिखमण,
रुघराजा रावण-रिपु रांम ॥—१९

पदमनाभ चत्रभुज चक्रपांणी,
मछ कछ आदि-वाराह मुरारि।
पार-अपार सकळ-जगपाळक,
बहोनांमी[1] (सूरत वळिहार)[2] ॥—२०

ब्रह्मां नांम

[ॐ ओ ब्रह्मा आतमभू][*],
विधि कोलाळी चत्रवदन।
धाता वेधा द्रुहिण विधाता,
वेद-भेद-समभण-वचन ॥—२१

परमेसटी विरंच पितामह,
कमळासण कमळज लोकेस।
(कै) सुरजेठ हंस जगकरता,
हिरण-गरभ[3] अज जनक-महेस ॥—२२

सिव नांम

सरब महेस ईस सिव संकर,
भव हर वोमकेस भूतेस।
संभू अचलेसर[4] कोटेसर[5],
जोगेसर[6] जटधर जोगेस ॥—२३

महादेव रुद्र भीम पंचमुख[7],
सांमी[8] चंद्रसेखर[9] समराथ।
धूरजटी श्रीकंठ प्रमथाधिप[10],
नीलकंठ पारवतीनाथ ॥—२४

[त्रिबंक भारग पिनाखी त्रिनयण][†],
वांमदेव उग्र ईसवर।

(अ) : ४ अचेस्वर ५ कोटेस्वर ६ जोगेस्वर ८ स्वामी ९ चंद्रसिखर १० प्रमुथादिप।
† [अंब-सरब पिनाकी त्रिनयन]।

(ब) : १ वहनांमी २ मूरिति वलिहार ३ हरणि-गरभ ७ पंचमुद्र।
* [ओं ब्रह्मा ओहिज आतिमभू]।

पीअण-जहर[1] गिरीस कपरदी,
धमळ-आरोहण[2] गंगधर ॥—२५

सूरज नांम

(सत-रज-तम-गुण विष्ण ब्रह्म सिव,
त्रण देवत वसुदेव तण)।
जोत-प्रकासण कोटि सूरज (जिम),
कमळ-विकासण दिनकरण ॥—२६

मारतंड हरिहंस गयणमिण,
वीरोचन रांनळ[3] सुंवर।
[भांण अरजमा पतंग भासंकर]*,
[कासिप-सुतन रवि सहसकर]† ॥—२७

प्रभा विभाकर वरळ ग्रहांपत,
अरक करम-साखी आदीत।
मित्र चित्र भाणू अंसुमाळी,
प्रद्योतन उद्योत प्रवीत ॥—२८

विवसवांन दुतिवांन विभावसु,
तरण तपन सविता तिगम[4]।
रातंबर भगवांन निसारिप,
जनक‡ - जमण - सिन - करण - जम ॥—२९

[उस्म-रस्म अहिमकर विधिनयण][§],
दुणियर तपधण[5] मिहर[6] दिनंद।
(धन वडिम गोवरधन धारण,
चख यक सूर वियोचख चंद) ॥—३०

चंद्र नांम

सोम सुधांसु सिसि ससिसहर,
कळानिधि उडपति[7] सकळंक।

(घ) : १ पीवण-जहर २ धवल-धारोहण ३ रांचल ४ तिग्म
* [भांण अरजमा पतंग भास्कर] † [कासिप सुत रवि सहसकर]।

(द) : ५ दिणियर ६ महर ७ उडपत § [नसन रसमि अहमकर अधन अनि]।
‡ जनक-जमण, जनक-सिन, जनक-करण, जनक-जम।

कुमदवंधु　श्रीवंधु[1]　हेमकर[2],
म्रग-अंक　द्रुजराज　मयंक ॥—३१

सुभ्रकर　किरणसनेत　समदसुत,
रोहणी-धव　नखत्रेस　निरोग।
इंदू　औखदी-ईस　अम्रतिमय,
विधू　रतन　चकवाक-वियोग ॥—३२

प्रमगुरु　सोलह-कळा　संपूरण,
(पौहचि　वडी तै वडौ प्रमांण)।

समुद्र नांम

मथण महण दध[3] उदध[4] महोदर[5],
रेणायर　सागर　महरांण[6] ॥—३३

रतनागर　अरणव　लहरीरव,
गौडीरव　दरीआव　गंभीर।
पारावार　उधधिपत　मछपति,
[अथग　अंवहर अचळ अतीर]* ॥—३४

नीरोंवर　जळराट[7]　वारनिधि,
पतिजळ　पदमालयापित[8]।
सरसवांन　सामंद,
महासर[9] अकूपार उदभव-अम्रति[10] ॥—३५

नदी नांम

नदी　आपगा　धुनी　निमनगा[11],
परवतजा　जळमाळा　(पणी)।
[श्रोताश्रोत　श्रवेती　श्रवती]†,
तटणी　तरंगणी　(नांम　तिणि) ॥—३६

वाहा　जंभाळणी[12]　प्रवाहा,
सेलवणी　निरझरणी[13]　साव।

(अ) : ७ जल-रास　८ पादमालय-पार्वत　९ महासूर　१० उदध-यंम्रत　११ निहंगा　१२ जवाहणी　* [अथ अंवहर अतर अतीर]।

(व) : १ सीमंत　२ हिमकर, हमकर　३ दधि　४ उदिधि　५ महोदधि　६ महिरांण　१३ नीझरणी　† [श्रोत श्रोतस्वती श्रवंती]।

कुलय खगा वाहणी कुलया,
सिंधु दीपवतीं संभलाय ॥—३७

[(सरित तणो पती गिणि सायर]*,
मेघ सिध तणो मैहरांण।
सदा वास करि पौढ़ै सुखिया,
विसन समंद जामात वखांण) ॥—३८

तरंग नांम

उरमी वेळ क्रिलोळ (आखिजै),
(तविजै) भ्रमर इलोळ तरंग।
[वेलू छौळ उरमावळि वीची]†,
(भणि) नुतकळी कावळी भंग ॥—३९

(तास नांम) वेळावळ (तवीजै),
वेळा उळधी उजळ वहाय ॥—४०

लिखमी नांम

वेळा-वळधी श्रीया (वचाई),
प्रभा रमा रामा भा पदमा।
कमळा चपळा (ताई कहाई) ॥—४१

लेखवि (नांम) इंदरा लिखमी,
(लिखमी-वर नाइक सुरलोक।
सहिवातां राखै हरि सारै,
थारै भला हुग्रै सह थोक) ॥—४२

गंगा नांम

जगपावन त्रिपथा जाहनवी[1],
सुरगनदी सुरनदी (सुचंग)।
सरितिवरा[2] रिखधुनी[3] हरसिरा ॥—४३

गोम-गमगा हेमवती गंग,
सहसमुखी आपगा सुरसरी।

(ग) : १ जन्हवी २ सरतवरा ३ रिखब-धुनी * [सरता तणो पती गिण साग(य)र]
† [वेल छोळ उरमदि वल वीची]।

भागीरथी त्रिपथगा (भाळि),
मंदाकनी हरिपदी (महिमा)।
(पवित्र हुई हरि-चरण पखाळि) ॥—४४

जमना नांम

जम-भगनी काळिंद्री जमना,
जमा (वळे) सूरिजिजा (जांणि)।
क्रष्ण तास पासि की कीळा,
विसन बाळ-लीला वखांणि) ॥—४५

सरप नांम

सरप दुजीह फणी पवनासण[१],
आसी-विख विखधर उरग।
गरलस भुजग[२] भुजीस भुजंगम[३],
पनंग[४] सिरीश्रय गूढ़-पग ॥—४६

दंद-सूक[५] भोगी काकोदर,
कुंभीनस दरवीकर काळ।
चील प्रदाकु कंचुकी चक्री,
वक्रगती जिह्मग[६] अहि व्याळ ॥—४७

लेलिहांन चखश्रवा विलेसय,
दीरघ-पीठ कुंडळी (दाखि)।
(काळिनाग नाथियो कांन्हड़,
भूपो-भूप तणो जस भाखि) ॥—४८

सेस नांम

अनंत यक[७]-कुंडळ (वळि) आळुक,
भुजगपती[८] (कहि) महाभुजंग।
जीह-वीसहस बिसहस-नेत्रजिणि,
पनंग-सेस (हरि तणो पलंग) ॥—४९

(अ) : १ पवनासन २ भुजंग ३ भुजंगमु ५ दुंदुसूक ६ जिमगै ७ अणक ८ भुजंग-ईस।
(ब) : ४ परंग।

पताल नांम

(तवां) वाडवा-मुख प्रिथमीतळ,
पनंग-लोक अध-भुयण पताळ ॥—५०

भूमि नांम

भूमि जमी प्रिथी[१] प्रिथमी[२] भू,
पहवी[३] गहवरी[४] रसा महि।
इळा समंद-मेखळा अचळा,
महि मेदनी धरा महि ॥—५१

धरती वसुह वसुमती धात्री,
क्षोणी[५] धरणी क्षिमा[६] क्षिती[७]।
अवनी विसंभरा अनंता,
थिरा रतनगरभा सथिति ॥—५२

विपळा वसव कु भती वसुधा,
सागर-नीमी सरबसहा[८]।
गोत्रा गऊ रसवती जगती,
मिनखां-मन-मोहणी (महा) ॥—५३

(उरवी मुरपग ले भरिउभौ,
वांमण रूपी ब्राहमण।
वलि राजा छळि जैण वांधियो,
नमो पराक्रम नारिअण) ॥—५४

धूल नांम

धूळि खेह रज रजी धूसरी[९],
सिकता[१०] रेण[११] सरकरा संद।
वेळू रेत पांसु (वाळो),
(मुख जिण हरि न भजै मतमंद) ॥—५५

(ङ) : १ पथी २ पथमी ३ पोहमी ४ गहरी ५ खोणी ६ खिमा ७ खित
९ धूंसली १० सिकत ११ रेत।
(ट) : ८ सरवनूहा।

वाट नांम

वाट वरतमा गैल वरत्री[1],
पंथ निगम पदवी पथिनि[2] ।
ऐन[3] सचरण[4] मारग अथवा,
सरणी संचरण प्रचर सन ॥—५६

(उत्तम राह चालि ग्रहि उत्तम,
करग दान पुनि ग्रहि सुकृति ।
भाखि सांच जग मांहि भलाई,
चत्रभुज चरणौं राखि चित) ॥—५७

वन नांम

विपन गहन कानन कछ[5] वारिख,
कांतार ऊख[6] दुरग (कहाई) ।
आरण[7] खंड व्रंदावन[8] अटवी[9],
(गोविंद तेथ चराई गाई) ॥—५८

व्रख नांम

सिखरी फळग्राही व्रख साखी,
[विस्टर-मही रुह तरोवर]* ।
[कुंट विटपी महीसुत कीरसकर]† ,
घणपत्र पत्री खगांघर ॥—५९

[कुसमद अद्भुज फळद कराळद]§ ,
[निद्रा-वरत फळी निनंग]‡ ।
खितरुह रूंख अनोकुह दरखत,
अद्री अद्रप झाड़-अंग ॥—६०
(चीर चोरि तर ऊपर चढ़ियौ,
गोपंगना तणा गोपाळ ।
अरज करै ऊभी जळ अंतर,
दे व्रजभूखण दीनदयाळ) ॥—६१

(अ) : १ वरतणी २ पधीपत ३ ओन ४ सचेरण ५ करव ६ झख ७ अरनि ८ वनरावन ९ अटावी * [विसटर द्रुम द्रु तरोवर कूट] † [विट महवी-सुत महका करसकर] § [कुसमज अद्भूत फरज करालिक] ‡ [निघावरत फली नवनंग] ।

फूल नांम

लेखवि[1] फूल मणी-वक हलक,
सुम सुमनस फळ-पिता[2] कुसम।
सून प्रसून कल्हार[3] सुगंधक[4],
नांम रगत संधक नरम ॥—६२

उदगम-सुमना पुसप लता-अंत,
(पुसपति के कहिजै प्रिवित।
श्री रिणछोड़ तणौ सिर छौगो,
ईख निजरी भरीजै अक्सिति) ॥—६३

भमर नांम

रोळ-वंब[5] चंचरीक भंकारी,
भ्रमर द्विरेफ[6] सिलीमुख भ्रंग।
कीळालप[7] कसमल-प्रिय मधुकर,
सोरंभचर खटपद सारंग ॥—६४

(दाखि) मधुप हरि (नांम) इंदु-दर,
वाळ मधु-ग्राहक मधु-वरत।
(पुसप-गंध रस अलिग्रळ पाळग,
भगतवछळ पाळग भगवंत) ॥—६५

वांनर नांम

मरकट गो लांगूळ[8] वलीमुख,
पलंवंग[9] पलवंगम[10] पलवंग।
कीस हरि वनग्रोक[11] वनर कपि,
साखा-म्रग[12] फळचर सारंग ॥—६६

(तास कटक मेले दसरथ तणा,
लोपि समंद लीधो गढ़ लंक।
मम करि ढील म धरि मन माया,
समरि समरि श्रीरांम निकंक) ॥—६७

(क) : १ लेखप २ सफल-पित ३ कलवंत ४ सुगंदक ५ रोलंब ६ दुरेफ ७ कलालीप ८ लांगूर ९ प्रगल १० पलवदंगम ११ वनमुक १२ साखा-चर।

हिरण नांम

वातप[1] हिरण एण वातायू[2],
संकु हरि प्रखत कुरंग।
म्रग (रूपी मारीच मारियो,
भुजां भांमणी रांम अभंग) ॥—६८

सूअर नांम

कोड़ आस[3] लांगळ (अर) सूकर,
दुगम वाडचर गिडि[4] दाढ़ाळ।
घ्रोणी (अनै) आखणक घ्रिष्टी,
एकल बहु-प्रज दात्रीडीयाळ ॥—६९

कोल[5] डारपति थूळनास किर,
(दाखत) वध-रोमा भू-दार[6]।
(कहि) दंस्टरी सीरोमरमा (कहि),
आदी-वाराह (प्रभू अवतार) ॥—७०

सिंघ नांम

वाघ सिंघ[7] कंठीर कंठीरव,
सेत पिंग अस्टापद सूर।
म्रगइंद्र[8] (कहि) पारंद[9] पंचमुख,
पंचसिख पंचाइण[10] गहपूर[11] ॥—७१

अभंग सरभ सादूळ नखायुध,
हरि जख केहरी मंगहर।
महानाद[12] म्रगपति[13] म्रग-मारण,
अस्टपाद गजराज-अरि ॥—७२

(कोपमान नरसिंघ रूप करि,
विकट विराट वदन विकराळ।
सोखे रगत असुर हरिणाकस,
प्रभु प्रह्ळाद भगत प्रतिपाळ) ॥—७३

(अ) : १ वात-पियण २ वातापी ३ आसि ४ गिड ५ कवल ६ भू-धार ७ सीह ८ म्रगेंद्र ९ पारइंद १० पंचायण ११ ग्रहपूर १२ माहानाद १३ वनपति।

हाथी नांम

गज सामज मातंग मतंगज,
हाथी इभ हसती हसत।
कुंजर सिंधुर करी पौहकरी[1],
मैंगळ दोईरद[2] मद-मसत ॥—७४

गैमर नाग गइंद[3] धैंधींगर,
वारण भद्रजाती वयंड।
सारंग कंबु सुंडाळ सिंघळी,
पट-हथ[4] तंबेरव प्रचंड[5] ॥—७५

द्विप हरि व्याळ पटाभ्रर दंती,
कुंभी वेरक यभ अनेकप।
(अनंत संत गजराज उधारण,
जपि गिर-धारण तणो जप) ॥—७६

पीपल नांम

(वदि) चळ-दळ कुंजर-भख अस्वथ,
श्रीव्रख बोधीव्रख सुव्रख।
(प्रथी विखै उत्तम फळ-पीपळ,
परमेस्वर उत्तम पुरखि) ॥—७७

वड़ नांम

वैश्रवणालय ध्रूग्र[6] साखा-व्रख,
(गिण) रतफळ वटी[7] जटी निग्रोध।
(पांन प्रयाग वड़ तणै पौढ़ियौ,
सुजि हरि समरि ऊवर करि सोध) ॥—७८

वांस नांम

तुची-सार त्रिधज[8] मसकर तस,
प्रभणां जळफळ[9] सत-परव।

(ज) : १ पुनकरी २ दोयरहन ३ गयंद ४ पट-हर ५ परचंड ६ ध्र्ुव ७ वट
८ त्रग-घूज।
(द) : ९ जव-फल।

गैरुक[1] महारजत[2] (वळि) गारुड,
भूर अस्टपद (अग) भरम।
(नांम) अगिनवीरज जांबूनद[3],
रजत-धात ओपम रुकम[4] ॥—९१

(कह) तपनीय पीतरंग कुंरमदन[5],
जात-रूप कळधोत (जथा)।
(लाख जुगां लग काटन लागै,
कलंक न लागै रांम कथा) ॥—९२

रूपा नांम

हंस रूपो खिरजूर हिमांशु[6],
सेत रजत[7] दुंर-वरणक[8] (सोई)।
जात-रूप कळधोत सार-जग[9],
(हरि सेवियो तिकां घरि होई) ॥—९३

तांबो नांम

सुलंब धिस्टि[10] कनीअस[11] (अर) सावर[12],
मरकट आसि मलेछमुख।
वरसट मेछ (वळै) व्रिम वरधन,
रगत उतंवर[13] (नांम रुख) ॥—९४

(सद ओखदो परसि तांवो सुज,
सोव्रन घात हुवै ततसार।
राघव तणी परसतां पद-रज,
इमि गोतिमि त्रिय हुओ उधार) ॥—९५

लोह नांम

किसना-मिख[14] अय घण काळायस,
सिला-सार[15] तीखण घण सार।

(अ) : १ गारक २ माहारजत ३ जामूनद ४ रुखम ५ कुनण ६ हिमांसु
७ स्वेत-वरण ८ दुर-जतक ९ ताई जग १० विस्ट ११ कनिस्ट १२ सावक
१३ उदमहर १४ क्रसण-मुख १५ गिर-सार।

[पिंड पारथ करुक पारसव]* ,
ससत्रक ससत्र सत्रां-संधार ॥—९६

(वोटरा लोह पाप री वेड़ी ,
सेवा करी हरि जांणै सही ।
कहि चिति निति सपवित्र हरि कीरति ,
कीरति वेद पुरांण कही) ॥—९७

मुलक नांम

विखय[1] मुलक रासट उपवरतन ,
जनपद नीव्रति देस जनात ।
मंडळ (न को अेहड़ो व्रज-मंडळ ,
अवतरिया हरि करण अख्यात) ॥—९८

नगर नांम

नगंम पुरी[2] पुर[3] पटण[4] निवेसन ,
नगरी पुट[5] पतन नगर ।
अधिस्थांन[6] अपस्थांन (ईखतां ,
सहरां सिर मथुरा) सहर ॥—९९

तळाव नांम

सर वरख्यात पुसकरण[7] सरसी ,
पदमाकर कासार (प्रमांण ।
सिरहर अवसरां नारियण सिर ,
वडो) तळाव तडाग जीवांण ॥—१००

नीर नांम

नीर खीर दक उदक कुलीनस ,
कं पौहकर[8] घणरस कमळ ।
अरुण पाथ पय मेघपुसप अप ,
जीवन (जा दिन पास) जळ ॥—१०१

(अ) : १ विखै २ नभ-पुरी ३ पुट ४ पाटण ५ पुट-भेदण ८ पूकर ।
* [पिंड पथर-सुत रूपक पारसव] ।
(ट) : ६ अधिस्टान ७ पौहकर ।

द्वारपाळ डंडी[1] दरबारी ,
(सुजि हरि वळै) पोळियो (सुथार) ॥—११३

घर नांम

ग्रेह[2] ओक आंमास (वळै)[3] ग्रह ,
धवळ संकेत निकेतन[4] धांम ।
पद आसय[5] रहणाक आसपद ,
आलय निलय मिंदर आगांम ॥—११४

वास निवास सथानिक[6] वसती ,
सदन भवन वेसंभ सदम ।
धिसन अगार[7] (जादवां घर धन ,
जिण घर हरि लीन्हौ जनम) ॥—११५

राजा नांम

भूपति भूप पारथव अधिभू ,
विभू प्रभू (अनि) ईसवर ।
परब्रढ़ मधि लोकेस देसपति ,
सांमी भरता नरेसर ॥—११६

नाथ प्रजाप[8] महीपति नाइक[9] ,
अरज ईस ईसर ईसांन ।
नरपती नरिंद[10] अधपति[11] नेता ,
राव[12] राट राजा राजांन ॥—११७

(रांम समान न कोई राजा ,
सरति न काइ सुरसरी समांन ।
सती न काइ समोवड सीता ,
गीता समोवड नको गिनांन) ॥—११८

जुधिष्ठर नांम

भरता नवयराज लखमा[13] (भणि) ,
कौंतयस अजमीढ़ कंक ।

(अ) : १ दंडी २ गेह ३ सरण ४ केतन ५ आश्रम ६ सुथांनिक ८ नाथ-प्रजाह
९ खितनायक १० नरंद ११ अदप-पति १२ राऊ ।
(ब) : ७ आगार १३ लखमण ।

(सुजि) सिलियार अजांत-तणोसत्र ,
(सोम-वंस राजा अंण संक) ॥—११९
पांडव-तिलक पति-हथणापुर ,
धरम-आतमज[1] (तास धन) ।
(जीहां सांच बोल तौ) जुजिठळ ,
(सांच तणो बेली किसन) ॥—१२०

जिग नांम

मन्यु संसर ईसपति (तत) मख ,
(तवि) सविक्रत[2] घ्रिति[3] होम वितान ।
ज्याग[4] सांतोमि[5] बहुरी अधिवर[6] जिगि[7] ,
जिगन (पुरख त्रिभुवण राजांन) ॥—१२१

भीम नांम

(दाखि) पवनसुत बळण वक्रोदर ,
कीचक-रिपि मूंदन[8] किरमीर ।
कौरव-दळण[9] अमावण-कुंजर ,
(भीम सबळ जैं री हरि भीर) ॥—१२२

अरजुण नांम

धनंजय अरिजन जिसन कपीधज ,
निर-कार-रूपी ब्रहनट ।
पारथ सव्यसाची मधिपंडव ,
सक्रनंदन विभच्छ सुभट ॥—१२३
गुडाकेस व्रखसेन फाळगुण ,
सुनर मोक वेधी-सबद ।
गधावेधा सुगत किरीटी ,
महोसूर मरदां-मरद ॥—१२४
सेतअस्व सुभद्रेस करण-सत्र ,
(सखा तास वसदेव सुत ।

(अ) : १ आतमज २ सवक्रत ३ घ्रत ४ जग्य ५ सतोमवर ६ अवधर ७ जग ।
(ब) : ८ मूदन ९ कौरव-दळण ।

कवि 'हमीर' जसवाण आस कर,
नाग पाप मेटै तुरत) ॥—१२५

धनुष नांम

धनुख कारमुख धनव चाप (धन),
करण पिनाक अमत्र कोदंड[1]।
संकर इखु इखुवास[2] सरासण[3],
(पकड़ि भांजियो रांम प्रचंड) ॥—१२६

बांण नांम

प्रखतक[4] बांण कलंब[5] कंकपत्र,
पत्रवाह पत्री प्रदर।
(ईख) तोमर चित्रपूख अजिन्रहमग,
सायक आसुग तीर सर ॥—१२७

ग्रीधपंख नाराज मारगन,
रोपण वसख सिलीमुख रोप।
(पण खग खुर पर रांम सज कर,
काटण दस मस्तक करि कोप) ॥—१२८

करण नांम

सूततनय चंपाधिप[6] रविसुत,
राधातनय करन अंगराज।
(तिण रौ पोहर सवार तवीजै,
कियो प्रभू दातार सकाज) ॥—१२९

दांन नांम

प्रतिपायण निरवधण उछरंजण,
जपि विसरारण[7] विसरजण।
विलसण बगसण मौज विहाइत्ति,
वितरण दत समपण स्रवण ॥—१३०

(अ) : १ कोमंड २ इखूवास ३ सरासन ४ प्रकथक ५ कलंबक ६ चंपादिप
७ विसराणण।

आपण दांन (लंक उचिता-पति,
भगत निवाजण बभीखण।
रावण मरण खयण कुळ राकस,
तिको रांम तारण-तरण) ॥—१३१

जाचिग नांम

ईहण भिखक जाचिन अरथी,
मनरख मांगण मारगण।
जग-आसगर (व) नीयक जाचण,
(तवि दातार दसरथ सुतण) ॥—१३२

दातार नांम

मनमोद मनऊंच महामन,
उदभट त्यागी (प्रगट) उदार।
अपल महेछू उदात उदीरण,
(देवां देव वडो दातार) ॥—१३३

पिंडत नांम

[प्रायंतरु विविस्चति पांडिति,
विधिग धिखिणि कोविद विदवांन।
(गिन) प्रयागिनि बुधि-सुधि दोखगिन,
महाचतुर वेधी धीमांन]* ॥—१३४

सूर ऋस्ट ऋतीलव धवरण-सिन,
विचखण सुलखण विसारद।
विदुख धीर अभिरूप वागमी,
पात्र मनीखी पारखद ॥—१३५

(जांण) प्रवीण कुसळ आचारिज[1],
नैवाइक[2] मतिघण निपुण।
(सोइज महाकवि सुकवि कवेसर,
गिरधारण कहे गुण) ॥—१३६

(अ) : १ आचार्ज २ नइयाहिक। * [आतम-ज्ञ विवसचित पंडित, विदग दखुगिक पंडित बुधिमांन। गिन प्रागिन बुधि-सुधि दोख-गिन, महाचतुर मेधावी मांन।]

जस नांम

जदाहरण सभगिनां सुजस,
वरणत सुसबद सबद वखांण।
सथवाद अरातुती सुपारिस,
प्रिसिधि विरद सोभाग (प्रमांण) ॥—१३७

वाच प्रताप सिलोक गुणावळि,
कीरति ख्यात (विसेख कही।
रांम तणो भूले मत रूपक,
सुर नर समरै नांम सही) ॥—१३८

सूरिमा नांम

कळि जूंझार सुभट अहंकारी,
विक्रा-अंत तेजसी वीर।
(सूर न कोई रांम सरीखौ,
साझण रांवण रांण सधीर) ॥—१३९

तरवार नांम

असिवर मंडळाग्र खांडो असि,
कोखियक निसत्रंस क्रपांण।
चंद्रहास वांणस[1] धात (चव),
करताळीक घाव केवांण ॥—१४०

जडळग विजड़ त्रजड़ धारुजळ,
तेग खड़ग भुजलग तरवार।
किरमर सार रूक खग (हर कहि,
समहर हार-जीत हर हार) ॥—१४१

घोड़ा नांम

धुरज भिड़ज गंधरव (अर) सिंधव,
वाजी वाज पमंग विडंग।
वाह अंव[2] चंचळ वेगागळ,
तारिख[3] ताजी तुरी तुरंग ॥—१४२

(व) : १ वांणास २ अस्व ३ तारक।

असि बरहास तुरंगम अरबी ,
सपती वीती खँग सधीर[1] ।
हय केकांण वितंड हर[2] हैमर ,
(गोविंद रूप कियो हय-ग्रीव) ॥—१४३

सत्र नांम

सत्र केवी सपतन विड सात्रव ,
दुखदायक[3] दोखी दुजण[4] ।
अभमांनी अवजात[5] अराती ,
पंथ-कुपंथन खळ पिसण ॥—१४४

वेधी खेधी दुस्ट विरोधी ,
प्रतपख असहण विपख पर ।
अहिति अचित दसू[6] दुरंत[7] अरि ,
हांणक वैरी वैरहर ॥—१४५

विघनकरण दोखी[8] अणवंछक ,
रिसाघाती[9] घातीक[10] रिप ।
(सिर ऊपर दोखी जम सिरखा ,
नांम सिमर रणछोड़ नृप) ॥—१४६

सेना नांम

पताकनी सेन[11] चक्र प्रतनी[12] ,
वरूहन[13] व्यूह कटक कंधार ।
अनैकनी[14] हैथाट आरहट ,
विकट अनीक सकंधवार ॥—१४७

वरूथनी चमू नांन[15] वाहनी ,
गरट फौज लसकर गैनूळ ।
धूम गदूम समोदनी[16] धमनी[17] ,
सांगर अक्षोहणी[18] कळमूळ[19] ॥—१४८

साथ समूह जन घड़ साधन,
थांगाहर अगणांग घण।
(दळ सिसपाळ तणो देखंतां,
हर कीधो रुकमणी हरण) ॥—१४९

जुध नांम

जुध समुदाय अगागम संजुग,
आहव (अन) अभ्यास अवदीक।
द्वंद आस कंदन प्रव दारुण,
संजुत समित संग्राम समीक ॥—१५०

समर सापरायक मृध समरक,
प्रहरण आयोधन प्रधन।
अभि संपाती महाहवि आजि,
कळह राड़ि विग्रह कदन ॥—१५१

संप्रहार[1] संस्फोट संखि (सुजि),
ताई-प्रयात वेढ़ि रणताळ।
(जुत भारथ दसरथ सुत जीपण,
खर दुखर असुरां खैंगाळ) ॥—१५२

जम नांम; धरमराज नांम

क्रिताअंत[2] अंतक सीरणक्रम,
काळिंद्री-सोदर[3] म्रतु[4] काळ।
समवरती कीनास सूरसुत,
(जपि हरि-हरि काटै जमजाळ) ॥—१५३

मिनख नांम

स्री[5] पुमांन[6] अतिलोकी मांनव,
पंचजन नर पुरुखा पुरख।
धव आदमी गोध कायाधर,
मनुज मरुत[7] मानुख[8] मिनख ॥—१५४

(अ) : २ क्रताअंत　३ कालिंदी-सोदर　४ जम　५ ना　६ पमान　७ मुरत　८ मानिख
(व) : १ संपहार।

(उवे आदमी भलांई अवतरिया,
साख तिकांरी भरै संसार।
सत भाखै राखै हरि सारै,
उत्तिम लखण करै उपगार) ॥—१५५

जनम नांम

जनम उपजण जणण जणक[1] जिणि,
उतपति[2] भव उदभव अवतार।
(दस अवतार लिया दांमोदर,
भगवंत भौमि उतारण भार) ॥—१५६

पिता नांम

प्रथम जनयता[3] सविताव पिता,
विरजा[4] तात जनक (जपि) बाप।
(हरि वसुदेव पिता तिणि हूंता,
अवतरिया जण तारण आप) ॥—१५७

माता नांम

अंबा मा जननी[5] जनयंती;
सवती (नांम कहै संसार,
देव कळा धन मात देवकी,
कूख नीपना नंदकुमार) ॥—१५८

बालक नांम

अरभ कुमार खीरकंठ (उचरि),
(धारि नांम) सिसु स्तन-धय(कहाय)।
पाक प्रथुक लघु-वेस डिभ पुत्र,
साव पोत ऊनान सहाय ॥—१५६

(बाळमुकंद नंद घरि बाळक,
मात लडायां जसोमती।

भगतवछ्ळ गोकळ मनभावन,
पावन मूरति जगतपति ॥—१६०

भाई नांम

भ्राता बंधु[1] सहोदर भाई,
सगरभ ह्िति सोदर सहज।
समानोदरज वीर सोदरज,
(सुजि वळिभद्र कांन्हड़ सकज) ॥—१६१

वडा भाई नांम

जेसट पित्र-पूरवी[2] अग्रज,
मोटो अग्रम (रांम रहि) ॥—१६२

छोटा भाई नांम

बळि कनिम्रान अनुज लघु अवरज,
कनिस्ट[3] जवस्ट[4] (क्रस्ण कहि) ॥—१६३

बैहन नांम

भगनी सिस वैहन बाई (भणि),
भटू सोदरी वीरि (भणि)।
... ...
(जनम मरण रांमण रांम सधीर) ॥—१६४

पग नांम

चळण पाइ गतिवंत संचरण,
(कहि जै) अंध्री ओण क्रम।
पग पय गमन (सदा लग पालण,
करि समरण श्रीरंग) कदम ॥—१६५

कटि. नांम

कलित्र[5] कटीर लंक तनवीचि[6] कड़ि,
मध्यभाग[7] काछनी (मुणि)।

(अ) : ५ कडीत्र ६ विच ७ विछल।
(व) : १ बंधव २ पूरवज ३ कनिस्टि ४ जविस्टि।

(मोर-मुगट राजै कर मुरली ,
तरह भांमरणै तास तणि) ।।—१६६

पेट नांम

पिचंड कूख (गिणि) उदर पेट (पिणि) ,
जठर त्वंत त्वंदी ग्रभ (जांणि) ।
(अनंत देवकी ग्रभ उपना ,
हिति देवां देतां अति हांणि) ।।—१६७

पयोधर नांम

उरज उरोज पयोधर अंचळ[1] ,
(तवि) उर-मंडन कुच सतन[2] ।
(मुख ग्रही सोखी पूतना मारि ,
वडिमि वखांणै धिन विसन) ।।—१६८

हाथ नांम

करग आच हथ[3] हसत दोर कर ,
पंच-साख[4] बाहू भुज-पांण ।
(पांण जोड़ रिणछोड़ पूज जै ,
प्रथी चौगणै वधै प्रमांण) ।।—१६९

आंगली नांम

(आखि) पल्लव करसाख आंगळी ,
(उधरियो तिणि सिर अनड़ ।
व्रज राखियौ विगोयौ वासव ,
वडौ अवर कुण विसन वड) ।।—१७०

नख नांम

भुजा-कंट कर-सूक[5] पुनर-भव[6] ,
नखर पल्लव-सुव करज नख ।
(नख हरणांख उधेड़ि नांखियौ ,
असुरां रिपि जुग-जुग अलख) ।।—१७१

रोमावली नांम

रोम लोम गो पसम तनोरुह,
(रोम-रोम हरि नांम रहाई।
मेटि भरम मन तणो मांनवी,
किसन तणो तूं भगत कहाई) ॥—१७२

ग्रीवा (गलो) नांम

ग्रीव गळो सिरो-धरि[1] गावड़ि,
(कंध कियौ सरीखौ कैकांण।
मधुकैटभ करि कोप मारियौ,
देतां दळण देव दीवांण) ॥—१७३

मुख नांम

आस्य लपन[2] रसनाग्रह आंणण[3],
वक्र तुंड बोलण वदन।
मुख (सुजि लीजै जिणि चरणाम्रति,
कीजै जस राधाकिसन) ॥—१७४

जीभ नांम

वाया वाचा रसना[4] वकता,
जीहा जीभ रसगना[5] जीह[6]।
(इण सौं करतौ रहै आतमा,
दसरथ-सुतन भजन निस-दीह) ॥—१७५

दांत नांम

दुज[7] रद[8] रदन दसन[9] मुख-दीपन,
(दळियौ कंस पकड़ि गज-दंत।
वार-वार करतार बखांणौ,
सुर सिणगार सुधारण संत) ॥—१७६

(अ) : १ सरो-धर २ लपना ४ रसण ५ रसगिना ६ जीहा ७ दुजि ८ रद
९ डसण।

(ब) : ३ आनन।

अधर (होठ) नांम

ओपवरणत रदछदन मुखअग्र[1] ,
ओस्ट होठ रदधर[2] अधर ।
(गोपि अधर खंडन मुख गोविंद ,
पीयै महारस परसपर) ॥—१७७

नासिका नांम

ग्रहण-सुगंध तिलक-मारग (गिण) ,
घ्रोण नास नासिका घ्रांण ।
नाक (रांम छेदन सुपनखा ,
रढ़ मेटण रांमण रढ़रांण) ॥—१७८

नेत्र नांम

लोचन चख द्रग आंखि विलोचन ,
नैण नैत्र अंबुक निजरि ।
देखण दीठि[3] गो जोत मींट (दे ,
हेक मनां मुख देख हरि) ॥—१७९

मस्तक नांम

मस्तक मूढ़[4] मूरधन[5] मौली[6] ,
सीरख[7] वरंग कमळ धू सीस ।
कं उतवंग भ्रगुट (दस-कापण ,
दांन लंक आयण जगदीश) ॥—१८०

केस नांम

सरळ वाळ सिरिमंड सिरोरुह ,
कुंतळ चिकुर चहर कच केस ।
(स्यांमि केस राधा सिर सोहै ,
नाइक राधा किसन नरेस) ॥—१८१

?) : १ मुखाअग्र २ मुखधर ३ द्रढ़ ४ मूढ ५ मूरधा ६ मोली ७ मीरख ।
?) : ३ दृष्टि ।

कान नांम

(नवि) श्रव श्रवण करण वाङकचर,
सुरति धुनीग्रह सांभळण।
कांन सुणण (भागवंत तणी कथ,
वरणव करि अवग्गण वग्गण) ॥—१८२

सरीर नांम

काया गात सरीर कलेवर,
वरखम देही डील वप।
पिंड वंध मूरति पुर पुदगळ,
(अवय विभू-धर तन अलप) ॥—१८३

वसत्र नांम

वसन दकूळ लूगड़ा[1] वसतर,
सोभन तन-ढाकरण[2] सिणगार।
अंश्रुग बास चीर पट अंवर,
(हरि द्रौपदी सपूरण हार) ॥—१८४

सेवा नांम

अण आंटै सेवा (ग्रह आतम),
भजन जाप औळग भजत।
(महाधनि आंन) चाकरी खिजमत,
(सिमरण कर हरि जांण सत) ॥—१८५

मन नांम

ऊंचळ चंचळ चेत अनिंद्री,
पित मनमथ मन गूढ़-पथ।
मांनस अंतहकरण हृदै (मझि,
सदा समरि कांनड़ समथ) ॥—१८६

(अ) : १ लूघड़ा।
(ब) : २ तन ढांकण।

चंचल नांम

पारि पलव चळ लोळ पर पलव,
चहुळ चळाचळ अति-चपळ।
कंप अथिरि अरण-धीरजि कंपन,
(तवि हरि चित मन करि तरळ) ॥—१८७

कांमदेव नांम

कळा केल मधुदीप कंदरप,
मार रमानंदन मदन।
अतन मनोज मनोद्रव[1] अणगंज,
कांम मीनकेतन कमन ॥—१८८

मनमथ हरि प्रद्युमन आतमज,
संवरारि[2] मनसिज[3] समर।
दरपक पुसपचाप दिनदूलह,
सुंदर मनहर पंचसर ॥—१८९

मधु-स्वारथी (अनै) विखमाजुध[4],
अनिनज[5] अवप अकाय अनंग।
सूरपकार[6] प्रसपधन्वा (सुजि),
रितपती जरा-भीर[7] नवरंग ॥—१९०

(कोटि) मकरधज (रूप किसन कहि,
पिता मकरधज किसन पिणि।
असुर सिंघार किसन अतलीवळ,
भगत सुधारण किसन भणि) ॥—१९१

स्त्री नांम

वनता[8] नारि[9] भारिज्या[10] वलभा,
त्रिया प्रिया अंगिना तरणि।
मांणणि[11] चळा ग्रेहणी महिळा,
बाळा अवळा नितंवणि[12] ॥—१९२

जोखा जुवति जोखिता जोखित,
वांमलोचना मुगधा[1] वांम।
सीमतनी तनूदरी सुंदरी,
भीरु तलग कांमकी भांम[2] ॥—१६३

प्रमदा दारा पतनी परंध्री,
कांमणि[3] (वळि) रंगना कलित।
ललना रमणी (सिरोमणी लिखमी,
जास रमण जांमी जगत) ॥—१६४

भरतार नांम

वर भरता भरतार वप्रीढ़ा,
प्रिय प्रांणेय प्रसिटि प्रांणेस।
पीतम इस्टि भोगता (अरु) पति,
रमण वरयता नाह रिदेस ॥—१६५

कांमी वलभ धणी धव कांमुक,
(कांनड़ प्रिया राधिका कंत।
स्यांम कोटि कंद्रप सुंदरता,
अकिळी ज्योति भगवंत अनंती) ॥—१६६

सुंदर नांम

सुलखण[4] कंमन मनोगिन[5] सोभित,
रुचिर मनोहर मनोरम।
प्रीय कमनीय ललित[6] रुचि पेसळ[7],
सिंधु[8] मंजु मंजुळ सुखम ॥—१६७

सुभग सरूप ससोभिति सुंदर,
वांम[9] मधुर अभिरांम वर।
(दरस)[10]रमण रमणीय (दीपतळ),
क्रांत[11] (अधिक कांन्हड़ कंवर) ॥—१६८

(अ) : १ मुग्धा २ भांमण ३ कांमणी ४ सलखण ५ मनोगिण ६ श्रेस्ट ७ सुकलण ८ साधु ९ वांमम १० दसणीय ११ क्रांति।

नांम नांम

अभिखा[1] अंक आह्वय[2] अविधा ।
नांम धेय संग्या[3] (हरि नांम ।
आठई पहर राखि उर अंतर,
वेग टळे दुख दळिद्र विराम) ॥—१६६

मित्र नांम

मित्र स्यांम वाइक[4] मन-मळग[5],
सहकृतवास सहचर सुहृद ।
प्रांणइस्ट वलभतन प्रीतम,
सनिगध सहकारी सुखद ॥—२००

सनेह नांम

हेत राग अनुराग नेह हिति,
प्रीत संतोख मेळ सुख प्रेम ।
हारद प्रणय हेकमन दोहिद,
(गोविंद निगम सूं कर नेम) ॥—२०१

आणंद नांम

मुद आणंद महारस सामुद,
मोद परमसुख प्रमुद प्रमोद ।
रळी हुलास उमंग उछरंग रंग,
(विसन समरि करि) हरखि विनोद ॥—२०२

सुभाव नांम

अनिज विसव सानिज गुण-आतम,
चळगति प्रगति रीति गति चावि ।
सहज सरग निसरग (सुजि) संसिधि,
ननत रूप तक भाव सभाव ॥—२०३
स्वाद रूप (नव) लवण सील सत्र,
तरह (राम भव समंद तर ।

(पा) : १ [illegible] २ आह्वीय ३ [illegible] ४ वाद[illegible] ५ मन-मेळक ।

माधव सिमर देह कर निरमळ,
पाप न लागै येण पर) ॥—२०४

मांण (नांम अहंकार)

मछर समय अहंकार दरप मद,
मांण पांण पौरिसि अभिमांन।
तंव अभिमता गरूर रंढ़[1] (तजि,
धरि मत गरब धरि हरि ध्यांन) ॥—२०५

क्रिपा नांम

(कहि) अनुक्रोस[2] घ्रिणा[3] अनुकंपा,
हंतोगति किरपा महिरि[4]।
मया दया (राखै जग-मंडण),
करणा[5] (निधि हरि भजन करि) ॥—२०६

कपट नांम

परमकोस[6] परवाद[7] व्याज मिस,
छदंभ छेतरण दंभ छळ।
(नांम) लख्य विपदेस उपनिभ,
कैतव चिंतकरि कळह विकळ ॥—२०७

कूट कपट मनद्रोह तोत (कह,
राखण कथ बाधो वळि राउ।
वाचि हमीर वखांण विसन रा,
पूजै पनंग अमर नर पाउ) ॥—२०८

समूह नांम

समुदय व्यूह समूह प्रकर (सुणि),
निकर पटल संचय निकरंब।
पूर पूग व्रज वहुत (पणीजै),
कंदळ जाळ कळाप कदंब ॥—२०९

(अ) : १ रढ़ २ अनुकोस ३ घ्रणा ४ महर ५ करुणा।

(ब) : ६ परमक्रोस ७ परिवाद।

वंछया नांम

ईहा चाहि वंछना इच्छा,
(कहि) वासना चिकीरसव कांम ।
(विमळ हुवै मन मिटै वासना,
रहि एकंत समरिये रांम) ॥—२१०

पाप नांम

अध्रम[1] असुभ तम-व्रजन[2] अघ,
पाप दुरिति[3] दुक्रिति[4] दुख पंक ।
प्राचिति कलुल[5] कलुख दुखपालण,
कलमुख कसमल किलिविख कलंक ॥—२११

धरम नांम

सत क्रित भागधेय व्रिख सुक्रति[6],
धरि-श्रेय (अर पुनि) धरम ।
(पूरण ब्रह्म समरि परमातम,
कर आतम उत्तम करम) ॥—२१२

कुसल नांम

[ससत सुश्रेय ससउ श्रथेय सिव,
भव्यकं भव्य भावक अभय ।
कुसळ खेम सुभ भद्र (भद्र कहि),
(माहव) मंगळ (रूपमय)]* ॥—२१३

सभा नांम

[आसथांन सदघटा आसता,
संसत परखद समिति समाजि ।
समिजा गोठि छभा]† (सुजि सोहै,
रोजि हुवै चरचा व्रज-राज) ॥—२१४

(उ) : १ अधम २ तम-बीज ३ दुरित ४ दुष्कृत ५ कल्मिष ६ सुकृत्य ।

* [सुश्रेय कुसळ आणंद सुख, खेम खैर मावत सुखधाम ।
आनंद उछब उछाह आवजै, इतवर भज उपजै आगम ॥]

† [आसतन सदा-घटा, परिखद समत समाज, समया गोठ सभा ।]

सबद नांम

सुर निहघोख (अनै) निहकुंण सुनि ,
निनंद कुणत धुनि नाद निनाद ।
रूंण आराव (न और) राव रव ,
सबद ध्रवान टेर कुण साद ॥—२१५

(वळि) निसिवांन (हराद नांम वदि ,
की गजराज) आवाज पुकार ।
(छेदै ग्राह तुरत छोडवियौ ,
अनंत जुगां-जुग भगत उधार) ॥—२१६

सोभा नांम

भा आभा विभ्रमा[1] विभूखा ,
कोमळता राढ़ा दुति क्रांति ।
सुखमा छिवि परमा श्री सोभा ,
(भगवंत) कळा अनोपम (भांति) ॥—२१७

दिन नांम

दिविदु दिवांन[2] दिवस वासुर दिन ,
अह (इगियारसि) दिविसि[3] (अनूप ।
कीजै वरत भजन पिणि कीजै ,
भगत वछळ रीझै व्रज-भूप) ॥—२१८

किरण नांम

रसमि[4] जोति[5] दुति गो छिवि सुचि रुचि ,
वसू दीधती असुग[6] विभा ।
किरण मयूख मरीच धांम कर ,
भानुभा प्रतीप दीपति प्रभा ॥—२१९

(गोंविद) तेज अंबार (जगत-गुरु ,
घट-घट व्यापक वडिम घण ।
ताप पाप मेटण आतम तन ,
विसन तणा कहि जस वयण) ।—२२०

(अ) : १ विभमा २ दतिवांन ३ दीह ४ रसम ५ वाति ६ अंसु ।

तेज नांम (उजास नांम)

तेज उदोत वरच तम-रिपि (तवि),
उजवाळो[1] आलोक उजास ।
ग्यांन प्रकास (उर संग्रही,
समरि-समरि हरि सास उसास) ॥—२२१

सेत (स्वेत) नांम; उजल नांम

सेत विसद अविदात हिरिण सिति,
सूभ्र भळ-भद्र अरजुन सुकळ ।
पांडूर पांड धवळ सुचि पांडू,
(उचरि हरि चित मन कर उजळ) ॥—२२२

रात्रि नांम

निसीथणी जांमणी निसा निसि,
तमसी तमी तांमसी ताय ।
जनया खिणदा[2] खिपा त्रिजांमा[3],
विभावरी[4] सरवरी (बचाय) ॥—२२३

रात्रि रात्री[5] सिस-प्रिया[6] रजनी,
(हुआै अस्टमी जनम हरि ।
मुथरा मांहि वरतिया मंगळ,
घण कितूहळ घरोघरि) ॥—२२४

अंधारो नांम

अंध तंमस संतमस अव तमस,
तमस तिमिर भू-छाय तम ।
अंधकार ध्वांतस[7] (मेटण) अंध,
(वरळ कोटि पूरण ब्रह्म) ॥—२२५

स्यांम नांम

स्यांम रांम मेछक (वळि) सांमळ[8],
किरिठ[9] धूमरक[10] अभ्रुंभ्रू (वळि) काळ ।

(अ) : २ खणदा ३ त्रजामा ४ विभरी ५ रात ६ रस-प्रिया ७ धा अंत ८ स्यांमळि ।
(ह) : १ उज-वाळो ६ करट १० धूम ।

अलिप्रभ असित नील (आखीजै),
किसन-वरण (धिन किसन-कपाळ) ॥—२२६

दीपक नांम

कजळ-अंक[1] तेज धज-कजळ,
नेहप्रीय अहिमिरिण तमनास।
(उतम दसा करख दसय धण,
आणंद जोति सिखा ओजास) ॥—२२७

सारंग दीप प्रदीप दसासुत,
ओपण धार (दसा अवतार।
दस अवतार लिया दांमोदर,
भगवंत भौमि उतारण भार) ॥—२२८

चोर नांम

प्रतिरोधक मरमोख[2] पाटचर,
निसचर दुस्टि[3] गूढ़चर (नांम)।
तेय पार पंथक दसु तसकर,
एकागारक[4] नाळ[5]-अलांम ॥—२२९

कुषधमूळ मूळचप रासकदी,
रांमण चोर लंकपती रांण।
(लेग्यौ सीत अेकली लाधी,
कीधौ हति रुघवर किल्यांण) ॥—२३०

मूरिख नांम

मूरिख मुगध अजांण मीमीतमुख,
मूढ़ मंदमती हीण अमेध[6]।
वाळस[7] जथाजात सठ कंद (वदि),
नैड मूक वैधअण निखेद ॥—२३१
जालम वाळ अग्यांन विवर जड़,
असन अवूज रहिति-इतिवार।

(अ) : १ कंजुळ-अंक ६ अमेद ७ वालिस।
(व) : २ परमोख ३ दुसट ४ यकागारिका ५ नाळय।

महाविकळ अंगळंज स्थानि-निमठ,
(गोविंद भजै तिकै) गिमार[1] ॥—२३२

कूकर नांम

कूकर सारमेक कोयलेक,
भुसण पुरोगति असतभुक।
रितसाई रतिकील रितपरस,
(दाखि) विरित वैणता सडुक ॥—२३३

लेखिराति जागर रसनालिटि,
म्रगदंस साला ब्रकमंडळ।
वळितिपूंछ ग्रहम्रग चक वाळंध,
खेतलरथ मंजारखळ ॥—२३४

ग्रांमसीह जीभय[2] स्वानि (गिणि,
स्वान सुनर धर तास समांन।
कपटि कूर करम करे काळ-वसि,
भगतवछळ न भजै भगवांन) ॥—२३५

खर नांम

चक्रिवा[3] रासिवि[4] चिरमेही,
पणि गरदभ[5] सीतल-पुहण।
भारवहण[6] संखसवदी भूंकण,
करणलंब संकुकरण ॥—२३६

खुरदम खर वालेय सरीखत,
(ओ) नर-मूढ़-सरीख अजांण।
(व्रजभूखण न जपै निसि वासुर,
पुणँ कूड़ न सुणै पुरांण) ॥—२३७

विस नांम

(तवां) मार मारण रस तीखण,
(गिणीजै) हाळाहळ[7] गरळ।

(ग) : १ गीवार ३ चक्रिवान ४ रासभ ५ गरधभ ६ भारवहण ७ हळाहळ।
(ह) : २ जिभाय।

संसार जहर (दुख वारण,
केवळ हरि व्यापक सकळ) ॥—२३८

अम्रित नांम

अगदराज देवभग्य अम्रति,
मधु (कहि) रतन समंदसुत सार।
सोम पयूख सुधा जग-सांचो,
(सुजि श्री रांम नांम तज सार) ॥—२३६

चाकर नांम

चाकर परपिंडित पराचिति[1],
डिगर[2] भ्रत्य[3] परपधत[4] दास।
किंकर परसकंद परकरमण,
विधकर भट परजीत खवास ॥—२४०

चेट प्रईख भुजक परचाकर,
नफर निजोज[5] सेवगर (नांम)।
अनुचर अनुग (हमीर अनंतरौ),
गोलो खांनाजाद[6] गुलांम ॥—२४१

डर नांम

भीय वीय भय त्रास भीत भी,
(तवि) साधस डर दर अंतक।
उद्रक चमक (वळै) आसंक्या,
(समरि प्रभू मेटण जम-संक) ॥—२४२

आग्या नांम

आइस हुकम आगिना अग्या,
सासन जोग नियोग जुसोई।
(प्रेख देस) आदेस (जगतपति),
(हरि) फुरमांण (हुअै तिम होई) ॥—२४३

(अ) : १ परकीय २ डगर ३ भ्रतीय ४ परद्धंधत ५ निजोजि ६ खानैजाद।

वेला नांम

वरतमांन अनिमिख खिणि वेळा,
वार वेर प्रसताव[1] वय।
काळ अनीह प्रक्रमी अंतर (कहि),
सीम[2] ताळ पौहरो समय ॥—२४४

अवसर (बुहौ जात आतमा,
करि कारिमां फिटा सही कांम।
राघव तण जोड़ि गुण रूपक,
मारण दळिद्र वधारण मांम) ॥—२४५

पीड़ा नांम

रुज उपताप[3] व्यथा[4] पीड़ा रुग[5],
आंभय आंम मांद आतंक।
व्याध[6] रोग असमाधि अपाटव,
संगट[7] (गद मेटण हरि संक) ॥—२४६

कूड़ नांम

कूड़ व्रथा मिथा खोटीकथ,
असिति अठीक अलीक[8] अणाळ।
वितथ[9] विकळ अनिरित अनरथ (बळि,
प्रभू समरि तजि) आळ-पंपाळ ॥—२४७

सांच नांम

तथि सचि समगि सचौक जथातथि,
(वदि) सद भूति विसोवावीस।
समीचीन[10] निसचौकरि[11] सव्रत,
(जगत पुडि सांच रूप जगदीस) ॥—२४८

बलध नांम

वाडिमेय भद्र मौरभेय व्रख,
हररथ द्रत हरनाथहर।

(डि) : १ पिसताव २ स्यांम ३ उताप ४ विथा ५ रुग ६ व्याधि ७ संकट
८ अलीक ९ वेतत १० समचन ११ चौकस।

[धमल वळध धोरी मधुरंधर]* ,
चौपग हळवाहण (उचरि) ॥—२४९

अनुडवांन पसु वळि वळद उख ,
कुकुदवांन शृंगी वळकार ।
तंब ब्रखभ (सुजि) रिखभ[1] बैल (तिणि ,
भूधर हुकम लियो धर भार) ॥—२५०

गाय नांम

माहा गाइ[2] गऊ[3] माहेई[4] ,
सुरभी[5] सौरभेई सुरिहि ।
अगिना[6] ऊश्रा शृंगणी उस्रा ,
कवळी[7] कपळा (नांम कहि) ॥—२५१

तंपा (अनि) देवाधण नंवा ,
(वळै) अरजनी[8] दहावन[9] ।
(धरणीधर सुंदर गिरि धारण ,
धनी रोहणी ग्वाळ धिन) ॥—२५२

वाछड़ा नांम

तरण वाछड़ा वाछ टोघड़ी ,
वाच सक्रतकर वाछा लवार ।
(वन मां आवि चोरिया ब्रह्मा ,
त्रिकम नवा उपायां तार) ॥—२५३

दूध नांम

मधू गोरस उतमरस सोमिज[10] ,
[दुगध पुंसवन उधसि (पुनि) दूध][†] ।
सतन खीर पय अम्रति[11] सवादक[12] ,
(सोभि किसन पीधो मन सुध) ॥—२५४

(अ) : १ रखभ २ गाय ३ गाउ ४ माहेवी ५ सुरह ६ अंगना ७ कवळि
८ अरजुनी ९ महावन १० सोमज ११ इम्रत १२ सवादिक ।
* [धवळ वळद धोरी धैधीगर] । † [दगध उदसि (पुनि) ओदसि दूध] ।

दही नांम

दही[1] (नांम) गोरस खीरज दध,
(दधि पीतो हरि लेतो डांण)।

छाछ नांम

मथिति उदिचित काळसेम मही,
(पीधी) छासि तक्र (पुरिख पुरांण) ॥—२५५

माखण नांम

तक्र-सार दधसार सारज (तवि),
नेगवी (ने) माखण नवनीत।
(धिन कांनड़ चोरतौ नवोघ्रति,
पीतम गोकिळ पुरिख प्रवीत) ॥—२५६

घ्रत नांम

हय[2] अंगवीन [3] नूप चौपड़ हवि,
घिरत आजि आहिजि आहार[4]।
सरपि खि हविखि तेजवंत सबळौ,
अभंत जोतवंत तेज अंबार ॥—२५७

भोजन नांम

अमि[5] विहार [6] अहार अरोगण[7],
निधस लेह्व जीमण घ्रिसनाद।
भखण अनंद [8] खादण (वळि) वळभन[9],
सुखदवि खांण[10] प्रमाद सवाद ॥—२५८

(पति-वमांण अवसांण जगध पिणि,
नत करै भोजन खट त्रीस।
जनमंत मात जुगति जीमाड़ै,
जीमै आप किसन जगदीस) ॥—२५९

(ग) : १ मति २ हई ३ संगुवन ४ आधार ५ हम्भ ६ वहार ७ आरोगण
८ अनंदण ९ वलभण १० खादण।

सुमेर - गिर नांम

रतन - मांन[1] गिरपति पंचरूपी,
सुरगिर कंचनगिर[2] सवळ ।
मेर सुमेर सुथांनिक माहव,
(चवां) करिणा कांचळ अचळ ॥—२६०

सरग नांम

ऊरधलोक नाक अमरालय,
भुव[3] दिवत सुर - रिखभ - वन ।
त्रिदिव[4] अवय (तवि तवि) खित्र-दस-तप,
(सुरगपति पति श्रीक्रिसन) ॥—२६१

इंद्र नांम

इंद्र पाक - सासन आखंडळ,
देवराज सक्र पुरंदर[5] ।
विधश्रवा मघवास[6] अछरवर[7],
वरक्रित[8] सतक्रति[9] धरवजर[10] ॥—२६२

दळभ व्रखा व्रतहा[11] सक्रंदन[12],
वासव मरुतवांन मघवांन ।
पूरबपति पुरहूति सचीपति,
जिसनु[13] सुरेस सरगराजांन ॥—२६३

हरिहय सहसनेत्र घणवाहण,
उग्रधन अैरावण अधिप ।
सुनासीर क्रितमन सुत्रांमा,
(नांम) रिभूखी महाव्रप ॥—२६४

खिलेखा रिखभ जंभभेदी,
विडऔजा प्राचिन विरह ।
तुराखाट दुचवन हर तखतखी[14],
कौसिक मरुत सुराट (कह) ॥—२६५

(अ) : १ रतनसोन २ कंठनगिर ३ भुवि ४ त्रदव ५ पुलंदर ६ मघव ७ अपछरवर ८ वरक्रितु ९ सतक्रतु १० वजरधर ११ व्रतहास १२ सुक्रदन १३ जिप्णु १४ तपतखी ।

(इसडा अमर जास आराधै,
सास-सास प्रति तास संभारि।
बळि-बंधण काटै क्रम-बंधण,
पूरणब्रह्म उतारै पारि) ॥—२६६

देव नांम

निरजर अमर वरहमुख नाकी,
आदितसुत अभ्रतेस (उचार)।
विवुध[1] -लेखं त्रदसा त्रववेसा[2],
रिभु क्रतभुज सुमनस असुरारि ॥—२६७

अनिमिख व्रंदारका अनिंद्रा[3],
दिविओकस दिवखद सुर-देव।
(देवां-देव देवकी नंदन,
सुध मनां हरि री कर सेव) ॥—२६८

अगनी नांम

क्रस्ण वरतमा अगनी व्रखा कपि,
सिखावांन[4] सिख[5] हुतासण[6]।
पावक रोहितास स्वाहापति,
दमुना दावानळ दहन ॥—२६९

वरहि सुक्र सुखम[7] उखर-वुध,
आसुसुखण जगणी अनळ (जांणि)।
मंगळ सपतारची सुरांमुख,
जळण धनंजय जाळिग्रळ[8] (जांणि) ॥—२७०

वीत्रहोत्र[9] वहनी वैसंनर,
सोचीकेस (सुची) पवनसख।
तनुनपात जातवेदा तप,
चित्रभांनु (अर) माहेमचख ॥—२७१

(प) : ३ अनिद्रा ४ सिखवान ५ सुख ६ दहण ७ सुखमा ८ जाळवणि ९ वीतीहोत।
(द) : १ विविध २ त्रदवेसा।

जगाळाजीह् आगित[1] जागवी[2],
आश्रयास उदर - चउ - सन ।
विभावसु[3] छागरथ विरोचन,
घ्रिति आहूतण तमोघण ॥—२७२

धोम समीग्रभव फुळ धूमधज,
वसु क्रसण हुतभुक हविवाह् ।
अरच खमत (हुव हरि आतम),
दुसह (ग्रहद भवन भदाह) ॥—२७३

(जिम जागती विपन परजाळै,
परमेसर जाळै इम पाप ।
देवां देणां देव दईतां दव,
जादव-तिलक तणो जपि जाप) ॥—२७४

वलभद्र नांम

वळिभद्र[4] ताळ लखण निलांवर,
अच्युताग्रज वळि हळायुध[5] ।
सीरपांण वळिदेव सतालंक,
(जुरासिंध सौं करण जुध) ॥—२७५

कांमपाळ भेदन - काळंद्री,
रोहणेय[6] संक - रखण - रांम ।
पीय-मधु मूसळी-हळी-पिणि,
(नांम अनंत सीता सित नांम) ॥—२७६

(वंधव तास तणो वळि-वंधण,
आदि पुरख ठाकुर अविणास ।
सुरां सुधार संघारण असुरां,
उर अंतर हरि री करि आस) ॥—२७७

वरुण नांम

पासीजळ कांतर प्रचेता,
जळपति मछपति पुरंजन[7] ।

(अ) : १ अपला २ जागेवी ३ विनवसू ४ बळभद्र ५ हळआयध ६ रोहणे ७ परजन ।

मेघनाद नीरोवर[1] मंदर,
वरुण वरणवै (जस किसन) ॥—२७८

कुबेर नांम

वसु (दरम) धनंद[2] नरवाहण,
किंपुर खैसर रतनकर ।
(कहि) कुह पिसाची कमलासी[3],
वैश्रवण[4] निधि - ईसवर ॥—२७९

जखाधीस हर-सखा त्रसर-जख,
(पुनी) जनेसर उतरपती ।
एकपिंग पौलस्त एळविळी,
श्री दसतोदर (नांम) सती ॥—२८०

राजराज किंनरेस (नर-धरम),
(जपि) जखराट धनाधिप (जांणि ।
भव थापियौ कमेर भंडारि,
मोटा धणी तणौ फुरमांण) ॥—२८१

असट सिधी नांम

अणमा महमा[5] (अनै) ईसता[6],
प्रापति[7] वसीकरण प्राकांम ।
(सुजि) गरिमा[8] लघिमा[9] (आठ अै सिधी,
सुजि हरि आगळी करै सलाम) ॥—२८२

नव निधी नांम

कछप खरव संख[10] नीळ मुकंदक रिद[11],
कुंद महापदम पदमा मकर ।
(नर धर तास निवास नवै निध) ॥—२८३

द्रिव्य नांम

द्रिवण[12] विभव वसु अवरै द्रिवि[13],
आइनेयक सवर अरथ ।

(पाठान्तर) : १ नीपवरा २ धनंदन ३ कविलासी ४ वहीवरग ६ इसमां ७ प्रापना
८ गिरमां ९ लरमां १० संख, संख्य ११ रिद्ध १२ द्रवण १३ द्रव ।
: ५ महिमा ।

मनरंजण माया धन द्रुमग्ग,
ग्रहमंडग्ग सैंधव गरथ ॥—२८४

वुसत हिरग्ग[1] कुंभरि (कथ कथ)विति,
निध रिध संपति माल निधांन।
ग्राथि खजांनौ सार (श्रमारै,
भगतवछळ गोविंद भगवांन) ॥—२८५

मोती नांम

मोताहळ मुक्ताफळ[2] मुकता,
(श्ररु) मुक्तज सुक्तज (उच्चरि)।
गुलकारस-उदभव[3] सिसिगोती[4],
हंसभख मोती (कीध हरि) ॥—२८६

स्यांम कारतिकेय नांम

स्यांमी महासेन सेनांनी[5],
(कहि) [परभ्रति सिखंडी सुकमार]*।
सुतन-उमा गंगा-कृतिकासुत,
चखबारह खटमुख ब्रंह्मचार ॥—२८७

तारकारि क्रौंचार सगतभ्रति[6],
सरभू श्रगिभू[7] छमां सकंद।
रुद्रातमांज[8] विसाख मोररथ,
(गिरधर मोरमुगटगोविंद) ॥—२८८

मोर नांम

केकी बरह्नी[9] विरह[10] कळापी,
कुसळापांग[11] पनंग-संघार।
(मंजर मोर चंद्र सिर माधव,
सोभा सहत प्रपित सिरणगार) ॥—२८९

(अ) : १ हरिन २ मुगतीक ३ गुलिकारस-उदभव ४ ससिगोती ६ सगतभ्रम
९ विरहण १० विरह ११ सुकळी-मांग।
* [माहातेज कारतिक कुमार ब्रनचारि]।
(ब) : ५ सेनी ७ यंग-भू ८ रुद्र-ग्रातमज।

(नांम) मयूर मेघनादांनुळ[1] ,
(तवां) नीलकंठ प्रांणव्रस्टीक[2] ।
[सिहंड सिखा सिखी सिखंडी]* ,
कुंभ सारंग रथ-कारतीक ॥—२६०

गुरुड़ नांम

सुपरणेय[3] सुपरण[4] सालमली[5] ,
गरुतमांन ग्रीधल गरुड़[6] ।
सोव्रनतन धखपंख[7] कासिपी[8] ,
पंखीपती पंखी प्रगड ॥—२६१

तारख अरुणावरज[9] वजरतुंड ,
वनितासुत खग-ईसवर[10] ।
इंद्रजीत मंत्रपूत आतमा ,
चत्रभुज-वाहण भुजंगमचर ॥—२६२

उतावलि (शीघ्र) नांम

(जव) उतामळ[11] झटत[12] अंजसा ,
तुरह[13] वाज[14] अहनाय[15] तर ।
सीघ्र रभ सतुरण रस सहसा[16] ,
सपत द्राक मंखू प्रसर ॥—२६३

अश्रुं तुरीस अविलंबत आतुर ,
(भणि) द्रुति (अरु) खिप्र चपळ (भणौ) ।
गरुड़वेग (मन हूंति सतगुणो ,
तिको गरुड़-रथ किसन तणौ) ॥—२६४

पवन नांम

वायु वात गंधवाह गंधवह ,
स्वसन सदागति सपरसन ।

(अ) : १ मेघनादानळ ३ सुपरण ४ आसुपर ५ सलमली ७ धकपंक ९ अरुणावरज
११ उतावळ १२ झटति १३ तुरत १४ वाप १५ अनाघतर १६ सहेसा ।
* [सिहंड सिख्या कल सेख सिखंडी] ।
(ब) : २ प्रस्तिक ६ गुरुड़ ८ कासपी १० पंख-ईसवर ।

मारुत मारुत समीर समीरण,
जगत-प्रांण आसुग जवन ॥—२९५

मेघवाहण पवमांन महाबळ,
प्रापक अघभखण पवन।
नीळ अनीळ अहिवल्लभ[1] सासनभ,
जळरिप चंचळ प्रभंजन ॥—२९६

(सुन तिण तणौ हणूंत तिर सायर,
करि निज स्यांम तणौ सिध कांम।
लंका जालि सीत सुधि लायौ,
रळीयाईती कीधी श्री स्यांम) ॥—२९७

मेघ नांम

पावस मुदर वळाहक पाळग,
धाराधर (वळि) जळधरण।
मेघ जळद जळवह जळमंडळ[2],
घण जगजीवन घणाघण ॥—२९८

तड़ितवांन तोईद[3] तनयतूं,
नीरद वरसण भरण-निवांण।
अभ्र परजन नभराट आकासी,
कांमुक जळमुक महत किलांण ॥—२९९

(कोटि सघण सोभा तन कांन्हड़,
स्यांम त्रेभुअण स्यांम सरीर।
लोक मांहि जम जोर न लागै,
हाथि जोड़ि हरि समर हमीर) ॥—३००

वीजळी नांम

चपळा अैरावता[4] चंचळा,
खिणका सौदामणी खिनणी[5]।

(अ) : २ जळमंडण ३ तोयसद, तोयद ४ यैरावती ५ खिमण।
(ब) : १ अहिलभ।

सिमरिव[१] तड़ित[२] संतरिदा[३] संपा,
मिणजळ बाळा-जळ-रमणि[४]* ।।—३०१

अकाळकी[५] रादनी[६] असनी,
[विदुति छटा सुबीजळी बीज][†] ।
(वीज जोती पीतांबर बीठळ,
रूप संपेख करै सुर रीझ) ।।—३०२

अकास नांम

खं असमांन अनंत अंतरिखि[७],
वोम गिगन नभ अभ विअद[८] ।
पवन-मेघ-पंथ[‡] उडप सूरपंथ,
पुहकर[९] अंबर[१०] विसनपद ।।—३०३

तारा नांम

जोति धिस्म[११] ग्रह रिखभ ज्योतखी,
तारा नखत तारका[१२] तास ।
उडगन उड दीपक-हरी-आगळी,
(इधक जगमगै ज्योति आकास) ।।—३०४

नाव नांम

बोहिति नाव वहतिक वेड़ो,
जांनपात्र जळतरंड जेहाज ।
वहण पोत (भव महण लंघावण,
तरण उदय हरि नांम तराज) ।।—३०५

संख नांम

संख कंबू वारिज सिसि-सहोवर[१३],
रतनखोड[१४] सावरत त्रिरेख ।

(अ) : २ तडिनि ३ सनरदा ४ जळरमण * बाळा-जळ-रमणि=बाळा-जळ, जळ-रमणि । ५ आकासकी ६ राआदनी ७ अंतरिखण ८ वियद, वयद ९ पोहकर १० अमर ११ धिसन १२ तारकस १३ ससहुवर १४ रतनखोडि † [विद्युत छटी बीजळी बीज] ‡ पवन-मेघ-पंथ=पवन-पंथ, मेघ-पंथ ।
(ब) : १ समरदि ।

(अनंत तणौ आवध कर अंतर,
विधि-विधि सोभा वणै विसेख) ॥—३०६

(अनंत अछेह छेहन आवै,
तास कमण पावै विसतार।
सांभळि अरथ पराक्रत सासित्रि,
अकळि प्रमांणै कियो उचार) ॥—३०७

(जाडेजां सूरजि रख जळवट,
भुज भूपति लखपति कुळ - भांण।
त्रय ग्रंथ कीध अजाची तिण रै,
जोतिखि पिंगळ नांम अव जांण) ॥—३०८

(जोइ अनेकारथ धनंजय,
'मांण - मंजरी' 'हेमी' 'अमर'।
नांम तिकां माहै निसरिया,
उवै भेळा भेळाया आखर) ॥—३०९

(अंत जगदीस तणौ जस आंणै,
विवरण करि कहिया वयण।
चिति निति हेत सही चिंतवियौ,
रीकवियौ रुखमण - रमण) ॥—३१०

(समत छहोतरै सतर में,
मती ऊपनी 'हमीर' मन।
कीधी पूरी नांम - माळिका,
दीपमाळिका तेण दिन) ॥—३११

पर्यायवाची कोष—४

अवधान-माला

बारहठ उदयराम विरचित

कसमीरी कसमीरसो उजळ रूपउदार,
(मांगै देसळ महीपति देवी वर दातार) ॥—१०

सदासिव नांम

संकर हर श्रीकंठ सिव उग्र गंगधर ईस,
प्रमथाध्रप कैलासपत गिरजापती गिरीस ।—११

भव भूतेस कपाळभ्रत उमयायष्ट ईसान,
धूरजटी म्रड ब्रखभधज सरवरित सुद्धांन ।—१२

सिंभू त्रंबक समसिखर संध्यापत समसर,
परम पिनाकी पसुपती त्रिलोचन अपरार ।—१३

वोमकेस वाहणब्रखभ नीलकंठ गणनाथ,
क्रसानरेता डमरूकर सूलपांण ससमाथ ।—१४

क्रतधंती विखयंतक्रत म्रत्युंजय महादेव,
गिरीस कपरदी परमगुर सिधेसुर जगसेव ।—१५

अष्टमूरती अज अकळ उरधलिंग अहिग्रीव,
कपरदोस खळवधकर जगतेसुर जगजीव ।—१६

दहनमनोज क्रसांनद्रग भंसम जटेस भवेस,
विस्वनाथ रुद्रवामसर परभ्रत तपस महेस ।—१७

विरूपाक्ष दईतेंद्रवर क्रतधुंसी अंधकार,
भीम सदासिव तम भवी दिगवासा दातार ।—१८

लोहितमाळ विसाळद्रग अजसुत खंड अनंत,
(सुख मुकतीदाता सदा भव सुर लोक भुजंत) ॥—१९

गिरजा नांम

श्री गिरजा सकती सती पारवती भवप्रांण,
हेमवती दुरगा हरा रुद्रांणी सुररांण ।—२०

भवा भवानी भैरवी चंचरंच चांमंड,
मातंगी श्रव मंगळा अंबाजोत अखंड ।—२१

सिवा संकरी ईखरी माहेसुरी सुमात,
कतियांणी काळी उमा देवी (वरद उदात) ॥—२२

अडा नितमजा मैनका दख्यांणी वरदान,
सखांणी सिंघवाहणी अपरण (र) ईसान।—२३
(जगदंबा आरूढ़ जस, उदाकरौ उचार,
काळी गुण भुजियां करग, चढ़ै पदारथ च्यार)॥—२४

श्रीकृष्ण नांम

स्यांम मनोहर श्रीपती माधव बाळमुकंद,
कुंजविहारी हरि क्रसन् गिरधारी गोविंद।—२५
मधुसूदन मधुवनमधुप चक्रपांण व्रजचंद,
व्रजभूखण वंसीधरण नारायण नंदनंद।—२६
दामोदर दईतेंद्रवर मरदनमेछ मुरार,
अघबकादिहंता अनंत कैटभ अजित कंसार।—२७
पदमनाभ त्रैलोकपत धनसंखादिकधार,
देवांदेव जनारदन व्रज-वैकुंठ-विहार।—२८
विखकसेन यंद्रावरज संखधार सारंग,
गिरधारी धारीगदा भूधर पदत्रभंग।—२९
विसंभर करता विसनु वासदेव (विसेस),
जादवपत अरजुनसखा रिखीकेस राकेस।—३०
पुंडरीकाक्ष पुरांणपख पुरुसोतम उपयंद्र,
जगवंदण जगमूरती चंद्रवंस-को-चंद।—३१
कांन अच्युत नरकांतक्रत जळक्रीड़ा जगनाथ,
राधावलभ सवरित संकरखण गोसाय।—३२
द्वारकेस सुतदेवकी गोपीपत गोपाळ,
प्रभा स्यांम पीतंबर जादववंस-उजाळ।—३३
श्रीधर श्रीवक्षस्थल गुरड़ासण गजतार,
धजाखगेस अधोखजं विस्वरूप-विस्तार।—३४
भूधरभारउतारन् भगतवछळ भगवंत,
भवतारण भवभयहरण कारण कमलाकंत।—३५
गोपपती प्रभु परमगुर सेखसाय अधमाय,
[illegible] (ध्रवत मुनंद्र महाय)।—३६

अवणासी नित अजर अज दीनानाथ दयाळ,
वनमाळी विठ्ठलेसवर गोकळेस पतग्वाळ।—३७

मधुवनसिंधु महमहण स्यांम मय्यमामंद,
वलभज्यन रुकमणवरण कवेल्ह आनंदकंद।—३८

मुरलीमनोहर मधुवनी नाथ जसोदानंद,
कृपासिंधु (कीजै कृपा) अकलेसुर व्रजयंद॥—३९

दधजा नांम

दधजा पदमा यंदरा विमनप्रिया हरिवांम,
रिधी-सिधी-दाता मा रमा (नरहर)लिछमी(नांम)।—४०

कमला भूजापत करम लोकमाता श्रीलच्छ,
हरदासी लई हरप्रिया स्यांमा सुखदा (सुछ)॥—४१

सूरज नांम

सूरज सविता सहसकर उसनरसम आदीत,
दसदिनेस दिनकर दिनंद पिंगळ वयळ पुनीत।—४२

मारतंड दणीयर महर भासंकर चित्रभांण,
हंस प्रभाकर तरणहर वीरोचन विवसांण।—४३

पूखात्र ईतन ग्रहपती पदमणपती पतंग,
अरण दिवाकर अजनमा अहिकर तेज उतंग।—४४

प्रद्योतन रानळपती तपन तिगम तमरार,
मित्र सुमंत दुतमूरती सप्रस प्रश्रग द्वार।—४५

रव नभमिण पगविण रतन भग भगती भासांन,
क्रमसाखी तीखंसक्रम जगचख धरमजिहांन।—४६

सूर सुमाळी सीतहर अहिपत अरक सुवैन,
दोमिण द्वादसआतमा* तमचर तिमरखतैन।—४७

जमाकरन सनिजमपिता धात दिवाकर धीर,
सोमधात सुरकरियग्रष्ट विसवक्रमा चक्रवीर।—४८

---

* बारह आदित्य माने गये हैं; इसीलिए सूर्य को द्वादस आतमा कहा गया है।

अंगारक हिरळवत अहि पंकजबंधु प्रकास,
तेज कस्यपस्यातमज नरसुरधरमनिवास ।--४९

चंद्रमा नांम

सोम सुधासूती ससी ससि सीतंसु ससंक,
ससहर सारंग सीतहर कळानिधी सकळंक ।--५०

चंद्र निसाकर चंद्रमा दुज यंदू दुजराज,
कुमदबंधु श्रीबंधु (कहि) औखधीस उडराज ।--५१

विध हिमकर मधुकर विधी ग्लौ अगवाह अगंक,
सुभ्रकरण निसनेत्रसुण अम्रतमई मयंक ।--५२

सुधारसम सिंधूसुवण रोहणधव राकेस,
सिवभाळी सुखमादसद निगदरतन नखत्रेस ।--५३

(दखण) जुगपदमणपती (ज्यूं) चक्रवाह-विजोग,
कंजारी अपध्यांन (कहि) सुभरासी ग्रहिजोग ।--५४

(जनातट गोपीकिसन सरद निसा) राकेस,
(रचै रासमंडळ रमै विलसै हंसै विसेस) ।।--५५

कामदेव नांम

मार समर विखमायुध पप-धनवा सरपंच,
पुखैक मनमथ रतपती श्रीनंदन तनसांच ।—५६

धातवीज हर मकरधज मदन समर समरार,
कुसमायुध कंद्रपकळ अनंग कांम ईसार ।—५७

मधूर करिछय प्रदुमन मीनकेत (कहि) मैन*,
तपनासी सकळ-आतमा कमन सिंगारक सैन ।—५८

लीलज द्रपक मनोज (लग्न) व्रखकेतु सुतव्रम,
अतन मनोभव अंगगथ पिट्टुपिंड (अरु) प्रभ ।—५९

आतम-भू उखापती मयण चपळ रतिमांन,
जुगाधीस जगजीत (कही सुर-नर देत समान) ।।—६०

---

* मीनकेत कहि मैन — मीनकेत, केतमेन ।

इन्द्र नांम

वासव वज्री व्रतहा मघवा हर मघवांन,
सक्रंदन सक्र सुरपती मरुतसखा स्रतवांन ।—६१
दिवसत गोसक सहसद्रग परजापती पुरंद,
व्रखी विडूजा विधश्रवा आखंडळ सुरयंद ।—६२
दंतीधावक वारदद्र जंभारात जळेस,
प्रथमीपोख जिगवासपत सुरपुरनाथ सुरेस ।—६३
सतक्रत नाकीसुर रिखव सचीस्यांम सुत्रांम,
सुनासीर भोजीसुधा उरधपिंड अभ्रस्यांम ।—६४
(नांम) पाकसासन निधू पूरबपत प्राचीन,
गोत्रभेदी पुरहूतगण यंद्र जळधआधीन ।—६५
अमवाहण रंभापती व्यूंबर क्रतनुखार,
वभयंद्री उग्रवन जिसुन दळमव्रखा दिवराट ।—६६
तुराखाट त्रदसाविभू पाराजातपत (पाट) ।—६७
(नांम) रिभूकी महाव्रप दसवन वन - दरसाव,
सघणवाह ऊचीश्रवा वरही (नांम वताव) ॥—६८

कलपव्रछ नांम

सुरतर हरचंनण (अवत) श्रवदायक संतांन,
तयद्रुम द्रुमपत कलपतर ददगअखैनिधदान ।—६९
अगसुखदा सुरसंपती पारजात पत्रीस,
(अवत) कामधेनू सदा जिसनु (ववै जगदीस) ॥—७०

वज्र नांम

वज्र कुलिस यंद्रावर्ध दधीचास्थी दनुपाळ,
गोत्रभदी खयपत्रगिर सत्रकोटी खळसाल ।—७१
सोरह सिंभूनादनी मिदरसत दंभोळ,
जोतसुभ्र पुरहूतजय अदभुत - ससत्र - अतोल ॥—७२

सरग नांम

अमरापुर अमरावती उरधलोक द्रिविओक,
सुरआलय त्रिदसासदन सरग नाक सुरलोक ।—७३

गऊ ग्यांनसत उरधगत धरमफूल सुखधांम,
त्रदन त्रिनिष्टपथांन (तव) विविधस्यांम-विश्राम ॥—७४

अपछरा नांम

अछर सुकेसी उरवसी परी घ्रताची (पंथ),
मंजूघोषा रंभ मैनका त्रिलोचना निरतंत ॥—७५

गंध्रव नांम

गंध्रव किनर सुरगण हाहा हूहू (हास),
अमर (परसपर) आदतिया विद्याधरा* (विलास) ॥—७६

इंद्रांणी, पुरी, गुर, नदी नांम

सची पुलमजा सक्रप्रिया यंद्रांणी अरधंग,
यंद्रपुरी अमरावती गुरु व्रहस्पत जळ-गंग ॥—७७

छभा, सेना, घोड़ा, स्वारथी, हाथी, दंदभी नांम

सुमत सुधरमा सेनसुर (वळ) उचैश्रववाज,
सुधरमा तुळ स्वारथी गज-अभ्र दंदभ (गाज) ॥—७८

वन, रिखदरवान, वैद, विभुता, वाहण नांम

नंदनवन नारदरिखी (देवनदी) दरवांण,
वैदक अस्नीकुमार विध विभुता वाह विवांण ॥—७९

इंद्र के पुत्र ग्रहमुख, सिलावटा, माया नांम

पुत्र-जयंत प्रसाद गृहआनन अगन (अनूप),
सिल्पी विसवक्रमा (सदा) रसघण माया (रूप) ॥—८०

रिख नांम

तपसी तापस उग्रतप मुनी मुनेस मुनंद,
सुव्रती समदम संजमी उरध्यानी आनंद ।—८१
रिखीराज रिखव्रंदरिख रिख रिखेस रिखराज,
काननचारी मनव्रती जपीतपी जगराज ॥—८२

* अमर-कोष में देवताओं की १० जातियें मानी गई हैं जिनमें विद्याधर और गंधर्व दो भिन्न जातियें हैं।

छनीछर नांम

क्रस्न रुद्र जम कोणस्त सनी छनीछर मंद,
पिंगळ वभ्रुपिंगळा अंतक सवरी मुनंद ॥—८३

सुद्रसणचक्र नांम

कुंडलीक संघारकर वज्रविसन तरवक्र,
मारज परछ्यजार सुरचक्र सुद्रसणचक्र ॥—८४

कुमेर नांम

राजराज मनखाधरम अलकापत उतरेस,
श्रीदत सिवसिख वैश्रवण निधपत धनंद धनेस ।—८५

सक्रकोस कैलासपत किंनरपती कुमेर,
अंछ्यासंपत एकपग जखराज जखचेर ।—८६

पुरखाश्रय गंध्रवपती गौह् गौह्केसर (ग्यांन),
(वल) नरवाहण एलवळ धनुद जजेसर (ध्यांन) ॥—८७

जम नांम

भव अघडंडी डंडभ्रत धिष्टडंड ध्रमराज,
विखभधुज जम संक्रती जमनभ्रात जमराज ।—८८

सउरी रवसुत सतक्रती अंतक अ्रतकर अंत,
साधदेव धरमी सुहद्र काळ अंतत क्रतंत ।—८९

प्रेतराट ह्र प्रांणह्र सुंदर जमपुरस्यांम,
सीरण कममिख्यण (सदा नीति विचखण नांम) ॥—९०

दईत नांम

सुरदोखा दांणव असुर दनु दईतंद्र अदेव,
अमराभुज त्रदसाअरी दतीसुत पूरवदेण ।—९१

सुरघाती वळ सुक्रसिख मेछ अप्रबल (मंड),
जवन (हिरणकस्यप जिसा प्रथमी साल प्रचंड) ॥—९२

राकस नांम

नईरत तमचर निसचरा जात्रधांन खळ (जांण),
असुरा सुरद्रोही (उचा रांमणादि रढ़रांण) ॥—९३

रांमचंद्रजी नांम

दासरथी लंकादती सियापती कपसाथ,
रांमचंद्र रुघवंसरव (नांम) रांम रुघनाथ ।—९४

कंटकारी काकुस्थकुळ भरथाग्रज रुघभूप ,
घणनांमी (दुत स्यांमघण सवता कोटी सरूप) ॥—६५

सीता नांम

महिजा सीता मैथली सतीवांम घणस्वांम ,
कुळवैदही जनकजा (रति कोटी अभिराम) ॥—६६

हडूमांन नांम

मारुत हडमत रांममन वज्रकटक वजरंग ,
लंकदाह श्रीरामलय (राम भीड़ जय रंग) ॥—६७

लछमरा नांम

रामानुज रुघवंसमिण बाळजती रुघवीर ,
सुनदसरथ सुमंत्रसुन लछमण लछ सधीर ॥—६८

रामरा नांम

कंटक खळ लंकापती सुरद्रोही खळसाळ ,
मूडवर पतमंदोदरी (अर) कैलासउथाळ ।—६६
दहकंधर दससीस (दिठ) वीसभुजा (वळवांन) ,
रमाचोर (रांमण रुळै दळवळ व्रथा निदांन) ॥—१००

गंगा नांम

जगपावन जाह्नवी गंगा सुरसुरी गंग ,
देवनदी मंदाकनी ईससीस अरधंग ।—१०१
पापमोचन नदसुरपती ऋपथा मेनतरंग ,
मग्गतरंगण सुरनदी अधमोचन गतअंग ।—१०२
मगतिवरा जटसंकरी हेमवती हरवाम ,
त्रिपथ खापगा मोखदा (नित भागीरथ नांम) ॥—१०३

जमना नांम

जमसगनी कृष्णा जमा जमना रवजा (जांग ,
कमला नट की अकृष्ण विवध गान वाखांण) ॥—१०४

बुधी नांम

मेधा बुध धी अकल मत प्राग्यन सुध प्रबाध,
मिनखा धिखणा धुन समझ (आश्रय जांण सत्रेध) ॥—१०५

दरियाव नांम

दध सागर सायर उदध गौडीरव गंभीर,
रतनागर उदभवरतन अतर अथग अतीर ॥—१०६

जळरासी जळपत जळध सरसवांन सांमंद,
वारुध अंबध वारनिध वेला-सवता-चंद ।—१०७

अकूपार अरणव (अखै) महण मथण महरांण,
पारावार मछपळ रैणयर जळरांण ।—१०८

पदमापित पदमालय उदनमत दरियाव,
हदनीरोअर अंबहर लहरीरव जळधाव ॥—१०९

नदी नांम

तटणी सरत तरंगणी धुनी श्रोत जळधार,
नदी आपगा निमनगा वाह भूमविहार ।—११०

जळमाळा जंवाळणी (श्रोता जग संतोख),
सुनी श्रृवंती भवसुखा परवतजा तरपोख ।—१११

परवाहपय नद प्रसद नीझरणी वरनीर,
कुल्यंकका सिंधुकुल्या दीपवती दकसीर ।—११२

सरज्यु गंगा सरसुती जमना सफरा (जोय),
गया नरबदा गोमती तापी गिलका (तोय) ।—११३

भीम चंद्रभागा (भुजौ) सिंधु अरक (सुनीर),
कावेरी काळीनदी साब्रती पयसीर ।—११४

(ज्यां नदियां मंजन करै धरै सदा हर ध्यांन,
उर निरोध हर आसरै विसरै नह ब्रहम ग्यांन) ॥—११५

सपतपुरी नांम

माया मुथरा द्वारका अजुध्या (र) उजीण,
कासी कांची (मुकतदा पढ़) दधपुरी (प्रवीण) ॥—११६

नव ग्रह नांम

रव सस मंगळ (रटौ) सुरगुर सुक्र (सुणाय),
सनी राह केतू (सदा नव ग्रह पूजो न्याय) ॥—११७

वन नांम

अटवी कांनन वन अरण विपन गहन व्रिखवात,
रन कंतारक भक दुरग खड कखवा रिख ख्यात ॥—११८

व्रिख नांम

व्रख सिखरी साखी विटप द्रुम खितरुह कळदात,
दरखत तर अदभुज सदळ पत्री द्रुम घणपात ।—११९
फळग्राही कुसमद फळी निंद्यावरत निनंग,
कार सकर महिसुत कळी अंघ्री कूट असंग ।—१२०
अद्री अंध्रप ओकखग रूपक राळक (रीत),
भाड़ (अनोखह भुंडमै प्रीति राखै प्रीत) ॥—१२१

फूल नांम

पुसप सुगंधक फळपिता कुसम प्रसून कलार,
रगन फूल सिधक धरम सुमन सून द्रुमसार ।—१२२
लताअंत उदगम हलक सुभम सुना सुररंग,
(चांमंडा) पंकज (चरुण सुकवी मन सारंग) ।—१२३
कुसवावळ चंपाकळी गोटाजाय गुलाब,
वणी केवड़ा केतकी जुही हबाम जवाब ।—१२४
मैंदी कणियर मोगरा निधनलियर गुळमंड,
रायवेल रतनावली परी गुढ़ेर (प्रचंड) ।—१२५
करणफूल गोरखकळी जंत्रक जाफरा (जांण),
नमंद सोग्व गुळ सेवती अरक हजारी (आंण) ।—१२६
मखमल खैरी मालती लजाळूर लटियाळ,
कंज फिरंग कमोदनी रतनमालती माल ।—१२७
दाड़म नेजादावदी (विवध फूल बनमाळ,
हरखिया बदरित डंमर मीन डमन बनमाळ) ॥—१२८

सुरब्रख नांम

सुरतर गोरक सिसपा देवदार मंदर,
सिवाहळद केसर सुभंग वट पीपळ (विमतार) ।—१२६

आंबा चांपा आंवली निगड नींव नाळेर,
फणस विजौरा जांमफळ करणा साग कगेर ।—१३०

नीबू दाड़म नारंगी सीताफळ सहतूत,
काठ ठीवरू कंदळी (यळ) अनास (अदभूत) ।—१३१

वेलीदाखां पेमदी खारक ताड़ खिजूर,
(केता मेवा हरकिया हर हाजरी हजूर) ॥—१३२

भमर नांम

मधुकर झंकारी मधुप सोरभ भमर सारंग,
कसमलप्रिय भोगीकुमम भंवर सिलीमुख भ्रंग ।—१३३

मधुग्राहक मधुतरतमद चंचरीक रोलंव,
कलालीक खटपद कसन अळियळ धूम-आलम ।—१३४

दळ दुरेफ हरयंदुदर कुसमावळी मकरंद,
ग्रहणगंध आघांणगुण अधवाचर (आनंद) ॥—१३५

बंदर नांम

कीसहरि वनउक कप पलवंगम पलवंग,
मरकट वंदर वलीमुख सौसाखा सारंग ।—१३६

साखीवर वनचर (सदा) गो लंगूळ (गणाय,
लंका वाळी लांगड़ै सीताराम सहाय) ॥—१३७

म्रग नांम

हर वातायू म्रग हिरण सिघ्रधाव सारंग,
(अेण) प्रख तरक्र सुगंधउर कांननभखी कुरंग ॥—१३८

सूर नांम

सूर कौड लांगड असत्र अेकल दातड़ियाळ,
घोणा घसटी परजघण दुगमी गिड दाढ़ाळ ।—१३९

भूविदार सूकर भयद वधरोमा वाराह,
कोळ डारपत कंदचर सिरोरमा दलसाह ।—१४०

(चवां) आखणक वाडचर दंसटरीर भूदार,
थूळीनास दुदीथटा (वन गिरवरां विहार) ॥—१४१

सिंघ नांम

सिंघ वाघ केहर सरब कंठीरव कंठीर,
अष्टापद गजराजअर सेर अभंग सधीर ।—१४२
पंचायण हर वनपती पंचानन पारंद,
सूरसेत पिंगपंच सिख म्रगमारण म्रगयंद ।—१४३
मंग नखीयुध म्रगमरद जीव जज्र हरजक्ष,
सारदूळ नाहर सगह भिक्षरणेस पळपक्ष ।—१४४
महानांद जंगी मयंद नखी भूय नहराळ,
छटाधाव मंजारछळ वाघ मयंद विकराळ ॥—१४५

हंस नांम

सुगत हंस धीरठ सुचळ मुगताभखी मराळ,
मानसूक चक्रांम (मुण) अंगळीलंग उजाळ ।—१४६
रूपौ ग्यानी कवररस प्रांणनांम परकास,
महतगुणां रिखमंडळी जूऔ हंस उजास ॥—१४७

सिंघजात नांम

वावरैल वाजूपुरी सौनेरी सादूळ,
(और) केसरी ऊंठिया मिश्र पटैत समूळ ॥—१४८

हस्ती नांम

सिंधुर मदभर सिंघळी मैंगळ हर मदमस्त,
द्विप दंती मदभर दुरद हाथी हस्ती हस्त ।—१४९
कुंजर गैंमर पौंहकरी व्यारण कुंभी व्याळ,
गय मातंग मतंगजा न्यांमज गज सूंडाळ ।—१५०
रदन धंधींगर नगअरी पटहथ नाग प्रचंड,
भद्रजाती सारंग मंमद वैरक कंबू वयंड ।—१५१
मयद अनेकप आहर्मै (नौ) गजराज (पुकार,
धारै हर अवचंग नग आनों चक्र उधार) ॥—१५२

ऊंट नांम

करहो ऊंट गरढ़ो करभ पांगळ जूंग सुपंथ,
तोड जमाद दुरंततक गय जाखोड़ो (ग्रंथ) ॥—१५३

जमी नांम

थिरा रतनगरभा थिती धरणी धरा सधीर,
पहि पुहमी प्रथमी प्रथी सरवमहा जळमीर ।—१५४
अवन चळा अचळा यळा भू भूमी धर भोम,
मही कुंभनी मेदनी गऊगोत्रा यळ गोम ।—१५५
वसूमती धात्री गहवरा वसुधा तरविसतार,
रेणा खित धरती रुसा समंदमेखळा सार ।—१५६
सागरनेमी रसवती विपळा विमव विख्यात,
जगती जगमनमोहणी खोणी खम्याख्यात ।—१५७
दुगधा खंडी दीपदध मोहा उरवी मार,
कुळटा भारी कन्यका अनंतापती अपार ।—१५८
यला इळा (नाम दे आदमै विधकर जुगत विवेक),
धर रुहपत (यत्पादिधर उकती नांम अनेक) ॥—१५९

पीपल नांम

बोधीव्रख पीपळ सुव्रख चळदळ कुंजरचार,
असवत श्रीव्रख (आप सम यों श्रीक्रसन उचार) ॥—१६०

वड़ नांम

वट निग्रोध साखीव्रसी वडसाखी विसतार,
वैश्रवणालय धूजटी रतफळ (रुद्र उचार) ॥—१६१

वंसी नांम

वैण वंस (जव) फलवळै त्रणधज मसकर (तास),
पौहमीवंदण सतपरभ तुचीसार (विसतार) ॥—१६२

हरड़ै नांम

सुरभी सरवारी सिवा प्रभता अभियापोख,
हरड़ै जया हरितकी सुखदा प्रांणसंतोख ।—१६३

प्रपथा चेतकी प्राणदा कायस्थ गदकाळ ,
हेमवती हिमजा हरा परजीवंती (पाळ) ।—१६४
(कहि) अम्रत काकाळका श्रेह प्रेहसी (सार) ,
रांम तुरजका पूतना अभया (नांम उचार) ॥—१६५

केसर नांम

कसमीरज मंगळकरण केसर कुंकुमकाय ,
वाह्लीकजा गुड़वरण वह्नी (सिखा वताय) ।—१६६
पीतरगत संकज पुसन लोहन (चंनण लेख) ,
धरकाळैय सुगंधधर देववल्लभा (देख) ॥—१६७

चनण नांम

मीतरूख रूखांसिरै सोरभ मूल सुनंग ,
गंधसार मळियागरी (सेत अरुणआद संग) ।—१६८
सुरभी रोहण तरसुतर अहिपिय गंधअपार ,
सरीपाळ वल्लवसिवा श्रीखंड चनण सार ॥—१६९

पहाड़ नांम

अद्री गिर भूधर अचळ सांन माम पतसार ,
भाखर डूंगर दरीभ्रत श्रृंगी धात सुधार ।—१७०
यष्टकुटी परवत अनड़ त्रकुकुत मरुत अतोल ,
सिलोचय सिखरी ʼसघण आहारज्र अडोल ।—१७१
गोत्रगाव गिरपत गिरंद धरनग धरधर धार ,
(गिरधारी गिरधर धरै व्रज्री कोप जिण वार) ॥—१७२

पाखांण नांम

ग्राव धात गिर वंदगण पाथर घण पाखांण ,
उपळ सिला पाहण अलप (नांम दिखद निरवांण) ॥—१७३

कंचन नांम

भूर [illegible] [illegible] धातोपम कळधोत ,
कुंदन हेम कंचण कनक [illegible] चामीकर स्रोन ।—१७४

नाडा जोडा नाडियां नीरनिवास निवांण,
पौहकर (नारण) सर (प्रभा मुगत रूप मडांण) ॥--१८६

अंब नांम

अंब कुलीन सदक उदक जगजीवन जळवार,
(अर) पाथ पय विख अम्रत घणरस घणअप धार ।--१८७

संवर कं पौहर सलिल पांणी पांणद पाथ,
मेघ पुसप सरग्रह कमळ नीर (खीर पत नाथ ।--१८८

प्रवतक पीठ निवास पथ तोप अथर तर तात,
जाद निवास कवंध जप वसुधा घोख विख्यात) ॥--१८९

पुंडरीक नांम

पुंडरीक पंचन पदम सहसपत्र सतपत्र,
जळरुत जळरुह जळजनम जळज कुंज जळछत्र ।--१९०

नळणी वारज कोकनद वसूप्रसूत अख्यंद,
कुमलय सरसीरह कमल सरजनमा सरनंद ।--१९१

पिताविरंच महोतपल नीरज अंबुज (नांम),
पंके रौहनाळीज (पद्) पुहकर मैण (प्रणांम) ।--१९२

राजीव सरोज तांमरस सुसार सख दंड,
(नांम) कुसेसय हरनयण (प्रभा प्रकास प्रचंड) ॥--१९३

मछ नांम

सफरी झख संवर सफर मछली सलकी मीन,
चंचळ वारज वारचर प्रथरोमा पाठीन ।--१९४

जाद सकळ खय मकर (जप) अंडज जळआधार,
कुसली अनमिख (नांम कही) वैसारण ग्रहवार ।--१९५

मछ आनमासी (मुणौ) वळखड खीणविसार,
(नांम) अलूकी पयनिरत सिधचीरी सुकमार ॥--१९६

कमठ नांम

गुपतअंग पांचूप्रगट कूरम कमठ कलास,
(पण) जीवनद उभोडपग (वार हुलास विलास) ॥--१९७

देवळ नांम

देवळ देवालय दुरस सुरमंडप प्रासाद,
द्रुमग्रह धजधर धांमहर नितक्रत थांनग्रनाद ॥—१६८

धजा नांम

केत धजा धज कंदळी सतक्रत त्रहन (सुणाय),
वईजपंती पुनवती (दरस) पताका (दाय) ॥—१६६

गढ़ नांम

गढ़ दुरंग भुरजाळगही किलौ अगंजी कोट,
परदसाल प्राकार (पढ़ त्रव) वप्रवरण अचोट ॥—२००

छड़ीदार नांम

द्वारपाळ दरवान दर हुमियारक प्रतहार,
दरवारी दंडी दुरत छड़ीदार छकसार ॥—२०१

घर नांम

ग्रेह ग्रोक आराम ग्रहिं निलय निवास निकेत,
सरण वास वेसम सुग्रही सदन भवन संकेत ।—२०२

मिंदर आलय माळया धमळ सोध घर धांम,
पदआश्रय निजआसपद वस्ती पुर विश्राम ।—२०३

रहण सुथांनक धिसनु रुच आश्रय वसी अगार,
(वरणाम निरभय वसै तिकै सरण करतार) ॥—२०४

राजा नांम

नृपत नाथ नरनाथ न्रप नरपत भूप नरंद,
धरपत भूभ्रत धरमधुज राजा प्रभू राजंद ।—२०५

प्रथीनाथ पौह पाटपत राव राट राजांन,
परव्रढ़ स्यांमी पारथव अरज ईस ईसांन ।—२०६

अध भूभरता ईसवर ईसप अधप प्रजाप,
नरेस नेती नाह नरपळ लोकस अधाय ॥—२०७

जुजठल् नांम

सुज सिल्लार ग्रजातसत्र भरतान वयग्रभीत,
कउतेय ग्रजमीढ़ कंक पंडवतिलक पुनीत ।--२०८
सोमवंस, हस्तपुरपत* जुद्धस्थिर कुरजीत,
सतवाची जुजठळ (सदा किसन क्रीत सूं प्रीत) ॥--२०९

जिग नांम

मनु संसतन तंत्र सप्तमुख सतक्रत ज्याग सतोय,
जिग धूरज ग्रधवर जिगन (हद वितान घर) होम ॥--२१०

भीम नांम

भीम व्रकोदर बहुभखी गजबध सघणगाज,
कीचकार गंजेकरु सत्रांजीत (समाज) ।--२११
जुरासंघखय गजभ्रमी बळी गदाबळवांन,
गंधवाहसुत ग्रगमगम ग्रकवानंद ग्रमान ॥--२१२

ग्ररजुण नांम

कपीधाय रिपकैरवां धनुजय सरधनुधार,
यंद्रजीत ग्रगनीसखा दांनीरिप दैतार ॥--२१३
सवदवेध ग्ररजुन जिसुन पंडवमध पाराथ,
पाथ किरीटी पंडसुत हरीसखा जयहाथ ।--२१४
वाळमूक वेधीकरण सरग्रजीत सक्रनंद,
सवसाची वीभव सुभट वहनट सगतिविलंद ।--२१५
महानूर नर कारमुख सुनर माक व्रखसोन,
गुडाकेस कलिफाल्गुन सेतग्रसनयसेन ।--२१६
सुभ्रदेस जयकरणसत्र राधावेधी (रंग),
(मझा रूप श्रीकृष्ण रै सदा) धनंजय (संग) ॥--२१७

पाताल् नांम

वडवामुख धांनकवळ ध्रिथमीनळ पाताळ,
पनंगलोक ग्रधलोक (पड़) वनूपन (धाप दयाळ) ॥--२१८

---

* [illegible] – हस्तपुरपत ।

सरप नांम

आसीविख विखधर उरग भुजग भुजंग भुयंग,
सरग भुजंगम अहि सिरी नाग दुजीह पनंग।—२१९

प्रदाकं कुभी गूढ़पद काकोदर कनकाळ,
फकारी चक्री फणी वक्रगती (कहि) व्याळ।—२२०

चीळ कंचकी चखश्रवा गरळम भोगी (ग्यांन),
दंदसूक दीरघपिष्ट जिह्मग जैहरी (ज्यांन)।—२२१

लेलहांन विलेसरी (ओरे) कुंडळी (आंण),
नसदरवी पवनासनी (ज्यूं) वैधींगर (जांण)।—२२२

(काळी ध्रह काळी नथै असना तीर असन,
कालंद्री निरविख करी श्रीजसवती सुतन)॥—२२३

सेस नांम

सहसफणी चखधूसहस जिह्वादोयहजार,
सेस अनंत खगैसअग्र धरैहारजटधार।—२२४

भुयंगेस भूभारधर वणआलुकविसतार,
कुंडळ (एक) अहीस कर करै तलप (करतार)॥—२२५

रज नांम

धूळ रजी रज धूसळी सिकता वैलू संद,
खेह पांस (वलै) रेत खग रैण सरकरा (व्रंद)।—२२६

सुतधर चर पतरुहसुता वसुधासिरविसतार,
(पंत रौह धर जदनी पर उपजै नांम अपार)॥—२२७

धनुख नांम

धनुख सरासण चाप धुन करणअस्त्र कोमंड,
संकर आसय पुआससिध प्रहा पिनाक (प्रचंड)॥—२२८

सायक नांम

सायक पत्री अदर सर विसिख सिलीभुख बांण,
ग्रीधपंख यषु मारगण कंकपत्र करपांण।—२२९

खुर पपरी नाराज खग तिक्षण रोपण तीर,
कणक लंब चित्रपूख (कहि) तोमर वसीतुनीर।--२३०

सस्त्रअजं मघबळ असत्र पत्रवाह पारंद,
(प्रखत करोप अंगजपथ सरविद्या सामंद)॥--२३१

सरजात नांम

नावक (कर) पावक नखी चावक चपळा (चंग),
कंटी (छिद्र) कळंदरी खपरी परी (खतंग)।--२३२

त्रुका त्रधार कटार (तव) चंद्रकार चौधार,
अठांस छिद्री आंकड़ा किलकी (जंगीकार)।--२३३

(लेसंग) जखाळी त्रुकां (वांण) गिलोला (वंध),
चुगा फील (पग चंपणा नांम विदांम निमंध)॥—२३४

करन नांम

रवसुत चंपाधप करन सूतपाळ अरसाळ,
अंगराज राधातनय नेमप्रात दनचाल॥—२३५

दातार नांम

मौजी त्यागी मौटमन उदभट प्रगट उदार,
महातमा सुदता सुदन दांनअयन दातार।—२३६

द्रबउभेळ दानेसरी (और) उदीरण (आंण,
कहि महेस दाता करण वरनत प्रात वाखांण)।—२३७

विल्सण तद वगसण व्रवण समपण मौज सुदात,
रीभ विहायत विसरजण वितरण दांन (विख्यात)।—२३८

प्रतपायण निरवयण (पढ़ तवां) उछरजण त्याग,
विसरायण उदक (वळै भूप त्रवै वड भाग)॥—२३९

याचक नांम

ईहण जाचक आसकर रेणवदूथीराह,
मनग्गनमागण माग्गण अरथी भिख्ग अचाह।—२४०

लोभी नीपक लेणग्ति दवागीर (दिनगन),
जाचक (नांम दखून जिण दंदीजण विख्यात)॥—२४१

कव नांम

कोविद पिंडत कव सुकव मेधादध धीमांन,
दोखविधूसी खुणविदुख विद्याधर विद्वांन।—२४२

चतुर निपुण विचखण सुचत (प्रापत रूप) सुगात,
प्राग्यन विध गिद विपसंचित वेता धीर विख्यात।—२४३

सुवधी गिन ग्याता सुधी आचारज अभभूप,
सूरकसट कन लवधसुण समतीयंद (रूप)।—२४४

सुलखण मेधी वरनसन विवधा (जांण) प्रवीण,
गुणी मनीखी वागमी लोभीगुणरसलीण।—२४५

(कुसळ विसार धक वंद कवि कवराजा कवराज,
नायक मन निध पारखद काव्य कवेसर काज)॥—२४६

जस नांम

सुसबद कीरत सुजस जस वरण ववयण वखांण,
साधवाध असतूत प्रसध (पढ़) सोभाग (प्रमांण)।—२४७

वरद विसेख गुणावळी कीरत ख्यात सुकाज,
(सुनत) सुपारस (समगिना जदा हरण जय ज्याज।—२४८

लिसद प्रताप सलोक यळ रट रूपग रुघनाथ,
सोभा खीर समंद सी गुण जस ऊजळ गाथ)॥—२४९

जूंझार नांम

सूर वीर विक्रम सुभट (कळ) जूंझार सुक्रीत,
तेजस्वी अहंकारतन (पढ़) विक्रमांत (पुनीत)॥—२५०

तरवार नांम

असमर खांडौ खड़ग असि किरमर विजड क्रपांण,
चंद्रहास वांणास (चव) करठालग केवांण।—२५१

जडळग धारुजळ दुजड मंडलाग किरमाळ,
रूक सार तरवार खग तिजड़ जीतरिणताल।—२५२

लोह धात धजवड लपट कार्खेयक खळकाळ,
निसतेयस आभानरां प्रभावंक (भूपाळ)॥—२५३

घोड़ा नांम

हर हेमर वैंगाळ हय वाजी खैंग विडंग,
रेवत गाजी गंधरव ताजी तुरी तुरंग।—२५४

अस धूरज सिंधव असप वाह तुरंगम वाज,
चंचळ तारख भिड़ज (चव रच) पवंग धजराज।—२५५

कववीती (धजराज कही) अरवा सपती (आंण,
तेज सजीव वितंड तन कह्या नांम) केकांण॥—२५६

द्रोपदी नांम

द्रोपदजा (कहि) द्रोपदी जग्यासेनी (जांण),
पंचाळी पंडवप्रिया (वेर) वेदजा (वखांण)।—२५७

सरअंगना ऋसना सती वेदवती सिखवांन,
(पोग्वण सोखण द्रोपदी देवी रूप निदांन)॥—२५८

सत्रू नांम

हाणक दोग्वी वैंरहर वैधी अरी विपख,
सत्र सपतन सात्रव सत्रु केवी अहित कुरख।—२५९

दुखदायक दुनड दुयण असहण प्रसण अभीत,
विघनकरण अणवंछकी अभमाती अवजीत।—२६०

पंथवापंथक प्रतपखी दुष्ट विरोधी (दाख),
खेधी दमू अमंत्र खळ रिम धेखी रिप (राख)।—२६१

दुरहित विडघातू दुरी अरंद घातक (आट),
दुरत दूसंह दुसमण दुखी विखम कुवादीवाट॥—२६२

सेन्या नांम

प्रतना सेन प्रनाकनी खूर कटक खंधार,
वीरथाट दळ वाहनी अनी कनी कळियार।—२६३

चमू तंत्र चतुरंगणी घोड़ांघटा घड़ूस,
रणविरमी आहरट धराविधूसण अरधूंस।—२६४

विखम वादवी वाहणी गरट फोज गैनूळ,
नरंदवार अरनाथनी मौगर घड़ कडमूळ।—२६५

चक्र सकळ ध्वजनी चमू घांसाहर घमसांण,
थटहय थाट वरूथनी खरहंडभड़ खुरसांण ।—२६६

साथ समूह ग्रवंधनी गरट दमंगळ गोळ,
(गंजण रांमण लंक गढ़ चढ़ै रांम चखचोळ) ॥—२६७

जुध नांम

संजुग भारथ जुध समर गमहर दुंद ग्रमीक,
कळह ग्रासकंदन कदन ग्रभ्यामरदग्रनीक ।—२६८

प्रहरण ग्रायुधन प्रधुन तेगभाट रिणताळ,
जंग जुध कळ जज्ञवत वाड राड़ विकराळ ।—२६९

मधू समरद संग्राम (मुण) संप्रहार संग्रात,
कळि ग्राजी ससफोट (कहि) प्ररहा वेढ़ प्रघात ।—२७०

महाहव्य रिणसाल (मुख) संपरायक खळसाळ,
सारभ्रकोळा संपसुज प्रांणदान ग्ररपाळ ॥—२७१

मनुख नांम

म्रतलोकी मानव मनुख धव नर कायाधार,
देहतती (जग) ग्रादमी सुग्यानी तनसार ।—२७२

पुरख (गोद) पंचीक्रनी (नाप मांन) गुणनीत,
मनुज (देह भुज मुगत कै पूरण रांम प्रतीत) ॥—२७३

जनम नांम

जनम उपजण जनुख जण उपत भव ग्रवतार,
संभ्रत उदभव जगग्रजत (करै पाळ करतार) ॥—२७४

बाप नांम

पित प्रपिता सविता पिता बीजाकारण बाप,
तात जनयता जनक (तव) वितदाता (विख्यात) ॥—२७५

माता नांम

ग्रंबा जणणी सवयती सवती मात (नसार),
कूखधारण रछ्याकरण माता (गुण मंदार) ॥—२७६

बालक नांम

अरभ पुत्र बाळक असुध सिसु लघुवेस कुमार,
पाक प्रथुक अपकंठ (पढ़ि नांम) बाळ (निरधार) ।—२७७
डिमतनु धप डमरू साव पोत (ततसार,
सुंदर ललत उतांन सहि कोमळ नंदकुमार) ॥—२७८

भाई नांम

सगरव हित सोदर सह भाई बंधव भ्रात,
समानोदरज वीर (सिव वल) सोदरज (विख्यात) ॥—२७९

वड़ा भाई नांम

जेठी पित्र पूरवज अग्रज मोटा अग्रम (मांन) ॥—२८०

छोटा भाई नांम

कनसट जवसट अवरकज अनुज लघू कनियांन ॥—२८१

पद नांम

कदम ओयण पग गवण क्रम विचरण पद गतवंत,
चलण पांव अंघ्री चरण पय (परक्रमा पुरंत) ॥—२८२

कड़ि नांम

कड़ कटीर तनमध कटी कळन लंक कट (कीध) ॥—२८३

पेट नांम

पेट कूख नंदी (पढ़ौ) उदर गरभ (भव दीध) ॥—२८४

पयोधर नांम

उरज कुच स्तन पयधरा उरदूत उरज उरंग ॥—२८५

हाथ नांम

हाथ आच कर भुज हस्त पांचूंमाख (प्रसंग),
कम्म जुधजमदार कर पांण बांह (परचंड) ॥—२८६

आंगळी नांम

(गौ)करसाखा अंगुळी (कळ दळ मान बिमंद) ॥—२८७

नख नांम

भुजकंट नख पुनरभव नखर पुनरनव (नांम),
करज नखी करसूक (कहि) विखदाती (वेकांम) ॥—२८८

रोमावली नांम

रोम पगम गो तनरुह लोम वग्ग सथळ (लेख) ॥—२८९

ग्रीवा नांम

ग्रीवा गावड़ कंध गळी सिरसथंम (संपेख) ॥—२९०

मुख नांम

वकत्र तुंड बोलण वदन रमनाग्रह सुररास,
आस लपन आनन अखण मुख (हर नांम मिठास) ॥—२९१

जीभ नांम

रटण वाच वाया रसण जिभ्या वगता जीह,
(जिकै) रसग (नाहर जपौ नित "ऊदा" निस दीह) ॥—२९२

दांत नांम

दंत रदन रद डसण दुज मुखदंत वांणीमंड ॥—२९३

होठ नांम

ओट होट रदघर अधर रदछद अधर (सुखंड) ।—२९४

होट ओट रदघर अधर रदनसदन मुखरूप,
दंत रदन रदडसण (दुज अेमुख रूप अनूप) ।—२९५
(रसण जिभ्या स्वादरस वाया वगता वाच,
रसण रसगना जीह रट समरण जीहा साच)[1] ॥—२९६

श्रवण नांम

सुरत धुनीग्रह सांभळण करण श्रवण श्रव कांन,
वायकचर श्रोता (वणै दिस जासू दुनिदांन) ॥—२९७

नाक नांम

ग्रहणगंध सुरतग्रहि घ्रोणा नासा घ्रांण,
नाग तिलकमग नासका नक (नाकी निरवांण) ॥—२९८

---

[1] छंद २९२ में आये हुए जीभ के पर्यायवाची शब्दों की पुनरुक्ति यहाँ की गई है।

नेत्र नांम

देखण द्रठा चख आंख द्रग नेत्र विलोचन (नांम) ,
नैण नयण अंवक निजर रार निरख गो (रांम) ॥—२९९

माथा नांम

कं मसतक माथौ कमळ मंड रुंड उतमंग ,
मउळी सीरख मूरधा (वळ) सिर सीस वरंग ।—३००

उरध मूळ (यौं) अकट (अस दळै रांम दससीस ,
पाट वभीषण थापियो दांन लंक जगदीस) ॥—३०१

केस नांम

कुंतळ सिरोरुह चिहुर कच सरळ बाळ सिरमंड ,
चिकुर केस मोहितचखां (प्रभता) स्यांम (प्रचंड) ॥—३०२

सरीर नांम

वरखभ देही डील वय पुदगळ काया पिंड ,
अंग कलेवर आतमज मूरत अप घण मंड ।—३०३

तन वंध गात सरीर (तव) पयगुण देहीपंच ,
अंगी (सूत अळूझियौ परखै संत प्रपंच) ॥—३०४

सेवा नांम

भुजन जप सेव भगत पाठीवेदपुरांण ,
नवधा गुण हरनांम (त्यौ) ग्यांन ध्यांन (गुण जांण) ॥—३०५

वसत्र नांम

वस्त्र वाज पिधन वसन चितहर अंबर चीर ,
लजरख वसतर लूगड़ा सोसन ढकणसरीर ।—३०६

तनत्रणगार दकूळ (तव) पैरावणि पौसाक ,
(भूप रुवै सिरपाव भण तेज रूप तमचाक) ॥—३०७

आभूषण नांम

आभूषण कृतअंगनैं (मुज) भूखण सिणगार ,
(जड़त घाट विधविध जकै नवां चमक गतनार) ॥—३०८

(कैं) भूखण मोती कड़ा पनां (जड़त) सिरपेच,
कंठी नग माळा मुगत बीटी वेल बगेच ।—३०९

दुदगी चांदस रूळ (नैं) कुंडळ मुरकी (कांन),
(बांह्यां) बाजूबंध (बिहूं) पुंची (जड़त प्रमांण) ।—३१०

(पग) नेवर वेड़ी प्रभा (जुड़त) जनोई (जोय,
मुर आभूखण मन्द का नगत छतीस कहोय) ।।—३११

छतीस सस्त्रों के नांम

(चौरासी) बंदूक (चल चौसट चोट) कबांण,
(वांक) पटा खग सेल (वहि विध चौईस बखांण) ।—३१२

(च्यार) कटारी (हाथ चढ़ पांच मार) पिसतौल,
चुगा (तीन विध सूं चवै) खंजर (वधू गुण खोल) ।—३१३

(पांण) गुरज (गंजण) (प्रसण) वलम मोगर (वीस),
भिंडरपाळ (भुखंडियां) तोमरार (खट तीस) ।—३१४

चावक अंकुस चक्र (चढ़) गुपती गदा (गणाय),
छुरी नखा फूळता (छटा) नेजम खांखर (न्याय) ।—३१५

(दावपेच) फरसी (दरस) सांग ढाल तिरसूळ,
(कठण) मूठ (वांना करग) करपत्री कांबार ।—३१६
तेग दुधारी करतरी (यौ जग) झंफ (उचार) ।।—३१७

चंचल् नांम

चटळ चळाचळ कंप चपळ चंचळ तरळ (उचार),
(पार) पळव अथर पलव लोल अधीरज (लार) ।।—३१८

स्त्री नांम

वनता नारी वलभा भांमण कांमण भांम,
दारा इस्त्री सुंदरी वामलोचना वांम ।—३१९

वाला त्रिया नितंवणी अवळा तरुणी (अंग),
महळा ग्रेहणि मांणणि प्रमदा प्रिया (प्रसंग) ।—३२०

जुवती जुअती जोखता अंगना ललना (आंण),
मुगधा कलत समूतनी जोखा पतनी (जांण) ।—३२१

रमण तनूदर पुरंध्री तलय (कांम मन तार),
गजगवणी वारंगना (व) सती (नांम विचार) ॥—३२२

भरतार नांम

स्यांम प्रणय वर मनयष्ट भरता पत भरतार,
प्रीतम प्रिय प्राणेस (पर) वलभ विभौडा (वार) ।—३२३
प्रेष्ट भोगता असू पती रमण धणी धव (रंग),
कामख नाह (र) देसकंत (सुख) वरयता (संग) ॥—३२४

सुंदर नांम

वांम मधुर अभिरामवर सुंदर मनहर (सार),
साध मंजु मंजुल सुखम पेसल सोभन (प्यार) ।—३२५
रुच सुलखण दीपत रुचर कमन ललित कमनीय,
सुभग सरूप (र) दरसणी रम सोभत रमणीय ।—३२६
तनक्रांती अनुपम (तवां) अदभूत रूप (उदार),
जोत तेज (गुण जगत में सही रीझै संसार) ॥—३२७

नांम नांम

अवधा संगना आह्वै नांमधेय (निरधार),
अवखा अंक संकेत (उड ज्यांसूं नांम जमार) ॥—३२८

मित्र नांम

सहऋतवा सहचर सुरुद्र प्रीतम सुखदा प्रांण,
मैगळ मित्र मनहितू वलभ यष्ट (वखांण) ।—३२९
सवय स्यांम वायकमदा वयच सहायक (वेस),
प्रेमीगुण संध्री (चपढ़) हारद (जांण हमेस) ॥—३३०

स्नेह नांम

हेत राग अनुराग हित प्रेम मेळ सुख प्रीत,
हेकमन हारद प्रणय नेह संतोख (पुनीत) ॥—३३१

आणंद नांम

मुद आणंद (र) हरखमन मोद (र) रळी प्रमोद,
रळी महारस आनंदघन (जिणकुळ) उमंग विनोद ।—३३२

छभा नांम

संसत परखद आसता संमत छभा समाज ,
आसथांन समजायता सासद (घटा सकाज) ॥—३४३

सबद नांम

सबद घोख निहघोख (सुद) निनद कुणद (धुन नाद ,
रिण) आरव निरावर (सुणत टेर कर साद) ।—३४४
निहकुण राव घुकार नद सोर घोर अवसार ,
(ग्रहै ग्राह दध गयंद नैं धर हर कियो उधार) ॥—३४५

सोभा नांम

भा आभा दुत विभ्रभा कोमळता छिब क्रांत ,
परभा (कुण) सोभा प्रभा सुखमा (राधा सांत) ।—३४६
(कहै) विभूखा कंकला श्री (संकर तनसार ,
सारे सार वस्तु सिरै "ऊदा" प्रभा उचार) ॥—३४७

दिन नांम

दिन वासर दिव दुदिवा दिनंद (तेत) अहिदीह ,
(आठ पौहर निस दिन उचर "ऊदा" भजन अबीह) ॥—३४८

किरण नांम

रुच सुच गो छिब दुत रसम जोतर तेज उजास ,
किरण मयूख मरीचिका भानुभा करभास ।—३४९
प्रभा विधा वसू दीपती किरणावळि (सुखकंद ,
सुखद धांम) कर अंसु (रव यळा पोख आनंद) ॥—३५०

तेज नांम

तेज उहानन द्योत तप जगचख वरच उजास ,
तमरिप निसचरत्रास उजवाळो "ऊदा" अरक ।
(धौं उर ध्यान उजास) ॥—३५१

उजळ नांम

सेत सुभ्र पंडर सुकळ अरजुन सित अवदात ,
विसद उजळ पंडर धवळ सुच उजळ सित ध्यान ॥—३५२

अंधारो नांम

अंधकार तम अवत मस अंधारो (या) अंध ,
तिमर तम सवळ संतमस अंध (भूमधा अंध) ॥—३५३

रात नांम

निसीथिणी रात्रि निसा निस रजनी तमनीत ,
तमसा खणदा तामसी विभावरी (वदनीत) ।—३५४
जणिया सखरी जांमणी रात अजमा (रीत ,
नांम) खिया पखनी निमा (पठ) समप्रिया (पुनीत) ॥—३५५

स्यांम नांम

किरट धूम धूमर कसण स्यांमल मेचक स्यांम ,
असत नील प्रभू अळअळी स्यांम रांम घणस्यांम ।—३५६

जोत नांम

दीपक दीप प्रदीप दुत सिखाजोत सारंग ,
कजळअंक ग्रहमिण कळा ताईतिमर पतंग ।—३५७
नेहांनेह सिखजनम उत्तमदसा उदोत ,
(धांम) उजासी कळधन (प्रगट दसा भव पोत) ॥—३५८

चोर नांम

चोर निसाचर गूढ़चर प्रतरोधक परमोख ,
मेधा कुबधी मलमुलच तसकर परसंतोख ।—३५९
परास कंधी पाटचर अेकागार अलाम ,
दसू पंथकनाळ दुष्ट (तेन पारख हित ताम) ॥—३६०

मूरख नांम

मूरख जड़ सठ स्यांनमठ मूढ़ कुंठ मतमंद ,
मात्रीमुख कदवद मुगध (दुयण सयणघर दुंद) ।—३६१
(जथा जात) जालम निलज मंद अजांण अमेध ,
अगन विकळ अगळज असन खळ वेधेअ निखेध ।—३६२
नैड मूक विवरण निलज बाळ गिंवार अबूझ ,
वैतवार डौंढ़ो त्रिमुखगुण विणवाठ अगूझ ॥—३६३

स्वांन नांम

कौळयक कूकर कुतौ रतसाई रतकील ,
रातजगण लटरत (परस) वळतपूंछ रतवीळ ।—३६४
खेतळग्रस मंजारखळ सारभेय असुन स्वांन ,
भुसण पुरोगत अस्तमुख गहिचक्रवाळध (ग्यांन) ।—३६५
ग्रामसीह जिभ्याप (गण) ग्रहमृग मंडळगाढ़ ,
साला (व्रख) ग्रगदेससठ (ग्रौर) तंदुख (ग्राढ़) ।।—३६६

खर नांम

खुरदम खर गरदभ खुरप भूकण लादणभार ,
करणलंब संकूकरण ग्रंबापौहण (उचार) ।—३६७
(चिरमी हीरा सब चलै चव वाळै ग्रन च्यार) ,
संखसवदी (राखै सदा भरै माटी कुंभार) ।।—३६८

विख नांम

गरळ हाळाहळ जैहर (गण) मारण तीखण मार ,
विखरस (दुख संसार विध कर रिछ्या करतार) ।।—३६९

ग्रम्रत नांम

सोम पियूख मधु सुधा ग्रम्रत मार (उचार) ,
ग्रगद (राज भोजन) ग्रमर दधसुत रतन (उदार) ।।—३७०

चाकर नांम

किंकर चाकर सेवकर दास नफर भ्रत (दाख) ,
चैंडौ परभ्रत परमचित ग्रनुचर डिगर (ग्राख) ।—३७१
परमकं दपरजात (पय) विधकर ग्रनुग खवास ,
परपिंडा दिनि जोज (पढ़) चेर प्रईक चराम ।—३७२
भुजग नेदगर हुकममय परचाकर कपतप्रीन ,
(स्वांम धरम सांचौ सदा चाकर जिकै नवीन) ।।—३७३

हुकम नांम

[illegible] [illegible] [illegible] (सुणै) हुकम फुरमांण ,
[illegible] [illegible] निदेस (नृप [illegible]) आदेस (सुजांण) ।।—३७४

आतंक नांम

भीत बीह डर भीन भय उडक चमक आतंक ,
(नानक) सनंक भमक (नो हर मेटण) संक ॥—३७५

वेळा नांम

वार वखत प्रस्तार वेळ (कहि) समय गत काळ ,
वरतमान अंतर वहण (गो) गतमत हरिगाळ ।—३७६

(स्यांम) ताळ पौहर नगर नाण घनी (विख्यान .
देखत भूली जगनदळ जीन गरन बहिजान) ॥—३७७

पीड़ा नांम

वपरोगी पीड़ा विथा आमय गद आतंक ,
रुग उताप दुख अराह रुज संकट मांद ससंक ।—३७८

(हरी अपाटव) कष्ट (हर मेट) व्याध अगमाधि ,
(हरहर सिमर हराहरा सिवसिव भुज्यां समाधि) ॥—३७९

कूड नांम

कूड वृथा मिथ्याकथन असत अठीक अणाळ ,
विथत विकळ अनरत विरत अलीक आळपंपाळ ।—३८०

(वचन) भूठ विपरीतविध (स्वारथ कज संसार ,
परमारथ पद पूज गुर "ऊदा" रांम उचार) ॥—३८१

सांच नांम

सांच सयग चौकस सुसत जथा तथा सिव जौक ,
वीसविसा (दसभूतवर) समीचीन सत (चौक) ॥—३८२

वलध नांम

तंव अखभ बळरिखभ (तव) ककुदमान वळकार ,
वाडभेय अखसेन (वळ) श्रंगी भेड अखसार ॥—३८३

गाय नांम

सुरभेई सुरभी सुरह गऊ अंगना गाय ,
धेनु रोहणी देवधन गत उखा महागाय ।—३८४

उसा दहव्रन अरजुनी तमा त्रंबा तार ,
निधमाहेई निलयका (सो) अगणी (जग सार) ॥—३८५

वछ नांम

वछा केरड़ा वाछड़ा तरण टोगड़ा (तोल) ,
सक्रत करजा वाछ (सुर यों) नलवार (अमोल) ॥—३८६

दूध नांम

मधू दूध पय खीर (मुण) गोरस बलमयगात ,
उत्तमरस ऊधस अंम्रत सतन पुंसर ससात ॥—३८७

दही छाछ नांम

दही खीरज गोरस दही मथन छास तक्र (मंड) ,
कालसेय उदस्त (कहि पांचू स्वाद प्रचंड) ॥—३८८

मांखण नांम

तक्रसार दधसार (तव) नैंगवीन नवनीत ,
मेळसरुज माखण मधुर परघ्रत (साद पुनीत) ॥—३८९

घी नांम

हई यंगवन तूप हवि घिरत आज आधार ,
आहिज चौपड़ अंगवळ सरप खह विखसुधार ॥—३९०

भोजन नांम

भख जीमण भोजन भखण अभवहार आहार ,
आरोगण खादन असन निगस लेह अनसार ।—३९१
पतवसांन अवसांन (पढ़ सुखदा) मांण (सवाद) ,
(गहि) बळवधण अखांणगुण नित्यासी यस (नाद) ॥—३९२

मेरगिर नांम

सुरथांनक कंचनसिखर सुरगिर गिरंद सुमेर ,
पंचरूप नगमिणप्रभा (महि) सुरथांनक मेर ॥—३९३

देवता नांम

त्रिदस अमर वंदारका दईत्यारी सुर देव ,
देव अमर दिवोकसा आदत्या अदतेव ।—३९४

नीरा नदना निम्नगा वह्निगुन गिरनांग ,
अदकना नुमना नदन सुनाभुजीग (प्रगांण) ।—३९५
सुमन अनंती अपगा (रट) निभूकन प्रगगार ,
अनमृत्वाद अगनीभ्रमा "कृदा" (नांम उचार) ॥—३९६

अगन नांम

दावानळ अगनी दहण सिखा कृशानण (सार) ,
मंगळ सगनी आमरमुख पावक तेज (अपार) ।—३९७
जळण धनंजय जाळिगळ दवना दार विदार ,
कृस्न वरतमा अग्राकंण सिखावांन सिखसार ।—३९८
आसल पन जाळण अनळ स्वाहापती सतेज ,
वरहीमुख सुनवन दहन ज्वाळाजीह जंगेज ।—३९९
उखर विध गुखगा अपन दुराह विरोचन दाह ,
चित्रभांण माहेसख मोचकेस सुरचाह ।—४००
आसउदर वहनी उमन वेदपित वित्रहोत ,
विभा विहद भानूं विखम मखासमीर (उदोत) ।—४०१
रोहतास वसू छागरत प्रजळत तनूनपात ,
धोम समीग्रभ धूमधज हर (हय कहिपात) ।—४०२
आसआस आतस असह (वळ) हुतभख हव्यवाह ,
(सोख पोख संसार मैं समता जगत सराह) ॥—४०३

वलभद्र नांम

संकरखण बळ सितासित भेद जमा बळभद्र ,
कांमपाळ बळराम (कहि) मुसळि हळि प्रियभद्र ।—४०४
नीलंबर अश्रांनिका दळअभंग बळदेव ,
कृष्णमाग्रज (रु) अनंत (कहि रोहणेय रस सेव) ॥—४०५

वरण नांम

प्रासी जळकंतार (पढ़) जळविभू वरण जळेस ,
मेघवरण दधधांम (मुण) पयग प्रचेता (पेस) ।—४०६
(नांम) परंजण नीरपत वारसार वायार ,
जळज (जितारछक जवर) वरणपास (विसंतार) ॥—४०७

देवता जात नांम

किंनर गंध्रव सिभकर जख रिख तुमर (जांण),
विद्याधर चारण वसू पितर प्रसाच (प्रमांण) ।—४०८

संध्याभ्रत अपसर सुरज नाकी धरम (पुनीत),
गौह्क भ्रत सुरलोकगत (पूजौ साच प्रतीत) ॥—४०९

अष्ट सिध नांम

अणिमा महिमा ईसता प्रापत (नै) प्राकांम,
वसीकरण गिरमी (वळै) लघुमा (वसू नांम) ॥—४१०

नवनिधि नांम

कछ्प खरव मुकंद (कहि) नील पदम (निरधार),
महापदम संखर मकर (यौ) निधकंद (उचार) ॥—४११

धन नांम

आय तेयक सवर अरथ माया धन धरमंड,
द्रवण वसू लखमी दिरव (खित) निध रिध (नवखंड) ।—४१२

संपत माल निधांन (सुण) आथ खजांनो (आख,
वण कुंभ रखत प्रखत विध भव किरपा सूं भाख) ॥—४१३

मोती नांम

मोती मुगता मुगतफळ गुळका रस ससगोत,
मुक्तज मुगतज सीपसुत उदकज स्वात (उदोत) ॥—४१४

स्यामकारतक नांम

सिवकुमार वाहणसिखी क्रतका उमाकुमार,
प्रगतवाह विसाख (षट्) सेनांनी ब्रमचार ।—४१५

तारकार कंतार (नव) सगभू छमा सकंद,
खटमातुर खटवदन (कहि) अगभू (दे आनंद) ॥—४१६

मोर नांम

केकी बरही मोर (कहि) सिखी भुजंग सारंग,
नीलकंठ घननाद नट [illegible] प्रसन्नपतंग ॥—४१७

ग्रचक निग्वंडी निहंड (चक) सेनानीरस (नार) .
सुवलांग सिखावळी कुंभ कलापी (सार) ॥—४१८

गुरड़ नांम

पंखीपत तारक सुपरण गुरड़ सेन खगराज ,
अरुणानुज व्यालारि चक्रि हरिवाहण गिरराज ।—४१९

सालमिली सुपरण राजव वैनतेय मनवाह .
सुधाहरण नकनीसरण गगनमान अहिगाह ।—४२०

सोवनन कस्यपसुतन पंखीपती खगपंख ,
श्रीधळ खगपंखी प्रगड सुपरगोय अणनंख ।—४२१

वजरतुंड अरुणावरज यंद्रजीत अणभंग ,
मंत्रपूत तारक (मुदै) पूतातमा (प्रसंग) ॥—४२२

वेग नांम

सप्रद (दाख) मंकू प्रमर सिघ्र वेग जव (नार) .
तुरत वाज अंधायतर अजुसार वस (उचार) ।—४२३

तरस आस आतुर सतुर चंचळ दाप चलाक ,
तूरण अवलंबत झट तर वरय चपल रमाक ।—४२४

सहस उतावळ दुत (सरस) अवगत रसा अरौड ,
(अस) सतेज धौड़ैय धक (जळद पवन मन जोड़) ॥—४२५

पवन नांम

जगतप्रांण आसक जवन वाय वात गंधवाह ,
अगवाहण मारुत मरुत अहिभख पवन असाह ।—४२६

सुपरस दागत सुपरसन अहिवळ भख ऊमांन ,
अनळ नील नभसांस (यळ) जळरिप प्रांणजिहान ।—४२७

वायू चंचळ गंधवह सवळ प्रभंजण (साख) ,
सोभ समीर समीरण (औज) प्रकंवण (आख) ।—४२८

वाएरौ आंधी विखम घणवह चक्र वघूळ ,
(सीत मंद गत उसन मैं गिगन) धूंध गैतूळ ॥—४२९

घण नांम

धाराधर घण जळधरण मेघ जळद जळमंड,
नीरद वरसण भरणनद पावस घटा (प्रचंड) ।—४३०
तड़ितवांन तोयद तरज निरझर भरणनिवांण,
मुदर वळाहक पाळमहि जळद (घणा) घण (जांण) ।—४३१
जगजीवन अभ्रय रजन (हू) काम कमहत किलांण,
तनयतू नभराट (तव) जळमुक गयणी (जांण) ॥—४३२

बीजली नांम

चपळा तड़िता चंचळा विधुत असनी वीज,
(मुण) जळवाळा जळरमण खिणका कांसैखीज ।—४३३
संपा समरव सतरदा छटा रासनी (छेक),
आकाळकी अैरावती विजळी खिण (विवेक) ॥—४३४

आकास नांम

वोम गयण अभ नभ वयद अंतरीख आकास,
खं असमांन अनंत खह पौहकर अमर प्रकास ।—४३५
मेघ, खगपंथ* पवनमग (सुर उडपत तत सार),
पूरण आभौ विसनपद सुन्य पौल (दुत सार) ॥—४३६

तारा नांम

जोत धिसन ग्रह जोतकी तारा उड रिखतेज,
(रि) तेज रूपमिण तारका नखत्र दीपनभ (सेज) ॥—४३७

संख नांम

संख कंव बंधव संखी दधसुत वारज (देख),
विनद खौड मावरत (विध) रतना मध्यत्ररेख ॥—४३८

नाव नांम

दैहो दैहः पोत वहळ जळजान नाव जिहाज,
कांणबहण बोहि (बळै) तरण (नांम निरताज) ॥—४३९

नेजहिया नांम

वांणी माकस दस्तिणी नेजाहिया (जळ स्थान),
रसभेदी दुरनेरी (निपुण) नाकना (न्यान) ।—४४०
नागीनां नीरागना गोरैभ डाळासंग,
नावांहाकण (गुणनिपुण पारानार प्रसंग) ॥—४४१

चौईस अवतार नांम

रांम क्रसन नरहर रिखभ परसरांम हरी वाराह,
मछ कछ (मीन) मनंतर नारायण सुरनाह ।—४४२
ध्रूवरदांम धनंतर कपलदेव निकलंक,
सनकादिक हंसादि (दत) प्रथू व्यास (परियंक) ।—४४३
वांमण बुध दुजराम (बळ गो) हयग्रीव (उतार,
वपधारे चत्रविगनी पळकाज भार उतार) ॥—४४४

सीता नांम

जगदंबा श्री जानकी वैदेही हरवांम,
सीता भूजा मिया सती जनकजा (स्यांम) ।—४४५
महमाया मा मइथळी (कंकट करण अकाज,
जिकै कोप लंका जळी राकस विगड़ै राज) ॥—४४६

ऐरापत नांम

हस्ती ऐरपत हसत मघवावाहन मतंग,
रांमणभ्रम सुरनाथरथ (और) वलभंउतंग ॥—४४७

सताईस नक्षत्र नांम

असनी भरणी (आददे) क्रतका रोहणी (काज),
अगसर आद्रा पुनरवसू पुस असलेखा (पाज) ।—४४८
मघा (नांम दसमौ मुणौ) पुरबाफालगुणी (पेख),
उतराफालगुणी हस्तउड चित्रा स्वांत (विसेख) ।—४४९
वैसाखा अनुराधा (वळ) जेष्टा मूळ (जणाय),
पूरवाखाडा उतर* (पढ़) श्रवण धनेष्टा (पाय) ।—४५०

---

* उतराखाडा ।

सतभिख पूरवाभाद्र सुणि उतरा* रेवती (अंग,
नांम सताईस सूं नखत्र सुण कवियण परसंग) ॥—४५१

बारै रासां रा नांम

मीन मेख व्रख मिथन करक सिंघ कन्याह,
तुल व्रसचक धन मकर (तव रास्वां) कुंभ (सराह) ॥—४५२

नग नांम

मिण मांणक मुगताहळ पना लाल पुखराज,
चंद्रमिणी चिंतामिणी अहिमिण पारस (आज)।—४५३

नीलमिणी सैलांन नग चूनी हीरा चूंप,
(ले) पीरोजा लसणिया पारस फटक (अनूप)।—४५४

गोमोदक मूंगा (गणौ) पदमराग परवाळ,
(निध) मरकतमिणी नीलवी (अत दुत तेज उजाळ) ॥—४५५

सात धात रा नांम

कंचण तार जसोद (कहि) सीसौ लोह (सुणाय),
तांबौ (वळै) कथीर (तव सात धात दरसाय) ॥—४५६

सात उपधात रा नांम

(हद) पारौ विख हींगळू (त्यूं) अभ्रक हरताळ,
रसकपूर मूंगा (रटौ विध उपधात विसाळ) ॥—४५७

हंस नांम

मांनसूक धीरठ (मुणौ) मुगताचाळ मराळ,
चक्रांगी अवदातचळ लीलग हंस वलाल ॥—४५८

मूसा नांम

मूंसा ऊंदर सूचिमुख मूखक भखमंजार,
वजरदंत आखू (वळै) ऊंदर (नांम उचार) ॥—४५९

षट भाखा नांम

प्राकृत (नरभाखा पढ़ौ नागां) मागध (नीत,
सुरभाखा सो) संसक्रत (रकस) पिसाची (रीत)।—४६०

गरभिनी (पंगोऊपन तनुज) हुरंनी (दास ,
प्रमना काव्य पाहनमैं पै भाखा मत पास) ॥—४६१

च्यार पदारथ नांम

(धार प्रथम मुरत) धरम (दत गुण) अरथ (विभाग) ,
कांम (अनुरण कांमना प्रभाव) मोख (उपाग) ॥—४६२

सखी नांम

सखी सहेली सहचरी हितु सुवंछक (हेत) ,
वयसा सहीनी (वळ सुगदा) सगण सचैत ॥—४६३

च्यार प्रकार री मुगती रा नांम*

निश्रेयस निरवांणपद असन मुगत अपवरग ,
गतनिरभयआवागमण सम्माधीग वरस्वरग ।—४६४

ग्यानमुगत केवळगत महामुगत नरमोख ,
पुरीवास सामीप (पद सगग जोत संतोख) ॥—४६५

दासी नांम

दासी भ्रत्या दिलरखी गोली चेडी (गात) ,
कळचाळी (गुण) किंकरी विदगी (चळ विख्यात) ॥—४६६

काजल नांम

(मुण) कज्जळ पाटणमुखी नागदीय-सुत नेह ,
(गज) अंजण मोहणगती सुख-त्रिय नैणसनेह ॥—४६७

हीरा नांम

कुमख वज्र हीराकणी (अै) दधीचरिखअस्त ,
निकख पदकभरणा निधी (सिरहर) नगां (समस्त) ॥—४६८

मंगल नांम

अंगारक कुज यळसुवन लोहितांग दुतलाल ,
मंगळ भौम कुमारमहि चत्रभुज वृखी (सुचाल) ॥—४६९

सुक्र नांम

भारगव उसना सुक्रमण कायब कवि चखअेक ,
हिरणगरभ दनुप्रोहिता विघा सजीवन (नेक) ॥—४७०

---

* चार प्रकार की मुक्ति—सालोक्य, सारुप्य, सामिप्य, सायुज्य—मानी गई हैं। उन्हीं के पर्यायवाची यहाँ दिए गये हैं, जिनमें से पाँच का उल्लेख 'अमर कोष' में भी है।

नमसकार नांम

प्रणत प्रधन वंदन (पढ़ौ) नमो नमसक्रत (नांम ,
विध) सिलांम (वसू) डंडवत नमसकार (नित नमि) ॥—४७१

सीढ़ी नांम

निश्रेणी सासोपान (कनिज) आरोहण आरोह ,
सेढ़ी नीसरणी (सदा मोहण भुजन समोह) ॥—४७२

पुत्री नांम

तनिया तनुजा पुत्रका दुहिता सुता (वदंत) ,
कुळजा बेटी कन्यका कुळस्वासणी (कहंत) ॥—४७३

सेज नांम

सेज तलप सज्या सयन संवेसण सयनीय ,
कस्यप दुगध दधफीण (क्रत) कंतहरख (कमनी) ॥—४७४

तकिया नांम

गिदुक तकिया (हरु) गिलम उयवर (वर) उपधान ,
(अतुल) उसीस उठंग (मुण वद) उसीर (विदवान) ॥—४७५

भाल नांम

भाळ निलाड़ लिलाट (भण) अलकमध्य विधअंक ,
भागधांम अछरभवन (नग घर सांच निसंक) ॥—४७६

टेढ़ा नांम

वांम कुटिल टेढ़ौ विखम वंक असुध विरुध ,
वक्र (नांम) कुंचत (विना सिमर रांम मन-मुध) ॥—४७७

वंसी नांम

मतस्या धानी मीनहा कुंडी वनसी (कांम) ,
बिडस कुंभ निमगन वधक (रह न्यारौ भज गांम) ॥—४७८

छिद्र छिद्री नांम

छिद्र (नांम) छिद्री (कहै अनिल नीम हुन आम ,
[illegible] छिद्र [illegible] छिद्र (नाम) ॥—४७९

चहुरगत नांम

मुक्तानाम्ह मुरमुक (सदा) वमपत (जीन वनांण),
न्नी मुनेमन वेदरम (जान) मिरांडी (जांण) ।—४८०

चिन्वण नुम्बंदन मन्भरम वानगणति काव (वान),
रंगणीत दुज गंगिरम मम्गपूज मम्माज ॥—४८१

छुद्रघंटिका नांम

कांची रसना किंकणी (गुन) मेखला (त्रिमाळ),
छिद्रघंटिका छिद्रावळी (जुगत अनुपम जाळ) ॥—४८२

तरकस नांम

माथौ माथ निखंग (भण) तरकस तून तूनीर,
उपासंग सरभीसना विसखधांम (रिनवीर) ॥—४८३

धनुस नांम

पिसकस आयदा (पढ़ौ) वांणासणी कवांण,
सारंगी वधसत्रवां नूजी धनुस (तांण) ॥—४८४

नूपर नांम

पादा अंगद नूपर (प्रभा मिलय) घूघर मंजीर,
तुलाकोट भ्यंकारतन (संजण हरख सरीर) ॥—४८५

पांन बीड़ा नांम

दुजमुख (मंडण) पांन दळ तिन्न विफळ तंबोळ,
नागलता मुखवास (निज) रदछदरंगण बोळ ॥—४८६

आरसी नांम

प्रतबिंबी आदरस (पढ़) मुकर आरसी (मंड),
दरपण काच (रू) मुखदरस खुसदावती (अखंड) ॥—४८७

वीणा नांम

वीणा तंत्री वळकी जंत्री जंत्र (सुजांण),
गुमी (प्रपंची) सुरग्राह (पारावार प्रमांण) ॥—४८८

सुवा नांम

सुक तोता सुरगह सुवा किंसुक मुखभा कीर ,
रगतचूंच लीलंगरित (रस बहु रंग सरीर) ॥—४८९

गुपत नांम

(तवां) तिरोहित अंतरित गुपत लुक गूढ़ ,
दुरत निलीह अताक दब मुगध प्रछन लुक (मूढ़) ॥—४९०

हलद नांम

पीडा रजनी हळद (पढ़) पीता गवरी (पाळ) ,
गुणदा हरदी मंगळा (सो) कंचनी (रसाळ) ॥—४९१

क्रोध नांम

(दुरत) रोख अमरख दुसह कोप रोस रुट क्रोध ,
रोख मन्यू तम रीस (रुख) विखमी प्रजुळ विरोध ॥—४९२

दीरघ नांम

प्रथुल प्रांसु परणाह प्रथु व्रधु गुर दीरघ विसाळ ,
आयुत व्यूढ़ उत्तंग (कहि स्यांम) वडौ मिखगाळ ॥—४९३

वेद नांम

आमनाय श्रुत वेद अंग निगम अगोचर (नांम) ,
धरममूल श्रवकामधुनि व्रंमरुप (विश्रांम) ।—४९४

स्यांम जुजर रुघवेद (सुर असुर) अथरवा (अंग ,
वेदां च्यार पुराणवण नो अढ़ार परसंग) ॥—४९५

रुधिर नांम

स्रोण रुधर आसुर रगत जोस असुक (खित जात) ,
रत लोह जीवन रुचा वप पुसरी (विख्यात) ॥—४९६

समीप नांम

नद नजीक ढिग निकट (नव) उप समीप (अभ्यास ,
[illegible] [illegible] [illegible] (कंन) [illegible] नैड़ौ [illegible] ॥—४९७

संध्या नांम

निसमुख संध्या पितृप्रसू संझ्या सायंकाल ,
सांझ त्रसंध्या यामुखी प्रदोषत मतर (पाल) ॥—४९८

पपीहा नांम

कलकंठ हरखांन (हर) पपिया चातुक पीन .
(पीव-पीव) सारंग (पद अकास तइपन जीन) ॥—४९९

गनिका नांम

वारवधू जगवल्लभा निलजा पुंसचली (नांम) ,
दासी दारी इतनिरा (गो) लंजिका (अल्लांम) ।—५००
(ज्यू) खाळा भनजांगना कुलटा (पीन निकांम ,
कहत) संभली कामकी वेस्या गनिका (वांम) ।—५०१
प्रेमास्वारथ परप्रिया रूपाजीवा (रंग) ,
चातुर भगनण कत्रणी व्रती (चाह अनंग) ॥—५०२

पतव्रता नांम

साध्वी सती मनस्विनी पतपरताप पतप्रेम ,
सुचहिय सुचरूच मनममी (निपुण चाल) उरनेम ॥—५०३

नीचा नांम

नमण नीच अध तळ नमत खणत वितळ (जल ख्यात) ,
उरधलोक (आसा करो भुज हर-चरण विख्यात) ॥—५०४

सुछम नांम

तुछ अल्प लव सुखम तनु निपट असोदर (नांम) ,
औछो कम थोडो अणूं वारवुंद (विश्राम) ॥—५०५

मकरी नांम

मकरी सूत्रा मरकटी ऊरणनाभ (भख आस ,
कहि) लूतार कुळायतौ कोळीवाड (प्रकास) ॥—५०६

दिसा नांम

कन्या काष्टा ककुभ (दिस) गो आसा दिस (गात) ,
पूरब पछम उत्तर (पढ़ तव) दिखण (दिस तात) ।—५०७

वायब (अरु) नईरत (वळै) अगन (दिसा) ईसांन ,
(दोय दिसा विचमे दिसा वरणो सवण विधान) ॥—५०८

पत्र नांम

पत्र परण दळ पांन (कहि) पत्रा वरह छद पात ,
(जब खरकत कूपळ जरत भ्रंग खग छांह लुभात) ॥—५०६

दुख नांम

कदन विधुर संकट कष्ट गहन व्रजन दुख (गात ,
माधव दुख जामण मरण प्रभू टाळो) उतपात ॥—५१०

लाज नांम

लाज लज व्रीड़ा लज्या (कर) सकुचन (बिनु काज ,
लख ह्री त्रपा मुलायजौ सुधरै काज समाज) ॥—५११

मदरा नांम

मद आसव मदरा मधू वारा वारणी (वार) ,
सुरा (पान) हाला सुरा सिंधूप्रसूत दधसार ।—५१२

मयकामा ह्री मयंमिरा कादंवदी चिकाळ ,
प्रसना वुधहा मुगधप्रिय मदनी मदवांमाळ ॥—५१३

समूह नांम

घणा जूथ जूथप सघण समुदय व्यूह समूह ,
पुंगपूग विधचय पटळ फौजां कटक फनूह ।—५१४

बहुत कुरंभ कदंब वहु ओघ अनंत अपार ,
कलाप कुळ (प्रकरण करण निकरण चय विसतार) ।—५१५

[illegible] चक्र संदोह झंड तोम समाज संघात ,
मंडळ जाळ संनिचय (कहि) ग्राम संदोह (जळगात) ॥—५१६

[illegible] नांम

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] नितंन अनंत ,
[illegible] [illegible] ([illegible] [illegible] [illegible] नांम [illegible]) ॥—५१७

पाडल नांम

पाडळ थाळी पलकही वामासार मवक्ष,
दंबु वसामध दूधका (पंखी चाहत प्रतक्ष) ॥—५२८

आंबा नांम

पिकवलभ कामांग (पढ़) सखमदरा, सहकार*,
नूतर साळ अनूपतर अंबा (व्रक्ष उदार) ॥—५२९

चंपा नांम

चांपेयक सुभेयं (चव) कुसमाहिम सुकुमार,
चंपक चंपौ (भमर चित अड़ै न वास अपार) ॥—५३०

दाड़म नांम

(पीतरंग) दाड़म (पढ़ौ लाल फूल कण लाल),
सुकप्रिय हालमकर (सुण) पिंगपुष्ट गदपाळ ॥—५३१

नालेर नांम

सुरभी मिलूप सदाफला नीला म्रदुल नाळेर,
नाळविल्व मालूर (नव विविध चढ़ै वर वेर) ॥—५३२

तमालपत्र नांम

कालकंधता पिछक (कहि) तंडुळ ताळ तमाळ,
(गंध पत्रना मेट गद मधुना भोज तमाळ) ॥—५३३

पलास नांम

अप नक परण पलास (नव) वात पोत (विध व्रग्व,
राक ध्रुकज निमू अन्त हळदी नाहर-नख) ॥—५३४

कदम नांम

मदरा गंध सुवासनद हरप्रिय कदम (कहंत),
नीप तूल देवांगिलंग (सुरगण सेवत संत) ॥—५३५

बेहड़ा नांम

नाअक रत्नफल कटुकफल भूतावास नभीत,
नमर कलि अन्न सुम पिच बहेड़ा (प्रीत) ॥—५३६

सोपारी नांम

घोटक गुवाकुवा कफल पूंग पूगारी (प्रीत),
पुंगीफल फोफल (पढ़ौ नरमुख नाग पुनीत) ॥—५३७

नारेल् नांम

वानरमुख सुभकामगर कळशकांतली केर,
अमर भेट फल नाळिगर नाळेर नाळेर ॥—५३८

कनक नांम

कोळ कळका कंडूकर कौवन गणक (निनांम),
कऊंछफळी कंपटूगण (कहि विन नांवा वेकांम) ॥—५३९

मिरच नांम

मिरच तीख तिखता मिरी कसनाफळा मिधकांम,
(कहि) उखणा (अर) कौलका मुखकर (गोली स्यांम) ॥—५४०

पीपर नांम

तिगम मगधी तंदुळा सुंडी कसना (सार),
कौळा वैदेही कणा पीपर स्यांमाधार ॥—५४१

सूंठ नांम

विस्वा नागर सूंठ (वळ) महाऊखधी (मंड),
श्रीपाळी सतवी (सिरै चमतकार परचंड) ॥—५४२

प्रवाल् नांम

विद्रुम प्रवाळ रगत दधसुत मूंगा (दाख),
सुखरा नगीन लीधमिण (कपोतां हिकव भाख) ॥—५४३

दाख नांम

अदुका स्वादी मधूरसा दाख गुडा (दरसाय),
काळमोख काष्टफळ छुद्रा गोस्तनी (छाय) ।—५४४
वेदांणी दांणी दुविधमेटण (रोग मलांम),

सोनजुही नांम

सोनजुही (र) सुगंधका जूही जूथका (जाय) ,
गिनका हिरणी (नांम गिण देव पुष्पका दाय) ॥—५४६

मालती नांम

मधुमई सुमना मालती उत्तमगंधा (आख) ,
अंबष्टा प्रियवादनी सुगंधमल्यका (साख) ॥—५४७

रामवेलि नांम

राजघ्रनीका रसवती रायबेल सितरंग ,
अवजस (पुन) प्रियवलका (मधुकर भ्रमत मतंग) ॥—५४८

सजीवनी नांम

सार सजीवन मधुश्रवा जीवा जीवण (जांण ,
वळ) जीवंती वलका (उर हर भगती आंण) ॥—५४९

माधवी नांम

कुंदलता माध्री (कहि) ललितलता (यक लेख ,
मधुप उछव अल मुगतमद कछुइक वसतो पेख) ॥—५५०

बंधूक नांम

जीवबंधू बंधूक (जप) जपा (कहत घण जांण ,
परखो) दुपहडपोग्यिा (पुसपा जात प्रमांण) ॥—५५१

गुंजा नांम

रंगलाल चिरमी रती (मो) गुंजा मुखस्यांम ,
काकजंघका कृष्णला तुला चिणोठी (नांम) ॥—५५२

खिजूर नांम

पिंडखिजूर जायंती पहद त्रणद्रुम ताळ खिजूर ,
परपत्रावळि खोडिया जगमग (स्वाद जरूर) ॥—५५३

लवंग नांम

पोयणी नांम

कुमुद वासका तवनता [illegible] एकानी (अंग),
चंद्र कन्यका मृणाल(नव पद्) निरकुटो(प्रसंग) ॥—५५५

नागरवेल नांम

तांबूली नागवेल (नव) भुजगानवळ (नाग),
नागरवेल तंबोळनित (मगण गधर मुग आस) ॥—५५६

तट नांम

तीर रोध पन्याग तट कूल पुलिन उपकंठ,
कांठो पाज मजाद (कहि नळ) शिर पाळ नमंठ ॥—५५७

कुंज नांम

विजुळ सीत विलुळरथी विटपनटी लुकवेस,
कुंजभवन तरकुंज (कहि दंपती-कृष्ण सुदेस) ॥—५५८

कोकल नांम

परभ्रत पिक कोकल(पढ़ी) ऋतुधुनि कोयल (मंड),
दुतसुर भरव्रत रतगद्रग (खुल वसंत अखंड) ॥—५५९

इन्द्रिय नांम

इंद्री विखई यंद्रीयां गोवेता गुणग्यांन,
गुणआकर खणकरणगत (धरण विखै जुग ध्यांन) ॥—५६०

मकरंद नांम

कुसमसार मकरंद (कहि) सौरभवास सुगंध,
रसमय मधूपन पुसपरस (पखि अळि-मोह प्रवंध) ॥—५६१

● ●

नाम-माला

रचयिता : अज्ञात

नांम - माला

चोईस अवतार नांम

मीन कमंठ नरसींघ मनुंतर,
नारायण हरि हंस धनंतर।
व्यास प्रथु सनकादिक वांमण,
दत्तति जिग बुध रघुनंदण।—१

कपिलं काह* रिछ निकलंकी,
धूवरदन दुजरांम (धनंकी)।
रिखभदेव हयग्रीवां (रूपं,
संत सुरां कज किया सरूपं)।—२

रांम नांम

रुघकुळतिलक रांम रुघराजा,
सीतापति रुघवर सुरपाजा।
भांणभांणकुळ रुघुनंदन (भणि),
मकराक्षा रिखरारिवंसमिण।—३

कुंभकदन कुकुस्त मित्रकपी,
(ज्यांनकी सु) रुघुनाथ रांम (जपी)।
रामचंद्र भरथाग्रज (राजैं),
दासरथी (अवतार सदा जैं)।—४

ईसअजोध्या (अकळ अनूपं),
रांमणारि (द्वादस रवि रूपं)।
लंकादती विधूसीलंका,
सेतबंध रुघवंस (असंका)।—५

लछमणभ्रात अजादालंगर,
भगतांपति राक्सां-भयंकर।

सीता नांम

सीता सती ज्यांनकी सीता,
वैदेही मैथली (वदीना)।—६

रांमप्रिया (भुजा) रुकमणी ,
(वेद पुरांण कोस वखांणी) ।

लखमण नांम

रांमानुज लखमण असुरारि ,
वाळजती सेसा - अवतारी ।—७
सौमंत्रेय लखमण दसरथसुत ,
जनकनवंसी इंद्रजीतजेत ।

हणमंत नांम

वजरकटक बंकट बजरंगी ,
हणमत हणुमांन हणुअंगी ।—८
रांमभीन एकादसरुद्रं ,
सुरानंद कपि भफरासमुद्रं ।
मारुति जती महाबळ (मंडिति) ,
(रांम ध्यांन उर ध्यांन अखंडिति) ।—९

ईश्वर नांम

अंतरजांमी निगम अगोचर ,
गोपिरासिरमण गो - गोचर ।
त्रिगुणनाथ त्रीकम गजतारण ,
अमर अजर धरभारउतारण ।—१०
हरि माधव कमलापति नरहर ,
जगदाधार वंसीधर गिरधर ।
धूतारण भूधर धरणीधर ,
केसव रांम क्रस्ण करणाकर ।—११
गोपीजनवलभ गोविंद ,
चक्रपांणि श्रीधर व्रजचन्द ।
गोवरधनधारी गोपाळ ,
दासरथी रुघनाथ दयाळ ।—१२
द्वारकेस वीठळ मधुसूदन ,
देतांदुयण देवकीनंदन ।

प्रभु जसोदानंद व्रजपती,
बाळमुकंद मुकंद (सब रिती)।--१३

वासदेव विसनु जगवंदण,
... ... कंसनिकंदण।
नंद-नंद निरगुण नारायण,
रांमणारि त्रेता-रांमायण।--१४

इंद्रावरज उपिंद्रश्रवत अज,
धरणी विसंभर अलख गरुड़धज।
आणंदकंद अच्युत अवणासी,
पतितउधारण जोतिप्रकासी।--१५

पदमनाभ चत्रभुज परमेसर,
पुरसपुरांण धरणपीतंबर।
स्यांम मुरारि मनोहर सुन्दर,
देवांदेव अनंत दमोदर।--१६

मधुवनमधुप अकळ वनमाळी,
कैंटभकदन मरद्दन-काळी।
भगतवछळ भगवांन त्रिभंगी,
सीतापति रुघवर सारंगी।--१७

व्रंद्रावनपति कुंजविहारी,
विखवकसेन तारकअसवारी।
मधुवनसिंधु ब्रखाकपि मोहण,
व्रजभूखण वांमण वलिवंधण।--१८

असुरवहण भगवंत अधोखिज,
गोकळेस करता भरताग्रज।
विस्वरूप वैकूंटविलासी,
राधारवण रचणव्रजरासी।--१९

गोपी, गोप ग्वाळपति* सरगुण,
निरविकार निरलेप निरंजण।

निकळंक रिखीकेस बहुनांमी ,
संकटहर स्रम सुर सुरगांमी ।—२०

पुंडरीकाख जनारदन अनुगति ,
गोविंदराय केसव जगमूरति ।
श्रीवतसलछन गजा-मेसु ,
लंकादहण अगण-लोकेसु ।—२१

धनुख-संख, चक्र, गदा, पदम-धर ,
चत्रभुज सगराम रमानर ।
गरुडारूढ अगम गरुडासण ,
घणमाया-संजत धारणीधण ।—२२

रांमचंद भयहर भवतारण ,
कूंभकरन अविगति जगकारण
जळसीना (नैं) मिन जळज-नख ,
संतांपाळ स्रम दातासुख ।—२३

आदिपुरख निरकार अरूपं ,
सुखसागर नितजोग सरूपं ।
पतराखण जगदीस परमपद ,
हरण-भरण-पोखण हद अणहद ।—२४

जगहरता करता जगजांमी ,
भयहरता भवतारण (भांमी) ।
चिदानंद घणस्यांम अघोचर ,
भांण-भांण-कुळ खळां-भयंकर ।—२५

असरणसरण अज्योध्यानायक ,
सेतबंध द्रौपदीसहायक ।
नरक-अंत-क्रत रांम निरोत्तम ,
अई विक्रम मोहण पुरसोत्तम ।—२६

जळसांई दधिमथ ताताजन ,
रांमाव्रत तारग रुघुनंदन ।
पारअपार परम अपरम्पर
अेक अनेक अमंछ अनंतर ।—२७

वारिविरोळण दैतविडारण,
आदिवराह धराउद्धारण।
रुघराजा काकुस्थ खरारि,
व्रस्टर-सवा अखितविहारी।—२८

ब्रह्मा नांम

क ब्रह्मा वेदंग कूलाळ,
परजापति अज पतिमराळ।
विध वेधा सुरजेठ विधाता,
भवपित दुहिन (नांम) भूधाता।—२९

सिष्टा ध्रुव विरंज सुरजेष्टं,
पदमनाभ चत्रमुख परमिष्टं।
सूयंभू कज-जोनि-सरवेसं,
कंजासण कंजज लोकेसं।—३०

सेसर जगतपिता महसद्द,
हिरणगरभ आतम-भू (हद्द)।
हंसगर जोगुणी जगहेतं,
(खांणि-च्यार-उतपति-खित-खेतं)।—३१

सिव नांम

सिव श्रीकंठं महेस्वर संकर,
गिरिस गिरीस रुद्र गंगाधर।
जोगेसुर जटधर जागेस्वर,
अतधुंसी त्रंवक कोटेसर।—३२

सिभू चंद्रसिखर अचलेस्वर,
वोमकेस ईसांन वरद हर।
वांमदेव पसुपति क्रतवासा,
विरपाखि पुरअंत दिग्वासा।—३३

महादेव तापस समरारि,
प्रमथाधिप सूली त्रिपुरारि।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] भीर्व,
[illegible] [illegible] [illegible]।—३४

धरि-गज-ध्याय तुखाट उग्रधन,
उरपिंड पुलमजापति (अन)।

इंद्र री रांणी, पुत्र, पुरी, छभा, सदन, रिख, दुंदुभ वाज, रथ, गुर, वन, वैद, गज, दल आदि नांम—क्रमशः

यळा पुलमजा सची इंद्रांणी,
सुतजयंत सुरपुरी (सुहांणी)।—४२

समति सुधरमा सदन प्रसादं (प्रासादं),
नारदरिख दुंदभ घणनादं।
वाज उचीश्रव रथ विवांण,
जीवं विप्र वन नंदन (जांण)।—४३

अस्वनीकुमार वैद गज उजळ,
मोगर मेघ स्वारथी मातुळ।
विस्वकरमा सुरथांन सिलपवर,
देव नंदी दरवांन पुरिंदर।—४४

इंद्रजाळ आवध वज्रायुध,
(सनमुख वदन जिगा) भोजन सिध।

वज्र नांम

कूल्यस वज्र मिदुर सतकाटं,
इंद्रावध अ··· ··· ···* अतोटं।—४५

खटकूणी दंभोळ रिखस्तं,
सोरहंसिभो आदनी सुस्तं।

एरापती नांम

इंद्रहस्त रावण ऐरापति,
अभ्रमं वल्लभ मातंग सुभ्रदुति।—४६
गजवाह गजराज (असंकन),
[illegible] [illegible] सुभ्रन।

परी नांम

अच्छर घ्रताची परी उरबसी,
मजघोसा मैनका सुकेसी ।—४७
रंभा तिलोतमा नारंगा,
सालिका सुरति सारंगा ।

गंध्रव नांम

अमर परस किनर आदत्या,
गंध्रव हाहा हूहू गत्या ।—४८
व्याधाधर सुरगण (नगाणै,
जिकां राग इंद्रादिक जांणै) ।

कलपब्रछ नांम

द्रुमपति पारजाति अवदायक,
सुरतर हरिचंदण सुखस्यायक ।—४९
द्रवण (अखै) मंदार कल्पद्रुम,
(कहि सैतांन वरदांन सुभ क्रम) ।

सरग नांम

सुरआलय सुरलोक सरग्गं,
उरधलोक नाक अपवरग्गं ।—५०
त्रिदव त्रिवष्ट पंतावख त्रिदखं,
अमरापुरी अवयदिव (अखं) ।

वैकूंठ नांम

परमधांम सुखकरण परमपद,
अखित स्वरग वैकूंठ अमरपद ।—५१

इन्द्रपाट नांम

सुरपतिपाट निकंटक नाकासण,
सुक्रत अक्षर अचळ सुरासण ।

मेघ नांम

मेघ जळद नीरदं जळमंडण,
घण वरसण नभराट घणाघण ।—५२

महत किलांण अकासी जळभुक,
मुदर बळाहक पाळग कांमुक ।
धाराधर पावस अभ्र जळधर,
परजन तड़ितवांन तोयद (पर) ।—५३

सघण तनय (तू) स्यांमघटा (सजि),
गंजणरोर निवांणभर गजि ।

चपला नांम

विद्युति तड़ित वीज जळबाळा,
दांमणि खिवण छटा दुतिमाळा ।—५४

चंचळा संपा समर (व) चपळा,
आकाळकी वीजळा अकळा ।
ऐरावती रादनी असनी,
कंसविधुंसी खणका ऋसनी ।—५५

देवता नांम

अदतीसुत ऋतभुजं अंमर,
नाकी देव अनिंद्रा निरभ्भर ।
व्रंदारक अनमिख त्रिदवेस,
दिवउखद दिवखद रिभु त्रिदस ।—५६

अम्रतेस सुमनस असुरारि,
विवध अपसरा, ध्रग - विहारी* ।
सुपरवांण गिरवांण सुधाभुज,
अम्रताभख दिवाकैसा अज ।—५७

देवता जाति नांम

विद्याधर चारण रिख तुंबर,
संध्या गुहिक पिसाचा अपसर ।
किन्नर भूत गंधरब जख राखस,
(जाति देव जपै नित किसन जस) ।—५८

आदीत नांम

भांण दिनंद हंस भासंकर ,
कस्यपसुत आदीत ग्रहगकर ।
पदमणिपति सूरज प्रद्योतन ,
विसक्रमा भगवांन निगोनन ।—५९

क्रमसाखी रवि मिहिर दिवाकर ,
पदमबंध चकबंध प्रभाकर ।
तिगम प्रबीत मित्र रतनंबर ,
चरळ पतंग अनळ रांनळ वर ।—६०

सविता सूर अरक खग सीरख ,
चित्रभांण पिंगळ हर जगचख ।
मारतंड विवसांन गयणमिण ,
तरण तीखअंस तिमरत तपघण ।—६१

धव द्वादसआतम अगद्वारं ,
तपन पुखात्र इतन तिमरारं ।
सप्रस प्रदोमन भासानं ,
विद्योतन तप तेज वितानं ।—६२

अरुण अरजमा अहिपति (एता) ,
विभावसू विखरतन सुवेता ।
कंजविकास सुमाळी दिनकर ,
सोमधात अंगारक सरकर ।—६३

सहसकिरण भगदसू दिनेसर ,
जमा, सनी, अस्वनी, भव, क्रन, जम- ।
तात* (येतां रवि नांम वधे तिम) ।—६४

रिख ग्रहपति सुऐंन निसारिप ,
उष्णरस्म कंक रखणआतप ।
भकत चक्रधर (नांम) चत्रभुज ,
हरिहंसळ वतधात हितवारज ।—६५

---

* जमातात, सनीतात, अस्वनीतात, भवतात, क्रनतात, जमतात ।

किरण नांम

किर प्रभा द्युति जोति रस्म कर,
तेज - अंबार - धांम अरितिमर।
अंसु मरीची विभा मयूखां,
दीपति भानू भा छबि (दखां)।—६६
सुचि रुचि वसू दीधती गो सित,
(नभ मिण दिन ससि निसा प्रकासित)।

दिन नांम

दिवस दिवा दिव दीह अयन दिन,
वासर दूं अहि (व्रथा भजन विन)।—६७

सोभा नांम

श्री आभा भा द्युति विंव सुखमा,
राढ़ा कळा विभूखा परमा।
कोमळता (रू) विभ्रमा कांति,
सोभा रूप विमळ (सरसती)।—६८

उजास नांम

भा सं प्रकास उजास तेज (भव),
तमरिप वरच उद्योत करज (तव)।
जगभासक आलोक उजाळो,
तरण ग्यांन (माया तम टाळौ)।—६९

उजल नांम

अरजुण धवळ वलख सुचि उजळ,
सुभ्रं स्वेत सितं पुंडर सुकळ।
विसद हरण पंडु अवदातं,
विसद (कीत हरि उचरि विख्यातं)।—७०

चंद्रमा नांम

हिमकर पदमणीपती ससिहर ,
कुंदबंधु सीबंधु निसाकर ।—७१

हिमहिम चंद हिमंग हिमकर ,
विधु दधिसुत इंदु रोहिणवर ।
सीतअंसु उडराज निसाकर ,
अत्रनिस सोम चंद्रमा चंद्र ।—७२

ओखधीस उडपति ससनभव ,
सुभ्रकिरण नखतेस सुधाश्रव ।
दरपणजगत ससी जगवंदक ,
छंदनाम गुणरासि मृगांक ।—७३

सुभरासि पहसान सुसीरं ,
तनकळानिध विमदसरीरं ।
उदैभीर अपधांतरा गुणयळ ,
चकवाविरह विचित्रिवभू चंचळ ।—७४

पानपखोण, मलीण* पुहकर ,
(सागरभरत रतनां मिणश्रीकर) ।

नखत्र नांम

तारिक नछत्र ल्लंग्रह तारा ,
जोति रिखभ उड जोति खेयारा ।—७५

सताईस नखत्र नांम

अस्वनी भरणी क्रतका रोहिणि ,
म्रगसिर आद्रा पुनरवसू (मुणि) ।
पुख असलेखा मघा (पवत्रा) ,
पूख उत्रा हस्त (स) चित्रा ।—७६

स्वांति विसाखा अनुराधा (सम) ,
जेष्टा मूळ पूरब उत्रा (जिम) ।
श्रवण धनेष्टा सतभिख (सारं) ,
पूरवा उत्रा रेवती (पारं) ।—७७

---

* पानपखीण, मलीण=पानपखीण, पानपमलीण ।

नव ग्रह नांम

सूर सोम कुंज बुध गुरु भ्रगुसुत,
सनी(र) राह केतु (ग्रह विहसत)।

बारै रासी नांम

मीन मेख व्रख मिथन करक (मुणी),
सिंघ कन्या तुल व्रस्चक धन (सुणी)।—७८

मकर कुंभ (ऐ रासि लगन मत,
कडण रासि ग्रह पूजां दत ऋत)।

निसा नांम

सोमप्रिया रजनी निस स्यांमा,
तमी तांमसी निसा त्रिजांमा।—७९

रेणा जांमणी जनया रात्री,
तमसा नीसीथणी तममात्री।
खिपा (रू) राति सरवरी खणदा,
विभावरी तमचारी प्रमदा।—८०

अंधकार नांम

तिमर तमस ग्रंधकार संतमस,
ग्रंध तमस तम धांत ग्रवतमस।

स्यांम नांम

स्यांम धूम धूमर प्रभस्यांमळ,
असति नील मेचक किरठ ग्रळि।—८१

ग्ररुण रांम ग्रल प्रभं (कहि) काळं,
ग्रध तम (मेटि स्यांन उजवाळं)।

दिवा नांम

(आणंद) ज्योति निसांदसई (घण),
नेटपतन निपतंग धवळमिन।—८२

दीप प्रदीप दसान्तु दीपक,
निर्दीप नारंग निसानक।

कजळअंक दसाभव (कीजै,
दना) करसाज (कजल दीजै)।—८३

उत्यमउजास तेजगह (ओपण,
उर ग्रह नांम दीप आरोपण)।

गुरड़ नांम

गुरड़ सेस अलमित खगेसर,
चपळवास भलपंख भुगंगचर।—८४

विसहर इंद्रजीत हरिवाहण,
सोभनतन सनतीधर सुपरण।
वैनतेअ गीधळ वळवंतं,
वजरतुंड तारक दिढ़वंतं।—८५

अहिरिप अम्रतचरण अरुणानुज,
पखीराज गिरराज कस्यपातमज।
पूतआतमा गरतमांन (पढ़ि),
दुजपती सालमली (भक्ती दिढ़ि)।—८६

सुदरसण चक्र नांम

सारज वज्र चक्र संघारण,
ज्वाळामुख दंभी खळजारण।
सुदरसेण परवयं विस्णतर,
कुंडळीक दुतीतेज सहसकर।—८७

वलभद्र नांम

वळभद्र कांमपाळ नीलंवर,
धरिप्रिअ मधूमूअळी हळधर।
रोहिणेय संकरखण रांम,
सूर सितासित अग्रजस्यांम।—८८

अस्वान (कहय) मुगध अनंतं,
विरहीवीर प्रलंब वळवंतं।
ताळलखण वळ सीरपांण (तत),
विघनप्रांण बळदेव सातवत।—८९

रवण - जमां - भेदण मधुरंगी ,
भ्रातविजेसर समरश्रभंगी ।

वरण नांम

जळपति मछपति वरण परंजन ,
जळकंतार पिसाचांगंजन ।—९०
पंकजग्रह प्राचीप प्रचेता ,
(नीर समीप पास भ्रत नेता) ।

धनेस नांम

धनंद कुबेर निधेस धनाधिप ,
राजराज जखराज उचारिप ।—९१
जेखाधीस जखराट जजेस्वर ,
सक्रकोस धिक्ष ग्रहकेस्वर ।
श्रीद रमाद वसू दसतोदर ,
कविलासी सिवसखा रतनकर ।—९२
सिवभंडारी गुहरु वैश्रवण ,
हरप्रि किनरेस नरवाहण ।
अलकापुरीपती पतिउत्तर ,
सुभ्रम त्रिसर जख किं पुरिखेसर ।—९३
पिसाचकी पौलस्त एलविल ,
मनखाध्रम जखचेर (नांम यळ) ।

अष्ट सिद्धि नांम

अणमा महमा गिरमा ईसति ,
प्राकांम (रु) लघुमा वसि प्रापति ।—९४

नव निध नांम

मकर नील कूव संख मुकंदं ,
कछप पदम महापदम कुंदं ।

[illegible] नांम

मामा [illegible] [illegible] ,
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।—९[illegible]

बेसव संपति माल गरथ रिध ,
तुनतुरु धन गरथ द्रवण निध ।
सार निधांन हिरण दत सेवध ,
अरथ कनवर अनुमत गजाना ।
(विधा गांन तांन जम बांना) ।—९६

मोती नांम

मुक्ताहल मुक्ताफळ मोती ,
गुळका दधि जळज नखिगोनी ।
थीरठभग मुक्ता मुक्तज (नरि) ,
मुक्त (वळे) ग्राणिकुभ रगत प्रगान (विध) ।—९७

ग्रगनी नांम

गरथव्रत ग्राहुतन ... ... ,
गागतसखा ग्रगांन तमोघन ।
जातवेद जागवी जागती ,
रोहितांम सयना रुचिराती ।—९८
ग्रपति धूमधज ग्रहदभांण (उर) ,
ग्रासग्रास उदरच द्रव ग्रंतर ।
वीतहोत (कहि) ग्ररुचिख महवर ,
घोर समीग्रव कुळमंड (घर) ।—९९

स्यांमी कारतिक नांम

खटमाता सेनांनी खटमुख ,
स्यांम महासेन द्वादसचख ।
रुद्रातमज विसाख मोररथ ,
क्रतका गंगा, उमानंद* (कथ) ।—१००
दिढ़क छखदेव भूरख गुह (दखौ) ,
प्रकवाहण ब्रमचार (परेखौ) ।
तारकारं क्रेतारं सकतीभू ,
(ग्रासनरौ) सुरग्रगभू ग्रंगभू ।—१०१

---

* गंगा, उमानंद=गंगानंद, उमानंद ।

बहुळातमज बहुलकौचिरित ,
(भाखि) सकं देसाखंकुल दुहुभ्रत ।
स्यांमकारितिक महतिजसुर ,
वरहीवाह विसाख (देण वर) ।—१०२

मोर नांम

सिखी सिखावळी सिहंड सिखंडी ,
मोर मयूर कळाव्रतमंडी ।
नीलकंठ नीरद नादानुळ ,
खग दुति सारंग कुंभ व्याळखळ ।—१०३
विरही वरहण घणमुंठ (व्यापी) ,
केकी तुकळा पंग कळापी ।
रथकुमार प्रकवि खकर (चाया) ,
विविधेसुर खग (नांम बताया) ।—१०४

हंस नांम

मांनसूक धीरठ मुक्ताचर ,
हंस मराळ चक्रंग जळजहर ।
उग्रगती लीलंग अवदातं ,
विमळरूप कळहंस (विख्यातं) ।—१०५

मूसा नांम

आखू खणक सूचीमुख ऊंदर ,
वजरदंत मुख्य यतिदेवर ।

बुधी नांम

धी बुद्धी मेधा मति धिखणा ,
सकल प्रागना मनखा (अखणा) ।—१०६
आसय सनमि. चातुरी (आंनौ ,
बिबुध करी हरि रीत बखांणौ) ।

बनराज नांम

[illegible] हेहान [illegible] [illegible] ,
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।—१०७

प्रांणहरण मीरण क्रमगामी ,
धरमराज जमराज त्रिभागी ।
माधदेव कीनास आंणमुन ,
जमहरं सूमनं प्रतिपति गंजन ।—१०८
चलभगुजी सतकर समवर्ती ,
प्रेतराट संजमनी पती ।

दैत नांम

देवानुजं दइतांद अदेवं ,
दांणव सुररिप पूरवदेवं ।—१०९
दतीसुत असुरं सुक्रसिसं (दती) ,
मेछं जनन सुरधामरिम (अग्नी) ।

राकस नांम

नइरति राकस असुर निसाचर ,
तमचर जातधांन उच्छातुर ।—११०

रांमण नांम

कंटक दैतपती दहकंधर ,
सुरद्रोही रांमण लंकेसुर ।
सीताहरण दससीस पौलसित ,
ग्रहांग्रहण त्रिकराचळथितगति ।—१११

मेरगिर नांम

गिरपती मेर सुमेरगिर ,
गिरंद सुथांनक अचळ कनकगिर ।
पंचरूपी कनकाचळ (पावां) ,
रतनसांन सुरगिर गिरराकां ।—११२

आकास नांम

आभ अनंत अंतरिख अंबर ,
पवनधिस्रण सुर, घणपथ* पुहकर ।

---

* सुर, घणपथ=सुरपथ, घणपथ ।

वयंद बिसनपद खं नभ वोम ,
गिगन गयण मंडणछत्र गोम ।—११३
अरस अकास गैण असमांन ,
विहंग परीमग* ससि, विवसानु ।

खट भाखा नांम

(वांणी मांनव) मागंध नागर (विलासा ,
भेद) संसक्रत (निरक्षर-भासा ।—११४
विद्या) प्राक्रत (मांनव वांणी) ,
अपभ्रंसी (पंखी उर आंणी ।
दैतां भाख) हुसैनी (दखी ,
राकस वांणी) पिसाची (रखी) ।—११५
(अहि सुर नर मुर वांणी उक्ती ,
सिस जीवन व्रद्धां सरसती ।
वेद हरति दिग मूढ़तं वांणी ,
यूं सुर भाख व्रम मुख आंणी) ।—११६

च्यार पदारथ नांम

धरम अरथ (सुभ) कांम मोक्ष (व्रत ,
साधो च्यार पदारथ सुक्रत) ।

धरती नांम

वसुधा विसव वसुमता विपळा ,
उरवी पळा अनंता अचळा ।—११७
जमी रतनगरभा छित जगती ,
रेणा रसा धरा धर धरनी ।
समंदमेखळा रजन श्रोणी ,
छिमा प्रिथी भूमी भू म्ही छोणी ।—११८
धात्री पड रसवती धरनी ,
हेला सरवन मनहरनी ।

* [illegible]

गिरा कुंभनी विसंभरा गिन ,
खोणि खेत गहवरी मसूह गिण ।—११९

वसुधरा वसुमती कु नांगा ,
नागननेमी धीरत रसांमा ।
महिगोना पहि मही मेदनी ,
जगतां सकळ कुमारी गवनी ।—१२०

गिरंद नांम

गात्र गिरंद धनङ नगां गिरवर ,
गोत्र पहाड़ अद्री गिर डूंगर ।
धर सिलोचय अचल धराधर ,
भूधर मरुतदरीभ्रत भाखर ।—१२१

सिखरी ग्रांनग्रांन अग्र श्रंगी ,
परवत कूट त्रिकूट उपलंगी ।
अस्टकुळी पव्वै आहारज ,
धातहेत द्रुमपाळ तुंगधज ।—१२२

वन नांम

कंतारक अटवी झख कांनन ,
विपुन दुरंग खंड अरणय गहन वन ।
कखवा रिखतर मधूप्रकासी ,
(विंद्रावन धिन रासि - विलासी) ।—१२३

व्रख नांम

व्रख सिखरी फळग्राही तरवर ,
घणपत्र अदभुज निनंग खगांघर ।
साखी कुसमद फळद महीसुत ,
द्रुम खितरूह पत्री तर दरखत ।—१२४

कूंठ फळी अंध्रप कारसकर ,
विटप रूख अद्र व्रस्टर ।
निंद्यावरत सुझाड़ (अनोखह) ,
सुवरण कराळक पतीवसंतह ।—१२५

[illegible] नांम

सुरभी [illegible] मृगांक ,
गोशिर्षोद्भव चंदन गहि·········क ।
[illegible] गौरांड [illegible] ,
[illegible] उत्तमतर यज्ञिमन ।—१३१

सौरंभमूल सुनग गंधसारं ,
वासपुष्प मलयजनिरातारं ।

केसर नांम

कुंकम केसर मंगलकरणी ,
वह्निशिख दीपन गुरुवरणी ।—१३२

देववल्लभा लोहितनंदण ,
पीतन रक्त संकोचप्रराण (पुण) ।
घरकालेगर बाह्लीक (धरि) ,
कश्मीरज (हरि शेखर तिलक करि) ।—१३३

हरड़ै नांम

अभया जया शिवा अमरतका ,
कायस्था चेतकी काळका ।
प्रयथा हिमजा पथ्या प्रेयसी ,
सरवारी पूतना श्रेयसी ।—१३४

सुरभी (रांम) तुरंजका (सुखदा ,
पढ़ि) हरड़ै जीवंती प्रांणदा ।
स्यामां हेमवती संकरणी ,
हरीतकी (काया गदहरणी) ।—१३५

○ ○

पर्यायवाची कोष—६

डिंगल - कोष

कविराजा मुरारिदान विरचित

संक्षेपतो शब्द-निर्णयः

दोहा

रूढ़'र जोगिक मिसर रा, नांमा रो कर नेम ,
सुकवं रचूं इण कोस में, प्रणमि सारदा प्रेम ।—१

वर्णं नहीं जिण सबद री, व्युतपत्ति रु बखाण ,
रूढ़ नाम तिण रो कहो, आखंडळ ज्यूं आण ।—२

अथ दोहा-सोरठा का लक्षण

सोरठा

दोहा तुक दूजीह, सो पहली धरणी सुकव ,
परगट तुक पहलीह, इण रै आगै आंणणी ।—३

आगै चौथी आण, इण आगळ तीजी अखो ,
जिका सोरठा जाण, नागराज रो मत नरख ।—४

सोरठा का उदाहरण

जोगिक अनवय जाण, सो क्रिय गुण संबंध सूं ,
बेखो एह बखांण, कहै पूर्व संभव कवी ।—५

क्रिया अजादिक आण, गुण सुनीलकंठादि गण ,
सो संबंध सुजांण, स्वामी सेवक आदि सब ।—६

जोवो नांम जमीन, पत आदिक आगै पड़ो ,
पाल रु मांन प्रवीन, धण नेता इण आदि धर ।—७

जन्यागळ इम जाण, करता जनक विधात कर ,
वळे जनक वाखांण, जै भव जोनी जागजै ।—८

दोहा

विश्वक करता विश्वकर, विश्व वधात विख्यात ,
विश्व जनक इम नांम वद, ऐ कारण रा आत ।—९

आतम जोनी आतमज, आतम भव इम आण ,
आतम सूनी आतम सूं, जनक नाम सूं जाण ।—१०

सोरठा

बेखो सबद सनेह, पुर केवल [illegible] [illegible],
अगनी [illegible], [illegible] जो नाम हुवाम रा ।—१२

सुरादिकां भणंत, [illegible] [illegible] इण कोश में,
पताड दुनांम पढ़ंत, [illegible] [illegible] इण रीत सूं ।—१३

पड्यो जाग पलटांण, सबद लिखो इण मैं सदा,
जिण नूं जोगिक जाण, रह इण रीत सुरार [illegible] ।—१४

सबद मिनर इम सोत, जो मग मैं जोगिक जिसो,
वणै न जिण रो नोर, गीरवांण जिणरो गिणू ।—१५

कवि रूढ़ी हि कहंत, गिसर रूढ़ जोगिक नहीं,
मन मतो न मुणंत, कहियो जूं पूरब कव्यां ।—१६

गणेश नांम

गवरीनंद गणेश गणपत गजआनन गणप,
(ऊंडो अरथ अरोरा आगो उकति नवीन अव) ।—१७

गजानंद गणराज लम्बोदर कालीसुतन,
(मेटण विघन समाज) उमाकंवर गणवै (अवै) ।—१८

मूसावाहण (माण दाख) विनायक इकरदन,
(जेम) हुडंबी (जाण) परसीतस हेरंब (पढ़) ॥—१९

सरस्वती नांम

ब्रहमसुता वाणी (ह) वरदायणी वागेसुरी,
(गूढ़न करगाणीह चींतांणी मैं मूढ़ चित) ।—२०

हंसवाहणी (होय) गिरा वाकवाणी (गवै),
सुरसत सारद (सोय) वेधाधी भारति (वणै) ।—२१

(बिसनू ब्रहम वळेह, महादेव महमाय रा,
इंद चंद रवि एह, अतन आग देवां तणां ।—२२

परथी राजा पेख, वळे समंद तरवार रा,
अस हाथी अवरेख, नांम रीत इण नरखणां ।—२३

जो-जो जिण-जिण जाग, ऊपर लखिया नांम जो,
वेखो करे विभाग, धरणा था राखे धरम ।—२४

जुवा-जुवा जपताह, तो नह टाबर समजता,
रिधू यहां राख्या ह; इण कारण थी एखठा) ॥—२५

अथ संक्षेपतो गीत लक्षणानि

दोहा

परथम दोहा तुक पहल, अड्डारह कळ आण,
तुक दूजी पनरा तणी, जुग अठ तीजी जाण।—२६

सोरठा

चौथी झड़ चवुदाह, जोड़ण वाळा जाणज्यो,
निसचै भाई नांह, इण दोहा मैं ईहगां।—२७

परथम तुक सोळा पड़ो, मुहरां चवुदा मेळ,
दोहा दूजा री दुरस, इण ही रीत उजेळ।—२८

चौथा तीजा पांचवां, दोहा मैं इण दाय,
पहली तीजी झड़ प्रगट, सोळह मत्त सुणाय।—२९

दूजी चोथी झड़ दुरस, दस चो पनरै दाख,
तीजा दोहा री दुतुक, ऐण रीत सूं आख।—३०

चौथा दोहा री चवां, सांकळ दू चो सोध,
तेरह-तेरह कळ तुळै, बोलै एम प्रबोध।—३१

पंचम दोहा कळ प्रगट, दसचवु दूजी दाख,
चोथी झड़ तेरह चवो, रीत ऐरसी राख।—३२

कहुं गुर मोहरां लघु कहूं, आंगै नेम न ओर,
जपै कव इण रीत जो, सो छोटो साणोर।—३३

गीत छोटा साणोर

महादेव नांम

गीत सोहणो

पारवती नांम

जोगण महमाय सिवा जगदंबा सगत अद्रजा गोर सती,
आठांभुजां ईसरी अंबा संकरघरणी वीसहती ।—५०

रुद्राणी लंबोदरआई भगवंती भैरवी भवा,
गवरी उमा चंडका गौरी सिंहवाहणी बाहसवा ।—५१

जोगमाय गिरजा जगजणणी वाघवाहणी पारवती,
कंकाळी काळी महकाळी हरा भावनी सूळहती ।—५२

देवी खड़गधारणी दुरगा माहेसुरी संकरी (सुणां,
सुंभनिसुंभ) भांजणी सगती गीतअंबका (नांव गुणां) ॥—५३

दोहा

कळा पहल दस आठ कर, जुग दस दूजी जोय,
सोळह बाहर तुक सरब, दखां मेळ गुर दोय ।—५४

इण दोहा में अप अवस, राखी जो यह रीत,
सो छोटा साणोर रो, गणें जांगड़ो गीत ।—५५

गीत जांगड़ो साणोर

पृथ्वी नांम

धरती धर चास यळा खत धरणी गोरंभ अचळा गोमी,
वसू गोम प्रथमी वाराही भोम मृचाळी भोमी ।—५६

अळ भूमंड मेदनी अवनी भूयण रैण भंडारी,
रतनांगरभ रेणका रेणा धरण मही धूतारी ।—५७

वसुंधरा पुहमी पुह वसुधा छित तुंगी खित छोणी,
रसा भरतरी सुंदर सूत्रा हिरणगैण वधहोणी ।—५८

प्रथी [illegible] पृहवी भू पोनी [illegible] अचळ [illegible],
[illegible] [illegible] दरवनी उर्वी [illegible] ॥—५९

मेहिनी तुक आगलां, जो लघु साणोर,
करै नेम इण गीत रो, सोहि खुड़द साणोर ।—६१

गीत खुड़द - साणोर

तरवार नांम

खांडहक खाग दुधारो खांडो खड़ग बिजड़ एराक खग,
जड़कण भूप सनमसर भुजंगम करमाल नाणारस अग ।—६२

तेग रुक धाराला तेगो नाढ़ाली सारंग बिजड़,
वीजूजळ पाखर असि बीजळ सार दुजड़ करमर सुजड़ ।—६३

हैजम जोड़हथी चंद्रहासां सेनाण (र) पाती करद,
धजवड़ करमनड़ी धारूजळ रानाटांकरणीसरद ।—६४

वांक जनेन प्रहास (वगाग्रू) पांखीस (र) नाराज (पड़),
मूठाळी समसेर मूठांणी किरमाळ (र दुम) वाढ़कड़ ॥—६५

दोहा

धुरपद काळ तेबीस धर, दुतिय अढ़ारह देख,
वीस कळा तीजी वगां, वळे अठारा वेख ।—६६

विखम वीस कळ तुक वगां, अठ्ठारह सम आण,
मोहरै गुरु लघु नेम कर, वड साणोर वखांण ।—६७

गीत वड़ो साणोर

राजा नांम

नरांनाथ नरपाळ भोपाळ महपत न्रपत भूपती धरपती यळापति भूप,
प्रथीपत छत्रधर नरेसुर महीपत अधपती रसापत तेजआनूप ।—६८

महीरानाथ छत्रधार राजा महिप गढ़पती देसपत पाळदुजगाय,
रांण दैसोत नरनाह राजानियां राजइंद नरांइंद महीइंद राय ।—६९

धराराथंभ भूपत छतरधारण पोहमीईस यळधीस प्रजपाळ,
नरप न्रप राज भोगणजमी नरेस (ह) महीवर सुपह यळनाथ महपाळ ।—७०

ईसवरनरां भूपग अधिप यळाइंद नाहदुनियाणरा छतप अवनीस,
रजवळी रोरहर प्रथीरापुरंदर राजसुर नरांनायक धराधीस ॥—७१

दोहा

कळा प्रथम तेबीस कर, दूजी सतरा दाख,
इण ही भड़ रै अन्त गुरु, रीत मेळ री राख ।—७२

बीस कळा सतरा वळे, सरब गीत इण सोय,
भेद वड़ा साणोर भव, हद परिहास जु होय।—७३

गीत प्रहास

हाथी नांम

दुपी गैंद गजराज सूंडाळ दंती दुरद मदांझर फीळ पैनाग मसती,
गैंवरां व्याळ सामज मतंग मैगलां सूंडधर करी गै नाग हसती।—७४

वड़ूजाबाह दंताळ कुंजर बयंड हसत सारंग गज गयंद हाती,
पदम्मी तंवेरण करिंद वारणपती दंताहळ मंढ़, म्रग, भद्र, जाती* ।—७५

अरापत अनेकप सिंधुर रेवाउतन बनकजळऊपनां दंतवाळा,
सूंडडंड वितुंड वारण कळभ सूंडहळ कर हरी मदाळा कुंभि काळा।—७६

करेणपती दुरदाळ पीलू (कहां) अनळपंखचार छंछाळ (आखां,
गीत परिहास साणोर इण रीत ग्रह भेद साणोर वड दोय भाखां) ॥—७७

दोहा

अखर अठारै आद तुक, बीजी चवुदह वेख,
विखम अखर सोळह वळे, सम चवुदह संपेख।—७८

मेळ तणी झड़ मांहिनै, गुरु लघु अन्त गिणाय,
पंखो गीत सुपंखरो, वीदग ऐम वणाय।—७९

गीत सुपंखरो

घोड़ा नांम

[illegible]जी तोखार तुराट तुरी ऐराक वैंडूर वाह वैंडाक केसरी हरी काछी खैंग बाज,
[illegible]वास प्रहास धाटी वडंगी निहंग हंस बाजिद तारखी प्रोथी घोड़ो बाजराज।—८०

[illegible] चामरी ताजी हैराव सारंग अस्व निडज्जां काठियावाड़ हींसी वाहभाग,
[illegible] हैजमा हैवरा लच्छीवाळापूत कुंडी हयांराज तुरां घुड़ल्ला केकाण।—८१

[illegible] किनंदां हया सपत्तारवाळांअंसी रेवंतां साकुरां अस्सां जंगमां तुरंग,
[illegible] पमंगां हैवरां सिहविक्रमाका चंचळां तुरग्गां वजांराज है सुचंग।—८२

[illegible] देव सिंधुजात बाहू सुपां वंगळी जंगली रुमी अन्वी वंदोज,

दोहा

[illegible] ,
मुहरा [illegible] सावभड़ो सुणिजाण ।—८४

गीत वडो साणोर सावभड़ो

सूर्य नांम

हरी विंब करनाद चालीस पकजाको पतंग तुरिंगंद दनइण रातापती,
तरण भरकाटतन मेकनारननी ज्यो कानसुतन सूर (चढ़ती रती) ।—८५
धीर महतक रवि हंस पतपुरा (उगणां) दिनाकर (मेरगर ऊपरा),
प्रभाकर विरोचन तारक सहसरस अंश गगनापती प्रकाशतसूपरा ।—८६
करण, जमना, जनक* तीन सूरज कणी पोश गणगगण जगदीप दनकर पपी,
तपण दनमण किरण सपतसापतो तपी अरुण साम सगल जगजनक वनकर अपी ।—८७
छतरपत वरसरस मित्र मेघपालक्षा परीसंघार जगनैण चोरणअपा,
तिनमञ्जंन विभाकर (जगत सगण भाग) करमसाखी प्रभू (करण भगतां क्रपा) ॥—८८

पुनः सूर्य नांम

भासंकर दुनियण भण जगसाखी (घणजाण),
मितश्रवता ग्रहपत (सुणां) मारतंड अप्रमाण ।—८९
वोमतलक गगनवटी वेदउदय अहमाण,
पदमनाभ तापण (पढ़ो आखो) धुजअसमाण ।—९०
तेजपुंज (अर) विकरतन लोकबंधु लखवान,
(कह) रातंबर सहसकर भामवान भगवान ।—९१

दोहा

कळा अंक दूणी कर'र, आद विखम झड़ आण,
सोळह सोळह तुक सकळ, मुहरां च्यार मिलांण ।—९२
सीखो वाचा जो सुकव, धारो एम घड़ोह,
सो छोटा साणोररो, जाणूं सावझड़ोह ।—९३

गीत सावझड़ो

चंद्र नांम

रजनीपत चंद छपाकर राजा विधू भपत अगअंक (विराजा),
सेतकरण दुजपत सस साजा सोम चंद्रमा नखतसमाजा ।—९४

---

* करण, जमना, जनक=करणजनक, जमनाजनक ।

सेनवाह सोळहकळस्वामी नेमी सुधाधरण ससि (नामी),
जगनराय दधसुत बुधजामी गोधर रातरतन नभगामी ।—९५
पतउड़ इंद ससीहर पीतू हिमकर तपस कंमोदणहीतू,
जरण सेतदुत रोहण (जीतू) आतालछी कमळतन भीतू ।—९६
राजांराज रयणपत राका पतओखद सद एणपताका,
छायावाळ (अमी रस छाका) निसकर मयंक विधातनताका ।।—९७

दोहा

सरब भेद साणोर री, राखी सोही रीत,
तवां दुवाळा तीनरो, गणू पंखाळो गीत ।—९८

गीत पंखालो

समुद्र नांम

सायर महराण स्रोतपत सागर दध रतनागर महण दधी,
समंद पयोधर वारध सिंधू नदीईसवर वानरधी ।—९९
सर दरियाव पयोनध समदर लखमीतात जळध लवणोद,
हीलोहळ जळपती वारहर पारावार उदध पाथोद ।—१००
सरतअधीस मगरघर सरवर अरणव महाकच्छ अकुपार,
कळअछपता पयध मकराकर (भाखां फिर) सफरीभंडार ।।—१०१

दोहा

अरध सावभड़ मे अवन, मुहरा ह्वै नम मेळ,
पहली जो मात्रा पड़ी, वैही अठै उवेळ ।—१०२

गीत अर्द्ध सावभड़ो

वायूसखा वह्नि हव्यवाहण हुतभुक पावक हुतासा हुतासण,
वहुल चित्रभानू शुचि वरती हुतवह सगीगरभ तमहर (ही) ।—१०५
वीरोचन शुचि रोहितवाहा सुसमा सखी जलण पतरवाहा,
विभावसु स्वगनानु (कृशानु) धामधजाम धनंजै (आशु) ॥—१०६

दोहा

मात अढ़ारह तुक प्रथम, सोळह सम संगेत,
पहल दुवे चौथे पदे, दूजा मोहरा देत ।—१०७
तुकां मिळै तंह तीसरी, मोहरां सूं इण मांग,
रूपग जो इण रीत सूं, सो झड़लुपत सुहाग ।—१०८

गीत झड़लुप्त

इंद्र नांम

देवांपत शक्र सुरेश पुरंदर अरजनपता वज्रजा अंदर,
ऊंचीश्रवावाह आखंडळ मघवा इंद सुरगपत मंदर ।—१०९
माघवान जंभासुरमारण धन्वा उग्रवज्राधारण,
वासव पाकरिपू बळवैरी वाहणमेह चढ़णसितवारण ।—११०
नैणहजार निरजरांनायक देवसची - अपछर - सुखदायक,
परवतअरी नाहदिसपूरव सुनासीर सुरियंद (सुहायक) ।—१११
अरीपुलोम अम्मरांईसर देवांराज धारधर (दीसर),
जनकजयंत जामनेमी जय सुरप (रोसधर) व्रत्रअरी (सर) ॥—११२

दोहा

मात अठारा प्रथम तुक, आगै सोळह आण,
सोळह सोळह तुक सकळ, मीत त्रंबकड़ै गाण ।—११३

गीत त्रंबकड़ो

ब्रह्मा नांम

वेदोधर कमळसुतन विध विधना अज चतुरानन जगतउपाता,
सतानंद कमळासन संभू ध्रुव लोकेस पतामह धाता ।—११४
परजापत ब्रहमाण पुराणग ब्रहमा ब्रहम वेह कवि वेधा,
सनत हंसवाहण सुरजेठो मुखचवु आठद्रगन वडमेधा ।—११५

सुरसतजनक स्वयंभू सतध्रत वेदगरभ अठश्रवण विधाता,
आतमभू सावत्रीईसर नाभीसंभव कमन सुहाता ।—११६
सत्यलोक गायत्री ईस क वेधस लोकपता (बिख्याता),
हिरणगरभ बिरंची द्रूहिण द्रुघण बिश्वरेतस (वरदाता) ॥—११७

दोहा

आद कळा दसआठ री, तेरह मुहरां तोल,
रगण इणीमै राखजे, सोळह विसम सुबोल ।—११८
रिध्रू नाम इण गीतरो, सीहचलो संपेख,
उदाहरण माहें अवस, दल नसचै कर देख ।—११९

गीत सिंहचलो

देवता नांम

देवत गिरवाण सुधाभुज (दाखां) दाणववैरी देवता,
बिवुध (बळे आखो) व्रंदारक सुरगी पुरियंदसेवता ।—१२०
निरजर कामरूप सुर नाकी अमर पूज (जग आखजे),
बरहीमुख अम्रतास विमाणग देव चिरायुस (दाखजे) ।—१२१
स्वाहाग्रसण मरुत अदतीसुत वाससुमेर (वखाणजे),
सुपरवाण क्रतुभखण अस्वपन अनमिख सुमनस (आणजे) ।—१२२
(आखो) लेख रिभू दिवओकस त्रिदस नलंप (तवाजजे,
इण्डो देव नांम रो रूपग कवि निस दीह कहीजजे) ॥—१२३

दोहा

पहल अठारा कळ पड़ो, दाख दके खटद्रुग,
सोळह बारह तुक सकळ, राखीजै इण रूंग ।—१२४
मेळ पहल चोथी मिळै, दूहरा दु निय मिलंत,
अधक गीत सालूर इम, सुकवि नाम मिळंत) ।—१२५

गीत सालूर

कामदेव नांम

कुह वैसरवण रतनकर किंपुरुसेस कुवेर,
उत्तरदिकपति ईससख (घर कैलास सु घेर) ।।—१३६

स्वर्ग नांम

ऊरधलोक (र) पुरअमर सरग नाक सुरलोक,
देवलोक सुरथांन दिव इंदलोक सुरओक ।।—१३७

किरण नांम

रसमी सुचि अंसू किरण जोती गो दुति (जाण),
दसु प्रभा दीपति बिभा भा मरीचि छबि (भाण) ।।—१३८

धूप-४, चंद्रिका-३ नांम

तावड़ो (सु) परकास (तिम) आतप ताव (अखंड),
चंद्रापत (अर) चांदणी हिमप्रकास (ब्रहमंड) ।।—१३९

गरुड़ नांम

गुरड़ राजपत्री गरड़ वैनतेय बिहगेस,
सरपअरी बिनतासुतन खगराजा (र) खगेस ।—१४०

खगपत बिखहा पंखपत वज्रतुंड हरिवाह,
सुपरण अहिभुक कासपी तारख उनतीनाह ।।—१४१

दैत्य नांम

दैत असुर दाणव दनुज इन्दअरी सुर (गव),
सुरबंधू (अर) सुक्रसिस दतिसुत पूरबदेव ।।—१४२

राक्षस नांम

संभादळ दांणू असुर निकसासुत नमचार,
रागस कौणप रात्रिचळ करबुर नरभखकार ।।—१४३

इन्द्र नांम

[illegible] संक्रन पुरंदर सुरपत मंदिर (आन्य),
[illegible] वासवपती (अठे) मघवा (अव आन्य) ।।—१४४

दरपक कामदेव हरदोखी अंगज मार अनंगी,
अनिरुधपता मनोज अङ्गी अबळासेन (अनोखी)।--१२७
मधुसारथी आतम जोणी काम मदन झककेतू,
(है) प्रदुमन कंद्रप मधुहेतू (सुरग गीत सब छोणी)।--१२८
कमन बळेसणगारज (कहणूं) मनमथ मैण (मुणीजै),
सुमनराधुज मकरकेत (सुणीजै) रागरज्जु (मनहरणूं)॥--१२९

दोहा

पहली गण खटकळऽऽऽ० पढ़ो, च्यार बनत कळच्यारऽऽ०,
गुणूं वळे दुव मातरा, पुणा नव तुकां गुण्यार।—१३०
चवो उलाळा छंदरी, दुरस अन्त तुक दोय,
अट्ठावी मात्रा अवस, इम क्रम छप्पय होय।—१३१

छप्पय

यमराज नांम

धरमराज जज्राट काळ जमरांण महिखधुज,
मारतंडसुत जज्ञ हरी अंतक जमुनानुज।
संजमनीपत प्रेतपती ज.म विस्वकसंहर,
धूमोरण दवखण (प* वळे) जमराज दंडधर।
कीनास पितरपति अंतकर समवरती (रु) कृतान्त (सह,
बावीस नांम सुकव्यां सुणूं जेम) मीच (जम नांम कह)॥—१३२

दोहा

धुर खट कळ दुव दोय धर, लघू एक कळ दाय,
कळ खट दो कळ गुरु कहो, हिक लघु दोहा होय।—१३३

दोहा

लक्ष्मी नांम

छीरोदधजा लाछ लच्छ दधसुतनी पदमा (ह),
रमा ई आ नारायणी लखमी मा कमळा (ह)॥—१३४

कुबेर नांम

नरबाहण जच्छप धनद अलकापत धनईस,
श्रीद सितोदर तीनसिर नरधरमा रनधीस।—१३५

---

* धूमोरणप, दवखणप

कुह वैसरवण रतनकर किंपुरुसेस कुवेर ,
उत्तरदिकपति ईससख (घर कैलास सु घेर) ॥—१३६

स्वर्ग नांम

ऊरधलोक (र) पुरअमर सरग नाक सुरलोक ,
देवलोक सुरथांन दिव इंदलोक सुरओक ॥—१३७

किरण नांम

रसमी सुचि अंसू किरण जोती गो दुति (जाण) ,
वसु प्रभा दीपति विभा भा मरीचि छवि (भाण) ॥—१३८

धूप-४, चंद्रिका-३ नांम

तावड़ो (सु) परकास (तिम) आतप ताव (अखंड) ,
चंद्रापत (अर) चांदणी हिमप्रकास (ब्रहमंड) ॥—१३९

गरुड़ नांम

गुरड़ राजपत्री गरड़ वैनतेय विहगेस ,
सरपअरी विनतासुतन खगराजा (र) खगेस ।—१४०

खगपत विखहा पंखपत वज्रतुंड हरिवाह ,
सुपरण अहिभुक कामपी नागरिप उनतीनाह ॥—१४१

दैत्य नांम

दैंत असुर दाणव दनुज इन्द्रअरी सुर (गव) ,
सुरबंधू (अर) सुक्रसिस दितिसुत पूरबदेव ॥—१४२

राक्षस नांम

संध्याबळ दासू असुर निकसासुत नसचार ,
राकस कौणप रात्रिबळ कव्वुर नरभखचार ॥—१४३

वरुण नांम

[illegible] संबर [illegible] जळपत [illegible] (जाण) ,
[illegible] जादसपती (कहे) वरुण (इब भाण) ॥—१४४

यक्ष-४, किंनर-४ नांम

द्रव्य-८, सामान्यनिधि-५ नांम

विभव वित्त द्रव सार वसु हेम अरथ धण (होय),
नधी कुनाभि निधान नध जवर सेवधी (जोय) ॥—१४६

नवनिधि नांम

महापदम चरचा मकर पदम कुंद (पहचाण),
कच्छप संख मुकंद (कह) नीला (नवनिधि जाण) ॥—१४७

अष्ट सिद्धि नांम

अणिमा लघिमा ईसिता प्रापति वसति प्रकांम,
(यत्र कांम) अवसायिता ईसरता (अठ नांम) ॥—१४८

स्वामी कार्तिक नांम

गंगा, क्रतिका, गोरि, सुत* सेनानी शिखिवाह,
महासेन खटमुख (वळे) गुह (अरु) तारकगाह ॥—१४९

आकास नांम

गैण वोम अंबर गगन आसमान आयास,
अंतरीक गैणाग (अर) आभ अभ्र आकास ।—१५०
निहंग गयण खैं वियत नभ गंगापथ ग्रहनेम,
पथछाया दिव विसनपथ उडपथ मारुत (एम) ॥—१५१

तारा नांम

उडगण तारा नखत उड तारायण भै (तात),
उडू तारका (एम अख) नखतर (जिम नख्यात) ॥—१५२

मेघ नांम

मेघ घनाघन घण मुदिर जीमूत (र) जळवाह,
अभ्र वळाहक जळद (अख) नभधुज धूमज (नाह) ॥—१५३

मेघमाला-२, अतिवृष्टि-२, मेघतिमिर-२, वर्षा-२ नांम

मेघमाळ कादंबनी अतिवरसण आसार,
दुरदिन वीकासी (दखो) व्रष्टी वरसण (वार) ॥—१५४

---

* गंगा, क्रतिका, गोरि, सुत=गंगासुत, क्रतिकासुत, गोरिसुत ।

ओला-४, बादल-६ नांम

असण गड़ा ओळा करक धमज बादळ (धार),
अभ्र बादळो आभ (धर कहो वळे) जळकार ॥—१५५

विजली-६, गर्जना-४, उल्कापात-१ नांम

बीज दामणी बीजळी तड़ता छटा तड़ाळ,
गाज कड़क धूहड़ गरज उलकापात (अचाळ) ॥—१५६

सामान्य दिशा-४, पूर्व-१, दक्षिण-१, उत्तर-२, पश्चिम-२ नांम

दिक आसा चक्कां दिसा पूरब दक्खण (पाय),
उत्तर (वळे) उदीचि (अथ) अपरा पच्छम (आय) ॥—१५७

अष्टदिकपाल नांम

इंद अगन जम असुर (अर) वरुण (वळे कह) वात,
अलकापत (इम) ईसवर (आठ दसा पत आत) ॥—१५८

पंच देव-वृक्ष नांम

पारजात मंदार (पढ़ तत) कळप्रछ संतान,
हरिचन्दन (ए देव हरि पांच रूंख पहिचान) ॥—१५९

दिन-६, रात्रि-१७ नांम

दीह दिवस परभात दन वासर अह (बुलवात),
निसा छपा जामनि उखा रजनी छणदा रात ।—१६०
रात्रि रातरी सरवरी त्रीजामा त्रिजाम,
तमचाळी दोसा तमी विभावरी गनिवाम ॥—१६१

सामान्य समय-७, अच्छा समय-५ नांम

[illegible] काळ वेळा समय वखत अनेहा वार,
[illegible] घड़ी आरती चोखी भली (उचार) ॥—१६२

बुरा समय-११, जोगवती-६ नांम

[illegible] कुरी अनाम्नी [illegible] खोटी (वार),
[illegible] कुड़ी (अवर) माठि नरामी (धार) ।—१६३
[illegible] (कर) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible],
[illegible] [illegible] (कुहीं) [illegible] ([illegible]) ॥—१६४

निमेष, काष्ठा, लव, कला, लेस, घड़ी वर्णन

मान अढ़ार निमेसरो काष्ठा नांमक जांण,
काष्ठा द्वै रो एक लव पनरा कळा पिछांण।—१६५
कळा दोय रो लेस हू पनरा खण में पेख,
निसचै छै खण नाडिका इंद घड़ी घटि देख॥—१६६

सायंकाल-४, संध्या-४ नांम

सवळी उतसूर (सु कहो) साग (र) दिनअवसांण,
संझा संध्या सांझ (कह) संभया (गरवत मांण)॥—१६७

रात्रिप्रारंभ-३, पहर-४ नांम

रजनीमुख परदोस (है फेर) प्रदोस (पछांण),
पहर पैर (फेरूं) प्रहर जाम (नांम ए जांण)॥—१६८

अंधकार नांम

तमर अंधारो संतमस अंधकार अंधार,
धरछाया अंधातमस निसाचरम (नीहार)॥—१६९

महीना-१, संवत-६ नांम

(पखवाड़ा दो ए प्रगट मुणूं सदा हिक) मास,
(बारै मासां से वळे जाणूं संवत जास)।—१७०
संवत हायन वरस सम वच्छ सरत (वाखांण),
वच्छर संवच्छर (वळे) जुगअंसक (तू जांण)॥—१७१

मार्गशिर-४, पौष-१, माघ-२, फाल्गुण-२, चैत्र-३, वैशाख-३, जेष्ठ-१, आषाढ़-२ नांम

आगण संवतआद सह मंगसर (मास मुणंत),
पोस माघ तप फालगुण फागण (फेर पुणंत)।—१७२
(तत) चैत्रक मधु चैत (अख ज्यूं) वैसाख (सुजांण),
माधव राध (रु) जेठ (मुण अर) असाढ़ सुचि (आंण)॥—१७३

श्रावण-३, भाद्रपद-५, आश्विन-३ नांम

सांवण नभ (जिम) सावणिक भाद्रव भाद्र (भणोज),
भादूं भादव भाद्रपद इस कुंवार आसोज॥—१७४

कार्तिक-४, मार्गशिर-पौष-१, माघ-फाल्गुन-१, चैत्र-वैशाख-२, जेष्ठ-आषाढ़-८, श्रावण-भाद्रपद-१ नांम

कार्तिक काती कारतिक बाहुल (वळे वखांण,
रत) हेमंत (र) ससर (है) इष्य वसंत (सु आण)।—१७५
ऊन्हाळागम ऊसमक दाह (रु) तपत निदाघ,
ग्रीखम तप उसणागम (क बाखाणूं) बरखा (घ)॥—१७६

आश्विन-कार्तिक-२, प्रलय-१० नांम

सरद घणात्यय प्रळय खय संबरत्तक संहार,
परिवरत ख परळै प्रळै अंत कळप (उच्चार)॥—१७७

अभी-३, नित्य-७ नांम

(अखो) हनोज अबार अब नत प्रत सदा हनोज,
(वळे कहो इम) सरवदा (रख) हमेस नत रोज॥—१७८

वचन नांम

वैण वयण कहवत वचन ब्रवै बोलड़ा बोल,
चवै जंप ऊचरै मुणै गोय रट (मोल)।—१७९
पुणै पयंपै कथ पढ़ै वरण ववै भण (वाण),
कहै कहण प्रारथ कथन आखै भाखै (आण)॥—१८०

वेद-५, चारवेद-४, षट्वेदांग-६ नांम

आमनाय श्रुति वेद (अर) निगम ब्रह्म (निरधार),
रग जजु साम अथर्व (ए च्यार वेद उच्चार)।—१८१
कलप निरुकती व्याकरण जोतिस सिक्षा (जांण),
छंद (नांम ऐ सब छ रो एम षडंगी आण)॥—१८२

चौदहविद्या नांम

अंगी खट आन्वीक्षिकी च्यार वेद विचार,
धरमशास्त्र मीमांस (धर ऑर) पुराण अढ़ार॥—१८३

सामान्य वात नांम

वात उदंत प्रवृत्ति (अर) समाचार सम्वार,
समाचरण वृत्तांत (कह) वातां (कहै विचार)॥—१८४

निमेष, काष्ठा, लव, कला, लेस, घड़ी वर्णन

मान अढ़ार निमेसरो काष्ठा नांमक जांण,
काष्ठा द्वै रो एक लव पनरा कळा पिछांण।—१६५
कळा दोय रो लेस ह पनरा खण में पेख,
निसचै छै खण नाडिका इंद घड़ी घटि देख॥—१६६

सायंकाल-४, संध्या-४ नांम

सवली उतसूर (सु कह्) साय (र) दिनअवसांण,
संझा संध्या सांझ (कह्) संभया (सरवस मांण)॥—१६७

रात्रिप्रारंभ-३, पहर-४ नांम

रजनीमुख परदोस (हूं फेर) प्रदोस (पछांण),
पहर पैर (फेरूं) प्रहर जाम (नांम ए जांण)॥—१६८

अंधकार नांम

तमर अंधारो संतमस अंधकार अंधार,
धरछाया अंधातमस निसाचरम (नीहार)॥—१६९

महीना-१, संवत-६ नांम

(पखवाड़ा दो ए प्रगट मुणूं सदा हिक) मास,
(बारै मासां से वळे जाणूं संवत जास)।—१७०
संवत हायन वरस सम वच्छ सरत (वाखांण),
वच्छर संवच्छर (वळे) जुगअंसक (तू जांण)॥—१७१

मार्गशिर-४, पौष-१, माघ-२, फाल्गुण-२, चैत्र-३, वैशाख-३, जेष्ठ-१, आषाढ़-२ नांम

आगण संवतआद सह मंगसर (मास मुणंत),
पोस माघ तप फालगुण फागण (फेर पुणंत)।—१७२
(तत) चैत्रक मधु चैत (अख ज्यूं) वैसाख (सुजांण),
माधव राध (रु) जेठ (मुण अर) असाढ़ सुचि (आंण)॥—१७३

श्रावण-३, भाद्रपद-५, आश्विन-३ नांम

सांवण नभ (जिम) सावणिक भाद्रव भाद्र (भणोज),
भादूं भादव भाद्रपद इस कुंवार आसोज॥—१७४

कातिक-४, मार्गशिर-पौष-१, माघ-फाल्गुन-१, चैत्र-वैशाख-२,
जेष्ठ-आषाढ़-८, श्रावण-भाद्रपद-१ नांम

कार्तिक काती कारतिक बाहुल (वळे वखांण,
रत) हेमंत (र) ससर (है) इष्य बसंत (सु आण) ।—१७५
ऊन्हाळागम ऊसमक दाह (रु) तपत निदाघ,
ग्रीखम तप उसणागम (क बाखारगू) बरखा (घ) ॥—१७६

आश्विन-कार्तिक-२, प्रलय-१० नांम

सरद घणात्यय प्रळय खय संबरत्तक संहार,
परिवरत ख परळै प्रळै अंत कळप (उच्चार) ॥—१७७

अभी-३, नित्य-७ नांम

(अखो) हनोज अवार अब नत प्रत सदा हनोज,
(वळे कहो इम) सरवदा (रख) हमेस नत रोज ॥—१७८

वचन नांम

वैण बयण कहवत वचन ब्रवै बोलड़ा बोल,
चवै जंप ऊचरै मुणै गोय रट (मोल) ।—१७९
पुणै पयंपै कथ पढ़ै वरण वकै भण (वाण),
कहै कहण प्रारथ कथन आखै भाखै (आण) ॥—१८०

वेद-५, चारवेद-४, षट्वेदांग-६ नांम

आमनाय श्रुति वेद (अर) निगम ब्रहम (निरधार),
रग जजु साम अथर्व (ए च्यार वेद उच्चार) ।—१८१
कलप निरुकती व्याकरण जोतिस सिकसा (जांण),
छंद (नांम ऐ सब छ रो एम षडंगी आण) ॥—१८२

चौदहविद्या नांम

अंगी खट आन्वीक्षिकी च्यारूं वेद विचार,
धरमसास्त्र मीमांस (धर और) पुराण अढ़ार ॥—१८३

सामान्य वात नांम

वात उदंत प्रव्रत्ति (अर) समाचार समचार,
समाचरण व्रतांत (नह) वार्ता (वळै विचार) ॥—१८४

बुलाना-५, शपथ-४, व्यवहार-२ नांम

हवकारक हव हूति (कह) आकारण आकार,
सोगन सपन (रु) सपथ सप (है) वुहार व्यवहार ॥—१८५

प्रश्नवचन-३, सत्यवचन-६, मिथ्यावचन-२, स्तुति-८, निंदा-२ नांम

प्रच्छा अनुयोजन प्रसन समीचीन रात सांच,
(आख) जथातथ लीक ऋत वितथ अलीक (सुवांच) ।—१८६

असतूती असतूत (अर) वरणन नुती वखांण,
सतवन परसंसा स्तुती निंदा नंदा (जांण) ॥—१८७

कीर्ति नांम

पंगी कीरत पांगळी सेतरंगी सोभाह,
सुसवद सतरंगी सुजस प्रभा कीत प्रभता (ह) ॥—१८८

आज्ञा नांम

सासण (ओर) निदेस (कह मुणूं) हुकम फुरमांण,
वासक निरदेसक (वळे इम) आदेश (सु आण) ॥—१८९

अंगीकार-५, गान-६, नाच-७, बाजा-४ नांम

संवित संधा आसथा आश्रव अंगीकार,
गीत गाण गंधर्व (अर) गावण गेय सुगार ।—१९०

नाटक तांडव न्रत्त न्रत नरतन नटन सुनाच,
वाजो तूर वादत्र (है वळे) मैणवुज (वाच) ॥—१९१

फूंक के बाजे-१, तार के बाजे-१, ताल-मंजीरा आदि-१, चमड़े से मंढे बाजे-१, बीणा-४, बीणा अंग-२, बीणा दंड-१, बीणा की खूंटी-१ नांम

(वंसादिकरो) सुसिर (वक) तत घन (आदिक ताल),
(आद) मुरजआनद्ध (अब जोवो) बीणा (जाळ) ।—१९२

वेण बीण (अर) वल्लकी कोलंबक (तिण) काय,
(बीणा दंड) प्रवाळ (है) उपनह (बंधण आय) ॥—१९३

नगारा नांम

त्रंबागळ त्रंमाळ (है) भेरी दुंदुभि (भाख),
जांगी बंब दुजीह (अर इम) नीसाण (सुआख)।—१९४

त्रामागळ त्रामाळ (त्रिम) त्रंबक (अर) त्रंबाळ,
टामंक (रु) त्रंमाट (है) डंडाहड़ डंडाळ।—१९५

ईडक धूंसो (अख वळे दाखो ओर) दमाम,
(एम) त्रमाट (बखाण अर नरख) नगारो (नांम)॥—१९६

नगारे का वजना नांम

त्रहत्रहियां गरहर त्रहक वज रुड़बो रुड़ वाज,
घुरियो घुरबो घोकियो नीधस डहक निहाज।—१९७

जंप धीह घुर वाजबो (फेर) रणाक (पढ़ाव),
वाजण विजयो वाजियां (निसचै कहो निवाह)॥—१९८

शृंगारादि नवरस नांम

(रस) सणगार (रु) हस करुण वीर रुद्र (वाखाण),
भयानक (रु) वीभत्स (है) अदभुत सांत (नु आण)॥—१९९

अनुराग-४, हास्य-४, बहुत हंसना-१, उपहास-१, सोच-३ नांम

राग प्रीत रति अनुरत्ती हास्य हसन हस हास,
अट्टहास अपहास (अर) सोच सोक सूक (ताग)॥—२००

कोप नांम

भयानक दारुण (भणु) भयावण विकराळ,
घोर कराळपयोरपर विकट (क) निकराळ ॥—२०४

आश्चर्य नांम

आसचरज अचरज अचरज अदभुत विसमै (आण),
फुरन अचंभो (फेर पड़) विसमय (गोर बखाण) ॥—२०५

संतोष-३, स्मरण-६ नांम

धीरज संतोख (क) त्रपती सामरति (भळै सु) याद,
सुमिरण समरण (सार) सामर (सुणी साखो) याद ॥—२०६

बुद्धि नांम

बुद्धि चित सिराणा सुबुध धी मेधा मति धीय,
उपलबधो उकती उकत (जाणु) प्रतिभा जीय ॥—२०७

लज्जा नांम

लज्या लज्जा लाज लज व्रीड त्रपा विख्यात,
सकुचण (अर) संकोच (है) सरम (सदा सरसात) ॥—२०८

अप्रसन्न नांम

उणमण अणमण (आख अव) अप्रसन (अर) अवसाद,
वराजा वेराज (वद) वेदल दुमन (विखाद) ॥—२०९

निद्रा नांम

संवेसर निद्रा सयन संलय तंद्रा स्वाप,
विनजागण (अर) नींद (वद) जुरा निदड़ली (जाप) ॥—२१०

याद करना नांम

अवळूड़ी (दाखो अवस आखो) रणक (उमाह),
ओळूंड़ी अतलाग (अख) ओळू उतकंठा (ह) ॥—२११

आलस्य-४, प्रसन्नता-४ नांम

कोसीद (रु) तंद्रा (कहो) आळस (अर) असळाक,
संमद चितपरसन्नता अणद प्रमोद (सु आक) ॥—२१२

गर्व नांम

मुठठ मजाज मरोड़ (मुण) गरवर गुमर गुमान,
गुररो मुरड़ गरूर (गिण) अहंकार अभिमान।—२१३
मनऊंचो ममता (मुणू) मान दरप मगरूर,
सूधनहीं मद (अरु) टसक (पुणां) मगज छकपूर॥—२१४

निर्बल-५, दीनता-२, परिश्रम-१० नांम

अबळ नबळ बळहीण (अख) दुरबळ निरबळ (दाख),
करपणता (जिम) दीन (कह) आयास (रु) श्रम (आख)।—२१५
परीसरम तकलीब (पढ़) खेचल मैनत खेद,
प्रीश्रम (और) प्रयास (है भाख) कलेस (सुभेद)॥—२१६

मृत्यु नांम

मोत काळ अत्तू मरण निधन समावण नास,
असतं मीच अवसाण (अर) जोखम वीसम (जास)॥—२१७

मनुष्य नांम

मानव माणस नर मरद आदम मनख (सुआंण),
मानुस ना मनुज (रु) मनुस पूरख पुरुख (प्रमांण)॥—२१८

बालक नांम

पोत पाक छीरप (पढ़ो) बाळक टाबर बाळ,
गीगो कूको गीगल्यां अरभक साव (उताळ)॥—२१९

व्रद्ध नांम

जीरण जरठ (रु) जावरो बूढ़ो बूढ़ळ (वांण),
डोकरड़ो (अर) डोकरो जरण व्रद्ध (तू जांण)॥—२२०

कवि नांम

पात क्रवण कवि नीपणां ईहग बीदग (आख),
गुणियण सुकवी मांगणां भाणव हेतव (भाख)।—२२१
[illegible] नायक (कहो) रेणव (जू) [illegible],
([illegible]) [illegible] दुपियां [illegible] [illegible]॥—२२२

शासन नांम

आगाहट (अर) उदक (अख) गांगण नेरा (सुणात),
गढ़वाड़ा (फेरूं गिणूं) तांबापतर (तुलात) ॥—२२३

पंडित नांम

पंडित अभिरूप (र) सुधी विचछन मेधावाळ,
कोविद कृति ऋष्टी वळे (जंगणवाणी जाळ) ॥—२२४

चतुर नांम

परवीण (र) सिच्छित निपुण नागर पटु निरणात,
कुसळ चतुर कृतमुख (कहो) अभिजाणण (तिमआत) ॥—२२५

मूर्ख नांम

मंद मूढ़ (अर) मातमुख जड़ सठ बाळ अजाण,
जथाजात मूरख (जपो) अवुध (रु) जालम (आण) ॥—२२६

स्वाधीन-४, पराधीन-४ नांम

सुतंतर (रु) स्वच्छंद (है) सुरुचि (वळे) स्वाधीन,
नाथवाळ निघनक (कहो) आयत्तर आधीन ॥—२२७

धनवान-४, संपत्ति-४ नांम

लछमीवाळ (रु) लच्छमण धणी ईसवर (धार),
लछमी श्री संपत (लखो) संपत्ती (सुविचार) ॥—२२८

दरिद्र नांम

रोर दळिद्र कुरिंद (अर) टोटो घाटो (आख),
कंसालो (र) दाळीद (कह) दुरगत कीकट (दाख) ॥—२२९

स्वामी नांम

अधिप ईस प्रभु ईसवर इंद पती विभु (एम),
नायक स्वामी नाथ इन (जंपो) भरता (जेम) ॥—२३०

दास नांम

चाकर बेली चेट (चव) परिचारक परजात,
किंकर भ्रत (रु) करमकर अनुचर दास (सु आत) ॥—२३१

शूरवीर नांम

सूर वीर सांवत सुभड़ जोरावर जोधार,
जोरावार (रु) जोमरद भिड़ज अरोड़ा (भार) ।—२३२

भड़ खीवर रावत (भणूं) मरद सुहड़ घड़मोड़,
घड़ामोड़ जंगजूट (घड़) ओधंगी (नहकोड़) ।—२३३

जंगसारधारण (जंपो) सेनावेध (समाळ),
रिमांदाट जोमंग (रट) जोसंगी (रमजाळ) ॥—२३४

कायर नांम

कायर काचा कातर (क) पसकण डरपण पोच,
कादर (ज्यूं) भीरू चकित (सुण अर) करणसोच ॥—२३५

कृपण-२०, दयावान-५ नांम

करपर करपण सूम (कह) नाटवाल नाकार,
माठा दमजोड़ा (मुणूं) अदेवाळ अदतार ।—२३६

करमट्टा लोभी (कहो) कळमाठा (र) अदात,
चठमट्टा (अर) संचगर अदायान कृपन (ग्रात ।—२३७
पुणां) चतमाठा (ओ) कपण द्रढ़मूठी (र) दयाळ,
करुणाकर सूरत (कहो) कोमळचीत कृपाळ ॥—२३८

दया नांम

करुणा अनुकंपा कृपा दया मया (तिम दाख),
महरबानगी महर (सुण) सुनजर करुणा (साख) ।—२३९
सुधानजर सुद्रष्ट (नृप भाणव इण विध भाख),

वाढ़ण चरजण वाढ़ियो काटण कटियो काट,
वढ़ियो वेहर वाढ़ियो आछण मूछण आट ॥—२४३

तोड़ना-३, मारने को तैयार-१, मृतक-५,
कपटी-४, सरल-२, धूर्त-५ नांम

भांगण तोड़ण भांजियो (अखो) आततायी (ह),
प्रेत परेत परासु (पढ़) उपगत मुरदो (ईह) ।—२४४

कपटी सठ अनजु निकत सुधो सरळ (गुहात),
धूरत सठ वंचक (धरो) कुहक (रु) जाल्मिक (आत) ॥—२४५

ठगई-३, कपट-६ नांम

कुस्रती माया सठ कपट छदम कूट छळ (आत),
उपधा व्याज (रु) मिस (अखो) कैतव दंभ (कुहात) ॥—२४६

सज्जन-३, चुगलखोर-७ नांम

सज्जन साधू (है) सजन दोयजीह खळ (दाख),
करणेजप सूचक पिसुन नीच मच्छरिन (आख) ॥—२४७

चोर-३, दाता-२, दान-२६ नांम

चोर मोस (अर) चोरड़ो दाता (अर) दातार,
वगसै वयावर (अर) अवै आलर दत आचार ।—२४८

रीझ सुमोज वरीस (कह) समपीजै (रु) समाप,
त्याग समापण दान (तिम) आलै मोजै आप ।—२४९

करतव अपवरजन (कहो) वितरण देण प्रवाह,
उतसरजन अंहति (अखो वोल) नवाज विदाह ॥—२५०

क्षमा-३, भरखंपन-३, जोरावर-३६ नांम

खिचता धीरज (है) खमा भारीखवूं (सु भाख),
खूदालम (अर) भरखवूं (एम) अमावड (आख ।—२५१

जंपो) जोरावर जवर वामराड विकराळ,
जोरदार अखडैत (जिम कहो) सवळ लंकाळ ।—२५२

सांड कराळ त्रसींग (अर) अड़ीखंभ अरडींग,
खांगड़ा अनड़ ताखड़ा (जंपो) जाजुळ धींग ।—२५३

माझी (अर) वेढ़ीमणा अतळीवळ ओनाड़,
अनमीखंध पूंचाळ (अख) बंका अनम विभाड़ ।—२५४

नाटसाल अनमी (नरख आख) अरोड़ अठेल,
आपायत ऊवांवरा एढ़ा (खळां उथेल) ।—२५५

अनडर डाकी (फेर अख) अड़पायत अजराळ,
वडाळा (र बरियामरा भाणव सारा भाळ) ॥—२५६

निर्भय नांम

अडर नडर अणभै अभै नरभै अभै नसंक,
अभंग अबीह अभंग (अर) अजरायल अणसंक ॥—२५७

ईर्षालु-२, ईर्षा-१, क्रोधी-४ नांम

कुहन ईरखावाळ (कह एम) ईरखा (आख),
कोपवाळ क्रोधी (कहो) रोखण रोखी (भाख) ॥—२५८

भूख-४, प्यास-४, प्यासा-२, सोखना-२ नांम

रोचक भूख (र) छुध रुची तस तरखा अट पान,
तरसित तरखावाळ (तिम) सुसवो सोसण (मान) ॥—२५९

दाल-२, व्यंजन-१, गुलगुला-१, मालपुवा-१, पतला लगावण-१ सेव-१, बड़ा-१, गुड़-३ नांम

दाळ सूप व्यंजन (दखां) पूवा मालपुवा (ह),
तेवण चमसी (तिम) वड़ा गोळ इक्षु गुड़ (गाह) ॥—२६०

धीरंड-१, दाल का रस-२, मिश्री-बूरा-२, शक्कर-२, दूध-१२ नांम

सालरण रसो जोन (कह) मसरी मिसा (मुनाव),
मधुकळ (अर) खांड (नृप) दूध दुगध (दरसाव) ।—२६१
पै गोरस जळमित पय जीवनीय मर (नाम),
पयसनन (ज्यों) छीर (कह) अवस अक्रन (काम) ॥—२६२

गुज्जी-राबड़ी-६, मठा-३ नांम

(बोलो) गुज्जी रावड़ी कांजो कांजिक (आह),
कुंजळ (वळे) सुवीर (कह) छाछ (रु) गोरस छाह ॥—२६४

तेल-३, राई-२, धनिया-१, सोंठ-२, हल्दी-२ नांम

तेल अभंजन स्नेह (तव) असुरी रायी (आख),
धणू सूंठ नागर (धरो) हळद (र) हळदी (दाख) ॥—२६५

मिर्च-३, जीरा-२, पीपर-२, हींग-२ नांम

कोलक वेलज मरच (कह) जीरक जीरो (आत),
पीपळ (अर) पीपर (कहो) हिंगू हींग (सुहात) ॥—२६६

भोजन नांम

भोजन जीमण अद भखण असण ग्रसण आहार,
लेहण खादन भख गलण अदन जग्वण घसि (आर) ॥—२६७

ग्रास नांम

कुवा पिंड ग्रासण कवळ गाळा गुड़ (अर) ग्रास,
अदनचीज टुकड़ो (अखो) कवक गुडरेक गास ॥—२६८

लोभी नांम

लोभी अभिलाखुक लुवध (वेखो) त्रष्णावाळ,
आसा अंछा वाळ (अख) लोलुप (अर) लोभाळ ॥—२६९

लोभ नांम

त्रष्णा कांछा लोभ त्रट अभिलाखा आसा (ह),
काम मनोरथ ईह (अख) अंछया वस इच्छा (ह) ॥—२७०

कामी-३, हर्षित-२, दुचिता-५ नांम

कामवाळ कांमी कमन हरखमाण हरख्याह,
वीचेतस दुरमन विमन (मुण) दुमनू दुमना (ह) ॥—२७१

मतवाला-५, उत्कंठित-७, अभिशाप-४ नांम

मतवाळो उतकट (मुणू) छीव मत्त मदचाह,
ओळूवाळ (रु) उतक (अख) उतकंठित (कह) आह ।—२७२

उनसुक ऊमण (फेर अख चवो वळे) अतिचाह,
आक्षारित दूसित (अखो) अभीशप्त वाच्या (ह) ॥—२७३

बंधा हुआ नांम

बंधित बांध्यो बद्ध सित संयत नद्ध (सुहात),
निगडित (अर) संदानिकत कीलित (वळे कुहात) ॥—२७४

बंधन-२, अनमना-२, तंगड़ाया हुआ-२, निकाला हुआ-१ नांम

बंधण (अर) उद्दान (वद) मनहत प्रतिहत (मांण),
प्रतीछिपत अधिछिपत (भण जिम) निसकासित (जांण) ॥—२७५

हारना नांम

विप्रकार परिभाव (भण वळे) पराभव हार,
अभिभव अत्याकार (इम निमचै आख) निकार ॥—२७६

सुवक्कड़-५, जागरण-२, वहमी-२, पूजा-३, दंडित-२, पूजित-५ नांम

सुपनक सयआळू सुपन नीदाळू नीदाळ,
जागरया (अर) जागरण वहमी संदेहाळ ।—२७७
अरचा पूजा अरहणा दंडचो दंडित (देख),
अरहित अपचित अचित (ह) पूजित अरचित (पेख) ॥—२७८

नमस्कार नांम

नमस्कार वंदन नमो प्रणम वंद प्रणाम,
अभिवादन आदेस (इम पढ़) डंडोत प्रनाम ॥—२७९

शरमिंदा-१, सिटपटाया हुआ-२, पूजा की सामग्री-२, पुष्ट-६ नांम

विक्लव विह्वल विकल (वद) बलि उपहार (बखांण),
पीवर पीवा पीन (पढ़) पुस्ट पुष्ट पळवान ॥—२८०

नकटा-२, पंगु-२, काना-३, कुबड़ा-२ नांम

नाकविहीण अनासिक (र) पंगू श्रोण (पुणंत),
कांण कनन (अर) एकचख कुबज (र) गडुल (कहंत) ॥—२८३

नाटा-३, बहरा-२, लंगड़ा-३, अंधा-२ नांम

खरवसाख वावन खरव बहरो बधिर (वुलात),
खोड़ो खंजक खोर (कह) अंध आंधळो (आत) ॥—२८४

रोगी-४, रोग-६ नांम

रोगवाळ आतुर (अपटु) रोगित रोगी (जांण),
रोग रुजा आतंक रुग गद (रु) अपाटव (गाण) ॥—२८५

घाव-४, खुरंट-२, शोथ-३, औषध-५, वैद्य-८ नांम

व्रण छत चगदा घाव (कह) किण व्रणपद (सु कहात),
सोथ सोफ सोजो (कहो) भेसज तंत्र (भणात) ।—२८६
अगद जायु औषध (अखो) वैद (नांम विख्यात),
भिसज रोगहारीप्रभण दोसजाण (दरसात) ।—२८७
(फेर) हकीम तवीब (पढ़) जुररो नायत (जाण,
विसद नांव वैदाण रा एण रीत सूं आण) ॥—२८८

विपत्तिवाला-२, विपत्ति-६ नांम

आपदथित आपन्न (अख) वपत विपत्ति (वखांण),
आपद विपदा आपदा (जिम) आपत्ति (सुजांण) ॥—२८९

स्नेहवाला-२, सभासद-३, सभा-६, ज्योतिषी-२ नांम

नेहवाळ वच्छळ (नरख) सभावाळ (सूजाण),
समातार सामाजिका (अवै नांम) सद (आण) ।—२९०
आसथान परसत (अखो) संसत सभा समाज,
मूरतजांणणहार (मुण तेम) गणक (सिरताज) ॥—२९१

वंश नांम

अभिजण कुळ संतान (अख) गोतर गोत (गणात),
अनववाय अनवय (इमहिं) जनन कडूंब (जणात) ॥—२९२

स्त्री नांम

तरिया तिरिया असतरी बाळा गोरी वांम,
अबळा बाळी अंगना भांमण सुंदर भांम।—२९३
जुवती प्रमदा जोखता जोसा रमणी (जोय),
महळी पदमण पदमणी रामा नारी (होय)।—२९४
भीरू जोसित भांमणी म्रगनैणी तिय (मांन,
तेम) कांमणी (अर) त्रिया (जेम) महळ (सू जान)॥—२९५

बलैयां-२, बलैयां लेना-५ नांम

(सुणूं) वारणा भामणा भामी वारी (भाख),
वळू मरूं (ओरूं अखो) वारीजावण (आख)॥—२९६

पत्नी नांम

प्यारी जोड़ायत प्रिया धण (सु) सुधारणधाम,
लाडी कांता लाडली वधू वल्लभा (वांम)॥—२९७

पति नांम

पत साहिब पीतम पती रमण कंत भरतार,
धव साजन वालम धणी ढोलो पीव (सुहाग)।—२९८
कंथा खावंद कंथ (कह) नायक नेह (र) नाह,
वर भरता मांटी (वळे) वरयित कन्याविवाह॥—२९९

दूल्ह नांम

बींद दुलह बनड़ो बनूं वर लाडो (विख्यात),
मोड़बंध (फेरूं सुणूं) दुलह (नांम बखांन)॥—३००

दुलहिन नांम

दुलहण दुलही दुलहणी बनड़ी बनी (बखांन,
देखो) लाडी बींदणी (जेम) लाडली (जांण)॥—३०१

विवाह नांम

जगन सुयंवर त्याग जग (मुणू) स्वयंव विमाह,
उपयम मांडो (फेर अख वळि) उदवाह विवाह ॥—३०३

दामाद-६, जार-२ नांम

जामाता धीपत (जपो) धीप जमाई (धार,
पत) दुखतर दुहितापति (जंपो) उपपत जार ॥—३०४

पतिव्रता-६, व्यभिचारिणी-७, सखी-३, वेश्या-६ नांम

पतवरता (अर) एकपत इकपतनी (इम आख),
सुभचरिता साध्वी सती भामण कुळटा (भाख)।—३०५
असती धरसण इतवरी वंधकि अवनीता (ह),
सध्रीची आली सखी कंचनी (र) कुलटा (ह)।—३०६
गनका भगतण गायणी वेसां पातर (वांम),
रूपजीवणी (फेर पढ़) नगरनायका (नांम) ॥—३०७

माता नांम

जणणी अंवा मा जणी माता मादर माय,
मायड़ मायी मावड़ी आई अमा (आय) ॥—३०८

बेटी नांम

कंवरी लड़की डीकरी तनया पुत्रि सुता (ह),
वेटी धी (अर) डावड़ी (जिम) दुखतर तनुजा (ह)।—३०९
समरधुका (अर) सारधू पुतरी (फेर पढ़ाव,
तात नाव आगळ तणी वेटी नाव वणाव) ॥—३१०

पिता नांम

जणो जनेता जनीया वाप जनक (वाखांण),
पिता तात वपता जामी (नांम सुजांण) ॥—३११

पुत्र नांम

पूत जोध नंदन पुतर जायो सुतन सुजाव,
छावो वेटो छोकरो धोटो नन्द (धराव)।—३१२
(वळे) सिवाई डावड़ो सुत (र) डीकरो साव,
तात सूनु कुळधर तनय अंगज पुत्र (अणाव)।—३१३

(वाळा तरण ये दुव सबद अगा नाम पित आत ,
ईखो नाव दु ईहगां बेटा रा वणजात)॰ ॥—३१४

सामान्य संतति नांम

तुक प्रसूत संतति प्रजा तोक अपत संतान ,
(आवै जो इण विध अवस सो संतति सामान) ।—३१५

पोता नांम

पोतो पोत्रो पोतरो दूजो बीजो (दाख) ,
बीयो दुवो (जाण बळे एम) अभनवा (आख) ।—३१६
हरा कळोधर (फेर) हर (ओर) समोभ्रम (आण ,
मुकव कळो धर रा सरब बारह नांम वखाण) ॥—३१७

पोती-३, सगा भाई-४, छोटा भाई-४, बड़ा भाई-६ नांम

पोती पोत्री पोतरी बंधव बंधू (वेख) ,
भ्रात सहोदर (फेर भगा दुरस) कणोठी (देख) ।—३१८
बंधव लघुबंधव अनुज जेठी जेठळ (जाण) ,
पहली भव (अर) पूरवज अग्रज जेठो (माण) ॥—३१९

बहिन-३, देवर-२, ननद-३,
संबंधी-६, स्वजन-६ नांम

जामि सुसा भगनी (जपो) देवा देवर (दाख) ,
नणद (स) नणदल नणदली वधव बंधू (भाख) ।—३२०
स्वे सगोत्र जाती सुजन स्वे निज सुविध (सुजाण) ,
आतमीय (जिम) आपणा (ओर) [illegible] (आण) ॥—३२१

देह नांम

तन पिंजर धड़ डील तनु [illegible] [illegible] काय ,
अंग गात अंग [illegible] [illegible] देह (सुभाय) ।—३२२
विग्रह घट वपु पिंड [illegible] संघर तनु [illegible] ,
पुर पुदगळ (पर) पीजरो [illegible] देह (सुधीर) ॥—३२३

मृतक-२, रुंड-धड़-२ नांम

(बनाजीव विग्रह बळे) कुणप (रु) म्रतक (कुहात),
(विण माथा रो देह वद) रुंड कबंध (रहात) ॥—३२४

अंग-३, मस्तक-१४ नांम

अवयव अपधन अंग (अख) सर भरकुट धू सीस,
करण-त्राण माथो कमळ मसतक मुंड (मुणीस) ॥—३२५
मोली मूंड (रु) मूरधा उतवंग भ्रकुटक (आख),

मुख-१२, ललाट-भाग्य-१३, कान-१२ नांम

मूंढ़ो आनन लयन मुख दंतालय घण (दाख) ।—३२६
मूह घनोत्तम वदन मुंह वकतर तुंड (वखाण),
भाळ ललाड़ (रु) भोवरो अलिक ललाट (मु आण) ।—३२७
तालो गोधि नसीब (तिम) करम भाग तकदीर,
चाचर (बळे) अळीक (चव) श्रुती (नांम मुण धीर) ।—३२८
कांन गोस (अर) कांनडा सरवण श्रवण (सुहात),
सवद, धुनि, ग्रह * श्रोत्र श्रव करण पिंजूस (कुहात) ॥—३२९

भोंह-३, नेत्र-१३ नांम

भ्रुकुट भुंहारां भूंह (भण) द्रष्टि विलोचन (दाख),
नेत्र नैण लोचण नयण अंबक लोयण (आख) ।—३३०
आंख रूपग्रह चख (अखो) द्रग रोहज (दरसाव,
आंखां रा कवियण अवस तेरह नाव तणाव) ॥—३३१

देखना नांम

जोवै भाळै जोयिजै लखै विलोकै देख,
सूझै ईखो सूजवै वेखो न्हाळै वेख ।—३३२
पेखै संपेखै (पढ़ो) दीठो दरसण (दाख),
निरखरणन भासै नरख अवलोकन (इम आख) ॥—३३३

नाक नांम

नाक नासका नासिका नरकुट नासा (जाण),
गंधजांण (अर) गंधवह घोण गंधहर घ्राण ॥—३३४

---

*सवद, धुनि, ग्रह = सबदग्रह, धुनिग्रह ।

होंठ नांम

दांतबसन (अर) रदनछद होठ अधर (इम होइ ,
ओठ नाम ऐ ईहगां मुख रा मंडण जोइ) ॥—३३५

दांत नांम

दांत डसण खादन रदन द्विज रद दसण (दिखात) ,
दंस दंत दोलू (दखो एह नाम रद आत) ॥—३३६

जीभ नांम

रसणा रसजांणण रसन जीहा जीह जबान ,
लोला रसमाता (लखो) जीभ (नाम ए जान) ॥—३३७

डाढ़-४, गाल-३, मूंछ-४ नांम

डाढ़ जंभ दाढ़ा डमा गल्ल (क) त्रकवरा गाल ,
मूंछ मुंछारा मौंसरा (जोवो) मूछां (जाल) ॥—३३८

डाढ़ी-४, गरदन-९ नांम

खत डाढ़ो डाढ़ी खतां ग्रीवा गादड़ ग्रीव ,
गळो नाड़की गावड़ी नाड़ कंधरो नस (नीव) ॥—३३९

हाथ नांम

करग आच्छ भुज भुजकर कर हस्त पाणि नत हात ,
पंचशाख सय बांह (पढ़) हाथ (क) भुजा (कुजात) ॥—३४०

कांधा-२, कक्षा-कांखुरी-४, अंगुली-२ नांम

अंस खंध भुजसीस (कह) कक्षा खंडिका कांख ,
भुजकोटर भुजमूळ (कथ कह) अंगुलि करशाख ॥—३४१

छाती नांम

उर उराट छाती उरस मनघर वच्छ (मुणात),
भुजअंतर (फेरूं प्रभण) कोड (र) वकस (कुहात) ॥—३४४

हृदय-५, स्तन-५ नांम

हरदो थणअंतर हिया असह मरमनर (आख),
उरमांडण थण कुच उरज (फेर) पयोधर (भाख) ॥—३४५

पेट नांम

उद्र पेट तुंदी उदर जठर पिचंड (मुजांण),
गरभकूंख जाठर (गिणूं फेरूं) कूंख (पिछांण) ॥—३४६

कलेजा-३, आंत-४ नांम

जगर कळेजो काळजो आंत आंतड़ा अंत,
अंत्रावळ (रा नांम ए कवियण च्यार कहंत) ॥—३४७

फेंफड़ा-३, मन-६ नांम

कलो फेफरो फूकणूं चित चेतन दिल चेत,
मन मांणस मनड़ो (मुणूं) रदो दिलड़ो (हेत) ॥—३४८

रोमावली-२, नाभी-३, कमर-३, मेरुदंड, रीढ़, नितंब-२, योनी-५ नांम

रोमलता रोमावळी नाभी नाही नाह,
कांचीपद कड़ कट कमर (त्रिक बंसाध तथा ह) ।—३४९

पूठबंस रीढ़क (पढ़ो) पुत कड़प्रोथ (प्रमांण),
भग संततिपथ जोंणि (भण) वुलि वरअंग (वखांण) ॥—३५०

लिंग-४, गुदा-३, जांघ-३ नांम

लिंग शिश्नु लांगुल लगुल पायू गुदा अपान,
ऊरू साथळ जांघ (अख) जानू गोडा (जान) ॥—३५१

घुटना-२, पिंडली-३, टखना-५ नांम

पींडी नळकीनी प्रसत चरणगाठ (पहचांण),
मुरच्या टक्कूण्यां (जेम) गुलफ घुट (जांण) ॥—३५२

पैर नांम

चलण पांव ओयण चरण पै पग पद पय पाय,
कदम अंघ्रि नग क्रम क्रमण (चउदह नांव चवाय) ॥—३५३

तलुआ-३, एडी-१, रुधिर-१६, मांस-११ नांम

तळ ओयणतळ पगतळी एडी (घुटअध आण),
रगत रुद्र लोही रुधिर खून छतज (वाखाण) ।—३५४
प्राणद आसुर रत्र (पढ़) सोणत श्रोण (सुणात),
मांसकरण नारंग (मुण) अस्त्र विस्त्र रत (आत) ।—३५५
स्रोणित स्रोयण रुधिर (सुण) जंगळ मांस (जणात),
पल्ल मेदकर क्रव्य पळ कासप कीन (कुहात) ।
रगत, तेज, भव* (अर) तरस आमिख पिसित (अणात) ॥—३५६

जीव-४, मेद-४, हड्डी-७, मांस की हड्डी-१, मांस की बोटी-२ नांम

वायहंस (जिम) हंस (वद) जीवक जीव (जपंत),
मेद गूद गोतम वसा कीकस हाड (कहंत) ।—३५७
असथी मेदज सार (इम) [illegible] मींजीका (र,
धूरोहाड) करोटि (धर) बोटी बड़ी (बुलार) ॥—३५८

अस्थि-पंजर-३, खोपड़ी-२ नांम

(असथी सारा अंगरा वहो) [illegible] कंकाळ,
(असथी) पंजर (फेर अख) कप्पर (अवर) कपाळ ॥—३५९

मज्जा-५, वीर्य-६, बाल-१५ नांम

कौशिक मींजी मूत्रकार स्नेहधन मज्जा (आख),
वीरज रेतस बीज बल इंद्री शुक्र (दसाख) ।—३६०
आणंद, मींजी, उदभवन' पोरस धातु-प्रधान,
रोम लोम (अर) [illegible] [illegible] केस (बिखान) ।—३६१
[illegible] वृन्तक इंद्रिय [illegible] [illegible] (नित),
[illegible] [illegible] (नदो) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥—३६२

बालों का जूड़ा-२, अलक-१, चमड़ी-७,
नस-२ नांम

जूड़ो मोळी अलक (जप) चरम चांमड़ी चांम,
खाल तुचा छवि खालड़ो नस (अर) वसनसा (नांम) ॥—३६३

छोटी नस-४, मैल-२, गोजड़-१, लार-२ नांम

नाड़ि धमनि नाड़ी सिरा मैल (रु) कीट (मुणान),
आंत्रजदूसीका (अखो) स्रणिका लाळ (सुणात) ॥—३६४

मूत्र-४, मल-६ नांम

मेह मूत स्रव वस्तिमळ विड पुरीस त्रिसटा,
मळ वरचस असुची समळ (भणूं) गूह भिसटा ॥—३६५

स्नान-३, चंदन-५ नांम

भूलण गोळ सनान (जप) मलयज चनण (मुणान),
चंदन रोहणद्रुम (चवो) गंधसार (गंधगात) ॥—३६६

जायफल-२, कपूर-४, कस्तूरी-१ नांम

जातीफळ (जिम) जायफळ सोमनाम घणसार,
करपूरक करपूर (कह) म्रगमद (कहै मुरार) ॥—३६७

केशर-५, पघड़ी-५ नांम

कसमीरज केसर रकत कूंकूं कुंकुम (धीर),
मुकुट पाघ मोळी (मुणूं कह) करीट काटीर ॥—३६८

जेवर-४, गूंथना-५ नांम

अलंकार आभरण (अख) भूपण गहणूं (भाख),
गूंथण ग्रंथण गुंफ (गिण) रचना संद्रभ (राख) ॥—३६९

भुजबंद-३, हाथ का गहना-५ नांम

भुजभूषण अंगद (भणूं कहो वळे) केयूर,
करभूषण कटक (रु) कड़ा वलय अवाप (वहूर) ॥—३७०

करधनी-४, नूपुर-६ नांम

कम्मरसूत कलाप (कह) रसण मेखळा (राख,
ओयण आगै) कटक (अख इण विध) अंगद (आख) ।—३७१

तुलाकोटि रमझोळ (तिम) नेवुर नूपुर (नांव),
मंजीरक मंजीर (मण) हंसक (फेर सुहाव) ॥—३७२

कपड़े नांम

चैल वसण अंबर सिचय (अवर) पूंगरण (आंण),
पट दुकूळ करपट कपड़ वसतर चीर (वखांण) ॥—३७३

अंचल-४, ओढ़नी-२ नांम

(चव) अंचळ (इम) छेहड़ो पलो पटोली (पेख),
प्रच्छादन प्रावरण (पढ़ दुरस अनाहत देख) ॥—३७४

स्त्री का अधोवस्त्र-४, लहंगा-३, नाड़ा-नीवी-२ नांम

अंतरीय अधवसन (इम) निवसन उपसंख्यान,
चंडातक लहंगो चलण उच्चय नीवी (जान) ॥—३७५

अंगिया नांम

चोळ कंचुवै कांचळी आंगी अंगियां (आख),
कंचूक कांचू कंचुळी (आठ नांम ये भाख) ॥—३७६

साड़ी-६, घूंघट-४ नांम

साडी चोटी साटिका साड़ी साळू चीर,
घूंघट छेड़ो घूंघटो पल्लो (कहत पहीर) ॥—३७७

गठजोड़ा नांम

(चव) गठजोड़ो छेहड़ो वरजोड़ण वरजोड़,
अंचलबंध (सु जांण इम जंपै सायर जोड़) ॥—३७८

कमरबंद-२, गिलाफ-खोली-३, परदा-४ नांम

परिकर कमरकुब्ळ (पढ़) कुथ परितोम कहांण,
प्रतिसीरा (अर) कांडपट जवनी अपटी (जांण) ॥—३७९

चंदरवा-४, रावटी-२, डेरा-तंबू-६ नांम

[illegible] उल्लोच (जव) चंदवा वितान (कुवांण),
[illegible] [illegible] पटकुटी [illegible] [illegible] (वितान) ॥—३८०

गूडर डेरो (और गिण वेखो) गायीवान,
(ज्योंही फेरूं) सिविर (जप) तंबू कदक वितान ॥—३८१

तृण-शैया-३, सेज-शैया-८ नांम

स्रसतर प्रसतर सांथरो कसिपू तलप (कुहाय),
सैन सेझ सय्या सयन सज्जा तलिम (मुहाय) ॥—३८२

पलंग-७, सिरहाना-२ नांम

पलंग ढोलियो मंच (पढ़) मांचो मंचक (मान),
चोपायी परजंक (चव) ओसीसी उपधान ॥—३८३

कांच नांम

काच बिमासी मकुर (कह) आतमदरस (इखात),
सारंगक आदरस (अख) दरपण (वळे दिखात) ॥—३८४

कंघा-३, आसन-३, लाख-६ नांम

केसमारजन कंकतक (फेर) प्रसाधन (पात),
आसण विसटर पीठ (अख) लाखा लाख (लखात) ।—३८५
खतमेटण क्रमिजा (अखहु) पलंकसा जतु (पेख),
रंगजननि राक्षा (रखो वळे) द्रुमामय (वेख) ॥—३८६

अलता, महाउर-४, कज्जल-३ नांम

आलकतक आलकत (अख) जावक जाव (जपंत),
दीपकसुत अंजन (दखो) काजळ (एम कहंत) ॥—३८७

दीपक नांम

दीपक दीवो दीवलो दीप प्रदीप (दिखात,
मुण) काजळकर घरमणी काजळधुजा (कुहात) ॥—३८८

गेंद, खिलौना नांम

(क्रीड़ा बाळक कारणें) गेंदा गिरिगुड़ (गाय),
गिरिक गिरीयक गुड गिरि (सु) कंदुक गेंद (कुहाय) ॥—३८९

पंखा-३, खस आदि का पंखा-४ नांम

बीजण व्यजणक बीझणू आलावरत (अखात),
पंखा पंखी (फेर पढ़) वावकरण (विख्यात) ॥—३९०

मंडलेश्वर राजा-२, चक्रवर्ती राजा-२, राजा पृथु-२ नांम

मद्धम मंडळाधीस (मुण) सारवभोम (सुहात),
चक्करवरती (फेर चव) प्रथू वेणसुत (पात) ॥—३९१

श्रीरामचंद्र नांम

कोसल्यानंदन (कहो) दासरथी (कुळदीत),
अधमउधारण (जग अखै) रिधूरांम (री रीत) ॥—३९२

सीता नांम

सतवंती सिय धरसुता मिथलापतजा (माण,
जेम) जनकजा जानकी (इम) विदेहधी (आण) ॥—३९३

लक्ष्मण नांम

रामानुज सोमित्रि (जप सुभ) लछमण (सुजांण),
सेस सुमित्रासुतन (सुण वळे) अनन्त (वखांण) ॥—३९४

भरत-२, सत्रुघ्न-४ नांम

भरत केकयीसुत (भणूं) सत्रुघण (निकलं) सुजाण,
भरतअनुज सत्रूहण (प्रभण रमार दासरथि नाम) ॥—३९५

बाली-बानर-२, सुग्रीव-२, हनुमान-२० नांम

इंदपूत बाली (अखो) सूरजसुत सुग्रीव,
पवननंद बजरंग (पढ़) [illegible] ।—३९६

हणूमान वंकट हणूं हडूमान हणवंत,
बजरंगी (भण) वांकड़ो महावीर हणमंत ।—३९७

लंकिलजीतण लांगड़ो केसरिसुत कपीस,
वायनंद मारुत (वदे) अंजनीज अनि-ईस ॥—३९८

गूडर डेरो (ओर गिण वेखो) मायीवान,
(ज्योंही फेरु) सिविर (जप) तंबू कटक वितान ॥—३८१

तृण-शैया-३, सेज-शैया-८ नांम

स्रसतर प्रसतर सांथरो कसिपू तलप (कुहाय),
सैन सेभ सय्या सयन सज्जा तलिम (सुहाय) ॥—३८२

पलंग-७, सिरहाना-२ नांम

पलंग ढोलियो मंच (पढ़) मांचो मंचक (मान),
चोपायी परजंक (चव) ओसीगो उपधान ॥—३८३

कांच नांम

काच बिमासी मकुर (कह) आतमदरस (इखात),
सारंगक आदरस (अख) दरपण (वळे दिखात) ॥—३८४

कंघा-३, आसन-३, लाख-६ नांम

केसमारजन कंकतक (फेर) प्रसाधन (पात),
आसण विसटर पीठ (अख) लाखा लाख (लखात) ।—३८५
खतमेटण क्रमिजा (अखहु) पलंकसा जतु (पेख),
रंगजननि राक्षा (रखो वळे) द्रुमामय (वेख) ॥—३८६

अलता, महाउर-४, कज्जल-३ नांम

आलकतक आलकत (अख) जावक जाव (जपंत),
दीपकसुत अंजन (दखो) काजळ (एम कहंत) ॥—३८७

दीपक नांम

दीपक दीवो दीवलो दीप प्रदीप (दिखात,
मुण) काजळकर घरमणी काजळधुजा (कुहात) ॥—३८८

गेंद, खिलौना नांम

(क्रीड़ा बाळक कारणैं) गेंदा गिरिगुड़ (गाय),
गिरिक गिरीयक गुड गिरि (सु) कंदुक गेंद (कुहाय) ॥—३८९

पंखा-३, खस आदि का पंखा-४ नांम

वीजण व्यजणक बीभणू आलावरत (अखांत),
पंखा पंखी (फेर पढ़) बावकरण (विख्यात) ॥—३९०

मंडलेश्वर राजा-२, चक्रवर्ती राजा-२, राजा पृथु-२ नांम

मद्धम मंडळाधीस (मुण) सारबभोम (सुहात),
चक्करवरती (फेर चव) प्रथू वेणसुत (पात) ॥—३६१

श्रीरामचंद्र नांम

कोसल्यानंदन (कहो) दासरथी (कुळदीत),
अधमउधारण (जग अखै) रिधूरांम (री रीत) ॥—३६२

सीता नांम

सतवंती सिय धरसुता मिथलापतजा (माण,
जेम) जनकजा जानकी (इम) विदेहधी (आण) ॥—३६३

लक्ष्मण नांम

रामानुज सोमित्रि (जप सुभ) लछमण (सूजांण),
सेस सुमित्रासुतन (सुण बळे) अनन्त (बखांण) ॥—३६४

भरत-२, सत्रुघ्न-४ नांम

भरत केकयीसुत (भणूं) सत्रुघण (तिकण) सुजाव,
भरतअनुज सत्रुहण (प्रभण च्यार दासरथि चाव) ॥—३६५

वाली-वानर-२, सुग्रीव-२, हनुमान-२० नांम

इंदपूत वाली (अखो) सूरजसुत सुग्रीव,
पवननंद वजरंग (पढ) जपणरामपदजीव ।—३६६
हणूमान वंकट हणूं हड़मान हणवंत,
वजरअंग (अर) वांकड़ो महाबीर हणमंत ।—३६७
ललितकीसवर लांगड़ो केसरिपूत कपीस,
वायनंद मारुत (वळे) अंजनीज जति-ईस ॥—३६८

रावण-१०, मेघनाद-५, कुंभकरण-३, विभीषण-१ नांम

दसकंधर दसमुख (दखो द्रढ़) दसकंध (दिखाय),
रिखिपूलस्तसुत असुरपत रावण राकसराय ।—३६९

गूडर डेरो (ओर गिण वेखो) गायीवान,
(ज्योंही फेरू) सिविर (जप) तंबू कदक विनान ॥—३८१

तृण-शैया-३, सेज-शैया-८ नांम

स्रसतर प्रसतर सांथरो करिपू तलप (कुहाय),
सैन सेभ सय्या सयन सज्जा तलिम (सुहाय) ॥—३८२

पलंग-७, सिरहाना-२ नांम

पलंग ढोलियो मंच (पढ़) मांचो मंचक (मान),
चोपायी परजंक (चव) ओसीसो उपधान ॥—३८३

कांच नांम

काच बिमासी मकुर (कह) आतमदरस (डखात),
सारंगक आदरस (अख) दरपण (वळे दिखान) ॥—३८४

कंघा-३, आसन-३, लाख-६ नांम

केसमारजन कंकतक (फेर) प्रसाधन (पात),
आसण विसटर पीठ (अख) लाखा लाख (लखात) ।—३८५
खतमेटण क्रमिजा (अखहु) पलंकसा जतु (पेख),
रंगजननि राक्षा (रखो वळे) द्रुमामय (वेख) ॥—३८६

अलता, महाउर-४, कज्जल-३ नांम

आलकतक आलकत (अख) जावक जाव (जपंत),
दीपकसुत अंजन (दखो) काजळ (एम कहंत) ॥—३८७

दीपक नांम

दीपक दीवो दीवलो दीप प्रदीप (दिखात,
सुण) काजळकर घरमणी काजळधुजा (कुहात) ॥—३८८

गेंद, खिलौना नांम

(क्रीड़ा बाळक कारणें) गेंदा गिरिगुड़ (गाय),
गिरिक गिरीयक गुड गिरि (सु) कंदुक गेंद (कुहाय) ॥—३८६

पंखा-३, खस आदि का पंखा-४ नांम

बीजण व्यजणक वीभरणू आलावरत (अखात),
पंखा पंखी (फेर पढ़) बावकरण (विख्यात) ॥—३६०

मंडलेश्वर राजा-२, चक्रवर्ती राजा-२, राजा पृथु-२ नांम

मद्धम मंडळाधीस (मुण) सारवभोम (सुहात),
चक्करवरती (फेर चव) प्रथू वेणसुत (पात) ॥—३९१

श्रीरामचंद्र नांम

कोसल्यानंदन (कहो) दासरथी (कुळदीत),
अधमउधारण (जग अखै) रिधूरांम (री रीत) ॥—३९२

सीता नांम

सतवंती सिय धरसुता मिथलापतजा (माण,
जेम) जनकजा जानकी (इम) विदेहधी (आण) ॥—३९३

लक्षमण नांम

रामानुज सोमित्रि (जप सुभ) लछमण (सूजांण),
सेस सुमित्रासुतन (सुण बळे) अनन्त (बखांण) ॥—३९४

भरत-२, सत्रुघ्न-४ नांम

भरत केकयीसुत (भणूं) सत्रुघण (तिकण) सुजाव,
भरतअनुज सत्रुहण (प्रभण च्यार दासरथि चाव) ॥—३९५

वाली-वानर-२, सुग्रीव-२, हनुमान-२० नांम

इंदपूत वाली (अखो) सूरजसुत सुग्रीव,
पवननंद बजरंग (पढ) जपणरामपदजीव ।—३९६

हणूमान वंकट हणूं हडूमान हणवंत,
वजरअंग (अर) वांकड़ो महाबीर हणमंत ।—३९७

ललितकीसवर लांगड़ो केसरिपूत कपीस,
वायनंद मारुत (वळे) अंजनीज जति-ईस ॥—३९८

रावण-१०, मेघनाद-५, कुंभकरण-३, विभीषण-१ नांम

दसकंधर दसमुख (दखो द्रढ़) दसकंध (दिखाय),
रिखिपूलस्तसुत असुरपत रावण राकसराय ।—३९९

लंकापत (अर) लंकपत बीसभुजा (बाखांण),
मेघनाद घणनाद (मुण) अंद्रजीत (इम आण) ।—४००
रावणि मंदोदरिसुतन कूंभो कुंभ (कुहात),
कुंभकरण (फेरूं कहो वळे) बिभीपण (वात) ॥—४०१

लंका नांम

कुनणापुर लंकापुरी लंका लंक (लखाय,
पुरट नांम आगळपुरी नांग लंक वण जाय) ॥—४०२

भीष्म-१२, युधिष्ठिर-११ नांम

गंगकाज गांगेय (गिण) गंगिकाज गंगेव,
सांतनव (रु) संतनुसुतन कुरुईस कुरुदेव ।—४०३
भीसम भीखम भीष्म (भण) द्रढ़व्रत्ती (दरसाय),
धरमपूत जेठळ (धरो) सत्यव्रती (सरसाय) ।—४०४
(फेर) जुजीठळ पंडुसुत पंडवेस पंडीस,
पांडवेय पांडव (पढ़ो) कुंतीसुत कुरुईस ॥—४०५

भीमसेन-६, अर्जुन-१७ नांम

भीमसेण भीमेण (भण) जेठीपाथ (जणात),
कीचक, वक, मारण* (कहो) भीमूं भीम (भणात) ।—४०६
(वळे) व्रकोदर वायसुत पारथ अरजण पाथ,
गुडाकेस पथ फालगुण पारथ्थी पाराथ ।—४०७
सेतवाह जय वासवी व्रहनट विजय (वखांण),
धनंजै सुनर कपिधुजा (जेम) करीटी (जांण) ॥—४०८

सहदेव-२, नकुल-२, द्रोपदी-३ नांम

सहदेव सुमाद्रेय (मुण) नकुळ माद्रिसुत (नांम),
पांचाळी (अर) द्रोपदी (वळे) पंडुसुतवांम ॥—४०९

कर्ण-५, विक्रम-२ नांम

अंगराज अरकज (अखो) चंपापुरप (चवात),
भांणसुतन राधेय (भण) बीकम बीक (बुलात) ॥—४१०

---

* कीचक, वक, मारण=कीचकमारण, वकमारण ।

सहस्त्रबाहु-४, परीक्षित-३ नांम

कारतबीरज सहंसकर हैहय अजरण (सुहात),
परीछत (सु) प्रीछत (पढ़ो) अभिमनपूत (अखात) ॥—४११

भोज-२, बलि-५ नांम

भोज उजैणीपत (प्रभण) इंदसेन बळ (आत),
बली विरोचनसुत (बळे) बैरोचन (विख्यात) ॥—४१२

राज्य के सात अंग नांम

स्वामी कामेती सुहृत देस दुर्ग बळ (दाख,
इण विध फेरूं) कोस (अख राज अंग ऐ राख) ॥—४१३

छत्र-२, चंवर-५ नांम

आतपवारण छत्र (अख) बाळव्यजरण (बाखांण),
रोमगुच्छ चामर चवंर (जिम) चम्मर (सू जांण) ॥—४१४

कामदार नांम

कामदार कामेति (कह) सचिव प्रधान (सुजांण),
मंत्री मूसायब (मुण्ं) व्याप्रत (अर) दीवांण ॥—४१५

चोवदार नांम

द्वारपाळ दंडी (दखो धरो) बेतधर धार,
वैत्री उतसारक (वळे) प्रतीहार प्रतिहार ॥—४१६

रसोई का दरोगा-२, रसोईदार-६ नांम

सूद रसोयीईस (अख) आरालिक गुण (आत),
भुवतकार ओदनिक (भण) सूप सूद (दरसात) ॥—४१७

अवरोध-६, शत्रू-२८, वैर-३, मित्र-१२, मित्रता-४ नांम

अन्तेवर सुद्धान्त (इम) अवरोधन अवरोध,
भीतर अंतेउर (प्रभण) सत्रू सात्रव (सोध) ।—४१८

अरियण वैरी अरि अरी दोयण दुसमण (दाख),
पिसण सत्र सात्रव (पढ़ो) अरहर रिमहर (आख) ।—४१९

सत्राटां केवी दुसह असुहर विया अयार,
वैरीहर खळ (अर) विपख रिपु अरिंद रिम (धार)।—४२०

अगहन दोखी अहित (इम) वैर विदोख विरोध,
मीत मित्र मंत्री सुमन सवग सनेही (सोध)।—४२१

साथी हेतू (जिम) सखा सज्जन नेही सैण,
सोहारद सोह्रद (सुग संगत वळे) सुवैण॥—४२२

गुप्तदूत-५, दूत-८, पत्रदूत-३, दोहाई-२ नांम

मंत्रजाण अवसरप (सुण) चर हेरिक (इम) चार,
चर हलकारो दूत (चव) कहणासनेसो कार।—४२३

धावण खबरी चार (धर) पत्रपुगावण (पेख),
कासीदक कासीद (कह) आण दुहाई (एख)॥—४२४

पराक्रम-४, गुप्तमंत्र-सलाह-४ नांम

पराकरम प्राक्रम (प्रभण) पोरस विक्रम (पेख),
आळोचण आलोच (इम) रहसि मंत्र (अवरेख)॥—४२५

रजपूती नांम

मांटीपण छत्रीधरम रजवट रजपूती (ह),
खत्रीवाट (र) खत्रवट खत्रवाट (अखणीह)॥—४२६

एकान्त-४, न्याय-४, मर्यादा-२,
अपराध-६, राजकर-४ नांम

केवल छत्र इकंत रह न्याय कलप नय न्याव,
मरजादा मरजाद (सुण) आगस हेलन (आख)।—४२७

अपराधक अपराध (अख) विप्रिय मंतु (विचार),
भागधेय बलि कर (प्रभण) हासल (द्रव्य विहार)॥—४२८

फोज-१७, सेना का पड़ाव-१, सेनापति-६ नांम

घैंसाहर हेजम घड़ा कटक अनीक (कुहात),
तंत्र चाक चतुरंगणी सेना सेन (सुहात)।—४२९

बळ दळ प्रतना वाहणी फोज दंड चमु (फेर,
इण री थिति हूं) सिविर (अख) कटकईस बळ (केर)॥—४३०

फोजमुसायब सेनपत सेनानायक (सोय),
फोजदार चतुरंगपत हैजम, चमू, प* (होय) ॥—४३१

सेना का अगला भाग-४, सेना का पिछला भाग-१ नांम

(अणी चमू री आगली) हरबळ मोर हरोळ,
मोहर (जिणनूं फेर मुण चव पाछैं) चंदौळ ॥—४३२

सेना का दहना भाग-१, सेना का बायां भाग-१ नांम

(जंप बगल वळ जींवणी) रोसन (नांम रहात,
वळे फौज बांई बगल) चपक (सु नाव चवात) ॥—४३३

सेना की चढ़ाई-४, ध्वजा-पताका-५,
झंडा-३, पालकी-४ नांम

सज्जण उपरच्छण सजण सझणूं (अवर सुहात),
धुजा पताका (फेर) धुज केतन केत (कुहात) ।—४३४
(धुजाडंड) झंडा (धरो) नेजा (अर) नीसांण,
(पढ़) चोपालो पालकी सिविका पिन्नस (जांण) ॥—४३५

गाडा-३, गाडी-२, पहिया-५ नांम

अन गाडो (जिम) सकट (अख) सकटी गाडी (सार),
पहियो पैड़ो चक्र (पढ़) अरि रथांग (उपचार) ॥—४३६

पहिया की नेमी-पूठी-३, धुरी-२,
पहिया की नाह-४, जुआ-२ नांम

धारा पूठी नेमि (धर) अणी धुराई (आत),
नाही नाहू नाभि ना जूड़ो जुगक (जणात) ॥—४३७

जुआ का निम्न भाग-२, यान मुख-२,
झूला-३, झूलने वाला-२ नांम

परजूड़ी प्रासंग (पढ़) धरसूंडो धुर (धार),
हींडो झूलो हींचणूं हींडण झूलणहार ॥—४३८

वाहन-सवारी-३, गाडीवान-२, सवार-४ नांम

धोरण वाहण यान (धर) यंत सागड़ी (आख),
अस्ववार असवार (इम) सादी तुरगि (समाख) ॥—४३९

* हैजम, चमू, प = हैजमप, चमूप ।

घोड़ा उठाना-३, घोड़े की अयाल-२,
तबेला-१, जीन-४ नांम

अस्वकोमंखी ऊपड़ी (फेर) उपाड़ी (पेख),
याल केसवाळी (अखो) अगमाला (अवरेख) ।—४४०

(फेर) तबेलो पायगा जीण छेवटी (जांण),
काठी (इण संबंध कह पढ़ज्यो फेर) पलांण ॥—४४१

लगाम-४, घोड़ों का भुंड-२, साईस-२ नांम

लवच्छेपणी बाग (अख गाबो) कुसा लगांम,
कारवांन (अर) हेड (कह) पांडू गडग (प्रकांम) ॥—४४२

हाथी का सवार-१, हाथी का सेवक-३,
अंकुश-३, सांकल-२ नांम

(हाथी रा असवार हूं नरख) निसादी (नांम),
मावत आधोरण (मुण) कुंभीपाळक (कांम) ।—४४३

आंकस (अर) गजबाग (अख मावत) ससतर (मांन),
आई डगवेड़ी (अखो थिर गज राखण थांन) ॥—४४४

सुभट नांम

सोहड खीवर भड़ सुहड़ भट रणमल्ल भड़ाळ,
सुभड़ बीर सांवत सुभट भींच (र) जोधा (भाळ) ॥—४४५

कवच-१६, टोप-३ नांम

कोच जरद कंकट कवच कुंगळ कंग (कुहात),
बरंगोळ कडियाळ (वद) माठी दंस (मुणात) ।—४४६

बरंग जगर बगतर बरम (सुण) वरम्म सनाह,
सिरत्राण (अर) सीरसक (पढ़ उतबंग) पनाह ॥—४४७

पेट का बंधक-२, करस्ताना-२, लोहे की जाली-३ नांम

उदरत्राण नागोद (अख) बाहुल बाहूत्रांण,
(जंपो) जाळी जालिका (फेर) राखणीप्रांण ॥—४४८

शस्त्र-६ नांम

ससतर असतर (इम) ससत्र आवध आयुध (आंण),
प्रहरण लोह हथ्यार (पढ़ जिम) हथियार (सु जांण) ॥—४४९

सिपाही-३, धनुर्धर-४ नांम

आवधवाळो आवधी (ओर) सिपाही (आख),
धानंकी धनुधर (धरो) धनुभ्रत धन्वी (भाख) ॥—४५०

धनुष नांम

धनु पिनाक कोडंड (धर) कोडंडीस कुवांण,
चाप सरासन बाण (चव जेम) सरासण (जांण)।—४५१

(अर) अढ़ारटंकी (अखो) धेनु तुजीह (धरात),
पैनाक (रु) सारंग (पढ़) कोमंड धनख (कुहात) ॥—४५२

पणच-७, तीर-१४ नांम

मुरवी जीवा गुण (मुणूं) बाणासण (बाखांण),
पणच द्रुणा संजनि (पढ़ो) बिसिख तीर सर (बांण)।—४५३

पत्रबाह पत्री प्रदर तुक्को सायक (तेम),
कंकपत्र खग कांड (कह) जिम्हग आसुग (जेम) ॥—४५४

पंख-५, बाण का टांटवा-२, भाथा-२ नांम

पंख बाज (अर) पांखड़ा पांखा पक्ष (पढ़ाव,
तवो) पुंख (अर) करतरी सरधि निखंग (सुणाव) ॥—४५५

म्यान नांम

परीवार इमकोस (पढ़ धर) तरवारपिधान,
चंद्रहासघर (फेर चव मुणू) सस्त्रघर म्यान ॥—४५६

ढाल-५, ढाल पकड़ने का-२, छुरी-२ नांम

आडण खेटक आवरण ढाल चरम (पढ़ एम),
हथवासो संग्राह (मुण) जड़ळगधी छुरि (जेम) ॥—४५७

कटारी नांम

(आख) त्रिजड़ अधियामणी वाढ़ाळी बाढ़ाळ,
(जिम) सुजड़ी विजड़ी (जपो मुण) पट्टिस प्रतिमाळ।—४५८

प्रतिमाळी जमडाढ़ (पढ़ जेम) जडाळी (जांण),
दुजड़ी दुवधारी (दखो एम) दुधारी (आण)।—४५९

भोगळियाळी (फेर भण) भोगळियाळ (भणेह),
धाराळी कट्टार (धर) अणियाळी (आगेह) ॥—४६०

भाला नांम

कुंत त्रिभागो सेल (कह) नेजो (अर) नेजाळ,
साबळ गांजो मांगड़ो छड़वाळो छड़ियाळ ।—४६१

बरछो बांग दुधार (वद चव) भालो चोधार,
प्रास छड़ाळ (रु) नेत (पढ़) दुवधारो दोधार ॥—४६२

बरछी-५, चक्र-३, त्रिशूल-२, बज्र-६ नांम

बरछी मकनी सांग (वद) सावळ कामू (धार),
चक्र चकर चक्कर (चवो) शूल त्रिसीम (सुहार) ।—४६३

वज्र इंदससतर वजर अंद्रसमत्र (क आख),
पवी सक्रघण भिदुर (पढ़) असनी अमनि (इमाख) ॥—४६४

तोप-४, बंदूक-४, युद्ध-३६ नांम

सोरभखी नाळी (सुणं) आगजंत्र (इम आख),
तोप तुपक बंदूक (तिम) सोरभखी (जग साख) ।—४६५

अगनजंत्र (ओरूं अखो) आरण आहव (आख),
कळहण भारत जुध कळह रोळो कजियो (राख) ।—४६६

सामरात राड़ो समर रण समहर आरांण,
(जम) धकचाळा धमगजर प्रहरण रिण पीठांण ।—४६७

आहर द्रोमज वेध (इम भण) दमगळ भारात,
लड़वो आहुड़ जंग लड़ हूचक आजि (कुहात) ।—४६८

संगर विग्रह कळि (सुणं) संपराय संग्राम,
आकारीठ (र) जुद्ध (इम) झगड़ो रीठ (जुधाम) ॥—४६९

डाकू नांम

धाड़ी डाकू धाड़वी (पढ़ो) धाटि परपात,
झोकायत अवकंद (जप) धाड़ायत्त (धरात) ॥—४७०

डाका-३, रात का डाका-३, युद्ध में से भागना-५ नांम

धाड़ो डाक (रु) धाड़ (धर रातमांहि) रत्याव,
रातावाह सुपतिक (रखो) समुद्राव संद्राव ।—४७१

मूर्छा-२, हारना-३, जीतना-३ नांम

द्राव पलायन द्रव (दखो) मोह मूरछा (मांन),
हार पराजै अजय (हव) जै यज विजय (सु जान) ।।—४७२

बदला लेना-४, दगा-छल-३, कारागृह-२ नांम

वैरवहोड़ण वैरसुध आंटो आंटल (आत),
चूक दगो (प्रच्छन्न) छळ कारा चार (कुहात) ।।—४७३

खेंचना-४, घुसना-८ नांम

तांण खैंच अैंचण तमक परठै पैस (पढ़ात),
धसै पैठ पैसण धसण उळै बड़ै (इम आत) ।।—४७४

दबाना-३, बराबर-६, बराबर वाला-१३, छोड़ना-६, औसान-४ नांम

भींचण दाबै भींच (भण) सरभर सरबर (सोहि),
ईंढ़ बरोबर मींढ़ (अख मुण) समवड सम (जोहि) ।—४७५

(वळे) तड़ोवड़ (एम बद ओर) समोवड़ (आख),
समवड़िया समवड़ समी (जाड़ी) जोड़ा (भाख) ।—४७६

समोवड्या (अर) सारसा बरोबऱ्या (बाखांण),
सारीसा सरखा (सुण जेम) जोड़रा (जांण) ।।—४७७

सारीखा (अर) सारखा तड़ोवड्या (कब तेम),
मोखण पहड़ै मोख (मुण) छोडण छूटो जेम ।—४७८

छूट वछूटो छोडियो खूटो (फेर वखांण),
उरजस वख ओसांण (इम बोल वळे) अवसांण ।।—४७९

कैदी-५, कैद करना-६ नांम

प्रग्रह उपग्रह वंद्य ग्रह ग्रहक (सु पांच गणाव),
कैद जेर रोकण रुकत वंध अटक (वरणाव) ।।—४८०

हठ-७, शक्ति-३, स्थिर-६, यत्न-३, मानना-२ नांम

आंट टेक अड़वी असण हट हठ प्रसभ (सुहात),
समरथ पूछ (रु) सामरथ अडग रिधू थिर (आत) ।—४८१

(चव) अडोल नहचळ अचळ ध्रुव अवचळ ध्रू (धार),
जतन सुरच्छा जावतो समजण मांनण (सार) ।।—४८२

तय्यार-३, ललकारना-६ नांम

भीड़ तयार (रु) सझ (प्रभण) वातळाव वतळाव,
(एम) हकाल वकार (अख जप) छेड़ै (रु) खजाव ॥—४८३

जोड़ना-३, प्रमाण-२, मिलना-३, आना-जाना-१ नांम

जोड़ण सांधण जोड़ (जप पढ़) प्रमांण परमांण,
मिळण (ओर) भेटै मिळै (बोल विहाण) विहांण ॥—४८४

दोनों ओर-३, जलना-४, मुरदे को आग में फेरने की लकड़ी-१ नांम

(वदो आवरत) सावरत दोयराह दहुंराह,
वळण जळण वळबो वळै चींघण (चाळ वियाह) ॥—४८५

पकड़ना-पकड़ाना नांम

झालै झेलै झालिया ढावै गहै ढवाव,
(लखो) झलाया झेलिया साहै (फेर) सहाव ॥—४८६

शस्त्र चलाना नांम

पछटी वाही पाछटी जड़की (सारव) जाड़,
एमजड़ी (अर) आछटी धीबी वही (सुधाड़) ॥—४८७

साथ-३, समूह-१० नांम

साथे साथ (रु) लार (सुण) संहति (वळे) समूह,
प्रकर थाट गण थोक (पढ़) जूथ झूल व्रज जूह ॥—४८८

उलटना-४, खड़ा रहना-३, चलना-दौड़ना-१४ नांम

सालुळिया (अर) सालुळैं उलटे उलटण (आख),
ऊभो ठाढ़ो (इम) खड़ो भटकैं भाजण (भाख) ।—४८९
चालै हालै गमण (चव) हींडै वहै विहार,
चालण न्हासण खड़ण (चव सुण) अट खड़ै सिधार ॥—४९०

पागल नांम

बैंड़ा गहला बावळा काला मसत (कुहात),
चळचत बावळ विकळचत गहलो उनमत (गात) ॥—४९१

पछताना-२, संपूर्ण-७ नांम

पछतावण पछतांव (पढ़ मुणूं) सरव तम्माम,
सगळो संपूरण सकळ पूरण सारो (पाम) ॥—४६२

चहुं ओर नांम

चोगड़दां चोफेर (चव) चोतरफां चहुंकोर,
चहूंकूंट चोमेर चव चहुंकांनी चहुंओर ॥—४६३

उमर-५, अच्छा-१३ नांम

आवरदा आयुस (अखो) आयू ऊमर आव,
आछ्यो उत्तम ऊमदा मुंदर सैर (सुहाव) ।—४६४
बर तोफा श्रेसट (बळे) रूड़ो रूपाळो (ह),
ठाळो सखरो पूठरो (आखो इम) आछो (ह) ॥—४६५

अप्सरा नांम

अच्छर अपछर अपछरा अछरा अछर (अखात),
पुरी सुरगबेसां (प्रभरण) बारंग हूर (विख्यात) ॥—४६६

हिंदू नांम

वेदक आरज देव (अख) हींदू हिंद (सुणात,
सुकवी हींदू रा सरब पंचक नांम पुराात) ॥—४६७

ब्राह्मण-१३, जितेंद्रिय-४ नांम

मुखसंभव जोसी मिसर दुज भूदेव दुजात,
(पढ़ो) गोरजी पांड़ियो बाडव विप्र (बुलात) ।—४६८
वेदगरभ बांमण (वळे अवर) बरामण (आंण),
सांत समन (अर) श्रांत (सुण) जितइंद्रिय (जिम जांण) ॥—४६६

शुद्ध आचरण-४, जनेऊ लेना-३ नांम

अवदान (रु) आचरण (अख) करमक सुद्ध (कुहात),
उपनाय (र) उपनय (अखो) बटूकरण (वुलवात) ॥—५००

जटा-३, यज्ञ-११ नांम

जटा सटा जपता (जपो) जगन सत्र सव जाग,
तोम सपततंतू क्रतू यग्य मन्यु मख याग ॥—५०१

समिध-ईंधन-५, भस्म-५ नांम

समित मेध एधरा (अखो) इंधण तरणण (आख),
भूती वानी राख (भण) भसम छार (इम भाख) ॥—५०२

परशुराम नांम

फरसधरण भ्रगुपत फरस दुजराजा दुजरांम,
फरसरांम दुजराज (पढ़) रांम (र) परसूरांम ॥—५०३

नारद नांम

रिखीराज नारद रिखी देवरिखी (दरसात),
कलिकारक पिसुनी (कहो) सतध्रतसुत (सरसात) ॥—५०४

विश्वामित्र नांम

गाधिपूत कोसक (गिणूं) विसवामंत्र (वुलात,
कहो) त्रिसंकूजगनकर (तिम) गाधेय (तुलात) ॥—५०५

वेदव्यास नांम

वेदव्यास माठर (वदो) पारासग्य (पढ़ात),
व्यास वादरायण (वळे) जोजनगंधाजात ॥—५०६

सत्यवती-३, वाल्मीकि-४ नांम

सत्तवती (अर) वासवी जोजनगंधा (जांण),
वालमीक बलमीक (वद) आदकवी कवि (आंण) ॥—५०७

वसिष्ठ-३, वसिष्ठ की पत्नी-२ नांम

अरुंधतीस वसिष्ट (अख) ब्रहमापूत (वखांण),
अखमाळा (रु) अरुंधती (जिण री महळा जांण) ॥—५०८

व्रत-४, उपवास-२, आचार-३ नांम

वरत नेम (अर) नियम व्रत उपवसत (रु) उपवास,
चरण चरित आचार (चव तीन नांम कह तास) ॥—५०९

जनेऊ नांम

जग्यसूत उपवीत (जप वळे जगन) उपवीत,
ब्रहमसूत (फेरूं वदो राख) पवित्र (सुरीत) ॥—५१०

क्षत्रिय नांम

छत्री छत्रिय छत्र (चव) खत्रिय खत्री (आख),
आचप्रभव रजपूत (अख) राजपूत (इम राख) ॥—५११

वैश्य-१३, वाणिज्य-४ नांम

विस वाण्यूं (अर) वाणियो वणक कराड़ वकाल,
आरज साहूकार (अख) ऊरुज साह (उताल) ।—५१२
सेठ महाजन भारसह (पढ़ इणरो) वोपार,
वाणिज (ज्यूंही) वणज (वद) सांचभूंटकर (सार) ॥—५१३

मोल-३, मूलधन-४, व्याज का धन-३ नांम

मोल अरघ मूलय (मुणूं) परिपण पड़पण (पेख,
दाखो) मूळ (रमूळ) द्रव लाभ कळा फळ (लेख) ॥—५१४

बेचना-३, एक-६, दो-६, तीन-७, चार-७ नांम

विक्रय विपणक बेचवो हेकण एकण (होय),
एक हेक इक पहल (अल) दो दुव बे जुग दोय ।—५१५
उभै तीन त्रण त्रय (अखो) त्रि मुर त्रहू गुण (तेम),
च्यार चतुर चवु चत्र चव (जप) चो चारूं (जेम) ॥—५१६

पांच-४, छः-४, सात-३ नांम

पांच पंच सर तत्व (पढ़) तीनदूण खट (तात),
छै रस (इम फेरूं चवो) सपत सत्त (जिम) सात ॥—५१७

आठ-४, नो-१० नांम

आठ वसू चउदूण अठ नाडी नव निधि नोय,
नो ग्रह अंक (सु) नाग (अख जेम) खंड गो (जोय) ॥—५१८

जहाज-५, नाव-७ नांम

पोत जिहाज वहित्र (पढ़) महानाव महनाव,
तरणी तरि बेड़ा तरी नोका तूंगी नाव ॥—५१९

डोंगी-४, भारवाही नाव-१ नांम

बेड़ो (अनै) वहित्र (वद) भेळो डूंडो (भाख,
काठ नीरवहणी सुकव) द्रोणी (जिणनूं दाख) ।—५२०

डांड-२, घड़नाव-२, नाव की उतराई-१ नांम

(वदो) खेपणी खेवणी कोल तरंड (कुहात,
उतरायी रा आथरो) आनर (नांम सुआत) ॥—५२१

व्याज-३, ऋण-३, भरणां-२, ऋणी-२ नांम

व्रद्धि कलांतर व्याज (वद) रण रिण (अर) उद्धार,
आपमितय भरणू (अखो) धुरियो ग्राहक (धार) ॥—५२२

वोहरा-१, जामिन-२, साक्षी-३, रहन-बंधक-२ नांम

(उत्तम) रणदायक (अखो) प्रतिभू जामन (पेख),
साखी थेयक सायदी बंधक धरणू (वेख) ॥—५२३

माशा-१, कर्ष (तोल)-२ नांम

(पंचम गुंजा रो प्रगट) मांसा (मान गणात,
सोळह मासां रो सदा) करस (र) अक्ष (कुहात) ॥—५२४

पल-१, अक्ष-१, विसत-१ नांम

(करस च्यार) पळ (मान कह) सुवरण (मान सुणात,
हिक पळ मान सु हेमरो मतकुरु) विसत (मुणात) ॥—५२५

तुला-१, भार-२ नांम

(पळ सत फेर प्रमांण रो) तुळा (नांम तोलात,
तुळा बीस रा तोल रो) भार सलाट (भणात) ॥—५२६

आचित-१, हाथ-१ नांम

(रिधू अवैं [illegible] रो [illegible] आचित (नांम उचार,
आंगळ च्यार [illegible] (विसतार) ॥—५२७

दरसा[illegible]

सात[illegible] ८

ग

गायों का स्वामी-२, ग्वाल-७ नांम

गोमान (रु) गोमी (कहो) गोदुह गोप गुवाळ,
(अख) अहीर आभीर (इम) गोपाळक गोपाळ ।।—५३०

किसान नांम

(खेत) जीव खेती हळी करसो करसक (जांण),
करसुक खेतीवळ (कहो) कडुववाळ करसांण ।।—५३१

हल-३, चऊ-१, हाल-१ नांम

लांगल चासविदार हळ कुटक (निरीस कुहात),
ईसा (हलरी हाल इम सीता पंथ सुहात) ।।—५३२

फाल-कुश्या-४, दरांती-२, मूंठ-बेंटा-४ नांम

फाल कुसिक (अर) क्रसिक फळ दात्र दांतळी (देख),
मूंठ जिकारी मूठ रो) वैंसो वंटक (वेख) ।।—५३३

खानत्र-खणीत्य-२, कुदाली-२, बैल हांकने का-३, जोत-२ नांम

अवदारणक खनित्र (अख) कूदारण कुद्दाळ,
प्रवयण तोत्र प्रतोद (पढ़) जोता ऽऽबंध (सुजाळ) ।।—५३४

मोगरी-३, मेध्य-डेले फोड़ने का-४ नांम

मेधि मेढ़ मेही (मुणूं) भेदक (डगळ भणात),
चावर कोटिस (फेर चव जेम) मे दड़ो (जात) ।।—५३५

शूद्र नांम

अंतवरण सूद्रक (अखो) व्रसल (क) पद्य (बुलात),
सूदर (फेरूं) पज्ज (सुण) जघन ज ओयण (जात) ।।—५३६

कारीगर-४, कारीगरी-३, माली-४, मालिन-१ नांम

कारीगर कारी (कहो) सिलपी कारु (सुणाय),
सिलप कळा विग्यान (सुण) माळाकार (मुणाय) ।—५३७
फूलजीव (ओरूं प्रभण) माळी माळिक (मांण,
पुसप चूंट लावै प्रमद) पुसपलावि (परमांण) ।।—५३८

दरजी-रफूगर नांम

तूनवाय सवचक (तथा) सोचक सूयीधार,
महीदोत गजधर (मुणूं) दरजी कपड़विदार ।।—५३९

सुई-३, कँची-५ नांम

सूची सूई सींवणी कातर कत्तरणी (ह,
कहो) क्रपाणी कलपनी (अवर) कग्तरी (ईह) ॥—५४०

कुंभार नांम

कोलाळो (रु) कुलाल (कह) कुंभकार घटकार,
चक्करजीवत (फेर नव) परजापत कुंभार ॥—५४१

नाई-हज्जाम नांम

नापित नाई नेवगी मूंडवाळ मूंडाळ,
केसकाट नेगी (कहो वळे) व्रणावणवाळ ॥—५४२

हजामत-६, निहानी-२ नांम

परिवापण खिजमत वपन भद्राकरण (भणात,
तिम) मुंडण (अर) कातर्या नखहरणी नखघात ॥—५४३

वढ़ई नांम

रथकरता खाती (रखो) काठकाट रथकार,
(घर) वाढ़ी (अर) वरधकी थपनी तट सूथार ॥—५४४

आरा-५, वसूला-३, टांकी-१ नांम

करपत्रक वहरार (कह) करवत क्रकच करोत,
वासी तच्छणि व्रच्छभित पत्थरफाड़ी (होत) ॥—५४५

हलवाई-३, तेली-४ नांम

कंदोई खाणूंकरण हलवायी (जिम होय),
धूसर तेली चोधरी (जिम ही) घांची (जोय) ॥—५४६

सकलीगर-६, सान-२, लोहार-३ नांम

असिधावण (आखो अवै) आवधमांजण (आंण),
सांणजीव भरमासतक सगलीगर (सू जांण) ।—५४७

असिधावक (ओरूं अखो) सांण निकस (खरसांण),
लोहकार लोहार (लख) बेदाणी (बाखांण) ॥—५४८

अहरन-२, हतोड़ा-२, धोंकनी-३, वर्मा-२ नांम

(चव) अहरण (अर) भाचरो हत्तोड़ो घण (होय),
धवणी धूंण (र) धूंकणी सार वेधणी (सोय) ।।—५४६

सोनार नांम

नाड़ीधमण सुनार (कह) सोनी सोव्रणकार,
मृष्टिक (और) कलाद (मुण सुण) घड़ियो सोनार ।।—५५०

मनिहार-४, चितेरा-३ नांम

लक्खारो मणियार (लख) मणिकारक मणिहार,
रंगजीव चतरामकर (हमकै) चतरणहार ।।—५५१

धोबी-४, रंगरेज-३ नांम

गजी रजक धोबी (गिणूं) धावक (फेर धरात,
लख) नररंजक लीलगर रंगरेज (दरसात) ।।—५५२

पींजनी-४, जुलाहा-३ नांम

पीनण पींजण पींजणी बिहननतूल (वुलात),
जुल्लावो बणकर (जपो) तंतूवाय (तुलात) ।।—५५३

कलार नांम

मदजीवण धुज सेठ (मुण पान) कराड़ (पढ़ात),
आसवकरण कलाळ (इम) दारूकार (दढ़ात) ।।—५५४

मद्य नांम

दारू मद कादंवरी मदिरा इरा (मुणात),
आसो मधु अैराक (इम) समदरसुतन (सुणात) ।—५५५
हारहूर (अर) हलिप्रिया सुरा वारुणी (सोय),
आसव महुवावाळ (अख) हाला सुंडा (होय) ।।—५५६

खारभंजना-गजक नांम

(खार) भंजणूं चखण (अख बळे) नुकळ (वाखांण),
मदपअसण अवंदस (मुण जिम) उपदंस (सु जांण) ।।—५५७

आसव-३, प्याला-चुसकी-५ नांम

आसव अभिसव आसुती चसक (रु) सरक (चवात),
प्यालो चुसकी (फेर पढ़) दारूपात्र (दिखात) ।।—५५८

अफीम नांम

नागझाग कसनागरा काळी अमल (कुहात),
नागफेण पोनन (नरख) आफू कैफ (अखात) ।—५५९
(आख) अफीम अफीण (इम) काळागर (कह तान,
वळे) गांवळो दाणवन काळो (फेर कुहात) ॥—५६०

भंग नांम

सबजी मातंगी (सुणूं) विजया (अर) बूंटी (ह),
भांग बीजभव (तिम प्रभणा नखो फेर) लीली (ह) ॥—५६१

मल्लाह-धीवर-३, ओद-३, मछली पकड़ने का कांटा-१ नांम

धीवर खेवट कीर (धर) वडिग ओद (वाखांण),
मच्छवेधणी (फेर मुण जेम) कुवेणी (जांण) ॥—५६२

मदारी-३, बाजीगरी-२, इन्द्रजाल-४, कौतुक-खेल-४ नांम

वादगिर जाळी (वळे) मायाकार (मुणाय),
माया सांवरि (करम तस मांही ओर सुणाय) ।—५६३
इन्द्रजाळ (अर) जाळ (अख) कुस्त्रती कुहक (कुहात),
कोतूहळ कोतुक कुतुक (और) कुतूहळ (आत) ॥—५६४

आहेड़ी-शिकारी-९, शिकार-५ नांम

आहेड़ी थोरी (अखो) लुबधक लुबध (लखात,
वळे) पारधी सांवळा नायक व्याध (मुणात) ।—५६५
म्रगबधजीवण (फेर मुण सुण) आखेट सिकार,
आछोटण म्रगया (अखो) पापकरण (अणपार) ॥—५६६

भालू-वनरक्षक नांम

भालू टूंक्यो भाळवी (कहज्यो फेर) करोल,
(सुकवी भाळू रा सरब विसद नांम ऐ बोल) ॥—५६७

जालवाला-३, जाल-४ नांम

जाळकार जाळिक (जपो ओर) बागर्यो (एख),
जाळी जाळ (रु) जाळिका (वळे) वागुरा (वेख) ॥—५६८

वामला-२, फंदा-२, मृगपाश-४ नांम

अवट (अनै) अवपात (अख) पासी फंद (पढ़ात,
वेखो) रज्जू गुण वटी (और) वटारक (आत) ॥—५६९

कसाई नांम

कोड़िक खटिक खटीक (कह एम) कसायी (आत),
कोटिक सोनिक मांसकर वैतंसिक (विख्यात) ॥—५७०

चमार-मोची नांम

चरमकार भांभी (चवो) मोची (और) चमार,
पांवरच्छणीकरण (पढ़ कहो) मोचड़ीकार ॥—५७१

जूता नांम

पांवरच्छणी पादुका जूती जरबो (जांण,
चवो) उपानत मोचड़ी प्राणहिता (पहचांण) ॥—५७२

मुसलमान नांम

रोद रवद खदड़ो तुरक मीर मेछ कलमांण,
मुगल असुर बीवा मियां रोजायत (खुर) सांण ।—५७३
कलम जवन तणमीट (कह) खुरासांण (अर) खांन,
चगथा आसुर (फेर चव मानहु) मूसलमांन ॥—५७४

फिरंगी नांम

अंगरेज अंग्रेज (अख) गोरा मेछ गुरंड,
भूरा टोपीवाळ (भण) वदसाहव (वळवंड) ॥—५७५

बादशाह नांम

पातसाह पतसाह (पढ़) साह दलेस (सुणात,
फेर) ढेलड़ीपत (पुणू एम) दलेसुर (आत) ॥—५७६

अंत्यज नांम

विवरण प्राक्रत नीच (वद) पामर इतर (पढ़ात,
परथक) जन (फेरू पढ़ो) वरवर (एम वुलात) ॥—५७७

भंगी नांम

चूड़ो महतर चूहड़ो भंगी सुपच (भणेह,
धरो) जनंगम धांणको वुकस निसाद (वणेह) ।—५७८

खाकरेज गडसूरखज अंतेवासी (आंण),
पुक्कस (इम) चांडाळ (कह) प्लव चंडाळ (पिछांण) ॥—५७९

म्लेच्छ-भेद नांम

निसठ्या सवरा नाहला (ओर) पुलिंदा (आंण),
भिल्ला माला अरभटा (जात मेछ सब जांण) ॥—५८०

•

पृथ्वीकाय प्रारंभः

दोहा

दुतिय खंड मांहे दुरस, भू रा नांम भणेह ।
उणथी भूमी कायिका, पहली अठै पढ़ेह ॥

उपजाऊ भूमि-१, ऊसर-२, टीला-२ नांम

(सरब धांन होवै सरस जिको) उरवरा (जांण),
इरिण (वळे) ऊसर (अखो एम) थळी थळ (आंण) ॥—१

निर्जल देश-२, विना जुती भूमि-२, मिट्टी-५ नांम

निरजळ जंगळ (नांम धर) वीड़ो खिल (वाखांण),
माटी मट्टी म्रत्तिका गार (र) लछमी (गांण) ॥—२

नमक की खान-१, नमक-३, सैंधा-३,
संचर-२, धूल-६ नांम

(नरख लवण री खांन रो) रुमा (नांम दरसात),
लवण लूण मीठो (लखो) सिंधूभव (सरसात) ।—४
सिंधुदेसभव सीतसिव संचल (सूळ) नसात,
धूळ गरद रेणू (धरो) रेत खेह रज (आत) ॥—५

देश नांम

देस मुलक जनपद (दखो) मंडळ खंड (मुणात),
बिसयक उपबरतन (वळे सातहि नांम सुणात) ॥—६

आर्यावर्त नांम

(विंभ हिमाजळ बीच मैं) आरजबरत (अखात,
सो) अचारवेदी (सुणूं) धरमधरा (सुधरात) ॥—७

अन्तर्वेद-१, कुरुक्षेत्र-२ नांम

(जमुना गंगा विच जमी) अन्तरवेदी (आख),
धरमखेत कुरुखेत (धर दुवदस जोजन दाख) ॥—८

कामरूप-२, बंगाल-१, मालवा-१, मारवाड़-३, साल्व-१, अंग देश-१ नांम

कामरूप (अर) कांगरू बंग माळवो (बेख),
मारवाड़ मुरधर मरू साल्व अंग (संपेख) ॥—६

त्रिगर्त-१, काश्मीर-१, मेवाड़-२, केरल-१, मगध-२, ढूंडाड़-३ नांम

जालंधर कसमीर (जप) मेदपाट मेवाड़,
केरल कीकट मगध (कह) ढुंडदेस ढूंढ़ाड़ ॥—१०

गांव-३, सीमा-६, खलियान-३, ढेला-४, चूर्ण-२ नांम

ग्राम गांव निवसथ (गिणूं) अंत सीम अवसांण,
सीमां मरजादा (सुणूं जिम) सीवाड़ो (जांण) ।—११
कार हद्द अवधी (कहो) खळो (खळ) धान खळा (ह),
लोठ ढगळ (इम) दलि डगळ चूरण खोद (चवाह) ॥—१२

वामला नांम

वामलूर (अर) वामलो वम्रीकूट (वुलात,
कीड़ापरवत नाकु (कह तिम) वलमीक (तुलात) ॥—१३

नगर नांम

नयर नैर नगरी नगर पट्टण पुर (प्रकटाय),
पुटभेदन पत्तन पुरी सहर नग्र (दरसाय) ॥—१४

गढ़-२, किला-६, कोट-४, वुर्ज-२, गली-४ नांम

गढ़ (अर) कोट दुरंग द्रुग (भणूं) दुरग भुरजाळ,
कल्लो (जिम) आसेर (कह सुणूं) वरण अरसाळ ॥—१५

कोट (अनैं) प्राकार (कह) खोम अटाळ (अखात),
परतोली विसिखा (पढ़ो) गळी प्रतोली (गात) ॥—१६

गया-२, काशी-४, अयोध्या-४, मिथिलापुरी-३, पटना-१ नांम

(पढ़ो) गया गयंनृपपुरी काशी कासि (कुहात),
वाणारसि शिवपुर (नळे) अवध कोशल्ला (आत ।—१७
इम) साकेत अजोधिया मिथिलापुरी (मुणात,
पढ़ो) विदेहा जनकपुर पाटलिपुत्र (पुणात) ॥—१८

द्वारका-२, मथुरा-२, उज्जैन-३ नांम

द्वारवती (र) दुवारका मथरा मथुरा (मांण),
उज्जयणी (र) उजीण (अख जेम) अवंती (जांण) ॥—१९

कन्नोज-२, दिल्ली-७, नरवर-२, चंपापुरी-२, चंदेरी-२ नांम

कानकुवज कन्याकुवज पांडवनगर (पढ़ात),
ढल्ली दल्ली ढेलड़ी गजपुर (वळे गिणात) ।—२०
(गिण) हतणापुर (र) वदगढ़ नळपुर निसधा (नांम),
करणपुरी चंपा (कहो) त्रिपुर चंदेरी (ताम) ॥—२१

मार्ग नांम

पदवी मारग इकपदी मग गैलो पवि माग,
पद्धति सरणी पंथ पथ अयनक वाट (अथाग) ॥—२२

सुमार्ग-२, अमार्ग-२, कुमार्ग-३, सूनामार्ग-२ नांम

आछोमारग पंथ (अख) ऊवट अपथ (अखाड़),
कदधव कापथ विपथ (कह अख) प्रांतर उज्जाड़ ॥—२३

चोराहा-३, राजमार्ग-३ नांम

चोहट्टो (अर) चोहटो (वळे) चोवटो (बोल),
राजपंथ संसरण (कह तिम) घंटापथ (तोल) ॥—२४

बाजार-३, हताई-३, मरघट-७ नांम

वणजपंथ बाजार (वद) विपणी (वळे वखांण),
पद (र) हतायी आसपद (सुण) मसांण समसांण ।—२५

(पढ़) करवीरक पितरवन (वद) खेत्रां (वरणाव),
प्रेतगेह (फेरूं प्रभण जेम) मसांण (जणाव)।।—२६

घर-२६, राजघर-३, कुटी-२, घास की झोंपड़ी-१ नांम

आलय निलय अगार (अख) थानक मंदर थांन,
गेह ओक आगार ग्रह कुट ऐवास मकान।—२७
सदन झूंपड़ो घर सदम धिसण खोळड़ो धांम,
भोण निकेतन कुळ भवन बसति निवास (सुबांम)।—२८
जाग ऐण आंथांण (जप) सोध महल प्रासाद,
उटज परणसाळा (अखो) कायमान (त्रणकाद)।।—२६

शयन-गृह-२, मंडप-२, सूतिका गृह-२ नांम

पड़वो सोवणघर (पढ़ो) मंडप जनघर (मांण),
सूतकगेह अरिष्ट (जिम जापा रो घर जांण)।।—३०

रसोई का घर-४, भंडार-१० नांम

सूदकसाळा रसवती (एम) महानस (आत),
पाकथांन (फेरूं पढ़ो) भांडागार (भणात)।—३१
(वेख) खजानूं द्रब्बघर कोस (बळे) कोठार,
रोकट मोहर रूप घर (मुण) भंडार (अमार)।।—३२

हाट-५, चवूतरी-४ नांम

अट्ट हट्ट आपण (अखो) बिपणी हाट (बखांण),
वेदी वेदि वितर्दिका (जेम) चूंतरी (जांण)।।—३३

आंगन-३, दर्वाजा-४ नांम

अंगण अंगन आंगणूं तोरण पोळ (तुलात),
दरवाजो (ओरूं दखो वळे) दुवार (वुलात)।।—३४

द्वार-५, भुजागल-४ नांम

वलज दुवारो वारणूं द्वार बार (दरसात),
आगळ परिघ (र) अरगळा भागळ (फेर भणात)।।—३५

किवाड़ नांम

अरर पट्ट फाटक (अखो कहो) कुवाट कमाड़,
अररि कपाट कवाड़ (इम कहो) कुंवाड़ कंवाड़।।—३६

देहली-५, झोंपड़ी कच्चा घर-२, छत-१ नांम

देहळ डेहळ देहळी उंबर उंबुर (आत),
वलभी गोपानसि (वदो) पटळ (ऊपली छात) ॥—३७

गच-१, कोना-७ नांम

कुट्टिम (तैलीछात कह) खूणू कूंट (अखात),
कोण अस्र पाली (कहो) कोटी अणी (कुहात) ॥—३८

सीढ़ी-४, निसैनी-३ नांम

आरोहण अवरोह (अख सुण) सीढ़ी सोपान,
नीसरणी निश्रेणिका (जिम) अधिरोहिणि (जान) ॥—३९

पेटी-४, झाड़ू-६, कूड़ा-४ नांम

मंजूसा मंजूस (मुण) पेटी पेयी (पेख),
संजवारी (अर) सोवणी (वळे) बुवारी (वेख) ।—४०
संमारजनी सोधणी वहूकरी (वाखांण),
कूड़ो कचरो अवकर (क जेम) कजोड़ो (जांण) ॥—४१

ओखल-३, मूसल-४ नांम

(आखो) ऊंखळ ऊंखळी (एम) उदूखळ (आख),
खांडणियो (अर) खांडण्यूं मूहळ मुसळ (इमाख) ॥—४२

चालणी-३, सूप-२, चूल्हा-४, हंडिया-२, कुम्हार का चाक-३, घड़ा-बेहड़ा-८ नांम

(लखो) खेरणी चाळणी तितऊ (फेर तुलात,
जंप) सूपड़ो छाजळो चूल्हो चुल्लि (चवात) ।—४३
अधिश्रयणी असमंत (इम) कुंभी चरू (कुहात),
चाक चक्क चक्कर (चवो) वे वेहड़ो (बुलात) ।
कुंभ घड़ो घट निप कळस (तेम) बेवड़ो (तात) ॥—४४

मटकी-६, अंगीठी-४, भाड़-२, पीने का पात्र-२ नांम

मटकी गागर माथणी काहेली (प्रकटाय,
तेम) कायली पातळी सिगड़ी हसनि (सुहाय) ॥—४५

गाडी (इम अंगाररी ओर) अंगीठी (आंण),
भाड़ अंबरीसक (मण्ं) पारी चसक (पछांण) ॥—४६

रई-५, रई का थंबा-२, पात्र-२ नांम

मंथ खजक मंथान (मुण) रयी भेरणं (आत),
विसकंभक मंजीर (वद) भाजन पात्र (भणात) ॥—४७

पर्वत नांम

डूंगर पवै पहाड़ गर भाखर परवत (भाख),
अग गरिंद भूधर अचळ अद्री मगरो (आख) ।—४८
गरवर नग सखरी गिरी सानूमान (सुहात),
सैल कंदराकर (सुणं) सानूवाळ (सुणात) ।—४६

उदयाचल-३, अस्ताचल-२, हिमालय-३ नांम

(चवो) उदय पूरब अचळ असत चरमनग (आंण,
उदक) अद्रि हिमवांन (अख जेम) हिंवाळो (जांण) ॥—५०

कैलाश-२, विंध्याचल-२, विमलाचल-१ नांम

रजताचळ कैळास (रख) बींभाचळ (बाखांण),
जळवाळक (तिणनूं जपो) सत्रुंजय (सूजांण) ॥—५१

सुमेरु नांम

रतनसानु गरमेर (धर) मेरू मेर सुमेर,
गरांपती (अर) हेमगर (पढ़ो) देवगर (फेर) ॥—५२

शिखर-४, कराड़ा-२, पर्वत का मध्य भाग-२ नांम

शृंग कूट सानू सिखर (कहो) प्रपात कराय,
(भाखर विचला भाग हूं) कटक नितंब (कुहाय) ॥—५३

गुफा-३, पत्थर-८ नांम

दरी गुफा गुद कंदरा पत्थर सिल पाखांण,
पूणं भाटो उपल (पढ़) पाहण (जिम) पासांण ॥—५४

खान-३, गेरू-२, खड़िया मिट्टी-५ नांम

आकर गंजा खान (अख) गेरू धातु (गुणाय),
खटणी कठणी खटि खड़ी पांडू (वळे पुणाय) ॥—५५

लोहा नांम

लोह पारसव लोहड़ो अय कालायस आन,
सिलासार घण पिंड (सुण) सगतर धीन (सुणात) ॥—५६

तांबा-४, सीसा-७ कलई-रांगा-७ नांम

(सुणू) उदुंबर मेछमुख तांबो ताम्र (तुलात),
सीसपत्र सीसो सिसो (गंडूपद) भव (गात) ।—५७
नाग (हेम) अरि सिस (नख) वपु कथीर गळ (नेम),
वंग (नाग) जीवन (चळे) आलीनक गुरु (गम) ॥—५८

चांदी नांम

रूपो चांदी वसु रजत जीवन तार (जणात),
जीवनीय खरजूर (जप) शीरक शुभ्र (भणात) ॥—५९

सोना नांम

कंचन कुंनण वसु कनक सोनूं सुवरण (सोय),
चामीकर चामीर (चव) हाटक अरजुण (होय) ।—६०
सोव्रन (अर) हेमंग (सुण तेम) भरम तपनीय,
जातरूप गारुड़ (जपो) रजत हेम रमणीय ॥—६१

पीतल-५, कांसा-४ नांम

पीतलोह पीतळ (पढ़ो) आरकूट गिरि आर,
रवण चोस कांसी (रटो प्रकट) वीजळीप्यार ॥—६२

पारा-६, अभ्रक-२ नांम

पारद पारत सूत (पढ़) चळ रस चपळ (चवात,
मेह नांम इण रा सुणूं) अभ्रक भोडळ (आत) ॥—६३

कसीस-५, गन्धक-६, हरताल-६ नांम

कासीसक खेचर कसक कंस (र वळे) कसीस,
पांवकोढ़ सात्रव (पढ़ो) गंधक सुलव (गुणीस) ।—६४
सुकपिच्छक दयितेन्द्र (सुण) हरितालक हरताळ,
नटमंडण पीतन (नरख इम) बंगारी आळ ॥—६५

मैनसिल-५, सिन्दूर-३ नांम

सिला रोचणी मैंणसल नेपाळी कुनटी (ह),
नागरगत नागज (नरख इम) सिंदूर (सुईह) ॥—६६

इंगुर-२, शिलाजित-४, वीजाबेल-६, दूरबीन-चश्मा-३ नांम

हंसपाद (अर) हींगलू गिरिज सिलाजतु (गेय),
सिलाजीत असमज (सुणं) वीजाबोळ (विधेय) ।—६७
बोळ गंधरस सस (बळे) पिंड गोपरस (प्रांण),
चसमू (अर) दुरबीन (चव जेम) कुलाली (जांण) ॥—६८

रत्न-४, वैदूर्य मणि-१, पन्ना-४ नांम

माणक वसु (अर) रतन मणि बैदूरय (बाखांण),
मरकत पन्ना हरितमणि (जिम) गारुतमत (जांण) ॥—६९

लाल-४, हीरा-३, मूंगा-३ नांम

पदमराग लछमीपुसप माणिक लाल (मुणात,
जतरी अभिधा वजररी सो सब अठै सुणात) ।—७०
सूचीमुख हीरक (सुणं बळे) बरारक (बोल),
रकतकंद रकतांग (रख तिम) परवाळो (तोल) ॥—७१

सूर्यकान्त मणि-२, चंद्रकान्त मणि-२, मोती-७, भूषण-६, श्रृंगार-२, राजावर्त हीरा-३ नांम

सूरकांत सूरजअसम चंदकांत मणि (चेत),
मोताहळ सारंग (मुण) सुकतिज मुत्ति (समेत) ।—७२
मुकनाफळ मुकता (मुणं) मोती (रसभव माण,
रट) आभूषण आभरण गहणं भूखण (गाण) ।—७३
गैणं (ओरूं) साज (गिण वद) सणगार वणात,
राजपट्ट वैराट (अख) राजावरत (रखात) ॥—७४

समाप्तोऽयं पृथ्वीकायः

अप्काय प्रारंभः

दोहा

पानी नांम

अंब तोय दक पै उदक अंभ सलल (अर) नीर,
पांणी जळ सारंग पय वार आप वन छीर ॥—७५

अगाह पानी-२, गहरा पानी-२ नांम

(जेम) अगाध अथाह (जळ) गहर निमन गंभीर,
ऊंडो (फेर) असेवता गेरो (वळे) गंभीर ॥—७६

साफ पानी-३, पानी का सोता-२, गंदला पानी-५ नांम

सुच्छ अच्छ परसन्नता (अख) सेवो उत्तान,
अप्रसन्न कलुस (रु) अनछ आविल गुधळो (आन) ॥—७७

वर्फ नांम

अवसयाय प्रालेय (अख) हिम मिहिका नीहार,
पाळो हिंव (अर) वरफ (पढ़) तूहिन (वळे) तुसार ॥—७८

लहर नांम

लहरी उतकलिका लहर उरमी वेळ (अखात),
उझल उझेल उझल्ल (इम) भंग हिलोळ (भणात) ॥—७९

भंवर-४, झाग-५ नांम

(भण) आवरत (रु) जळभमण वोलक भूण (वखांण),
फेण समदकप फेन (पढ़) झाग डिंडीर (सुजांण) ॥—८०

किनारा नांम

कूळ कच्छ रोधस (कहो) तट (अर) तीर प्रतीर,
पुलिन (अनै) परताप (पढ़ धरो) कनारो (धीर) ॥—८१

नदी नांम

सरित तरंगाळी सलत सरता नदी (सुणात),
निरझरणी तटनी धुनी परवतजा (सु पुणात) ।—८२
नै सेवळनी निमनगा (सिंधु) बाहणी (सोय,
धरो) आपगा जळधिया (जिम) जंबालनि (जोय) ॥—८३

गंगा नांम

भीसमसू भागीरथी गंगा गंग (गिणाय),
सिद्धआपगा सुरसरी देवनदी (दरसाय)।—८४
भीसमआयी (फेर भण) मंदाकणी (मुणात),
सरितवरा हरसेखरा सुरगीनदी (सुणात)॥—८५

यमुना नांम

जमना जमुना यभि जमि सूरजसुता (सुणाय),
जमभगनी (ओरूं जपो) कालंदी (सु कुहाय)॥—८६

नर्बदा-४ तापी-२ नांम

मेकलाद्रिजा नरमदा (ओर) इंदुजा (आत),
पूरवगंगा (फेर पढ़) तापी तपती (तात)॥—८७

चम्बल-३, गोदावरी-२, कावेरी-१ नांम

चरमवती चांमळ (चवो) रंतिनदी (जिम राख,
दख) गोदा गोदावरी अरधसुरसरी (आख)॥—८८

अटक-३, बनास-२, बैंतरणी-१ नांम

करतोया (अर) अटक (कह) सदानीर (सरसात),
वासिसठी (रु) वनास (बद) बैतरणी (बिख्यात)॥—८९

प्रवाह-३, घाट-३, नाला-२, बूंद-२ नांम

वेणी ओघ प्रवाह (वक) तीरथ घांट बतार,
नाळो जळनिरगम (नरख) विंदू प्रसत (बिचार)॥—९०

मोरी-३, रेत-२, धोरा-२ नांम

परीवाह परिवाह (पढ़) मोरी (फेर मुणात),
वालू सिकता वालुका सारण पांन (सुणात)॥—९१

कीचड़-७, दाह-४ नांम

कादो गारो पंक (कह जप) करदम जंवाळ,
चीखिल्लक (अर) चीखलो (अख अगाध) जळवाळ॥—९२

[दोहा—क्रमशः] कुआ-६, तालाब-६ नांम

द्रह दह ह्रद (ओरूं दखो) अंधु ढीमड़ो (आत),
कूडो वेरो (अर) कुवो कोर तळाव (कुहात)।—९३
सरवर ताळ तड़ाग सर सरसी (अर) कासार,
(एम) सरोवर (फेर अख) पदमाकर (अणपार)॥—९४

बावड़ी-३, खेळ-२, तलाई-२, रेंहट-२ नांम

वापी वाय (रु) वावड़ी उगकूपक आवाह,
पुसकरणी खातक (पढ़ो) रेंट (रु) अरट (अणाव)॥—९५

खाई-३, थांवला-२, झरना-४, कुंड-२ नांम

खाई परिखा खातिका आलवाल आवाप,
निरझर कर ससि स्त्रव (नरख) कुंड जळासी (काप)॥—९६

समाप्तोऽयं अप्कायः

•

अथ तेजस्कायमाह

दोहा

बडवानल-२, दावानल-३, मेघज्योति-२, तुषानल-२ नांम

बडवानळ बाडव (कहो) दावानळ दव दाव,
मेघवन्हि (अख) इरंमद कुकुल तुसाग (कुहाव)॥—९७

उपलों की आग-२, तापना-२, ज्वाला-४ नांम

करीसाग छागण (कहो) ताप (वळे) संताप,
झाळ (रु) झळपट (फेर जप) ज्वाळा कीला (जाप)॥—९८

अंगीरा-५, अंगीरे की ज्वाला-१, धुआं-८, चिनगारी-१ नांम

उलमुक (अनै) मटीट (अख) अंगीरो अंगार,
(इम) अलात उतका (अखो) धूम धुवां धूं (धार)।—९९
बायुबाह खतमाल (वद) भंभ आगवह (भाख),
दहनकेत (ओरूं दखो) अगनीकण (इम आख)॥—१००

समाप्तोऽयं तेजस्कायः

अथ वायुकायमाह

दोहा

पवन नांम

वाय समीरण वायरो मरुत वाव पवमांण,
अनिळ महाबळ मेघअरि पवन प्रभंजण (आंण)।—१०१
पच्छिम, उत्तर, दिसपती* गंधवहण जगप्रांण,
सुचि समीर सामीर (सुण) वात हवा पवनांण ।।—१०२

वृष्टियुक्त पवन-१, प्राण-वायु-१, अपान-वायु-१, समान-वायु-१ नांम

जांझ (वृिष्टिजुत वाव जप) प्रांण (हिया में पेख,
नरखो पवन) अपान (गुद नाभि) समांन (सु देख) ।।—१०३

उदान-वायु-१, व्यान-वायु-१ नांम

(कंठदेस माहे प्रकट आखो सदा) उदान,
(सरब देह बरती सदा बोल समीरण) ब्यान ।।—१०४

आंधी-४, लू-४ नांम

आंधी बावळ डूंज (अख अर) अंधारी (आत),
पवनतपत (इम) झंकड़ (पढ़) लू (अर) झकर (लखात) ।।—१०५

समाप्तोऽयं वायुकायः

अथ वनस्पतिकाय माह

दोहा

वन नांम

अटवि विपिन कांतार (अख) दव कानन वन दांव,
गहन कक्ष अटवी (गणूं वळे) अरण्य (वणाव) ।।—१०६

* पच्छिम, उत्तर, दिसपति = पच्छिमपति, उत्तरपति ।

बाग-६, बाहर का बगीचा-१ नांम

अपवन उपवन वेल (अख) बाग बगीचो (वेख,
कृत्रिमवन) आराम (कह) पोरक (बारै पेख) ॥—१०७

प्रमदा वन-१, स्थानिक बाग-२, वाड़ी-१ नांम

(महिप जनांनां मांहिलो) प्रमदावन (पहचांण,
ग्रहाराम निसकुट (नरख) वाड़ी (फूल वखांण) ॥—१०८

वृक्ष नांम

तर साखी तरवर तरू द्रुम द्रुमंग (दरसात),
रूंख फळद अग रूंखड़ो माळ व्रच्छ (सरसात) ।—१०९

पादप विटपी विटप (पढ़) चरणप अगम (चवंत),
फूलद छितरुह नग (प्रकट) परणी वसू (पढ़न्त) ॥—११०

वेल-६, अंकुर-४ नांम

लता वेल वल्लि वेलड़ी वेली व्रतति (वखांण),
अंकुर रोह प्ररोह (अख जिम) अंकूर (सुजांण) ॥—१११

शाखा-४, जड़-३, छाल-३, मंजरी-२ नांम

साख सिखा साखा लता जटा सिफा जड़ (जोय),
छाल चोच वलकल (चवो), मंजरि मंजा (होय) ॥—११२

पत्र-११, पत्र की नस-२ नांम

पत्र छदन छद पांनड़ो परण पात दळ पांन,
वरह पलास (रु) वरग (वद) माड़ी छदन (समांन) ॥—११३

पुष्प-१०, गुच्छा-२ नांम

सुमनस कुसुम प्रसून सुम फूल मणीवक (पात),
प्रसव सून गुल (अर) पुसप गुच्छो गुच्छ (गिणात) ॥—११४

पराग-३, पुष्प-रस-५ नांम

रज पराग (अर) फूलरज मधु रस (ओर) मरंद,
सुमनसरस (सुकवी सुणूं मुणूं वळे) मकरंद ॥—११५

फूले हुए पुष्प नांम

प्रफुलित उतफुल फूल (पढ़) बिकसत दलित (बुलात),
बिकच फुल्ल व्याकोस (बद तेम) बिमुद्र (तुलात) ।।—११६

सुगन्ध नांम

गंध डमर सूगंध (गिरण) बास महक कसबोय,
बगर (बळे) बासावळी (जेम) बासना (जोय) ।।—११७

कली नांम

(चव) मुद्रित (अर) संकुचित (नरख बळे) निद्रांण,
मीलत नहफूलण (मुरणू बळे) अफुल्ल (बखांण) ।।—११८

कच्चा फल-२, फल-१, गांठ-२, फली-५ नांम

श्राम सलाटू फळ (अखो) ग्रंथी गांठ (गिणात),
कोसि वीज सिंबा (कहो) संबी समी (सुहात) ।।—११६

पीपल नांम

पीपळ कुंजरअसन (पढ़) बोधितरू (बाखांण),
कसनावास अस्वत्थ (कह जिम) चळदळ (कबि जांण) ।।—१२०

वरगद-४, गूलर-२, श्राम-४, मोलसरी-२, अशोक-२, विल्व-२ नांम

वैश्रवणालय वड़ (रु) बट बहूपांव (वरणाव),
जंतूफळ मसकी (जपो) आंब रसाळ (अणाव) ।—१२१
माकंदक सहकार (मुण) केसर बकुल (कुहात),
कंकेली (रु) असोक (कह) श्रीफळ वील (सुहात) ।।—१२२

ढाक-४, ताड़-३, बैत-२ नांम

त्रीपत्रक किंसुक (तवो पढ़) पलास पालास,
त्रणराजक तल ताल (तव) वेतस विदुल (विकास) ।।—१२३

केला-४, वेरी-३, झाऊ-२ नांम

रंभा मोचा केळ (रख) कजळी (फेर कुहात),
वदरी कुवली वोरड़ी झावू पिचुल (सुझात) ।।—१२४

नीम-३, कपास-३, रूई-२, अडूसा-३ नांम

नीम निंब (अर) नीमड़ो पिचवय (अर) करपास,
वादर तूलक तूल (वक) ग्रस अरडूसो वास ॥—१२५

अमलतास-२, वरण-२, थूहर-सेंहुड-२, पीलू-२ नांम

आरगवध गरमाल (अख वद) मंदार वकांण,
महातरू थूहर (मुगा) गिन गुड़फळ (गूजांण) ॥—१२६

महुवा-३, चिरोंजी-२, गूगल-२, कदंब-२ नांम

महुवो मुवो मधूक (मुण) चार पिगाळ (चवंत),
पलंकसा गूगळ (पढ़ो) हलिप्रिय नीप (कहंत) ॥—१२७

इमली-२, नारंगी-२, हिंगोट-२, लिहसोडा-२ नांम

अम्लीका (अरु) आमली नागरंग नारंग,
तापसद्रुम इंगुदि (तवो) सेलू (स्लेसम) अंग ॥—१२८

बीजा-३, भोजपत्र का वृक्ष-२, पाटल-३, तूंबी-२ नांम

पीतसाल बीजो प्रियक वहुतुच भूरज (वोल),
पाडळ पाटलि पाटला तुंबि अलावू (तोल) ॥—१२९

आंवला-२, वहेड़ा-२, हरड़-२, हरड़-वहेड़ा-आंवला-१ नांम

धात्री आमलकी (धरो) अक्ष विभीतक (आत),
हरड़ै (और) हरीतकी त्रिफळा (तास तुलात) ॥—१३०

बेला-३, चमेली-३, जासूल-३, सोनजुही-१ नांम

मल्ली मलिका मोगरो जाति चमेली (जोय),
जपा जवा जासूल (जप) हेमफूलिका (होय) ॥—१३१

चंपा-२, जुही-२, दुपहरिया-२, करना-२ नांम

हेमपुसप चंपक (हुवै) जुही जूथिका (जात),
वंधुजीव वंधूक (वद) करणां करुण (कुहात) ॥—१३२

जंमीरी-३, कनीर-२, विजोरा-२, करीर-२ नांम

जंभ जह्मेरी जंभलक करणिकार कंनीर,
वीजपूर वीजोर (वक) करकर (वळै) करीर ॥—१३३

एरंड-२, नारियल का वृक्ष-२, कैथ-३, इलायची-२ नांम

पंचांगुळ एरंड (पढ़) नारिकेर नारेळ,
दधिफळ कैंत कंपित्थ (दख आख) अलायचि एळ ।।—१३४

बांस-४, सुपारी-३, नागरबेल-६ नांम

मसकर सतपरवा (मुणूं) वेणू त्रणधुज (बोल),
पूग क्रमुक गूवाक (पढ़) तांबुलवेली (तोल) ।—१३५
(नाग नांव आगैं निपुण) वल्ली वेल बुलात,
नागरबेल तंबोळ (नत) तांबूली (सुतुलात) ।।—१३६

केवड़ा-केतकी-२, कचनार-२ मदार-धतूरा-३ नांम

क्रकचच्छद केतक (कहो) कोबिदार कचनार,
धत्तूरो धत्तूर (धर बळे) धतूर (बिचार) ।।—१३७

गुंजा-घुंगची नांम

(कहो नांम जो कनक रा सो इण रा सू जांण,
रख) चरमू गुंजा रती (और) कृष्णला (आंण) ।।—१३८

दाख-३, खस की घास-२, खस-२ नांम

दाख हारहूरा (दखी और) गोथणी (आख,
वोलो) गांडर वीरणी कस (रु) उसीरक (भाख) ।।—१३९

नेत्रवाला-३, लोध-२, पुवांड़-३ नांम

वालक जळ ह्रीवेर (वद) गालव लोद (गणात),
प्रपुन्नाट पंव्वाड़ (पढ़ ओर) एडगज (आत) ।।—१४०

कमल की वेल-३, कमल-२२, श्वेत कमल-१,
लाल कमल-२, गंडूल-२ नांम

नलिनी पंकजिनी (नरख और) म्रणाली (आत),
कमळ कंवळ पंकज (कहो) विसप्रसून (विख्यात) ।—१४१
(पंक सवद आगैं प्रकट, जनम, ज, रुट, रुह, जांण)*,
संहसपात सतपत्र (सुण) पोयण कंज (प्रमांण ।—१४२
अवज पदम अरविंद (इम रख) पुसकार राजीव,
तामरस (रु) सारंग (तव सुण) सरोज (जळसीव) ।—१४३

* पंकजनम, पंकज, पंकरुट, पंकरुह ।

सरसीरुह (अर) जळज (सुण पुंडरीक (सितपात,
कवळ) लाल (रु) कोकनद उतपळ कुवलय (आत) ॥—१४४

कमल की नाली-३, अन्न-३, चावल-५ नांम

तंतुल बिस (रु) म्रणाल (तव धगे) नाज अन धांन,
चोखा चांवळ साळ (नव) तंदुळ अखसत (तांन) ॥—१४५

जो-३, चने-२, उर्द-३, जवार-२ नांम

जव तुरंगप्रिय जो (जगो) हरिमंथक चण (होय),
मास मदन नंदी (मुणू) जोनळ जीरण (जोय) ॥—१४६

गेहूं-३, मूंग-२, कुलत्य-२, सांवां-२ नांम

सुमन गहूं गोधूम (मुण) मुदग वलाट (मुणाय),
कुळथ काळवंतक (कहो) सांऊं स्याम (सुणाय) ॥—१४७

अलसी-३, सरसों-२, बाल-भुट्टा-४ नांम

अळस उमा अतसी (अखो) सरस्यूं तुंतुभ (सोय),
दांगी ऊंमी वाल (दख जेम) कणीसक (जोय) ॥—१४८

लहसुन-३, प्याज-४, सूरन-२ नांम

ल्हसण अरिष्ट रसोन (लख) दीरघपत्र (दिखात),
ग्रंजन कांदो प्याज (गिण) सूरण कंद (सुहात) ॥—१४९

कुम्हड़ा-२, तुरई-१, ककड़ी-२, मूली-२ नांम

कूसमांड करकारु (कह) कोसातकी (कुहात),
करकटिका (अर) करकटी सेकिम मूळ (सुहाय) ॥—१५०

अदरक-४, सरकंडा-५ नांम

अद्रक आदो आरद्रक शृंगवेर (सरसात,
कहो) गुंद्र सर सरकना तेजन मूज (तुलात) ॥—१५१

कुशा, दुर्भा-४, दूब-६ नांम

दरभ डाभ कुस कुथ (दखो) हरिताली रुह (होय),
दोभ अनंता दूरवा सतपरवीका (सोय) ॥—१५२

गन्ना-५, गन्ने की जड़-१, कांस-२ नांम

ईख ऊख इच्छू (अखो सो) असिपात रसाळ,
मोरट (जिण रो मूळ है) कांस इसीका (भाळ) ॥—१५३

घास-५, नागरमोथा-२, उपल(घास)-२ नांम

जवस घास त्रण खड़ (जपो) अरजुण (ओरूं आत),
मेघनांम मुसता (मुणूं) बलवळ उपल (बणात) ॥—१५४

समाप्तोऽयं पृथिव्याद्येकेन्द्रियादी बनस्पतिकाय:

•

अथ द्वीन्द्रिया नाह

कीड़ा-४, सूक्ष्म कीड़ा-१, शरीर के कीड़े-१, बाहर के कीड़े-१ नांम

क्रमी कीट कीड़ो किरम (सुच्छम) कीकस (जांण,
वेरमांहि) नीलंगु (बद बारैं) छुद्र (बखांण) ॥—१५५

लकड़ी के कीड़े-१, कैंचुवा-२, गिजाई-२, जोंक-८, सीप-२ नांम

(कह) घुण (कीड़ो काठरो) किंचुल कुसू (कुहात),
गज्जायी गंडूपदी अस्त्रपीवणी (आत) ।—१५६
जळसपणी जळओक (जप) जळालोक जळजात,
जोख जळूक जळोक (जिम) सुक्ती सींप (सुहात) ॥—१५७

शंख-५, घोंघा-२, कौड़ी-२ नांम

वारिज कंवू संख (वक) तीनरेख दर (तोल),
सांखूल्या संवूक (सुण) कोडि वराटक (वोल) ॥—१५८

उक्ता द्विन्द्रिया:

•

त्रीन्द्रियानाह

चींटा-३, चींटी-१, दीमक-४ नांम

चींटो पील मकोट (चव) चींटी (नांव चवात),
उपजीहा उपदेहिका दीमक दीम (दिखात) ॥—१५९

लीक-३, जूं-२, गोवड़ी-२, गोवड़ा-१ नांम

लिकसा रिकसा ल्हीक (लख) जूं खटपदी (जगात),
गीगोड़ी गोपालिका गोमयजात (गणात) ॥—१६०

खटमल-३, बीरवहुट्टी-४ नांम

मांकण मतकुण किटिभ (मुण बीर) वहोड़ी (वेख),
वुढ्ढन मामूल्यो (वळे) इंदगोप (अवरेख) ॥—१६१

उक्तास्त्रीन्द्रिया:

•

चतुरिन्द्रियानाह्

मकड़ी नांम

जाळकार जाळिक (जपो) ऊरणनाभ (अखात),
मरकट लूता मांकड़ी लालासाव (लखात) ॥—१६२

विच्छू-३, डंक-१, भोंरा-चर्र-१०, जुगनू-३ नांम

वीछू द्रुण आली (वदो) अलि (तिण पूंछ अणात),
भंवर भसळ अलि भ्रमर (भण) भूंरो भमर (भणात) ।—१६३
चंचरीक सारंग (चव) मधुकर मधुप (मुणाय),
जोयिरिंगण जोरिंगणूं (सो) खद्योत (सुणाय) ॥—१६४

मधुमक्खी-२, शहद-३, मोम-३, झींगर-४, टिड्डी-१,
पतंग-१, तितली-२, डांस-२ नांम

सरघा मधुमांखी (सुणूं) सहत सैत मधु (सोय),
मदन मैण मधुऊंठ (मुण) झींगर झिल्ली (होय) ।—१६५
चीरी भ्रंगारी (चवो) सलभ पतंग (सुणाय,
तवो) पुत्तिका तीतरी दंसक डांस (दिखाय) ॥—१६६

मक्खी-१, मच्छर-२, पशु-२, हथिनी-५ नांम

मांखी मांछर मसक (सुण) ढांढ़ो पसू (पढ़ाय),

उक्ताश्चतुरिंद्रिया:

पंचेन्द्रिया नाह

वसा गजी हथणी (वळे) इभी करेणू (ग्राय) ।।—१६७

षट्पात

मकना हाथी-१, पांच बरस का हाथी-१, दस बरस का-१,
बीस बरस का-१, तीस बरस का-१, मस्त हाथी-३,
मतवाला हाथी-२, तिरछी चोट करने वाला हाथी-१ नांम

(दुरद समैं पर दंत वळे नंहं ऊंचा ग्रंगरो),
मतकुण (नांम सुणात) बाळ (गज पंच बरसरो)।
वोत (बरस पढ़हु) बिक्क (गज बीस बरस बर),
कलभ (नांम करटी सु तीस जाणू संबच्छर)।
मत्त(रु)प्रभिन्न गर्जित (मसत) मदउतकट मदकल(मुणू,
तिरछी सु चोट करवै तिकण परिणत) दंतावळ (पुणू) ।।—१६८

छंद पद्धतिका

मद उतरा हुग्रा-३, यूथपति हाथी-३ नांम

उदवांत ग्रमद निरमद(ग्रखात उतर्या मद इभरा नांम ग्रात),
जूथप मतंगपति (जूह) नाह (तंबेरम टोळापति तथाह) ।।—१६९

युद्ध के लिये सज्जित हाथी-२, धृष्ट हाथी-१ नांम

(इभ जुद्ध निमित्तक किय तयार) सज्जित (ग्रर)
कल्पित (नांम सार,
मानैं नह ग्रंकुस जो मतंग गंभीर) वेदि (नांमक अभंग) ।।—१७०

दुष्ट हाथी-१, जवान हाथी के लाल दाग-१ युद्ध योग्य
हाथी-१, राजा की सवारी का-२ नांम

(वारण जो होवै दुसट)व्याल(जो)पद्म (करी व्है विंदुजाल,
समरोचित गज जो व्है) सनाह्य उपबाह्य भूपगजराजवाह्य ।।–१७१

लंबे दांतवाला-२, हाथी कामद-३, हाथियों की
रचना-१ नांम

(दंती) उदग्र (ईसा) सुदंत (जिण रै रद लंबा सो भजंत),
मद दांन प्रवृत्ति (क गमद जांग ग्रणपार) घड़ा
(गज नांम ग्रांग) ।।—१७२

हाथी की सूंड-५, सूंड की नोंक-२ नांम

हसतीनासा कर हस्त गुंडा सूंड (गुणात),
इण रो अग्रक आख इण) पोगर पुसकर (पात) ॥—१७३

नोंक के आगे की अंगुली-१, हाथी का कंधा-१, हाथी का
दांत-१, कान का मूल-१, हाथी का ललाट-१, सूंड
का पानी-१, आंखों के ऊपर का भाग-१ नांम

(गै पोगर री आंगळी एक) कर्णिका (आत),
आसण (गै अंसक अखो दंत) विसाण (दिखात) ।—१७४
(लख कन मूळक) चूलिका (गै ललाट) अवगाह,
(करसीकर) वमथू कहो आंखकूट (इसिकाह) ॥—१७५

मस्तक कुंभ-१, कुंभ के बीच का भाग-१ कुंभ के नीचे का
भाग-१, विंदू के नीचे का भाग-१ नांम

(पिंड दुगै धू) कुंभ (पट बीच कुंभ) विंदु (तोल),
आक्षरक (दुव कुंभ अध) वातकुंभ (अधवोल) ॥—१७६

वातकुंभ के नीचे का भाग-१, वाहित्य के नीचे का भाग-१
आंख का कोया-१, हाथी बांधने का स्तंभ-१ नांम

(इण रै अध) वाहित्थ (अख तिण हेठै) प्रतिमांन,
(इभ) निरयांण (अपांग अख इभ बंध थंभ) आलान ॥—१७७

पूंछ का मूल-१, अंकुश से रोकना-१, महावत का पैर
हिलाना-२ नांम

(पूंछ मूल) पेचक (पढ़ो अंकुस रोकण) यात,
(अखपैकरम) निसादियत बीत (नांम दुव आत) ॥—१७८

अंकुश की नोंक-१, होद कसने का रस्सा-२, कंधे का
रस्सा-२ नांम

(अंकुस अग्र) अपष्ठ (अख) वरत वरत्रा (बोल),
कठबंधण कठबंध (कह तेम) कलापक (तोल) ॥—१७९

श्वेत घोड़ा-२, श्वेत पिंगल-१ नांम

(हय धोळो सब होय तो कहो) करक काका (ह),
धोळो पिंगळ रंग धरै गूढ़ असन) खोंगा (ह) ॥—१८०

पीला घोड़ा-१, दूधिया घोड़ा-१, काला घोड़ा-१
लाल घोड़ा-१ नांम

(पीत रंग हय) हरिय (पढ़ रंग दूध) सेराह,
(कसनरंग) खुंगाह (कह यूं रंग) लालकियाह ॥—१८१

काली पिंडलियों का श्वेत घोड़ा-१, काबरा घोड़ा-१ नांम

(जंघ कसन सित व्है जरा उण रो नांम) उराह,
(गिणूं कावरो रंग सब हय रो नांम) हलाह ॥—१८२

पट्पात्

कपिल रंग का घोड़ा-१, अयाल व बालछा श्वेत रंग वाला त्रिगूह-१,
काले घुटने वाला पीले रंग का-१, पीत रक्त व
कृष्ण रक्त-१, नीला-२, गुलाबी-१ नांम

(रंग कपिल रो बाज होय तिणनूं) त्रियूह (कह,
याल पूंछ अवदात जपो) बोल्लाह (नांम जह।
पढ़) कुलाह (रंग पीत जरा जानूं सित जिणरै,
पीतरगत) उकनाह (तुच्छरंग धूमर तिणरै।
सव देह रंग नीलो सरस) आनील (सु) नीलक (अखो,
रेवंत रंग) पाटल (सरव वो रु खांन नांमक रखो) ॥—१८३

दोहा

पीत हरित-२, काच जैसा श्वेत-१ नांम

(हरित पीत रंग होय जो) हालक हरिक (सुहात,
श्वेत काच रा रंग सम) पिंगुल (नांम पढ़ात) ॥—१८४

घोड़ों के खेत नांम

(धरूं देस संबंध सूं साकुर नांम सुणात),
वनायुज (रु) वाल्हीक (वलि) पारशीक (सु पुणात)।—१८५
सिंधूभव कांवोज (सुण) खुरासांण तोखार,
गोजिकांण केकांण (गिण धर) भाड़ेज (सुधार) ॥—१८६

बछेरा-३, वेगवाला-२ नांम

(अलप) अवसथा वाळ (अस प्रकट) किसोर (पढ़ात,
जव जिणमैं घणव्है जिको) जवन जवाधिक (जात) ॥—१८७

जातवंत घोड़ा-१, अच्छा चलने वाला-१ नाम

(जात खेत जो व्है तुरी) आजानेय (अखात,
साधु फिरै चालै सदा सो) विनीत (सरसात) ॥—१८८

बुरा चलने वाला-१, अष्ट-मंगल-१ नांम

(बुरो फिरै चालै विरस) सूकल (नांम सुणात,
उर खुर मुख कच पुच्छ सित) मंगलअष्ट (सुणात) ॥—१८९

पंचभद्र नांम

(पूठ हियो मूंढ़ो प्रगट दो पसवाड़ा देख,
जिण हयरै धोळा जिको) पंचभद्र (तू पेख) ॥—१९०

हाथी की संकल-४, हाथी का कपोल-४
बांधने व पकड़ने का स्थान-१ नांम

अंदुक (अर) हिंजीर (अख) सांकळ निगड (सम्हारि),
करट कपोल (रु) गंड कट (बंधणगज भू) वारि ॥—१९१

हाथी की चार जात-४ घोड़ी-५ नांम

भद्र मंद अग मिश्र (भण जात चार गज जोय),
घोड़ी वडवा घोटकी हयी तुरंगी (होय) ॥—१९२

पूंछ-५, खच्चर-३, खुर-२ नांम

पूंछ मुराला पुच्छ (पढ़) लूम (अनै) लंगूल,
वेसर खच्चर वेगसर सफ खुर (पांव सुमूल) ॥—१९३

गधा नांम

गधो गधैड़ो खर (गिणूं) रोड़ीराव (रखाह),
लंबकरण रासभ (लखो वळे) सीतळावाह ॥—१९४

ऊंट नांम

सढ़्ढ़ो पांगळ सांढ़ियो ऊंट टोड गघ (आंण),
मुणकमळो पाकेट मय जाखोड़ो सल (जांण) ।—१९५
करहो जूंग करेलड़ो नसलंबड कुळनास,
कंटकअसण गडंग (कह लंघण) दुरग (हुलास) ।—१९६

भोळि क्रमेलक भूतहन दोयककुत दासेर,
महाअंग वीसंत (मुरा) प्रियमरु रवणक (फेर) ॥—१६७

वैल नांम

वैल अखभ व्रस गो वळद धोरी धवळ (धरेह,
गणू ं) साकवर डांगरो अनडुह भद्र (अणेह) ॥—१६८

सांड-३, बछड़ा-६ नांम

आंकल नोपत मदक (अख) तरण जैंगड़ो (तोल),
वच्छो वतसर वाछड़ो (वळै) टोगड़ो (वोल) ॥—१६६

वैल का कुब्वड़-२, सींग-२, गाय-१०, भैंस-४ नांम

अंसकूट कुकुदक (अखो) सींग बिसाण (सुहात),
सींगाळी सुरभी सुरै तंबा धेन (तुलात)।—२००
(पढ़) तंपा (रु) नलंपिका गो माहेयी गाय,
लालचखी महखी (लखो) भैंस हिडंबी (भाय) ॥—२०१

भैंसा नांम

भैंसो जमवाहण (भणू ं) महखो महिख (मुणाय),
वाहणअरी जरंत (जप लखो) हिडंब लुलाय ॥—२०२

बकरी नांम

(कहो) वाकरी वोकड़ी छाळी छागी (होय),
अजा टाट मंजा (अखो ज्यू ंही) बुज्जी (जोय) ॥—२०३

बकरा नांम

छाळो वुज्जो अज छगळ छग वकरो पसु छाग,
वोक वसत तभ वोकड़ो वरकर वक्कर (वाग) ॥—२०४

भेड़ नांम

गाडर लरड़ी गाडरी मेसी भेड़ (मुणोय),
रुजा रू ंगटाळी कुररि हुडी घटोरी (होय) ॥—२०५

मेंढ़ा नांम

ऊरण मींढ़ो हुड अवी घेटो मेस घटोर,
(गिणू ं) रु ंवाळो गाडरो एडक भेड़ो (ओर) ॥—२०६

८८

कटक-४ नांम

भूमीलेग (गणेह),
(एग) करीस (अगेह) ॥—२०७

कुत्ता नांम

स्वांन भगण गुन (सोय),
कुत्तो (जेम) टेगड़ो (जोय) ॥—२०८

सिंह-३१, भूखा सिंह-६ नांम

हरि केहरी नखआवध वनराव,
सेर लंकाळ (वद राव) कुञ्जर म्रगराव।—२०९

नाहर मयंद म्रगराजा (रु) म्रगेस,
(अर) सींघळी नखि भाखरांनरेस।—२१०

सिंघ सारंग (सुण) कंठीरव कंठीर,
म्रगराज म्रगराज (मुण) केहर नार कठीर।—२११

म्रगयंद (सुण) अधप डांखियो (आख,
नळे) अधायो वांघलो भूखो वेगळ (भाख) ॥—२१२

तेंदुआ, चीता-४, अष्टापद सिंह-४ नांम

राखदुपी (अर) वरगड़ो चित्रक चीतो (होय),
अष्टापद कुंजरअरी सरभ आठपग (सोय) ॥—२१३

भालू-४, जरख-४ नांम

अच्छभल्ल भालूक (अर) भल्लक भाल (भणेह,
डाकण) वाहण म्रगडचग़ जरख तरच्छु (जणेह) ॥—२१४

रोभ-३, गेंडा-हाथी-२, सूअर-२० नांम

रोभ गवय वनगव (रखो) खड़गी खड़ग (अखाह),
कोड़ी कोलो गिड़ कवल (रख) वराह बाराह।—२१५

(भण भाकर रो) भोमियो डाहळ टूंडाळ,
दांतळैल (दखां) डाढ़ाळ।—२१६

भूदारक [illegible]) सू[illegible]),
थूळनास [illegible]) ॥—

गीदड़ नांम

गीदड़ जंवुक गादड़ो स्याल्यो भरुज सियाळ,
भूरिमायु गोमायु (भण गण) फेरंड स्रगाळ ॥—२१८

भेड़िया-३, लोमड़ी-४, खरगोस-७, सेही-३, लंगूर-१२ नांम

वरी भेड़ियो वरगड़ो लूंगती (रु) लूंकां (ह,
लखो) लूकड़ी लूमड़ी सुसल्यो दांत्यो (सांह) ।—२१९
सुसो सुसकल्यो सस (वळे गण) सूळिक खरगोस,
सेही हेडी सेयली प्लवग प्लवंगम (पोस) ।—२२०
साखाम्रग कप कीस (सुण) मांकड़ कपी मुणात,
वनचर मरकट वांदरो हरि लंगूर (कुहात) ॥—२२१

हिरण-८, गोहरा-४, छिपकली-६ नांम

म्रग कुरंग (अर) मरगलो (कह) सारंग छकार,
हिरण (वळे) आहू हरण गोधेरक गोधार ।—२२२
(इम) विसखपरो गोहिरो पल्ली मुसली (पेख),
छावक विसमर छिपकळी (दुरस) गरोळी (देख) ॥—२२३

गिर्गट-४; झाऊ-३ नांम

कणगेट्यो किरकांट (कह) सरट सयानक (सोहि,
गिण) संकोची गातरो जाहक झावू (जोहि) ॥—२२४

चूहा-५, छछूंदर-२, नोल्या-५ नांम

आखू मूसक ऊंदरो मूसो खणक (मुणात),
छछूंदरी चखचूंदरी सरपाऽऽहार (सुणात) ।—२२५
(कह) नोल्यो पिंगळ नकुल वभ्रू (और विचार),
ओतु विडाळ विलाव (अख) मारजार मंजार ॥—२२६

सर्प-२२, जहर-११, नशा-२ नांम

सांप उरग विखहर सरप पनग दुजीह पनंग,
अही फणी सारंग अह भमंग भुजंग भुयंग ।—२२७
काळदार अहि व्याळ (कह) काकोदर (जिम) काळ,
चील्ह भुजंगम भुजग (चव) गरळ हळाहळ गाळ ॥—२२८

गोबर-४, उपला-कंडा-४ नांम

गोबर गोमय गागनिट भूमीलेप (भणोह),
छांणां कंडा (अर) छगण (एम) करीस (अणोह) ॥—२०७

कुत्ता नांम

कुत्तो लड्डो कूकरो स्वांन भसण सुन (सोय),
कुरकुर मंडळ कूतरो (जेम) टेगड़ो (जोय) ॥—२०८

सिंह-३१, भूखा सिंह-६ नांम

करीमार हरि केहरी नगआनग वनराव,
वाघ सेर लंकाळ (नद राग) कुक्कर म्रगराव ।—२०९

महानाद नाहर मगंद म्रगराजा (र) म्रगेस,
सारदूळ (अर) सींघळी नगि भाखरांनरेस ।—२१०

सीह सिंघ सारंग (गुण) कंठीरव कंठीर,
गरगराज म्रगराज (गुण) केहर नार कठीर ।—२११

सादूळो म्रगयंद (गुण) अघप डांखियो (आख,
वळे) अघायो बांघलो भूखो वेगळ (भाख) ॥—२१२

तेंदुआ, चीता-४, अष्टापद सिंह-४ नांम

राखदुपी (अर) वरगड़ो चित्रक चीतो (होय),
अष्टापद कुंजरअरी सरभ आठपग (सोय) ॥—२१३

भालू-४, जरख-४ नांम

अच्छभल्ल भालूक (अर) भल्लक भाल (भणेह,
डाकण) वाहण म्रगडचग्ग जरख तरच्छु (जणेह) ॥—२१४

रोझ-३, गेंडा-हाथी-२, सूअर-२० नांम

रोझ गवय वनगव (रखो) खड़गी खड़ग (अखाह),
कोड़ी कोलो गिड़ कवल (रख) वराह बाराह ।—२१५

(भण भाकर रो) भोमियो टूंडाहळ टूंडाळ,
दांतळैल जेखल (दखां) डाढ़वाळ डाढ़ाळ ।—२१६

भूदारक गिडराज (भण) सूकर सूर (सुणाय),
थूळनास बहुप्रज (तथा) मुखलांगळक (मुणाय) ॥—२१७

गीदड़ नांम

गीदड़ जंबुक गादड़ो स्याल्यो भरुज सियाळ ,
भूरिमायु गोमायु (भण गण) फेरंड स्रगाळ ॥—२१८

भेड़िया-३, लोमड़ी-४, खरगोस-७,
सेही-३, लंगूर-१२ नांम

वरी भेड़ियो वरगड़ो लूंगती (रु) लूंकां (ह ,
लखो) लूकड़ी लूमड़ी सुसल्यो दांत्यो (सांह) ।—२१६
सुसो सुसकल्यो सस (वळे गण) सूळिक खरगोस ,
सेही हेडी सेयली प्लवग प्लवंगम (पोस) ।—२२०
साखाम्रग कप कीस (सुण) मांकड़ कपी मुणात ;
वनचर मरकट वांदरो हरि लंगूर (कुहात) ॥—२२१

हिरण-८, गोहरा-४, छिपकली-६ नांम

म्रग कुरंग (अर) मरगलो (कह) सारंग छकार ,
हिरण (वळे) आहू हरण गोधेरक गोधार ।—२२२
(इम) विसखपरो गोहिरो पल्ली मुसली (पेख) ,
छावक विसमर छिपकळी (दुरस) गरोळी (देख) ॥—२२३

गिरगट-४; भाऊ-३ नांम

कणगेट्यो किरकांट (कह) सरट सयानक (सोहि ,
गिण) संकोची गातरो जाहक भावू (जोहि) ॥—२२४

चूहा-५, छछूंदर-२, नोल्या-५ नांम

आखू मूसक ऊंदरो मूसो खणक (मुणात) ,
छछूंदरी चखचूंदरी सरपाऽऽहार (मुणात) ।—२२५
(कह) नोल्यो पिंगळ नकुल बभ्रू (अंग विचार) ,
ओतू बिडाळ बिलाव (अख) मारजार मंजार ॥—२२६

सर्प-२२, जहर-११, नशा-२ नांम

सांप उरग विखहर सरप पनग दुजीह पनंग ,
अही फणी सारंग अह भमंग भुजंग भुयंग ।—२२७
काळवार अहि व्याळ (कह) काकोदर (जिम) काळ ,
चीलह भुजंगम भुजग (चव) गरळ हळाहळ गाळ ॥—२२८

वखम कुटक (जिम) जहर विख काळकूट (कह तात),
विरसन गर रसमार (वद) मादक गहळ (मनात) ॥—२२९

दुमुही सर्प-२, अजगर-२, डिंडिभ-२, निर्विष सर्प-२ नांम

राजरारप दम्मी (रखो) अजगर वाहस (आख),
जळव्याळ अलगरद (अख) दुदुह दुंदुह (दाख) ॥—२३०

नाग-२, नागपुरी-१, वासुकी नाग-२, वासुकी रंग-१ नांम

काद्रवेय (अर) नाग (कह) भोगावनि (पुरि भाख),
सरपराज वासुकि (सुणा इण रो रंग) गित (आख) ॥—२३१

सर्पिणी नांम

(पढ़ो) फुणाळी सरपणी काकोदरी (कुहात,
गिणा) भुजंगी नागणी सपणी (वळे मुहात) ॥—२३२

फन-३, सर्प का देह-२, सर्प की डाढ़-१, कृत्रिम विष-३ नांम

भोग फटा दरवी (प्रभण कहो) भोग अहिकाय,
आसी (इणरी डाढ़ अख) विस गर चार (वताय) ॥—२३३

शेषनाग नांम

पन्नगीस अहपत फणी अनत तखंग अहराव,
सेस फुणाळी वासक (रु) नागराज (घण आव)।—२३४
धराधार पुहवीधरण वखधर नाग (वखांण),
संहंसदोयचख (अर) श्रवण आलुक भोगी (आंण) ॥—२३५

उक्तास्थलचराः पंचेन्द्रियाः

•

खचरान्पंचेन्द्रियानाह

पक्षी नांम

विहग विहंगम खग वि वय सुकुनी सकुन (सुणात),
दुज पतंग (पर) पतग द्विज अंडज पंछी (आत) ॥—२३६

चोंच-५, पंख-४, पंखों का मूल-१ नांम

चांच चंचु चंचू (तवो) त्रोटि सपाटी (तेम),
पिच्छ पच्छ छद पत्र (पढ़ जंपो) पच्छति (जेम) ॥—२३७

अंडा-२, घोंसला-२, मोर-१२ नांम

अंड (पेसिका) कोस (अख सुण ज्यो) आळ घुसाळ,
मोर्‌यो मोर मयूर (मुण) अहिभक वरही (आळ) ।—२३८
(रखो) कलापी मोरड़ो सिखी सिखंडी (सोय),
नीलकंठ केकी (नरख जिम) सारंग (क जोय) ॥—२३९

कोयल नांम

कोयल कोकिल पिक (कहो) वनप्रिय परभ्रत (बोल),
काकपुसट सारंग (कह) तांबालोयण (तोल) ॥—२४०

तोता नांम

लालचांच फळअदन (लख) तोतो कीर (तुलाट),
सुवो सूवटो सुक (सुणूं) सूडो (बळे सुणात) ॥—२४१

मैना-३, कलिंग-२, हूका-२, जीवंजीव-१ नांम

सारू मैणा सारिका भृंग कलिंग (भणात,
कोलाली) कुक्कुट कुहक जीवंजीव (जणात) ॥—२४२

हंस नांम

सितछद मानसओक (सुण) धीरट (अर) धवलंग,
(लखो) मुराल मराल (है रखो) हंस सारंग ॥—२४३

पपीहा नांम

नभनीरप चात्रग (नरख) चातक (फेर चवात),
पपीहो (रु) सारंग (पढ़) बावय्यो (विख्यात) ॥—२४४

कौआ नांम

काक काग द्विक कागलो वायस करट (वुलात),
इकलोयण वलिभुक (अखो तिम) घूकारि (तुलात) ॥—२४५

जलकौआ-१, उल्लू-६, मुर्गा-४ नांम

(जळवायस) मदगू (जपो) वायससात्रव (वोल),
दिवसअंध घूघू (दखो तेम) अलूक (सुतोल) ।—२४६
घूक रातराजा (घड़ो) ताम्रचूड़ (कह तात),
कृकवाकू (अर) कूकड़ी चरणायुधक (चवात) ॥—२४७

चकवा-४, टिटहरी-३, चिड़िया नर-२ नांम

कोक रथांगाभिध (कहो) चक्रावक चकवाह ,
टीटोड़ी टिट्टिभ टिटिभ चटक कुलिंगक (चाह्) ॥—२४८

बुगला-३, कंकपक्षी-२, चील-६, शेनपक्षी-३, गिद्धिनी-७,
चिमगादर-२, बड़ी चिमगादर-२, झाड़-२ नांम

वक बुगलो (रु) बटोक (वद) कंक (रु) ढींच (कुहात ,
वदो) कांवळी सांवळी समळी चील (गुहात) ।—२४६
आतापी सुनखी (अखो) शेन ससाद गिचांग्ग ,
ग्रीधरण खग दुज गीधणी पंखरग (फेर पढ़ांरण) ।—२५०
दूरनैरण रातंग (दख) चरमचड़ी चमचेड़ ,
वागळ मुखविसटा (वदो) आटी ग्राड (गुराड) ॥—२५१

कबूतर-३, कमेड़ी व पंडुकी-२, छोटी पंडुकी-३
कावर, गुरगल-२, चिड़िया मादा-३, चकोर-३,
रूपारेल-१, तीतर-२, बया-२ नांम

पारावत (रु) परेवड़ो कलरव (फेरूं कोप) ,
ग्रांखालाल कपोत (ग्रख) होलड़ डैकड़ (होप) ।—२५२
कम्मेड़ी गुरगळ (कहो) कावर (फेर कुहाय) ,
चड़ी चुड़कली (ग्रर) चटी विखसूचक (वुलवाय) ।—२५३
चळचंचू (रु) चकोर (चव) भारद्वाज (भरणेह) ,
तीतर (ग्रर) खरकोरण (तव) वीयो सुघर (वरणेह) ॥—२५४

उक्ताः खचराः पंचेन्द्रियाः

०

जलचरान् पंचेन्द्रिया नाह

मछली नांम

मच्छ मीन झख तिम (कहो) संवर सळकी (सोय) ,
प्रथुरोमा थिरजीह (पढ़ जिम) वैसारिण (जोय) ॥—२५५

मगर-३, जलमानस-२, मगर-४ नांम

मकर नक्र (ग्रर) मक्र (मुण) माणस (जळ) सिसुमार ,
तंतुनाग तंतुरण (तवो) वरुणपास अवहार ॥—२५६

कँकड़ा-४, कछुआ-४ नांम

सोळपगो करकट (सुण) कुरचिल (और) कुलीर,
कच्छप कूरम कमठ (कह धरो) डुलीसुत (धीर) ॥—२५७

मेंडक नांम

भेक डेडरो हरि (भण) प्लवग डेडको (पेख),
बरसाभू मंडूक (बद) दादुर दरदुर (देख) ॥—२५८

उक्ता: जलचरा: पंचेन्द्रिया:

•

नरक में गिरे हुए-४, पीड़ा-२, बेगार-२ नांम

नारक अतिवाहिक (नरख) प्रेत परेत (पिछांण),
अतपीड़ा (अर) यातनां आजू बिसटी (आंण) ॥—२५९

नरक-४, पाताल-७ नांम

निरय नरक नारक (नरख) दुरगत (ओरूं दाख),
वड़वामुख वळसदन (बक) अधोभुवन (इम आख) ।—२६०
नागलोक (फेरूं नरख पढ़ो बळे) पाताळ,
(राख) रसातळ (इम रिधू परगट पढ़ो) पयाळ ॥—२६१

छिद्र-६, गढ़ा-४ नांम

रोप रंध्र विल विवर (पढ़) छेद छिद्र (उच्चार),
अवट गरत दर सुभ्र (अख बिल भू रो बिसतार) ॥—२६२

जगत-१५, जन्म-७ नांम

लोक भुवन जगती खलक आलम भव दुनियांण,
जग जिहांन दुनियां जगत (जिम) संसार (सुजांण) ।—२६३
विस्व दुनी सैंसार (वद) उतपत पैदा (आख),
जनम जणी उतपन जणण भव उतपत्ती (भाख) ॥—२६४

सांस-३, उसांस-१, निसांस-४ नांम

सांस सुवास (रु) स्वास (सुण सुणज्यो फेर) उसांस,
वहिरमूह रातन (वको) निस्वास (रु) नीसांस ॥—२६५

सुख-४, दुःख-६ नांम

सांत निरव्रती सरम सुख आरति दुख आभील,
कष्टर प्रसूतिज दुख कसट असुख वेदना (ईल) ॥—२६६

आधि-१, व्याधि-१, संदेह-७, दोष-३ नांम

आधी (मनरी आरती) व्याधी (तनरी वेख),
संसय (इम) संदेह (सुण) द्वापर संसै (देख) ।—२६७
आरेक (रु) सांसै (अखो) विचिकित्सा (वाखांण),
दोस (अनैं) आश्रव (दखो जिम आदी) नव (जांण) ॥—२६८

स्वभाव-८, स्नेह-५, समाधि-४, धर्म-२, पूर्व कर्म व प्रारब्ध-३ पाप-१३, अभिप्राय-५ नांम

प्रक्रत रीत लच्छण (पढ़ो) सहज सरूप सुभाव,
शील (वळै) संसिद्धि (सुण) हारद प्रेम (सुहाव) ।—२६९
प्रीती प्रीत सनेह (पढ़ अख) समाधि अवधांन,
समाधांन प्रणिधांन (सुण) सुक्रत धरम (सुजांन) ।—२७०
श्रेय पुण्य अस (फेर सुण) दैव भाग विधि (देख),
कलक पाप अघ पंक (अख) पातक दुसक्रत (पेख) ।—२७१
(लखो) दुरित कळमस कळुस असुभ अंह तम (आख),
अभिप्राय आसय (अखो) भाव छंद मत (भाख) ॥—२७२

शीत-१२ नांम

जड़ (जिम) सीतळ सिसिर (जप) सीत ठंड सी (सोहि),
हेम तुखार सुसीम हिम जाड़ो पाळो (जोहि) ॥—२७३

उष्ण-७, कड़ा-६, नर्म-२, मधुर-४ नांम

उन्हूं तीछण खर उसण तीव्र चंड पटु (तेम),
कक्खट करकस क्रूर (कह जप) कठोर द्रढ़ (जेम) ।—२७४
कठण जरठ खर परुस (कह) कोमळ म्रदु (कुहात),
रसजेठो (अर) मधुर (मुण) स्वादू स्वाद (सुहात) ॥—२७५

खट्टा-३, खारा-२, कड़ुवा-४ नांम

पाचन (खाटो अमल (पढ़) लवण सरबरस (लेख),
मुखधोवण कड़वो (मुणू) ओसण कटु (अवरेख) ॥—२७६

कसेला-३, चरपरा-२, सफेद-१२ धूसररंग-१ नांम

तोरो तुवर कसाय (तव) चरको तिकत (चवात),
धवल सेत सित बिसद (धर) अरजुण सुचि अवदात।—२७७
धोळ सुकळ पांडू (धरो) पांडुर गोर (पढ़ात,
कंचित धोळा रंगनूं) धूसर (नांम धरात)॥—२७८

पीला-३, हरा-५, कबरा-६ लाल-५ नांम

पीतळ पीळो पीत (पढ़ लखो) सबज पालास,
(राख) हर्यो हरियो हरित (मुण) करबुर कळमास।—२७९
सबळ चित्र चित्रक (सुणूं अवर) काबरो (आख),
लाल रगत लोहित (लखो) रोहित सोणक (राख)॥—२८०

नीला-काला-६, लाल-पीला मिला हुआ-४ नांम

(सुणूं) नील काळो असित सांवळ मेचक स्यांम,
(पीत रगत) पिंजर (पढ़ो) पिंग कपिल हरि (पांम)॥—२८१

शब्द नांम

सबद धुनी सुर रव (सुणूं) निनद घोस रुत नाद,
आरव ध्वान बिराव (इम) ह्राद स्वांन निर्ह्राद॥—२८२

सप्तस्वर नांम

सड़ज रखभ गंधार (सुण) मद्धम पंचम (मांन),
धैवत (निखध) निखाद (ये सातूं सुर सूजान)॥—२८३

कोलाहल-२, हिनहिनाना-२, रंभाना-३, चहचहाना-२ नांम

कोलाहल कळकळ (कहो) हेसा हींस (सुहात),
रंभा हंभा गायरव कूजित विवर (कुहात)॥—२८४

पंक्ति-४, जोडा-७ नांम

माळा तति राजी (मुणूं लेखा) वीथि (लखाय),
जुगल दुतिय द्वै दुंद जुग यामल जुगम (अखाय)॥—२८५

वहुत-१०, थोड़ा-८, सूक्ष्म-२, लेश-३, लंबा-२ नांम

भोत प्रचुर पुसकळ वहुत वोत घणां (वाखांण),
भूरी भूय अदभ्र वहु तोक तुच्छ तनु (जांण)।—२८६

अलप छुद्र क्रस दभ्र अरगु पेलव सुच्छम (पेख),
लेस (अनैं) तुट कण (लखो) दीरघ आयत (देख) ॥—२८७

ऊंचा-५, नीचा-४, छोटा-२ नांम

तुंग उच्च उन्नत (अखो) ऊंचो उच्छित (आत),
नीच कुबज वावन खरव लघु (अर) ह्रस्व (लखात) ॥—२८८

चौड़ा-७, विस्तार-३ नांम

व्यूढ़ विपुल गुरु महन वहु प्रथुळ विसाल (पढ़ाव),
व्यास (वळे) विसतार (वक इम) आभोग (अढ़ाव) ॥—२८९

संक्षेप-४, टुकड़ा-६ नांम

समाहार संछेप (मुण) संग्रह (वळे) समास,
अधर खंड खंडळ (अखो) भित्त विहंड दळ (भास) ॥—२९०

विभाग-६, पवित्र-५ नांम

वांटो भाग विभाग वट वंट अंस (विख्यात),
पावन पुण्य पवित्र (पढ़) पूत पवित्तर (पात) ॥—२९१

मैला-५, निर्मल-११, साम्हने-३, धुला हुआ-२ नांम

मैलो कळमस मळीमस कच्चर मलिन (कुहात),
उजवळ ऊजळ ऊजळो सुचि सुच विमळ (सुहात) ।—२९२
सुध विसुद्ध निरमळ (सुणू आख) विसद अवदात,
संमुखीन अभिमुख समुह साधित धौत (सुणात) ॥—२९३

खाली-५, सघन-५ नांम

रिकतक रीतो रिकत (रख) सूनूं तुच्छ (सुणेह),
निविड़ निरंतर घन प्रभण अविरळ गाढ़ (अखेह) ॥—२९४

नया-४, पुराना-५, जंगम-१, थावर-१ नांम

नूतन नवो नवीन नव प्रतन (रु) जरत पुरांण,
(रखो) पुरातन जीरण (क) जंगम थावर (जांण) ॥—२९५

निकट-७, बांका-टेढ़ा-७, चंचल-६ नांम

नीड़ो निकट सनीड़ (इम) सविध समीप (सुहात),
संनिधान आसन्न (मुण) कुंचित कुटिळ (कुहात) ।—२९६

वक्र बांक (अर) बांकड़ो वेल्लित नमत (सुबोल),
चळ चंचळ अणथिर चपळ तरळ चळाचळ (तोल) ॥—२९७

अकेला-५, पहिला-७, पिछला-५, बिचला-२ नांम

एकाकी एकक (कहो) अवगुण हेकल एक,
पहिलो आदिम आद (पढ़ बळे) प्रथम (सविवेक) ।—२९८
पूरव परथम अग्र (पुण) अंतिम अंत (सु आख),
चरम (रु) पच्छिम पाछलो मांझर मद्धम (भाख) ॥—२९९

बीच-४ सादृश्य-६ नांम

विच विचाळ (अर) बीच मझ (कह) उपमां अनुकार,
ककसा (अर) उपमांन (कह) उणियारो उणिहार ॥—३००

प्रतिबिंब-५, प्रतिकूल-४ नांम

बिंब च्छद प्रतिबिंब (वद) प्रतिनिधि प्रतिमां (पेख),
प्रतिलोमक प्रतिकूळ (पढ़) बांम प्रतीप (बिसेख) ॥—३०१

निरंकुश-३, प्रकट-३, गोल-२ नांम

उच्छृंखळ उद्दाम (अख एम) अनरगळ (आख),
प्रकट व्यक्त उलवण (पढ़ो) बरतुल गोळ (बिभाख) ॥—३०२

भिन्न-३, मिला हुआ-२, अंगीकार-३ नांम

जुदो भिन्न इतरत (जपो) मिश्रित मिसिर (मुणात),
अंगीकृत प्रतिश्रुत (अखो) संश्रुत (बळे सुणात) ॥—३०३

रक्षित-५, काम-३, रहना-२ नांम

गोपायित त्राता गुपत रच्छित त्रांण (रखेह),
क्रिया विधा (अर) करम (कह) असना थिती (अखेह) ॥—३०४

अनुक्रम-४, आलिंगन-३ नांम

आनुपूरवी अनुक्रम परिपाटी क्रम (पेख),
आलिंगन परिष्वंग (अख) उपगूहन (अवरेख) ॥—३०५

विघ्न-४, आरंभ-४ नांम

अंतराय प्रत्यूह (अख) विघन विवाय (विख्यात),
क्रम प्रक्रम उपक्रम (कहो इम) आरंभ (अणात) ॥—३०६

वियोग-३, कारण-७ नांम

विरह बियोग विजोग (वक) कारण नमत (कुहात),
करण बीज हेतू (कहो) निमित निदांन (सुहात) ॥—३०७

कार्य-३, विश्वास-२, रक्षा-२ नांम

अरथ प्रयोजन (एम अख) कारज (वळे कहाय),
विस्रंभक बिसवास (वद) रच्छा त्रांण (रहाय) ॥—३०८

चिन्ह नांम

लाछण लच्छण (अर) लछण अहनांण (र) सेनांण,
चहन चिन्ह (ओरूं चवो) सहनांणक सैनांण ॥—३०९

भैरव नांम

(चव चावंडाराचेलका) भैरव भैरू (भाख),
भै वांण (अर) भैरवा (एम) खेतळा (आख) ।—३१०
चामुंडानंदन (चवो जेम) कमाळी जोध,
खेतपाळ (आखो वळे) संभु लांगड़ा (सोध) ॥—३११

करनीदेवी नांम

करनल कनियांणी (कहो ईखो) धावळियाळ,
(सुण) करनी महियासधू आयी लोवड़ियाळ ।—३१२
धावळयाळी (ओर धर) देसणोकपत (दाख,
अंक नांम सब ईहगां आयी रा ऐ आख) ॥—३१३

अक्षर नांम

आखर अक्खर अंक (इम) अच्छर आंक (अखात),
अखर वरण अच्छर (अखो) दसकत (वले दिखात) ॥—३१४

डाकिनी नांम

डाकण डायण डायणी (कहो) डाकणी (एम),
आखरढ़ायीआखणी जरखवाहणी (जेम) ॥—३१५

भूत नांम

भूत परेत पिसाच (भण) प्रेत (र) जंद (पढ़ात),
सगस गलीच मळीच (सब आठूं नांम अखात) ॥—३१६

स्याहरी-२, चुड़ैल-४ नांम

सकोतरी (अर) स्याहरी चूडांवण चूड़ेल,
पिसाचणी (अर) प्रेतणी (गरण अतरा सिव गैल) ।।—३१७

इति श्री चारण मिश्रण सूर्य्यमल्लात्मज मुरारिदान
विरचिते डिंगल भाषा कोषे तृतीयः खण्डः समाप्तः

• • •

अनेकारथी - कोष

कवि उदैराम विरचित

अथ अनेकारथी लिख्यते

दोहा

एक सवद पद में उठे अरथ अनेक उपाय ,
अनेकारथ 'उदा' उकत विवधा नांम वणाय ।।—१

माला नांम

माळा समक्रत सुमरणा नांम (दांम) हरनेह ,
गुणांणी सृक श्रृज गुणवळी ('उदा') सिमर (अछेह) ।।—२

जुगल नांम

जमळ जुगळ यम दुंद जुग उभय मिथुन द्वय (आंण) ,
दोय करग चख दंपती (जुगळ) जांम (ऐ जांण) ।।—३

सुरभी नांम

चंदण गऊ स्रग भ्रत (चढ़ै) सुमनावळी वसंत ,
अंतरादि स्रगमद यसा गांधीहाट (गणंत) ।।—४

मधू नांम

सुजळ दूध मदरा सुधा (सुण) नभ चैत वसंत ,
विपन मधू मकरंद (वळ) मधूसूदन माकंत ।।—५

कल नांम

कळ सूरार निखंग (कहि कळ) कळजुग कळेस ,
कळचाळा (कळ) जुध (कहि विलसै देस - विदेस) ।।—६

आतम नांम

मन वुध चित अहंकार (मुण) धरम जीत निरधार ,
(त्यूं) सुभाव (जग) आतमा परमातमा (पसार) ।।—७

धनंजय नांम

पवन धनंजय (नांम पढ़) अगनि (धनंजय आख) ,
पथ (धनंजय की प्रभा भुजां क्रष्ण वळ भाख) ।।—८

अरजुण नाम

संसारजुण अरजुन (सुणौ) द्रुमणारजुन तर (दाख,
पथ अरजुन हरि प्रिय सखा सो भारथ जग साख) ॥—९

पत्र नांम

परण पत्र रथ (पत्र पङ्ख) वाह (पत्र वळ) वित्त,
(पत्र) विहंगम (पंख गुं चंचळ पौहचै) नित्त ॥—१०

पत्री नांम

(पत्री) खग (पत्री) विटप (पत्री) कमळ (प्रकास,
पत्री) सर (जुध पथ के जीतो भारथ जास) ॥—११

बरही नांम

(बरही) सिखि (बरही) बिरग (बरही) कुरकट (वेस,
बरही) मोरचंद्रावळी (हर सिर मुगट हमेस) ॥—१२

कांम नांम

कांम काज (सब जग करै कांम) मदन (को नांम,
कांम) भोग अभलाख (कहि सो सारै घणस्यांम) ॥—१३

धांम नांम

तेज धांम (अरु धांम) तन (धांम) जोत ग्रह (धांम),
किरण (धांम कोटक कळा सो सुंदर घणस्यांम) ॥—१४

वांम नांम

(वांम) मनोहर (वांम) भव कुटळ (वांम कहि) कांम,
(वांम हाथ आगै वधै संवादौ संग्राम) ॥—१५

भव नांम

(भव) महेस जग जनम (भव भव) कल्यांण (भणंत,
भव भव भज भगवंत नै कारण) कमलाकंत ॥—१६

कलप नांम

(कळप) कपट दिव (कळप कहि कळप) बुध परकास,
(कळप) समर रथ कलपवृख (जगंनाथ भुज जास) ॥—१७

कर नांम

(कर) भुज हस्तीसुंड कर (कर लागै कर वांम,
कर) विखिया (रस दूर कर नित सिमरौ हर नांम) ॥—१८

दर नांम

(दर) जीवादक भूमदर (दर) वळ हर दरवांन,
(दर) प्रखत (दर) संख (दर भज 'उदा' भगवांन) ॥—१९

वर नांम

वर दाता सिव सेष्ट (वर वर) सुंदर (वाखांण,
वर) दूलह श्रीक्रष्ण (वर जग गोपीपत जांण) ॥—२०

व्रख नांम

(वृख) रास मघवांन (वृख) करुण (वृख वृख) कांम,
(वृख) धोरी तर धरम (वृख) सुरतर (वृख घणस्यांम) ॥—२१

पतंग नांम

रंग (पतंग पतंग) रव (त्यौं) सिख कीट (पतंग),
केता गुडि (पतंग कहि) तर जगरंग (पतंग) ॥—२२

पल नांम

(पल) आमख (भाखै प्रथी) खट उसास (पल ख्यात,
पल) भारपत कव पलक (नै) विपळ (साथ विख्यात) ॥—२३

दल् नांम

(दळ) तरपत्रा (दाखजै दळ) नृपफौजदुगंम,
(दळ) लाडू (दळ) पंक प्रक (सो हर मुगट सनंम) ॥—२४

वल् नांम

धीर वीरज (वळ) धरम नृपदळ वळ (निरधार,
वळ) हासौ दईतंद्र (वळ) सुंदर (वळ) ततसार ॥—२५

अल् नांम

(अळ) पूरण समरछ (अळ अळ) समरथ (कथ आख,
अळ) भूखण गुण भूठ (अळ रांम सरण गुण राख) ॥—२६

वय, जीव नांम

(वय) विहंग (वय) काळ (वळ वय वग) खग विसतार ,
ससतुर गुर आतम (सदा एता जीव उचार) ॥—२७

मार, सार नांम

सुधा (मार) विस (मार सुग मार) कांम स्रत (मार) ,
धीरज वीरज वळ धरम मत (कोटी) घृत (सार) ॥—२८

कलभ नांम

करी उतावळ कलुख (कहि एता कलभ उचार) ,
आश्रय सावण गगण नभ (वळ) भाद्रवौ (विचार) ॥—२९

वसु, पटू नांम

सुर अगनी दुत जळ रद्रव (ए वसु नांम उचार) ,
तीखण निपुण निरोग (तव विध पटू नांम विचार) ॥—३०

तुरंग, कुरंग नांम

मन तुरंग धखपंख (सुण) वाज तुरंग (वखांण) ,
रंग (कुरंग कुरंग) म्रग जग पतंग (रंग जांण) ॥—३१

आतमज, कवंध नांम

कांम रुधर सुत (कुं कहै नांम आतमज न्याय) ,
सिरविणसुभट (कवंध सुण सर) आसुर (दरसाय) ॥—३२

हंस, वांण नांम

रव अस धीरट जीव (रट) छंद (हंस) छिव ग्यांन ,
सरग तीर वळ सुत (सदा वदै वांण विदवांन) ॥—३३

पयोधर, भूधर नांम

तरण मेघ कुच सेततर (नांम पयोधर नीत) ,
गिर नृप आदवराह (गण भूधर कहो अभीत) ॥—३४

वरुन, गोत्र नांम

सार च्यार जळपत (सदा) विखधर वरण (विख्यात) ,
सईल सिखर कुळ (नांम सुध गोत्र तीन संग न्यात) ॥—३५

तनु नांम

तात सुछम विसतार (तनु) विरला (तनु) विधान ,
(कव सिस मूरख बाळ कहि विण भगती भगवांन) ॥—३६

जाल, काल नांम

जाळ झरोखा (जाळ गण) मंद दंभ ग्रहमीन ,
काळ असत वयजम (कहां रहो रांम रस लीन) ॥—३७

ताल, व्याल नांम

(ताळ) ताळ हरताळ सर (ताळ) राग तर (ताळ) ,
दुष्ट नाग गज अंतदिन (व्याळ नांम विकराळ) ॥—३८

जलज, तम नांम

मीन कमळ मोती मयंक संख (जळज तत सार) ,
तमस क्रोध राहू तिमर (विध तम नांम विचार) ॥—३९

गुण, श्रव नांम

त्रगुण सूत तूजी (तणा कर गुण) हरगुण क्रीत ,
गिरधण सवता ख क (गुण पढ़ श्रवनांम पुनीत) ॥—४०

वन, घण नांम

वन वारद पाती (वळै) वन (वन नांम वताय) ,
घणा वादळ विसतार (घण) घण (सूं लोह घड़ाय) ॥—४१

वरण नांम

वरण श्रुती च्यारू-वरण अछर (वरण उचार) ,
वरण-दुजादिक रंग-वरण (अवरण व्रह्म उचार) ॥—४२

पौत, वुध नांम

पौत सिसू नौका (पढ़ौ पौत पौत वरठाय) ,
पंडत हरि-अवतार (पढ़) ससिसुत वुध (सुणाय) ॥—४३

अनंत, क्षय नांम

गिगन सेस अनेक (गण यक) हर-रूप (अनंत) ,
रोग (र) प्रळै विनास (रट पद क्षय नांम पढ़ंत) ॥—४४

राजीव-लोचन नांम

जळ रस मुकता मीन (जग) रांम (नांम राजीव),
रस देही जन व्यापारण (दुन गुरलोक रईव) ॥—४५

सुक्र, नाग नांम

जेठमास वारज अगन मुक्तानारज सुक्र,
ससर वग वन विहंग गुर वारद मग खग वक्र ॥—४६

कलाप, ब्रह्म नांम

गण तुनीर विकळपगती केकी पत्र कलाप,
(देह) जीव विध ब्रह्म दुज एक (ब्रह्म) जग (आप) ॥—४७

उडुप, मंद नांम

रिख विहंग कईवरत ससि नाव उडुप निरधार,
अलग सनी खग मूढ़ अघ (एता मंद उचार) ॥—४८

वारन, स्यंदन नांम

वरणजण वगतर गयंद (वळ) वारण (नांम बताय),
चितुरंगरथ जळ (चढ़ै सिंदन नांम सुणाय) ॥—४९

पंथी, कौसक नांम

राह ग्राह ससि मदन (रट) वटवी पंथी (वेस),
विसवामित्र गुगळवृखी अळूक कौसक (अेस) ॥—५०

पौहकर, अंवर नांम

जळ नभ तीरथ सुंडगज वारज पौहकर वांण,
आवृत नभ अंसुकाददै (जुगती अंवर जांण) ॥—५१

संवर, कंवल नांम

जळ आसु गिर गांठ (जप) संगना संवर साख,
गोगळ तनजळ वाहगत ऊनीकांवळ (आख) ॥—५२

नग, नाग नांम

गिरतर जवहर नगर (नग विध-नग धांम वखांण),
काकोदर गज पत्र कुलट (नाग नांम निरवांण) ॥—५३

करन, ग्रज नांम

श्रवण पोत रवसुत (सदा करन नांम प्रकास),
विध सिव बोक ग्रनंत वय जोबनादि (अज जास) ।।—५४

सिव, दुज नांम

सुख कल्याण हर श्रेष्टतार सलिल (नांम सिवसार),
पंखी रद ब्रामण (पढ़ौ ए दुज नांम उचार) ।।—५५

विरोचन, बल नांम

सिखाभांण सस देत (सुण नांम विरोचन नेम),
हरि गुजरी असनहृद (पढ़) बळराजा (प्रेम) ।।—५६

वृख, तरक नांम

पावकवृडहा देत (पुन) बलष्टक (नांम बताय),
न्याय विचार जुदा (निरख एता तरक उपाय) ।।—५७

रज नांम

रज रजवट ग्रारत्त (रज रज) वांमातन (रीत),
रजरेणा मन दीन-रज (पढ़ रज) पाप ग्रनीत ।।—५८

कंबु, भुवन नांम

संख रतन खोडसावरत (कंबु नांम कहाय),
गगन नीर मुरभुवण (गण भुवण नांम मन भाय) ।।—५९

कुस, कूट नांम

दनु सीता-सुत जलदरभ (ए कुस नांम उजास),
कपट अहर गिर (वीहत कहि पढ़ै ए कूट प्रकास) ।।—६०

खर, हरनी नांम

गरधभ राकस सांन (गण) तीखण खर (कहि तोल),
उमा भृगी जूथी (एता) खित मन हरणी (खोल) ।।—६१

कुंज, जम नांम

मंगल भोमासर (समझ) तरकुंज (नांम बताय),
जुगकृतंत (ग्ररु) राह (जप) जम (का नांम जणाय) ।।—६२

धात्री, सिवा नांम

धाय आंवळा (कहि) धरा धात्री (नांम धराय),
हरड़ै फौहीवकहरा (सिवा नांम संभळाय) ॥—६३

रस, रंभा नांम

कांची जिभ्या दांम (कहि) रसन (नांम रचाय),
उरा कदली उरवसी (दळ रंभा दरसाय) ॥—६४

माया, मळा नांम

दया नेह छळ (दाखजै) द्रव माया (हर दाख),
मळ बुध तिय मनहर मळा (भेद मळा गुण भाख) ॥—६५

सुमना, जोत नांम

मदती तिय (वळ) मालती सुमना कुसुम सहेत,
दीपकरण रिख अगन दुत दृग जोत (जगवेत) ॥—६६

यज्ञ, विध नांम

यळ सुर मनहर अंवका पिंड यज्ञ परताप,
धाता देव विधांन (कहि) आविध करता (आप) ॥—६७

निसा, अजा नांम

निसा रात हळदी (निसा निसा) पकी (निरधार),
अजा अंज्या माया (अजा) ब्रह्महूंतविसतार ॥—६८

जिह्न, हस्त नांम

कपट मूठ आळस (कहै) जिह्न (नांम घण जांण),
करीसूंड (कही) नखत्र (कहि विदवत हस्त वखांण) ॥—६९

क्रतंत, मित्र नांम

सास्त्रागम सिधंत (कहि) जम (क्रतंत ज्यूं ग्यान),
सवता सजन गुण सिखा (नर जग मित्र निधान) ॥—७०

सारंग नांम

गज हय केहर गिगन गिर कंज प्रदीप कुरंग,
दादर चातुक सस दिनंद सिखी अळ सुर (सारंग) ॥—७१

हरि नांम

कपी केहर केकांण (कहि) अळियंद अरविंद,
वाघ गयंद कुरंग वन (चव) नभ कंचण चंद ।—७२
पावक पांणी पय पवन नाग गयंद नरंद,
गिर हरि गिरधर (सिमर गुण नित-नित वृज आनंद) ।।—७३

ध्रुव, सुमन नांम

(पढ़) निसचय ध्रूताळ पद जोगादिक (ध्रू जांण),
मन वसंत कुसमावळी (वळ) रिख सुमन (वखांण) ।।—७४

विटप, दान नांम

पलव श्रृंग विसतार पुन तर वृख (नांम वताय,
दांन देत) गजदांण (दख दांन) दांण (दरसाय) ।।—७५

रस नांम

नवरस घ्रत जळ नूतरस अम्रत विख (रस) ईख,
रस-विद्या वर प्रेम-रस (सदा रांम गुण सीख) ।।—७६

सनेह नांम

तेल घिरत मन प्रीत (तव सो सनेह तत सार,
'उदा' धर लै ध्यांन उर करलै नंदकुमार) ।।—७७

गउरी नांम

सुभ्र उदय कुळ जसवती उभ अप्रसतुत (आख),
दल गोरोचन देवकी (संग) नागौरी (साख) ।।—७८

हार नांम

उपवन रूपा ढिग अजय मुगता कुसम (मिळाय),
खेत (हार) खंगत खड़ी (जुगती हार जणाय) ।।—७९

क्षुद्रा नांम

नटी क्षेत्र उतपत निठुर असि वैस्यादिक (अेह),
मदमाखी खळजन (मुणै क्षुद्रा) खरकीखेह ।।—८०

वाह नांम

पवन खेत अस सिस (पढ़ौ) वहण मेघ परवाह,
(वाहण) रथ-इत्यादि (वळै विध वखांण मुण वाह) ।।—८१

कुश नांम

केथा कंवळ कीट (कहि) प्रातगथाईप्रीत,
कुथौकारज (कुश कहौ रनौ गना कुश रीत) ॥—८२

भाव नांम

पूज्य मनुज रस उतपती प्रीत पदारथ (पेख),
मनहुलास पुरणगया (विवधा भाव विशेख) ॥—८३

कुतप नांम

तिल कंवळ खग पात्र (तव) रालतं वर कुश छाग,
दोहित अगनी काल (दख गता कुतप कर) आग ॥—८४

भग नांम

श्री सूरज दिनकर सुखद महिमा (ज) ससि म्रगंक,
क्रांती संग्या सुभकळा सुभग जोन (भग रांक) ॥—८५

कीलाल नांम

नीर खीर घ्रत मेघ नद मद रव पुप्प (प्रमांण,
कव यतरा कीलल कहि जांणै गुणी सुजांण) ॥—८६

देव नांम

वाळक कुसटी नृप विविध वरखा गुण विवहार,
पत मुगतो जीवत प्रथी (वाळक देख विचार) ॥—८७

ललाम नांम

पुरख गुणी कोमळ (पढ़ौ) संवर स्निग्ध सेल,
भूखातमा विदग्ध (भण नांम ललाम) नवेल ॥—८८

श्री नांम

(रट) करता भरता रमा श्री अछर सुख सार,
(विवध आद ज्यूं रगण विध श्री श्री श्री ततसार) ॥—८९

• • •

एकाक्षरी नांम - माला

वीरभांण रतनू विरचित

श्री गणेसाय नमः

अथः एकाक्षरी नांम - माला लिख्यतेः

दूहा

कहत अकार ज विस्नू कूं, पुनि महेस मत मांन ।
आ ब्रह्मा कूं कहत है, इ—ई जुग मार जांन ।।—१

लघु उकार संकर कह्यो, दीरघ विस्नु स देख ।
देव-मात लघु री कहै, दीरघ दनुज विसेख ।।—२

लघु ल्रि—लॄ कार सुर मात पुनि, नागमात गुरु होय ।
ए जु कहत है विस्नु कूं, ऐ जु महेसुर सोय ।।—३

ओ ब्रह्मा जु अनंत औ, परब्रह्म अभिमांन ।
कविकुळ सब ही कहत यूं, अ महेसुर आंन ।।—४

क ब्रह्मा कूं कहत कवि, वाय सूर पुनि लेख ।
कहत आतमा सुख कूं, क प्रकास अरु लेख ।।—५

कं सिर कं जळ कंजु सुख, कूं धरती धर चित्र ।
कु······कू जांणियौ, वजु विवेक धरि चित्र ।।—६

खं इंद्रीय नभ खं कह्यो, खं जु सरग पुनि सोय ।
कहै सुपुन्य से खं सबै, खं······यूं होय ।।—७

अ : विस्णु, महेस । आ : ब्रह्मा ।
इ ई : मार । उ : संकर । ऊ : विष्णु ।
रि (ऋ) : देवमाता । री (ॠ) : दनुजमाता ।
लि (ऌ) : सुरमाता । ली (ॡ) : नागमाता ।
ए : विस्नु । ऐ : महेसुर ।
ओ : ब्रह्मा, अनंत शेषनाग । औ : परब्रह्म, अभिमान ।
क : ब्रह्मा, विस्णु, वायु, सूर्य, प्रकास, आतमा, सुख ।
कं : मस्तक, जल, कमल, सुख, पृथ्वी । कुं : विवेक, वजु ।
खं : इन्द्रिय, नभ, स्वर्ग, पुन्य ।

घंटा किंकणी मेघ सूं, कहै खकार सव कोय।
पुनि धुनि सूं घूक है, दक्ष गुणीजण लोय ॥—८

कहत ङकार जु भैरव वह, अरु जि विसन जिय जांन।
पुनि ङकार स्वर सूं कहै, चतुर चोर कहु मांन ॥—९

चंद ही कहत चकोर सव, अरु ज चोर कह मांन।
सोभा सूं सव कहत है, पक्ष सवद सूं जांन ॥—१०

छं निरमळ सव ही कहै, वहुरो विजुरी देख।
छेदन कूं कहत है कवि, पुनि जु संवर लेख ॥—११

कहत जकार जु वेग सूं, अरु जु तेज सूं कोय।
पूजा हूं सूं सव कहै, जेता जय न होय ॥—१२

कहत झकार जु झर रह, वहुरि नस्ट कहुं सोय।
पुनि झकार वंचक कह्यो, घर-घर स्वर ही होय ॥—१३

रूप विपयातमा, अरु जु गायन ही गाय।
जर जर सवद सूं कहत है, सवै लकार वनाय ॥—१४

ञ प्रथवी सूं कहत कवि, टं वायस वजु आंन।
कहत टकार जु इस्वरी, वरहू जु स्वस्त न मानि ॥—१५

कहत वकार विसाळ सूं, पुनि धन सूं सव कोय।
चंद मं उलहू कहत कवि, भ संकर ध्वनि सोय ॥—१६

ढक्का कूं ढ कहत कवि, ध्वनि निगूढ़ कह जांन।
पुनि णकार कहि जांन सूं अरु ज स्तुति तकार सूं आंन ॥—१७

ख : घंटा, किंकणी, मेघ, धुनि, घूक ।
ङ : भैरव । जि : विस्नु, जिय, स्वर, चतुर, चोर ।
च : चकौर, चंद, चौर, सोभा, पक्ष ।
छ : निर्मल, विजुरी, छेदन, संवर ।
ज : वेग, तेज, पूजा, जय ।
झ : झर, नष्ट, वंचक, स्वर, रूप, विपयात्मा, गायन । ल : जर-जर ।
ञ : पृथ्वी । टं : वायस । ट : ईश्वरी, मोर (वरहू), स्वस्ति ।
व : विशाल, धन ।
मं : चंद, उलहू (उल्लू) । भ : संकर ध्वनि ।
ढ : ढक्का (वड़ा ढोल), ध्वनि, निगूढ़ । ण : जांन ।

चोर क्रोध पुनि पुछि कहूं, कहूं तकार दे चित्त ।
भय रक्षण जु धकार कहूं, सिला समूहि मित्त ।।—१८

वेद दांन दातांन सूं, अरु कलित्र दं मानि ।
धांन धात धन बंधन हि, कहत धंकार सुजु आनि ।।—१९

कहत जांन विसवास पुनि, अरु ज निखेध नकार ।
नौ नावक कूं कहत है, पंडित समझ निहार ।।—२०

प वन पातरी पवन कहूं, कहूं पकार नित मित ।
रग रव सु सुप्त फकार कहूं, प्रगट जु तिन कहूं नित ।।—२१

झंझा वाय झकार कहूं, कहूं फकार भय रक्ष ।
निस्ट जला सु फकार कहूं, अरु फकार ही दक्ष ।।—२२

फूंकारै फूं कहत कवि, अफळ वचन फू आदि ।
पुनि वकार संग्रांम कहि, अरु प्रवेस कहूं माहि ।।—२३

भ नक्षत्र पुनि भ्रमर भ, दीपत भांनु भूप ।
भय का भीक सब, ता कहूं चित न भूप ।।—२४

चंद्र रुद्र सिर मा कहत, मा लछी परमांन ।
माल मात अस्ना भी, पुनि बंधन मूजी नि ।।—२५

संजमकाळ पकार कहि, सूर श्रेष्ट मन मांन ।
जांन जात अरु त्याग कहूं, बुधजन कहत सुजांन ।।—२६

कांम अनुज अस्तु वज्र पुनि, सबद रूप धरि चित ।
कहु रकार जल स्व वन की, रटन भय कहू मित ।।—२७

त : स्तुति, चोर, क्रोध, पुछि (पूंछ) । ध : भय, रक्षण, सिला, समूही, मित्र ।
दा : वेद, दान, तान । दं : कलित्र । धं : ध्यान, धातु, धन, वंधन ।
न : जान, विस्वास, निखेध । नौ : नाव ।
प : पवन, पातुरी, वन, नित ।
फ : फकार (ध्वनि) भय, रक्षा, निस्ट, (खराव) ।
झ : झंझावाय, फूं : फूंक । फू : अफळ, वचन ।
ब : संग्राम, प्रवेस । भ : नंक्षत्र, भ्रमर, दीपत, (दीप्ती) भानु भूप ।
मा : चंद, रुद्र, सिर, लछीं, माल, मात, अस्ना, वंधन, मूजी ।
य : संजम, काळ, सूर, श्रेष्ट, मन, जान, जाति, त्याग ।
र : काम, आग (अनल) अस्तु, शव्द, रूप, जल, वन, ध्वनि ।

इंद्र लवन दत्त व्याज पुनि, रहि लकार पर सिद्ध ।
ली स्लेख मलप सूं कहै, ल: निस्तक कहु विध ॥—२८

सांत्वन वर उर वीत कहूं वकार समरत्थ ।
गति नय नर गरु श्रेष्ट पुनि, कहूं वकार के अर्थ ॥—२९

कहत सकार परोख कूं, पुनि सोभा अति श्रेष्ट ।
ई कल्यांन ह कहत है, संजुकति पुनि प्रेस्ट ॥—३०

सयनकाज सी कहत कवि, वी दोउ सामांन ।
कहत खकार परोख कूं, ल सरीक हू ठांन ॥—३१

कहत खकार जु स्नेह कूं, अरु सूलाक हू मांन ।
हर हकार विचित्र है, हे संबंधन ठांन ॥—३२

कहत क्षकार जु क्षीम कूं, क्षमा क्षम का जांन ।
आद अकार लकार लौं, यह विध वरनत मांन ॥—३३

विहु-स्वन मुख सूं नित रक सट अस्टादस ही पुरांन ।
नांम-माळ एकाक्षरी, भाखी रतनू "भांन" ॥—३४

• • •

ल : इन्द्र, लवन (लगन), दत्त, व्याज । ली : श्लेख, मलप । ल : निस्तक, विध ।
व : सांत्वन, वर, उर, वीत (वित) समरत्थ, गति, नय (नीति या नगर) नर, श्रेष्ट ।
स : शोभा, परोक्ष, अति, श्रेष्ट । ई : कल्याण, संजुकति, प्रेष्ट । सी : सयन (रति) ।
वी : दोउ, समान । ख : परोक्ष, स्नेह, सूला, ह : हर विचित्र ।
हे : संबोधन । क्ष : क्षीम, क्षमा, क्षम ।

एकाक्षरी नांम - माला

कवि उदयरांम विरचित

अथ एकाक्षरी नांम - माला लिख्यते

दूहा

सार सार विद्या सकळ, समझै गुण ततसार ।
कीरत सार उदार कर, देसळ जगदातार ।।--१

श्री गणपत सरसुत सुमत, उकत वूवत अणपार ।
अनेकारथ एकाक्षरी, "उदा" करो उचार ।।--२

सुर अच्छर मात्रा सहित, एके अरथ अनेक ।
जुदी जुदी वरणो जुगत, वरणो नांम विवेक ।।--३

ऊंकार नांम

ऊं ईस्वर मुगती (उचर) केवळरूप (कहाय),
मंत्र बीज वाचक (मुणौ) पूरणग्यान (पढ़ाय) ।--४
अवय सरवारथ अवच (ऊं) प्रणवधुनअंग,
सरवबीज (घट-घट सदा सोहूं सात प्रसंग) ।।--५

अ नांम

संकर वृंमा श्री क्रसन अरक सिखा ससियंद,
पवन प्रांण सुखया प्रजा काळप्रमांण कवंद ।--६
आदंछर जगऊपनौ (गण न्यारा गुण नांम,
अ अछर यतरा अरथ सरभ जोत घणस्यांम) ।।--७

आ नांम

सिव सुरतर श्रम सरव गुण असतूत हय गय यंद,
चणकरिखी शुभ धांम चख (वद आ नांम विलंद) ।।--८

इ नांम

सिव रव सेनानी सुची अज अहि मनमथ यंद,
वरण विक्ष धनवांन विध व्याळ ससी (इ विंद) ।।--९

ई नांम

ईसुर कमला (वळ) अरुण वभ्र मुकर (वताय),
त्रीवंभया सुतवानत्रिय संक संवकस (सुणाय) ।--१०

दयावांननर (दातजै वदै नम) विदवांन,
(दीरघ ई के नांम दस गणौ एक) वृंमग्यान) ॥—११

उ नांम

नारदरिख प्राचीन रव संकर गवरी (सार),
स्वामीकारत तडत गम आशीवाद (उचार) ।—१२
रावन (नांम) चकाळ (रट) नगुण काळ ततरंग,
(उदैरांम धुर विहूं उकार उ लघु नांम) उतंग ॥—१३

ऊ नांम

पवन चंद रव हर पतंग पूरण दळद्री प्रेत,
विघ अगन मूरख वृवग (दीरघ ऊ कहि देत) ॥—१४

ऋ नांम

उमा रमा सर गर अनंत वृक्ष साळ नळ वांस,
गुर फूफी सुत नीचगुण (गहि) अदती (ऋ ग्यांन) ॥—१५

ॠ नांम

संकर विध सुरपत क्रसन यम वृखमांन वयंद,
वरण अधी नरवर (जपौ ॠ दीरघ परसंद) ॥—१६

ऌ नांम

अदती हर पंकज अरुण पापी अतक निपुंस,
नर हार्‍यो पाखंड (नित कहि) मलेछ (ऌ) कंस ॥—१७

ॡ नांम

महापुरुख नृप मुंढ़नर देविपुरुख चिह्न देव,
(कथा) कथा नवेख (ईकथौ भाख) पुंज कच भेव ।—१८
पापीनर अपद्वार (पढ़) वुधविना नरवाळ,
(ॡ दीरघ के नांम लख विध विध माळ विसाळ) ॥—१९

ए नांम

सेख जीव सूरज विसनु बाळक दुज दनु वांण,
नाती सकळी बुधनर उद्धत द्वेखी (आंण) ।—२०

(ग्याता गंथां भेद गण एक नांम यत पाद,
ए अई के भाखूं अबै निपुण सुणौ निनाद) ॥—२१

ऐ नांम

बचनबीज व्यापक विसव लोक सरूप (लखाय,
मुण) वछ्या सुरसुत मुकत (अई के नांम उपाय) ॥—२२

ऐ नांम [ग्रन्थांन्तरे]

नृप सिव विखम (रु) पूज्यनर क्रूर विविध कुलाळ,
उष्ट मूढ़ कप असुर (कहि) विखमायुद्ध (अई) बाळ ॥—२३

उ नांम

असुर जक्ष अज उतकष्ट अगस्तरिख ध्रू (आख),
जख कव मुखक मंजार (जप भेद) गुरड (ए भाख) ॥—२४

ऊ नांम

सेख विधाता मुन ससी सुखी जार लघु (साख),
स्वान दळद अभ (प्राय सुण ऊ) थळ (कव आख) ॥—२५

अं नांम

पंकज पूरण ब्रंमपर दुर वरक्त दुख (दाख,
श्रेष्ट भुजन श्रीकृष्ण रौ अं अवधा जग आख) ॥—२६

अः नांम

वीतराग विसरगविधी ठौड़ यती ठहराय,
सुध चाकर (फिर) विसन सुत (अध अहन्याय उपाय) ॥—२७

क नांम

अगन विधाता आतमा वरही रव वनवास,
जम किंकर (कहि) रूपजग (पुन) गणक परकास ॥—२८

का नांम

यळा सेस दिव (गण) अलप कायर रथ परकास,
(कहत) निरादर (कुं कवि यौं का नांम उजास) ॥—२९

कि नांम

रमा क्रपाण मघवांन रव करत्य सिकारी (काज),
कदुख अगन वालम (कहौ तव लघू कि सिरताज) ।—३०
प्रसन तुछ गुण जुगपसा निंदा (की वर नांम,
वळ) विचार औजग वृथा (रट 'उदा' श्री रांम) ॥—३१

की नांम

यळ कमळा हुग गय अही वृखभ गुलाबी रंग,
जारपुरख चीटी जिभ्या पुरख रसत्र (प्रसंग) ।—३२
वांस कुवध कुळ रोख (वळ दीरघ की गुण दाख,
उदैराम सव तज अबै रांम भजन मन राख) ॥—३३

कु नांम

तनक तळाई उरज तट सरस सबद भू (सोय,
लघु कु नांम कुग्रार लख जुगत अरथ गुण जोय) ॥—३४

कू नांम

कूप भूप गंभीर (कहि) मंघ पटाभर (मंड),
कुंभ (न) कुंजत सबद (कहि) खित (कू नांम प्रखंड) ।—३५
कारण द्रव भू आद (कहि) कारज (और) प्रकास,
(दीरघ कूं के नांम दख जुगती यती उजास) ॥—३६

के नांम

रतन खांण केकी (रटौ) अनुगिन प्रांण (उपाय),
कुण (के के यत्यादि कहि गोवंद रा गुण गाय) ॥—३७

कै नांम

क्लीब मद (रु) वळवंत (कै) सरसत पवन सुणाय,
पुरख प्रणत कंदप (पढ़) भारथी पवित्र (भणाय) ॥—३८

को नांम

सोक कनक चत्रवाक (सुण) वाळक कोप (रु) वाज,
(स्वांन जिकौ को नर विसध कथै नह हर गुण काज) ॥—३९

कौ नांम

आप वृखभ नर धिष्ट (अव) कंद्रप जम जस काज,
(कौ कव अवधा गुण कहौ श्रोता सुणै समाज) ।।—४०

कं नांम

कांम सीस सुख जळ कनक कंज अनळ (कहि नांम),
पय सुभ दुख (रु) जहर (पढ़ कं के नांम सकांम) ।।—४१

ख, खा नांम

खाई धर पंकज खिती कमळा (खा कहि नांम,
चरणां चत्र भज चाह सूं सो नित करै सलांम) ।।—४२

खि नांम

गवण नासकाछिद्र (गण) रतन रता क्षयरोग,
कवनिवास (वळ नांम कहि सुण खि नांम संजोग) ।।—४३

खी नांम

विध श्रंगाळ गुद मदन (वळ और) मळणगण (आख),
कुसळखेम (कुं खी कहै भेद यता खी भाख) ।।—४४

खु नांम

मदन विकळ गूघू मुखक सिखावांन सख धांम,
विध खद्योत (के नांम वळ लघु खु वरण लख नांम) ।।—४५

खू नांम

कवजन सुरगर सूर (कहि) जीव नखी (खू जांण,
खू) कंगर जीवादि खित (विण हर नांम वखांण) ।।—४६

खे नांम

कव खेद सभीद्वार (कहि खे) खेचर (सहि) खग,
प्रांण (नांम खे वळ पढ़ौ सिव भुज जात सरग) ।।—४७

खै नांम

सिव नदी गन भ्रात सुत (मुणौ मान खै नांम,
खै ए नांम वखाणिये रटो 'उदा' श्री रांम) ।।—४८

खो नांम

खंज अरुण अवराखवौ पुन्य खेड (कहि पात),
मांनसहत भय मंडमन (विध खो नांम विख्यात) ॥—५०

खौ नांम

ईस्वर मघवा भू अगनि जुगळ मोर भू (जांण,
कव यतरा खो नांम कहि वळ खं नांम वखांण) ॥—५१

खं नांम

सिव नभ यंद्री रिख सरग ग्रह नृप मुख सुन्य ग्यांन,
खंज (रु) खंजन छिद्र खलु (विध खं नांम विधान) ॥—५२

ग नांम

क्रसन गजानन राग कर पची पवन प्रधान,
प्रांण गंध जळ प्रीत (पढ़ वद ग नांम विदवांन) ॥—५३

गा नांम

उमा रमा गंगा यळा गिरा सकत वुध ग्यान,
चौज ग्यांन नाभ (गा चढ़ौ वळै) धनी वुधवांन ॥—५४

गि नांम

प्रंढ़ वाक्य सारद (पढ़ौ वळै) धनी वुधवांन,
गिरा रांम (गावै गुणां जै वुधवांन जिहांन) ।—५५
गुजा रव गुर वरण गण सुर (गीणि नांम सुणाय,
वृथा नाट गि हरि विना गोवंद रा गुण गाय) ॥—५६

गी नांम

सोभा त्री मदरा सुधा वांणी सकत (वताय),
वृ‍ंम एक समता विधि (गी वांणी गुण गाय) ॥—५७

गु नांम

आसवका अंतीगुण अरक प्रांण मनोज (रु) पाज,
कूकर खर भय जुगत नर मुर गुण पय समाज ॥—५८

गू नांम

(कहिया गुण) मळ नदकूल (कूं) लघू वृद्ध त्रिय (लेख),
सतथि वस्तु ग्लांणि सदा दुनी तमक (गू देख) ॥—५८

गे नांम

राग जमक पाप सट (रट मुण) छंद गीत मलार,
(गेय कमत के नांम गण एता किया उचार) ॥—५९

गै नांम

सिव रव सोक पळास गत (अत गै नांम उचार),
छटा सरव (अत छोड नै सिव गै नांम संभार) ॥—६०

गो नांम

तर घर वाणी सरग (तव) यंद्री खग जळ (आख),
छंद वचन दिव वज्र छिब सुरतर सुरभी साख।—६१
ग्लाळ बांण द्रप दर (गणौ) हसती वृखभ (कहाय),
किरण (वळै) रव सवद (कहि गो के नांम गणाय) ॥—६२

गौ नांम

क्रांती गणपत कुळ सद्रग (लख्य) लाज भू लाल,
देवलोक दिस वांण (दख) मसक जुगपती माळ ॥—६३

गं नांम

मलयाचळ हेमाद्री (मुण) गीत श्रष्ट गंभीर,
वाजा-राग-छतीसविध सरण तंत्रवती सीर ॥—६४

घ नांम

सुधरम गज सिव सिख सवद रव दधसुत घणराट,
ग्रहं (तज भुज अनंत कर घ के वळ कर धाट) ॥—६५

घा नांम

विध देवी धुन वसुमती असुरी सची (उचार),
निरग किंकणी थापना घार घातकी गार ॥—६६

घि नांम

अगत्रराना (अर) त्र वर (मुण) वड्ग धरम विसतार,
(कव घि नांम पछ्ठ कहि 'उदा' दीरघ उचार) ॥—६७

घी, घु नांम

द्रव घन वाळ कुमार दळ गुरगुर (घी के) सार,
अहि सठ घूक दयाळ (कहि तव घु नांम विसतार) ॥—६८

घू नांम

गज सुर घग गदरा गुदा गळ अग्यार अलूक,
नीलंबर (घू नांम लख 'उदा' पढ़ौ अचूक) ॥—६९

घे, घै नांम

कंब स्वान नौकी करा खीनी (घे कर ख्यात),
रव धरमी पापी सगर (सुन सुत घै दरसात) ॥—७०

घो नांम

यज धर गोह अहीर घर लोह अस्ववळ (लेख,
सबद वळै घो नांम सुण दुत घो भाखूं देख) ॥—७१

घौ नांम

अरुख ताळ देता अघी रव विवांण रट (नांम,
कहिवळ) वासकलाल (को सो तज भज घणस्यांम) ॥—७२

घं नांम

गत मलीन (घा) चित (गण) पापी नर पुन वांन,
(उचर नांम घं के यता विध भाखै विदवांन) ॥—७३

ङ (ड़) नांम

विखय प्रांण वळ भैरव (रु) अस चंचळ कुटवाळ,
(चवरादिक ङ 'ड़' नांम चव वद ङा 'ड़ा' नांम विसाल) ॥—७४

ङा (ड़ा) नांम

यळ अधरादिक यंदरा (पढ़ वळ लोक) पताळ,
(मुण) सुक्षमगत सुखमणा (गुणियण भज गोपाळ) ॥—७५

ङि (ड़ि) नांम

भय जुत अग सुछम (भणौ) द्रग दुगधा सुर (दाख),
दखणा दुज (कूं दीजिए भेद ङि पछ्यूं भाख) ॥—७६

ङी (ड़ी) नांम

(कव दीरघ ङी नांम कहि भेद हरि गुण भाख),
देवभूम यळ ककळ (दख) अहि नृप ठीवर (आख) ॥—७७

ङु (ड़ु) नांम

गिड़व पवन पावन अगन (लघु ङु नांम लखाय),
व्याधी अवधा अग बचन उखर धर (ङू आय) ॥—७८

ङे (ड़े) नांम

गज कपोळ पारद (गणौ) लाज स्यांम (कूं लेख),
अंजन कठण अमोल (कहि सो ङे नांम संपेख) ॥—७९

ङै नांम

पारासुर रिख (नांम पढ़) गंधक (नांम गणाय,
उदयरांम तीनूंयसा सो ङै नांम सुणाय) ॥—८०

ङो नांम

असतर पाडौ आरणौ (तव वळ) खचर तुरंग,
गवा-वंध सवदांगती सिहत दादुर (संग) ।—८१

प्राचत (व पुठै) स्यार (पर) सीह रुपहर (सार,
को) नाकढ़ मत (ङौ कहौ यतरा नांम उचार) ॥—८२

ङौ नांम

सस रव अगनी स्वारथी वैद भजन जंवाळ,
कंद-मूळ (अरथ कहि पढ़ौ) अजव (ङौ) पाळ ॥—८३

ङं नांम

जळ पय घ्रत सुख भग जहर चिहूर (वळे) चमूह,
श्रंग (वळै ङं नांम सुण) संगना माळ समूह ॥—८४

न नांम

आलंगन ज्वाला अगन सग गगा वदन (सुणाय),
ओक मनोहर पुन अरथ (क) अनुग चोर (रचाय) ॥—८५

ना नांम

(कहं) विप्रकनौजिया कन्या क्रगना काज,
(कवियण ना कै नांम कहि रटो रांम महाराज) ॥—८६

नि नांम

रव दिवाल निच गाय (रट) अजा पिड भग (आख,
लघू नि नांम एता लखो रांम नांम नित राख) ॥—८७

नी नांम

स्याही कंगरी हरतणी (वळ) हरजटा (वखांण,
कवियण फिर) गाया (कहै जुगत दीरघ नी जांण) ॥—८८

नु नांम

काळ वज्र सरद (कहै) धर भय जुत उपधांन,
(अवै नांम) नांडीयडा (वद नु नांम विदवांन) ॥—८९

नू नांम

सुरतर खग रव पवन सर ताळा गणिकव (तोल,
वळै) लोद पळ (नांम वण) वक (दीरघ नू बोल) ॥—९०

ने नांम

रव समूह सस क्रसन (रट) मन अस कीर (मिळाय),
सुपरण कंपत भैरी ससि (सो ने नांम सुणाय) ॥—९१

नै, नौ नांम

दूत चोर प्रेरक दुष्ट जुध (नौ नांम जणाय)
उद्यत नर गउ वृखभ अस मावत रस नौमाय ॥—९२

नं नांम

चंदन तिय पिय सुख चिरत द्रष्ट रष्ट दुखदाय,
भ्रमण जहर कव (नं भणौ एता नांम उपाय) ॥—९३

छ, छा नांम

केकी रव सस कुंज कर छिव पूरण (छ नांम),
क्रांती छाया हर ढकण रक्षक रछ्या (रांम) ॥—९४

छि नांम

कानि कुलाल सिकारी (कहि) काळ (रु) नीव कुठार,
(एक) विबुध अवधा (यता तव छि लघु ततसार) ॥—९५

छी नांम

अगत्रसना कटमेखळा सीव जीव मदसार,
(दाखो) कांती छछुंदरी (ए छी दीरघ उचार) ॥—९६

छु नांम

मसक जुगपसा कीर (मुण) त्रसना (सबद वताय,
कहिया छु नांम लघु कर कवि जुगती वडै जणाय) ॥—९७

छू नांम

थाट सवद गज मुरज थित खुधावंत त्रिय ख्यात,
भिछा (गण छू नांम मुण भुज हर संज प्रभात) ॥—९८

छे नांम

ऊखर फांसी यंद्रियां वेणी वसुधा स्याळ,
(कव यकमत छे के कहो दुमता नांम दिखाय) ॥—९९

छै नांम

देवलोक मदपात्र (दख) तीखीवस्तु (तोल,
कव) सेन्या (वरणण करो वरणौ छै कव वोल) ॥—१००

छो नांम

पवन अग पूरण पुणछ रोर श्रंगार (रचाय,
कांना कडमत छो कहो सुध छोह मै सुणाय) ॥—१०१

छौ नांम

केती वरक्त दकूळ (कहि) परवत वानर (पेख,
जांण) नार कव परम (जप) लटा पवन (छौ लेख) ॥—१०२

छं नांम

भू निरमळ धन ज्वाळ (भण) कुळ तट सिखर आकारा,
मुख जळ (छं के नांम मुण 'उदा' करो उजास) ॥—१०३

ज नांम

जनम संचारी जीव जड़ जैतवार नरजार,
(गण) संसारी जोगयौ (अहि निस रांम उचार) ॥—१०४

जा, जि नांम

(चवां) वृद्ध फांसी चतुर जोन (नांम जा जांण),
भडग जितंद्रिय रस भभक जीत (जि नांम जनाय) ॥—१०५

जी नांम

वादकरण मिठासवचन जवा जीव जग (जांण),
हरसेवा (गण) राग हिन ('उदा' लघु जि आंण) ॥—१०६

जू नांम

प्रभुजन मित्र पिसाच नभ वाक्य गनज सिघ्र व्याळ,
जीरण (दीरघ जू जिकै सुण कव नांम विसाळ) ॥—१०७

जे, जै नांम

सुन समूह केहर सजय (जे को नांम जणाय),
सुरगुर पुख रव विध सरभ अगन (नांम जै आय) ॥—१०८

जो, जौ नांम

आसण सहि सिंगार अज रसण कमळ (जो रीत,
जो) वचि चिनी जारसुत (वळ) जवान (जौ) वीत ॥—१०९

जं नांम

कंज जनम प्रापत कनक मछ (भयौ) रजमंड,
जंत्र मंत्र (तज) जगतपत ('उदा' भजौ अखंड) ॥—११०

झ नांम

मैथन कर कुरकट (रु) मछ निरझर अंब निदांन,
नम पयांन पिय नष्ट (गण विध झ नांम विधांन) ॥—१११

झा, झि नांम

रजत जात नागर रटौ झालर घड़ियां झाल,
पल सुर मावत कपहरणू (लघु झि नांम विध लाल) ॥—११२

झी, झु नांम

गज हथरणी धन वेत (गरण) कांम (पढ़ौ झी काज),
जोन नमत वीरज जरा सास्त्र (झु कहि सिर ताज) ॥—११३

झू नांम

सौध अधू अरव स्वारथी देव झूठ समदाय,
वाव (नांम झू वडौ गोविंद रा गुण गाय) ॥—११४

झे नांम

रांम लखमण (झे रटौ) मरजादा ससमंड,
वन चमार (झे वळ) वनी (एता नांम अखंड) ॥—११५

झै नांम

सुरगुर क्रलि आतम सरव करभ-झैकतां-काज,
गुर (वळ) मईथुनकेगुरणी (सो) सरग धूांण समत क्रिया।
(पग झौ पाठ पुरांण ऊ झै नांम समाज)* ॥—११६

झो नांम

क्रांति नृप गोकळ करन प्रात श्रवण (झो) पांण ॥—११७

झं नांम

अगत्रसना मईथुन (मुणौ) भैरू झंप (भणाय),
झणतकार सुर झंझकै (अै झं नांम उपाय) ॥—११८

ञ नांम

धरम अगन भय धारणा दान पुन्य (दरसाय),
घरघरवुन (सो) ग्यान घण (सो ञ नांम सुणाय) ॥—११९

ञा नांम

नाग निवारण रासभणी जरा पुंज श्रम (जांण,
वळ) निरवेद नानावचन वांममुख (वाखांण) ॥—१२०

---

* स्पष्ट नहीं है।

जि, जी नांम

श्रक्षा वृध राजा अगन प्रापत (गो नि प्रकास),
भयजुतदेवळ वलभ मद पाखंडी (जी) पास ॥—१२१

जु, जू नांम

वियमुख दादुर मंदतनु (वळ मुवेख वाखांग),
तव) सुथांन मदमस्तनिग जवा सोर (जू जांण) ॥—१२२

जे, जै नांम

सोनो (रु) प्रिय वरवत तुल्य संध (जे नांग गुणाय),
मा पंनाळी असत महि पिपरी (जै परठाय) ॥—१२३

जो, जौ नांम

सीमा प्रोढ़ा देतसुत पळास (जो) परमाय,
वनन कीर पगजाळ वृख दोभ (नांम जौ दाय) ॥—१२४

ञं नांम

ग्यांन कमळ परिवृम (गण) द्रग धृत (ञं गुण दाख,
पांच वरण च छ ज झ ञ पढ़ सुण ट ठ ड ढ ण साथ) ॥—१२५

ट नांम

देवदार पीपळ (दखौ) जातरूपक (जांण),
रागफिरै (वळ) सुभट (रट) मूत्र कच्छप (ट आंण) ॥—१२६

टा नांम

वाडवानळ पाठी वसत्र सुक रटएग सुर सिध,
(कवियण यता टा कहो प्रभता नांम प्रसध) ॥—१२७

टि नांम

पुतळी गिरतळ सुर विपुळ हथणी हटी (कहाय),
भू खंम्य (ए सात भण लघु टि नांम लखाय) ॥—१२८

टी, टु नांम

गोम ग्रीव क्षति मेघ गिर वेपाला (टी नांम),
कर टंकन कुरकट मुकट सिखा (टु) चक्रघणस्यांम ॥—१२९

टू, टे नांम

दौड़ वहन रिध नंद मरु, भय छाया (टू) भार,
जांन नांन खग जोखता सकत (नांम टे सार) ॥—१३०

टैं, टो नांम

भतीज नभ धन अंध भख अरि पोता (टै आख),
श्रीफळ धुन चंपक सिखा रद गुर (अै टो राख) ॥—१३१

टौ, टं नांम

दावानळ छत वृखभ दध नीत पुरख (टौ नांम),
अंकुस द्रग सुत भ्रूह यळ भ्रत (रु) गहड़ (टं नांम) ॥—१३२

ठ, ठा नांम

ससि गुर ग्यानी सिव क्रसन वेग मेघ वाचाळ,
पूठ धनी सुन (नांम पढ़) मेद रख्यक (ठहमाळ) ॥—१३३

ठि, ठी नांम

वेद छंद निस्चे कुंवर सुर (ठि नांम) सिखराळ,
छंदी सुतजा छुंध छय कुळ कुटुंब कुटवाळ ॥—१३४

ठु नांम

रोगी माखी कदम (रट) दळद्री रज जमदूत,
त्वग (लघु ठु नांम तव भाख वडै अदभूत) ॥—१३५

ठू, ठे नांम

रमा मुकंद वुध प्रीत (रट) धरज धरम (ठू धार),
संख्यप मन वामण सिखा सेस थांन (ठे सार) ॥—१३६

ठै, ठो नांम

सास्त्र व्यास नभ मूढ़ सिख भग्न घट्ट (ठै भाव),
रक्त पीड सिर मूरखता नखतुल्य (ठो) निरभाव ॥—१३७

ठौ नांम

गोतम रिख दध वेल (गण गणौ) जीवका ग्यांन,
धार मरजादा कुळधरम (सुण ठौ नांम सुग्यान) ॥—१३८

ठं नांम

सरद नीर मदरा सुधा सुन्यर निृमळ वसंत,
छिद्र (नांम ठं कहि छय दूजा नांम वदंत) ॥—१३९

ड नांम

गौधन सिव गन डमरु पारथ धुन (जप सार),
ताड़वृख वृधपण (तवौ ए ड नांम उचार) ॥—१४०

डा, डि नांम

रव भू भूत उमा रमा डाकन वैतरी डार,
(पुरख उमापदकीत पढ़ तव डि नांम विसतार) ॥—१४१

डी नांम

आसण हरड़ै आंवळा सांकळ नभ (दरसाय),
समंद फीण (डी नांम सुण लघु र वडै लखाय) ॥—१४२

डु नांम

सिवा रवत चख थंभ सकति (कहि) दधवेळ कपोत,
(लोडे डु के नांम लख 'उदा' वडै डू वोत) ॥—१४३

डू, डे नांम

मोर कळावंत विध मदन वाळक (वडे डू वास),
धरमराज जिह म्रग धरम (वद डे नांम विसेस) ॥—१४४

डै, डो नांम

कोयल कास सित (रु) वृख करन श्रुत (डै नांम सुणाय),
प्रौढ़त्रिया पापी मुगध पाप (नांम डो पाय) ॥—१४५

डौ, डं नांम

नर हर पत गऊ जारनर (कर डौ नांम कहाय),
पय जळ म्रत रद द्रग चंपक (ल कर डौ फिर डं लाय) ॥—१४६

ढ नांम

ढोल भैरवा जंत्र ढकण म्रग दंस खर मंजार,
स्वाद सवद निरगुण (सदा ए ढ नांम उचार) ॥—१४७

ढा, ढि नांम

गी पलास नाभी गदा अज मेंरु (ढा आख),
गुडी ढेल निंदा गदा भूख लिंग (ढि भाख) ॥—१४८

ढा, ढु नांम

मत वीलो ब्रंमचार सिख कु खर वृछ (ढी कांम),
करम दुष्ट गज सूर कप जिभग (ढु लघु जंप) ॥—१४९

ढू, ढे नांम

पाज अधरम (नकु) वप थर हथनी (ढू) हरताळ,
हींग खाल पुरवर महर मन अग गढ़ (ढे माळ) ॥—१५०

ढै, ढो नांम

मेघ छठा बगपंत मदन वुढ़ण आस (ढै वृंद),
सुख प्रधान साधन धनी रोम पंत (ढो) रंद ॥—१५१

ढौ नांम

चंपक पंकत सुगंध (चव) जमो सजन सुर (जांण),
मेवासी मानी दुष्ट (विध ढौ नांम वखांण) ॥—१५२

ण नांम

कूप घ्रांण वंवूळ (कहि) क्षाम जैत मछगात,
मेधा निरफळ वक्रमग (सो ण नांम सुणात) ॥—१५३

णा, णि नांम

हरख नाभ विध वह्नी रुच अजा (नांम णा आख),
हरि करी (र) नद भीम अहि ससि (प्रकार णि साख) ॥—१५४

णी, णु नांम

श्रेणी चख जळ ईश्वरी सुरगत्रियां (णी सार),
हथणी धर अहि पास कर वांणी वंस (णु) वार ॥—१५५

णू, णे नांम

जम रव करंद सिव जह्ना जरा अगन (णू जांण),
मोजा कंगुरा विडंग मिनी अस लंपट (णे आंण) ॥—१५६

णै, णो नांम

लाभ शिवा हर रांम दळ जंबू (णै के जांण),
सर खर प्रमांण (गुण वळ) रक्षक (णो वांण) ॥—१५७

णौ णं नांम

मीन भार माया (मुणी णौ के नांम मुणंत),
नभ सुगंध लछमण दरण वन जंभाय (वणंत) ॥—१५८

त नांम

सुख तीरथ अब सूगना चोर मोक्ष भव चित्त,
तत छिद्र रूप (र) आतमा (त्यूं) हिय थांन (तवित) ॥—१५९

ता नांम

तान ताळ मा ऊंच त्रिय (त) छठी विसतार,
शिवा ईरा मईथुन वस्त्र तरण पुरख तिलतार ॥—१६०

ती, तु नांम

नट जट वेली दध नदी सकळ पांत (ती सार),
रमा कमळ सुरपुर रवत कष्ट (तु वाक्य उचार) ॥—१६१

तू, ते नांम

असुध जुध कर अंगुरी तुछ कटाछ (ते क्षत्र),
यमुजळ नासा सुर असुर सुत ग्यान (ते सत्र) ॥—१६२

तै, तो नांम

मोह हेत प्रक धनि समर कांति (तै परकास),
वरण स्यांम (र) वमन विघन (ए तो नांम उजास) ॥—१६३

तौ, तं नांम

आचारज यळ (मांन) अज सरळागर (तौ) संग,
(पुन) फळ जुग सुर अपल चरण भ्रमण (तं) चंग ॥—१६४

थ, था नांम

गिर गणपत (र) वद (र) गुरड अधर छाक (थ आख),
दुत धर मुरज मंदाकनी (भेद नांम था भाख) ॥—१६५

थि, थी नांम

वृखभ जमा गोदावरी नींद गळांण (थि नांम),
दध रेवा वृण नींद की (वे विचार थी) वांम ॥—१६६

थु, थू नांम

अविद्या क्रूचील पिक उचष्ट विसन भूठ (थु) त्याग,
दासी मुतफिर दास (कहि) पारासर (थू) पाग ॥—१६७

थे, थै नांम

संबोधन वरलळ सुगंध ताल वास (थे तोल),
ताळ कील सुर उरध (तव) वृद पूरण (थै बोल) ॥—१६८

थो, थौ नांम

तर मन सुत नरसिंघ चतुर (ए थो नांम उचार),
संग गमण मन अष्टसिध (सुणौ) मोह (थौ सार) ॥—१६९

द, दा नांम

दवण देवगण खग दया साधु अपल (द) सार,
रीझ दता धर सुभ रमा दियन हार (दा धार) ॥—१७०

दि, दी नांम

दाता पाळग दसदिसा द्रग पाळग (दि दाख),
स्वामी दांनी सस सुधा, आसागत (दी आख) ॥—१७१

दु, दू नांम

दळद्री कर गज सुंड दुख प्रधान दुरत प्रचंड,
दुख विकार संताप दिल मोहनी (दु दू मंड) ॥—१७२

दे नांम

सिवा पुरांण अढ़ार (सुण) रूपारेल (रचाय),
सुकव तिया (के नांम सुण) दांम (वळै दे दाय) ॥—१७३

दो, दौ नांम

वृखभ दैत लट सिंधवन जांण दांन (दे जास),
नावस लिंग कर पाय निस दोख (नांम दो रास) ॥—१७४

दौ, दं नांम

समरथंभ दळद्री समर प्रांगण काज (दौ पेख),
दनुत्रिय सुरनर करभ दंभ अध जुग दंड (दं देख) ॥—१७५

ध नांम

विध कवंध गणपत विष्णु नाथ वचन धनवांन,
(वळै) कुलाल कुमेर (वद) खटमुख (ध) व्याखांन ॥—१७६

धा, धि नांम

यळ कमला सारद उमा धारण (धा के धार),
धरम धिकार सतोख धर (सुण) आश्रय (धि सार) ॥—१७७

धी, धु नांम

चित्रक मेधा थरज चित दीपक (कूं धी दाख),
तन धोवी कंपत पवन यधक दौड़ (धू आख) ॥—१७८

धू नांम

धूरत कंपण अगन धुज सिव गज कर (कहिसार),
चिंता भार विचार चित (ए धू नांम उचार) ॥—१७९

धे, धै नांम

पारसनाथ वृख धरम पिव क्रष्ण धरण (धे) काज,
रावण ग्रीव सुग्रीव रट पठ आश्रय (धै) पाज ॥—१८०

धो नांम

सुखद धरम सागर सकट अरथ रूपनद (आंण),
वृखभ (नांम धो को वळै जुगत यसी विध जांण) ॥—१८१

धौ, धं नांम

धर वांणी देवळ धरम तट (धौ नांम वताय),
दांन सुखासण मांन द्रव धूण तक्षन (धं) धाय ॥—१८२

न नांम

प्रफुळत तरु पंडत प्रभू अन्य बंधन अहमेव,
नत प्रमांन नौका (मुणै भणनकार गुण भेव) ॥—१८३

ना नांम

वनता मुख किरपणवचन निपुण वाद नाकार,
प्रतखेधर अव्यय (पढ़ौ ए ना नांम उचार) ॥—१८४

नि, नी नांम

दळद्री निस्चय दुरगती नरत स्यांम (नि धार),
प्रेम अगद नृप प्रपति अतिसय (नी उचार) ॥—१८५

नु, नू नांम

वन विदेह वप वाळ वळ न्यूंनस्कति (नु नांम),
नूपर दंपति कंठ नित त्रिया वांण (नू ठांम) ॥—१८६

ने, नै नांम

स्वान अयन चख समवृत्ती वैत छडी (ने वाच),
सिख म्रग श्रव सित सुध वरक्त (रटौ) न्याय (नै नांम) ॥—१८७

नो, नौ नांम

(रट) प्रतखेध नम थरगण खटमुख मौल विख्यात,
(पढ़) दळद्री सुर जुगपुरख (ए नौ नांम उदात) ॥—१८८

नं, नांम

सुख द्रग जग सिंगार श्रव हरख नांम गज (होय),
कंत स्यांम (मिळसी कदै जुगत नांम नं जांण) ॥—१८९

प नांम

पापी रव रक्षक पवन वृख गुर भूप (बखांण),
सिंघ कांम पीवन (सुणौ पढ़ प नांम प्रमांण) ॥—१९०

पा, पि नांम

सिवा पांन खग रज सुधा पीवन (औ पा नांम),
विसम जोन भीसम पवत्र सिख (पि नांम) सुरधांम ॥—१९१

पी, पु नांम

पीड़ हेम अय हळद (पढ़) संम्रत पपोलक साख,
पुत्र पारह प्रापत पुरख दोभ (नांम पु दाख) ॥—१९२

पू, पे नांम

पूरण नभ पूरब नगर गंगा वपु (पू ग्यांन),
पेटी पीवन भोग पख अंड नीर (पै ग्रांन) ॥—१६३

पै, पो नांम

श्राव नीरज टका रागा सुंदर (पै दरसाय),
पिंड सुत वृध समारा प्रभू (ग पो नांम उगाय) ॥—१६४

पौ, पं नांम

पांन पुरख गिरजळ प्रभू (पौ के नांम पढ़ंत),
पय पवन रण जळपुण्ट कीच (नांम पं) कंत ॥—१६५

फ नांम

पाप फीण बरखा पवन माघ मास मा पुन्य,
(कहि) बुध बानन (रु) माघ (कव पढ़ फ नांम) प्रसन्न ॥—१६६

फा, फि नांम

गरळ तीरथ वैठक गुदा भरथ डगा (फा भाग्व),
काळचक्र वृध राकसी दाह जठुर (फि दाख) ॥—१६७

फी, फु नांम

गयौ कारल सुर पवन गज (ले फी नांम लखाय),
काती (लो) काती क्रतग गुण विलंव (फु गाय) ॥—१६८

फू, फे नांम

सरव फूक रिण भू सरण वृथावचन (फू वाच,
अधकागण कीहो भ्रमण रटै नांम फे राच) ॥—१६६

फै, फो नांम

साख लाल अनखुलि कुसम रित वसंत (फै रीत),
फो फळ वैधृत काळ फळ वांभ स्यांम (फौ) वीत ॥—२००

फौ नांम

सेस द्रोण सरबन सपती गंगा चारज (गणाय),
मेर गुफा रणमंड (तू सो फौ नांम सुणाय) ॥—२०१

फं नांम

सुल्य भुजन संभारवौ स्वाद मनोहर सार,
छिद्र (ग्रौर) फालगुनी छटा भगनी (फं संभार) ॥—२०२

ब नांम

बोल निबोली बबकरन प्रतबिंबत (कहि पात),
कळस पुलत सुर (फिर कहै वद व नांम विख्यात) ॥—२०३

बा, बि नांम

बाळक बहनी नरबदा (कही) बात (बा किध),
विख ससी नभ धर फल वयण पूरण (बि परसिध) ॥—२०४

बी, बु नांम

बिरह बेल निस नृप विनय श्रव खिजूर (बी) साल,
कुस त्रुस म्रग जळ छत्र (कहि) चक्र बाळध (बु चाल) ॥—२०५

बू नांम

अरक तूल बंबूल (ग्रख) वृख ग्ररजुन गुरवाच,
साद सूर (बू गुर सुणो रैणव पढ़ गुण राच) ॥—२०६

बे, बै नांम

जिग क्रम पोहित नीचजन साखी (बे) संसार,
करण अरुण बालक श्रवन वच सत (बै बिसतार) ॥—२०७

बो नांम

बकरो दाढ़ी जांबुफळ (युं) पग स्वास उसास,
प्राणादिक (बो नांम पढ़ 'उदै' कियो उजास) ॥—२०८

बौ, बं नांम

गौडा धातु गंग (गण) सिंघासन (बौ सार),
वळ (वळ) देव संभारवौ ग्रसत (बं नांम उचार) ॥—२०९

भ, भा नांम

भारगव ग्रलि जळ नभ ससि सेवा रिख भय (साख),
जस मद निस दुत श्री उजळ (भा) मरजादा (भाख) ॥—२१०

भि, भी नांम

तीर प्रेम रोहण तिया भैरव मेरु (भि भाख),
भीम बभीखण अहि (र) भय (सो) दीवाळ (भी साख) ॥—२११

भु, भू नांम

कग भग्न वेसक अहि करग (ए भु नांम उपाय),
(ज्यूं) नृप भूखण संतजन (भयौ भू नांम संभाय) ॥—२१२

भे, भै नांम

भेर कंप भैरव गुरड भेद छेद भय (भाय),
राग वरन ब्रह्मा रमा जग (भै नांम जणाय) ॥—२१३

भो, भौ नांम

संबोधन नवग्रह सरप मिंदर धर (भो मंड),
तन मंगळ प्रातर भस्म (ए भौ नांम अखंड) ॥—२१४

भं नांम

अलि जळ रव उडवन रचति सिख (भं नांम संभार),
(भभ अछर के नांम भण) वयळ कळा (विसतार) ॥—२१५

म, मा नांम

सिव समूह नृभ गयंद सिर ससि रण रांम (म सार),
गिर जाळंधर मांन गत पीडथकौ (मा पार) ॥—२१६

मि, मी नांम

मील दया (रु) प्रमांण भू विसनंतर विमेक,
रमा जती मदवौ करग (पढ़ प्रमांण मी पेख) ॥—२१७

मु, मू नांम

पायौ उप सम मुष्ट रिख वहुचीजां (मु वोल),
वंधण प्रक घण चक्र वळी सठ (मू नांम संतोल) ॥—२१८

मे, मै नांम

वृखभ मेघ उपमेय (वळ) चातक (मे कहिचाव),
रगण स्वारथी रव प्रणत मित्री (मै समभाव) ॥—२१९

मो, मौ नांम

मोती तिय पारद मुगत मोह अंछ्या (मो मंग),
नभ कलाळ वडवानळा (पढ़ मौ) मुगत (प्रसंग) ॥—२२०

मं नांम

मंगळग्रह खळ गुड़ मिलण सुंदर रूप (सुणाय),
मंगळगीत उछव (मुदै ए मं नांम उपाय) ॥—२२१

य, या नांम

सिवा सुतन ईसुर पुरख खवन (नांम यह ख्यात),
जोत रमा कुलजा प्राप्त तिय नर जळ (या) तात ॥—२२२

यि, यी नांम

जळ जुध दोहण कमळ जय (यि पिछ नांम उचार),
गज कुठार ऋतुडंड (गण) तरसारथी (यी तार) ॥—२२३

यु, यू नांम

सरप जोख जिग अळसिया मिश्र (नांम यु मंड),
जिग अम्रत नर डरत जूय थंभ (बोल यू) थंड ॥—२२४

ये, यै नांम

साय जोग नर रव सजन (ये के नांम उजास),
जळ पल सिसियंद धनंद जुग (पढ़ि यै नांम प्रकास) ॥—२२५

यो, यौ नांम

जोत जोजना जोग पग सुण संयोग (यो साख),
सिख प्राचीदिस कण स्वरग भेद सुपुत्र (यौ भाख) ॥—२२६

यं नांम

क्लीव वसंत एकादसा रांमकरण पसु रेस,
(वळै) जंत्र (यं नांम वद एकाक्षर उपदेस) ॥—२२७

र, रा नांम

दध धुनि रव रक्षक मदन सिख कपाट रस (र) संग,
राह हेम घन क्रुध रमां पाट श्री द* (रा) पंग ॥—२२८

---

*मूल प्रति में स्पष्ट नहीं है।

रि, री नांम

रावन कळस कपूर रिध भवरि (नांम भणाय),
सिख नवोढ़ा कामी कृष्ण भ्रांति भगी (री भाय) ॥—२२९

रु, रू नांम

रव भ्रग रुई डर रुदन भाजनसबद (रु) भास,
विध नृप कांम गजी वयन कुलाल (रू) प्रकास ॥—२३०

रे, रै नांम

नीच कांग सुख खेद नभ वायस (रे विख्यात),
राजा सुख धर स्यांम रंग (रै) मनोज (दरसात) ॥—२३१

रो, रौ नांम

उदर-रोग रिख गद असह् ग्रसना (रो कहि तास),
क्रोध रौद्ररस ईस (कहि) जटा सरग (रौ जास) ॥—२३२

रं नांम

गीरा रुदन रत रंग सुख धन (रं अवधा धार,
र रंकार एता रटै 'उदा' नांम उचार) ॥—२३३

ल, ला नांम

चिह्न काळ सार सचवर यंद चलण (ल आख),
रक्त रंग तियवाळ रत (भणौ) रमा (ला भाख) ॥—२३४

लि, ली नांम

सरप विछी दासी सखी सुखक (पिछ् लि माप),
अलि लीलाधर मिलण यळ (त्यूं) सखी (ली परताप) ॥—२३५

लु, लू नांम

भू माळी छेदन भखी लोक (लु नांम लखाय),
लोप काळ छेदन प्रलै गुदा रुद्र (लू गाय) ॥—२३६

ले, लै नांम

दान तार सुत रांम दख (ले) गी वस्तु मलीण,
रांम प्रलय उमया रमा करुणा (लै नांम कहीण) ॥—२३७

लो, लौ नांम

सिला मीन सिकार (तव) प्रभू मोह (लो) प्रीत,
विधपथ भूखरा चोर (वल) मारुत (लौ कहि) मीत ॥—२३८

लं नांम

लोक वचन सुख सोय लय (नांम चिन्ह के नांम,
लख यव ले लं नांम लख सिमर सदा घरणस्यांम) ॥—२३९

व नांम

वरण सुखी उपमा सिव (ही) अव्यय अरथ (उचार),
पवन (वळै व नांम पढ़ सुकव सुरगौ तत सार) ॥—२४०

वा, वि नांम

अंवा विकलय हेत अति (अवय म वण वा आरण),
रव सिसं दध पंछी गुरड (वळ वि) लवौ (वखांरण) ॥—२४१

वी, वु नांम

सास्त्र वेल गंगा विसनु सुभट (वी सार),
प्रात प्रदोख (रु) घरणपटल (वळ वु नांम विसतार) ॥—२४२

वू, वे नांम

अरक तूल वहु सरव यभृ कबूतरा (वू) काज,
वेद पलव सुरतर पिपर (सुरगौ) वेग (वे साज) ॥—२४३

वै, वो नांम

(अव्यय निश्चय वळ अरथ) क्रष्ण सरग (वै किध),
विनय सप्तसुर काल वृख सारथि (वो परसिध) ॥—२४४

वौ, वं नांम

वडवा उडवा पांन (वळ) खग सुत (वौ विख्यात),
अरुरण वस्त्र चख दही उरज सुख (वं नांम सुरणात) ॥—२४५

श नांम

अपरुख भोजन सिव उमा हिमगिर शक (कहि होय),
रंग गौर सिख्या रमा सागो गी (कहि सोय) ॥—२४६

रि, री नांम

रावन कळस कपूर रिध भवरि (नांम भणाय),
सिख नवोढ़ा कामी कृष्ण भ्रांति भ्रगी (री भाय) ॥—२२९

रु, रू नांम

रव म्रग रूई डर रुदन भाजनसबद (रु) भास,
विध नृप कांम गजी वयल कुलाल (रू) प्रकास ॥—२३०

रे, रै नांम

नीच कांम सुख खेद नभ वायस (रे विख्यात),
राजा सुख धर स्यांम रंग (रै) मनोज (दरसात) ॥—२३१

रो, रौ नांम

उदर-रोम रिख गद असह त्रसना (रो कहि तास),
क्रोध रौद्ररस ईस (कहि) जटा सरग (रौ जास) ॥—२३२

रं नांम

सीस रुदन रत रंग सुख धन (रं अवधा धार,
र रंकार एता रटै 'उदा' नांम उचार) ॥—२३३

ल, ला नांम

चिह्न काळ सार सचवर यंद चलण (ल आख),
रक्त रंग तियवाळ रत (भणौ) रमा (ला भाख) ॥—२३४

लि, ली नांम

सरप विछी दासी सखी गुखक (पिछ्रू लि माप),
अलि लीलाधर मिलण यळ (त्यूं) सखी (ली परताप) ॥—२३५

लु, लू नांम

भू माळी छेदन भखी लोक (लु नांम लखाय),
लोप काळ छेदन प्रलै गुदा रुद्र (लू गाय) ॥—२३६

ले, लै नांम

दान तार सुत रांम दख (ले) गी वस्तु मलीण,
रांम प्रलय उमया रमा करुणा (लै नांम कहीण) ॥—२३७

लो, लौ नांम

सिला मीन सिकार (तव) प्रभू मोह (लो) प्रीत,
विधपथ भूखण चोर (वल) मारुत (लौ कहि) मीत ॥—२३८

लं नांम

लोक वचन सुख सोय लय (नांम चिन्ह के नांम,
लख यव ले लं नांम लख सिमर सदा घणस्यांम) ॥—२३९

व नांम

वरण सुखी उपमा सिव (ही) अव्यय अरथ (उचार),
पवन (वळै व नांम पढ़ सुकव सुणौ तत सार) ॥—२४०

वा, वि नांम

अंवा विकलय हेत अति (अवय म वण वा आण),
रव सिसं दध पंछी गुरड (वळ वि) लवौ (वखांण) ॥—२४१

वी, वु नांम

सास्त्र वेल गंगा विसनु सुभट (वी सार),
प्रात प्रदोख (रु) घणपटल (वळ वु नांम विसतार) ॥—२४२

वू, वे नांम

अरक तूल वहु सरव यभू कवूतरा (वू) काज,
वेद पलव सुरतर पिपर (सुणौ) वेग (वे साज) ॥—२४३

वै, वो नांम

(अव्यय निश्चय वळ अरथ) क्रष्ण सरग (वै किध),
विनय सप्तसुर काल वृख सारथि (वो परसिध) ॥—२४४

वौ, वं नांम

वडवा उडवा पांन (वळ) खग सुत (वौ विख्यात),
अरुण वस्त्र चख दही उरज सुख (वं नांम सुणात) ॥—२४५

श नांम

अपरख भोजन सिव उमा हिमगिर शक (कहि होय),
रंग गौर सिख्या रमा सागो गी (कहि सोय) ॥—२४६

शि, शी नांम

मुरज नाट्य सेवक कमल (लघु शि नांम लखाय),
सिया भाग सीतल वस्तु सिसु प्रवीण (शी भाय) ॥—२४७

शु, शू नांम

पल पलास ससि सुक उपल (शु) कैलास (सुणाय),
खेत्र सोक सिव खंड नर (वळ) सुद्र (शू कहवाय) ॥—२४८

शे नांम

सेस सिखर गिर सरस तर पढ़त कीर (शे पाठ,
उकत नांम एकाक्षरी 'ऊदै' कथी उदात) ॥—२४९

शै नांम

सीतल वरक्त सिव धरम धुंधमार नृप (धार),
गैंद (वळै) वैसंध (गण विध शै नांम विचार) ॥—२५०

शो, शौ नांम

शोक दोख थिर पवत्र सुण मंड त्रभुजा (शो मंड),
संख उपासन जप सनि वाळक (शौ) वळवंड ॥—२५१

शं नांम

सुख सरीर सुभ सणी सुमर रक्षक रोग (रचाय,
'ऊदैरांम' एकाक्षरी सो शं नांम सुणाय) ॥—२५२

ष, षा नांम

सिषख खंजर नभ श्रेष्ट (सब्द नांम ष सार),
गधी तीड रेखा (षा) गुफा सावू (नांम षा सार) ॥—२५३

षि, षी नांम

पवन घूक सुरमुख कपट प्रवल (षि नांम प्रकास),
जम म्रतग हसतु बली (ए षी नांम उजास) ॥—२५४

षु, षू नांम

हय नख खर पुंज कौहक हय (लघु षु नांम लखाय),
विधु निसचरा मलेछ बुध (नांम) केत (षू न्याय) ॥—२५५

षे, षै नांम

संक खेद नभ साथ (सुण ए षे नांम उपाय),
कठणवस्तु घर बाळ (कहि) वट (षै नांम वताय) ।।—२५६

षो, षौ नांम

तन मलीण नर षंज (तव) विचार (षो विदवांन),
भू बुध रव (गण) भूख (वळ) मित्र (षौ) संगना (मांन) ।।—२५७

(षं) नांम

(ए) मधु धार यंद्रियां नभ (गण षं के नांम,
'उद्दैरांम' हर नांम उर सिमर सदा घणस्यांम) ।।—२५८

स नांम

पद तळाव अद्रष्ट (पढ़) सरिसतिनद रव (साख,
वळ) नाराच (वखांणियै भेद दंती स भाख) ।।—२५९

सा, सि नांम

तिय साळी रज साल (तव) रमा (नांम सा राख),
सिख असीस हितु सुर खडग (भेद लघु सि भाख) ।।—२६०

सी, सु नांम

सुख विवाद वंदवा (सुणौ) निरफळ (सी) निरधार,
रव कुठार छेदन फरस (सु लघु नांम) सुथार ।।—२६१

सू, से नांम

रसा सगर भा विध (रटौ) पारासुर (सू पेख),
वकरी नभ सिंधलोक (वळ दुरस नांम से देख) ।।—२६२

सै, सो नांम

स्याळ वाळ अहि धरम (सुण) कीर (नांम सै किध),
सुक्रवार पंडत ससि (सो) मंत्र (नांम प्रसिद्ध) ।।—२६३

सौ, सं नांम

श्रेष्टवाक्य भ्राता (सुणौ पढ़) पुनीत (सौ पाय),
संकर सुख कारण सरण (यु सं नांम उपाय) ।।—२६४

ह नांम

हरख चोर कुटवाळ हर काष्ट निखेधा (कीध,
पुन) अगाक्ष (ह नांम पढ़ दळ एकाक्षर दीध) ॥—२६५

हा, हि नांम

सत्यारथ ग्रंधूव सदा हरचंद (हा के) हांण,
हरा खेद टीटूहरी पनंग मोर (हि) पांण ॥—२६६

ही, ह्री नांम

अगछोना पंछी मनि हरख पुरख (ही होय),
वसीकरण व्रीडा अजा मंत्र वीज (ह्री मोय) ॥—२६७

हु, हू नांम

नृप निंद्या निस्चय (कर) संभारण (हु व सार),
सुर दीरघ निस्चय सुरद विप्र रूढ़ (हू वार) ॥—२६८

हे, है नांम

संबोधन क्रत अस्व सिव (कहि) प्रसाद (हे काज),
पाथ परीक्षक (हय पढ़ौ) हांसी (है कहि साज) ॥—२६९

ह्वै, हो नांम

ताळ सबद वायस तिया गाथ सिवा (ह्वै ग्यान),
जिग उछाह अरजन अति (हो संबोधन ह्यान) ॥—२७०

हौ नांम

सस्त्र पक्ष जय अतु सकंध ब्रह्मा (हौ बाखांण,
भगती कर भगवंत की जगनाथ गुण जांण) ॥—२७१

हं नांम

पूरण हंस समूह (पढ़) दीपत जीव उदार,
गार चोर हरबौ (गणौ) सिव (हं नांम संभार) ॥—२७२

ल़ नांम

कमळ रमा परिक्रम कवि निरमळ (ळ) निरधार,
प्रथम नांम स्नका (पढ़ै लख) गुरु (नांम लकार) ॥—२७३

क्ष, क्षा नांम

दनु खेत मिंदर गवरा क्षमावंत (क्ष ख्यात),
जमना यल सीता जरा दुरबळ (क्षा कहि दात) ॥—२७४

क्षि, क्षी नांम

जोत यंद्रिय चख गोख (जप कानो क्षि कहवाय),
मदरा पंखी अगन (मुण) क्षीणपुरख (क्षी भाय) ॥—२७५

क्षु, क्षू नांम

रव दध यंद (रु) रुद्र (के) क्षय (क्षु नांम लखाय),
मुखक नष्ट पापीमुखा (विध क्षू नांम वताय) ॥—२७६

क्षे, क्षै नांम

संकल मंगळ कुरखेत (सुण) खेडू खेत (क्षे ख्यात),
मुगध जुवारी ठग मिनी क्षय लंपट (क्षै) रात ॥—२७७

क्षो, क्षौ नांम

क्षुरक वृणय (लखि कहि) मंत्र क्रोध (क्षो मंड),
मंगळग्रह नृप खंज (मुण) जख मद (क्षौ ज मंड) ॥—२७८

क्षं नांम

सुध कमळ पय खेत सुख (नांम) भखण आणंद,
प्रागतीरथ मकरंद (पढ़ वळ क्षं नांम विलंद) ॥—२७९

श्री नांम

कीरत द्रव (सो) कुसळ क्रांति रमा प्रकास,
सार वरक्त सित संपदा पीत पत वृतादास ॥—२८०

रतन भूम वुधवांन (रट) लाज म्रजाद (लखाय,
एकाक्षर 'उदा' एता सो श्री नांम सुणाय) ॥—२८१

'उदा' यण एकाक्षरी अरथ अनेक उपाव,
कवकुळवोध प्रकासमैं देसल जळ दरियाव) ॥—२८२

इति श्री महाराव राजंद्र श्री देसलजी राजसमुद्र मध्ये
त्रिविध नांम - माळा निरूपण नांम अवधा
अनेकारथी एकाक्षरी वर्णन नांम
दसमौ लहर या तरंग ।

०

अथ अव्यय — नांमावली

पढ़ै नांम - माळा परै अव्यय नांम अपार,
मेधा सुण व्याकरण मत 'उर्द' कियौ उचार ॥—१

प्र नांम

रुद्र गवण प्रथमा रथ (रट) देखण (छा) दरसाय,
कव संतोख सांति (कहौ प्र के नांम उपाय) ॥—२

अ, इ, ई नांम

अचरज प्रतखेद (रु) अभय अनेक (नांम उजास),
संबोधन (लघु इ सुणौ ई) दुख सम्रती उदास ॥—३

उ, ऊ, ऋ, ॠ नांम

रोख बचन निसचय प्रसन्न (ऊ ज) निवारण (आख),
दोख क्षोभ वृद्ध (ऋ दखो ॠ) विश्राम गुण (राख) ॥—४

ऌ, ॡ नांम

क्षोभी वृद्ध (रु) दोख (कहि ऌ लघु नांम लखाय,
ॡ) निखेध (दीरघ लखौ अव्यय नांम उपाय) ॥—५

ए, ऐ, ओ, औ नांम

संबोधन (ए लघु सुणौ ऐ) आचारज (आख,
ओ) दिखायबो (आखिये भण अहोतहै भाख) ॥—६

अ, आ नांम

(अ) संबोधन (आखिये) मांन विधांन अजाद,
आगम (आ अ) पांच (अख ईहग कहत अनाद) ॥—७

पु, रः, डुः नांम

(आख) समुचय (पुन) अरथ (अव्यय के व अेह),
दुख दुरजन कष्टी दुष्ट (डु वळ अव्यय दाख) ॥—८

नि नांम

अतिसय निरणय जस (यता) निसचय गदण निखेध,
(नि अव्यय के नांम ए वर के डु चत वेध) ॥—९

(नो मा कहि) प्रत खेदना वा विकलप उपमांन,
(अथ) सुवाय त्यदादि (कहि विदवत पढ़ौ विधांन) ॥—१०

वि नांम

विखम विजोग विजोग (व्है अरथ जुदा भिन आय,
ए वि नांम उचारियै सं के नांम सुणाय) ॥—११

सं, सु नांम

(सुण) उतपत भव वरक्त (सं) भव्य वरक्त जस (भाख,
पूजा सुख सूं पाइयै रांम कृष्ण चित राख) ॥—१२

स्वः, ह नांम

(स्व कहिये सव) स्वरग (कूं ह अब नांम हलाय),
वरजण पदपूरण* (वळै) मारबो विधी मिलाय ॥—१३

अव्यय भेद अपार है, वरण अरथ विसतार।
चवि श्री फकीरचंद, उदै कियौ उचार॥

इति अव्यय संपूर्ण।

——— ००० ———

* पद-रचना में मात्राओं की पूर्ति के लिए या तुक के आग्रह से 'ह' का प्रयोग प्रायः बहुत से शब्दों के अंत में होता है। यथा—

सोने री साजांह, नग कण सूं जड़िया जिके।
कीन्हो कवराजांह, राजा मालम राजिया॥

अनुक्रम

[पर्यायवाची शब्दों के शीर्षकों का अनुक्रम]

अनुक्रम

अनुक्रम

एकाक्षरी शब्दों का अनुक्रम

(अथ अव्यय-नांमावळी)

—ooo—

० शुद्धि-पत्र ०

[छपाई में वहुत सावधानी वरतने के वावजूद भी कुछ अशुद्धियाँ रहने की संभावना वनी हुई है। कई शब्दों के सम्वन्ध में मतभेद की भी गुंजाइश है। विद्वान पाठकों से निवेदन है कि वे अपने सुझाव देकर अनुग्रहीत करें, जिससे द्वितीय संस्करण में आवश्यक परिवर्तन किया जा सके।]

पृ०	छं०	अशुद्ध	शुद्ध
११	पंक्ति ३०	भुजंग प्रयाता	भुजंगप्रयात
२०	५	वाजाल	वाजाळ
२०	६	सु (मुणिज्जै)	(सु मुणिज्जै)
२१	१३	(सारी)	सारी
२१	१३	(राजाप्रथूची) परठि	राजाप्रथूचीपरठि
२३	२४	दानव गज्जं	दानव-गज्जं
२७	१	जुनी क्रपीठ	जुनीक्रपीठ
,	१	हुतमुक	हुतभुक
,	२	दीप (सुरलोक)	दीपसुरलोक
२६	६	मालबन्धण	माळवंधण
२६	१२	चामणी	चांमणी
३०	१३	विमल	विभळ
,	१५	हेकव	(हेकव)
,	१६	है	(है)
,	१७	ढाळो	ढीलढ़ाळो
३१	१८	जीभूत	जीमूत
,	१६	सकलंकी	सकळंकी
३५	५	असवार	(असवार)
४५	६२	नांम	(नांम)
६६	१८५	अण आंटै	(अणआंटै)
७४	२३०	कुपधमूळ	कुवधमूळ
८२	२७६	संक-रखण-रांम	संकरपण रांम
८२	२७६	मूसळी-हळी-पिणि	मूसळी हळी (पिणि)
८८	३१०	रीकवियौ	रीझवियौ
६२	१७	रुद्रवामसर	रुद्र वांमसर
,	१६	लोहितमाळ	लोहितभाळ
,	२१	अंवाजोत अखंड	अंवा जोतअखंड
६३	३६	व्रष्टरसवाव्रखाकप	व्रष्टरसवा व्रखाकप
६४	४१	श्रीलच्छ	श्री लच्छ

पृ०	छं०	अशुद्ध	शुद्ध
६४	४५	प्रश्नग द्वार	प्रश्नगद्वार
६४	४८	जमाकरन सनिजमगिता	देखो पृ० १५४ का फुटनोट
६५	५२	निसनेत्रसुग्ग	निसनेत्र (सुग्ग)
,	५४	जुगपदमगणपती	जुग पदमगणपती
,	५७	कंद्रपकळ	कंद्रप कळ
६६	७०	सदा	(सदा)
६६	९६	सतीवांम वग्गस्वांम	सती वांमवग्गस्वांम
,	१०२	क्रपथा	त्रपथा
,	,	अवमोचन	अवमोचन
१००	१०५	अकळ	अकल
,	,	प्रबाव	प्रबोव
,	१०९	हदनीरोअर	हद नीरोअर
१०१	१२८	नेजादावदी	नेजा दावदी
१०२	१३६	कीसहरि	कीस हरि
,	१३८	(श्रेग्ग)	श्रेग्ग
१०३	१४३	पिंगपंच सिख	पिंग पंचसिख
,	१४६	अंगळीलंग	अंगलीलंग
,	१४८	समूळ	(समूळ)
१०४	१५९	यला	यळा
,	१६२	(जव) फलवळै	जवफळ (वळै)
,	१६३	अभियापोख	अभिया (पोख)
१०५	१६४	प्रपथा	प्रमथा
,	१६६	वह्नी (सिखा वताय)	वह्नीसिखा (वताय)
,	१६७	लोहत (चंनग्ग लेख)	लोहितचंनग्ग (लेख)
१०५	१६८	सोरभ मूल	सोरभ-मूळ
१०५	१७०	सांन माम	सांनमान
१०६	१७५	वसूभूतमरुकम	वसू भूतम रुकम
१०६	१८३	पट्टग्गपुरी	पट्टग्ग पुरी
१०७	१८८	मेघे पुसप	मेघपुसप
१०७	१८८	(खीर	खीर (
१०९	२०८	सुज	(सुज)
१०९	२१६	कलिफालगुन	कलि फालगुन
१०९	२१७	जयकरग्गसत्र	जय करग्गसत्र
११०	२२५	कर करै तलप	(कर करै तलप)
११०	२२८	आससिध	इपुआससिध
११०	२२९	सिलीभुख	सिलीमुख

पृ०	छं०	अशुद्ध	शुद्ध
१११	२३८	वितरण दांन	वितरणदांन
१११	२३९	उछरजण त्याग	उछरजणत्याग
१११	२४०	रेणवदूथीराह	रेणव दूथी (राह)
१११	२४०	मनरखभागण	मनरख मांगण
११३	२५६	कववीती	कव वीती
११३	२६१	पंथकपंथक	पंथकुपंथक
११४	२६८	अभ्यामरदअनीक	अभ्यामरद अनीक
१२१	३४४	(धुन नाद रिण)	धुन नाद रिण
१२२	३६३	विणवाठ	विणवाट
१२३	३६५	सारभेय	सारमेय
१२४	३८३	बळरिखभ	वळ रिखभ
१२६	३९८	कस्न वरतमा	कस्नवरतमा
१२६	४०२	(हय कहिपात)	हय (कहिपात)
१२८	४२१	खगपंखी	खग पंखी
१३०	४४२	सुरनाह	(सुरनाह)
१३०	४४३	(दत)	दल
१३१	४५१	सुरिण	(सुरिण)
१३२	४७०	विघा	विद्या
१३३	४७२	सासोपान	(सा) सोपान
१३४	४८३	माथौ	भाथौ
१३४	४८३	माथ	भाथ
१३५	४९६	रुचा वप	रुचावप
१३६	५०६	४०६	५०६
१३७	५१५	(प्रकरण करण विसरण चय विसतार)	प्रकरण करण विसरण चय विसतार
१५१	४५	मिदुर	भिदुर
१५१	४६	क्रादनी	ह्लादनी
१६४	१२०	महिगोत्रा	महि गोत्रा
१६४	१२१	मरुतदरीभ्रत	(मरुत) दरीभ्रत
१७२	५३	सुंभनिसुंभ) भांजणी,	सुंभनिसुंभ-भांजणी
१७३	५३	गीतअंबका	(गीत) अंबका
१७८	१०६	विभादसू	विभावसू
१७८	१०६	रुक्रसानु	(रु) क्रसानु
१८३	१६१	त्रिजाम	त्रिजांम
१८३	१६१	सन्निवाम	सन्निवांम

पृ०	छं०	अशुद्ध	शुद्ध
१८९	२२२	तावक	ताकव
१९१	२३७	दळमाठा	दलमाठा
१९६	२८७	रोगहारीप्रभगा	रोगहारी (प्रभगा)
१९७	२९७	(वांम)	वांम
२०७	३९८	ललितकीसवर	(ललित) कीसवर
२१२	४४०	अखकोमंखी	(अख) कोमंखी
२१२	४४४	मावत) ससतर	मावत-ससतर
२१२	४४७	उतवंग) पनाह	उतवंगपनाह
२२१	५३१	(खेत) जीव	खेतजीव
२२१	५३५	भेदक (डगळ	भेदक-डगळ (
२२१	५३५	मे दड़ो	मेदड़ो
२२५	५७३	(खुर) सांगा	खुरसांगा
२२७	१०	ढूंडाड़-३	ढूंडाड़-२
२४०	१२८	(स्लेसम) अंग	स्लेसम (अंग)
२४२	१४४	(सुगा पुंडरीक	(सुगा) पुंडरीक
२४२	१४४	कवळ) लाल	कवळलाल
२४४	१६१	(मुगा वीर) वहोड़ी	(मुगा) वीरवहोड़ी
२४५	१६९	(जूह) नाह	जूहनाह
२४८	१९१	भू) वारि	) भूवारि
२५०	२१४	डाकगा) वाहगा	) डाकगा-वाहगा
२५०	२१६	भाकर रो) भोमियो,	भाकररोभोमियो
२५३	२३८	अंडा-२	अंडा-३
२५३	२३८	(पेसिका)	पेसिका
२५६	२७१	पाप-१३	पाप-१२
२७०	५२	साख	(साख)
२७१	५८	वांमातन (रीत)	वांमातनरीत
२७२	६३	फौहीवळहरा	फौही (वळ) हरा
२७२	६६	व्रम जोत	व्रमजोत
२८३	१०	त्रीवंभया	त्रीवंभया
२९५	११८	भैरू झंप	भैरूंझंप
३०६	२११	रोहगा तिया	रोहगातिया

उद्देश्य व नियम

१—राजस्थानी साहित्य, कला व संस्कृति का वैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत करना पत्रिका का मुख्य उद्देश्य है।

२—परम्परा का प्रत्येक अंक विशेषांक होता है, इसलिए विषयानुकूल सामग्री को ही स्थान मिल सकेगा।

३—लेखों में व्यक्त विचारों का उत्तरदायित्व उनके लेखकों पर होगा।

४—लेखक को, सम्बन्धित अंक के साथ, अपने निबन्ध की पच्चीस अनुमुद्रित प्रतियाँ भेंट की जावेंगी।

५—समालोचना के लिए पुस्तक की दो प्रतियाँ आना आवश्यक है। केवल शोध-संबधी महत्त्वपूर्ण प्रकाशनों की समालोचना ही संभव हो सकेगी।

परम्परा की प्रचारात्मक सामग्री, नियम तथा व्यवस्था-सम्बन्धी अन्य जानकारी के लिए पत्र-व्यवहार निम्न पते से करें—

व्यवस्थापक : **परम्परा**
राजस्थानी शोध-संस्थान, चौपासनी
जोधपुर [राजस्थान]
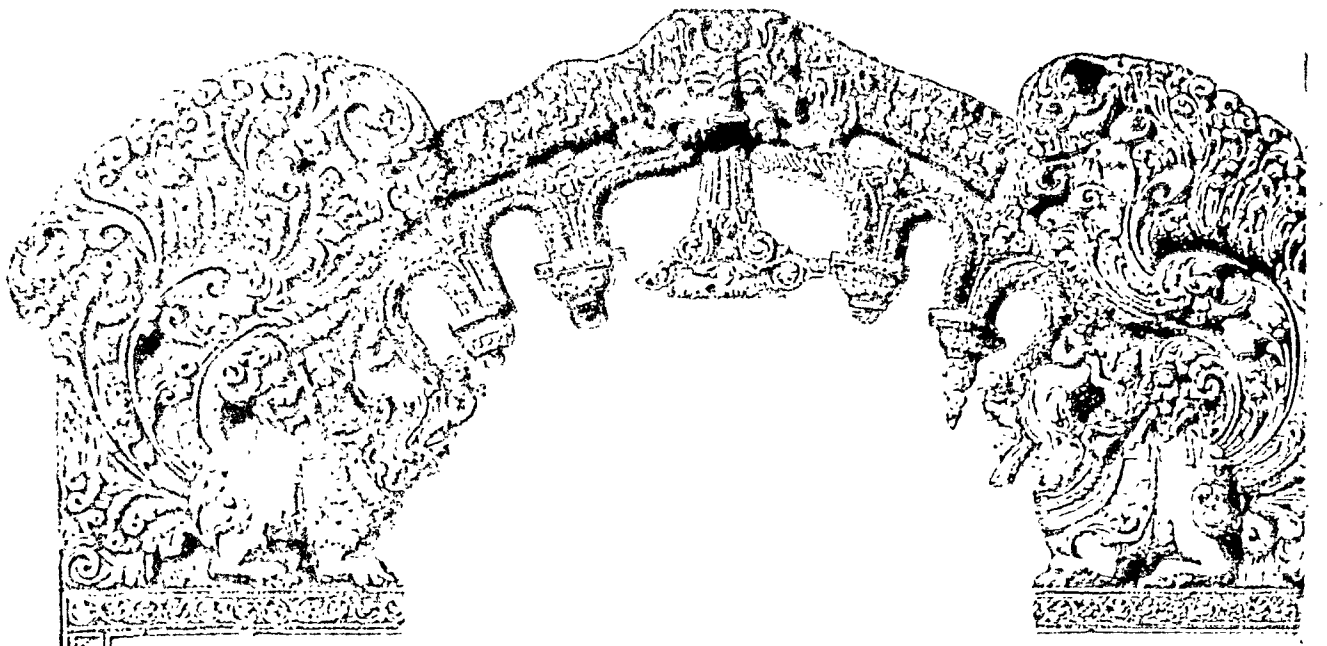
- त्रैमासिक शोध-पत्रिका
- वार्षिक मूल्य : दस रुपये
- प्रति अंक : तीन रुपये
- वर्ष : १९५६-५७
- अंक : तीन-चार